फ्रान्स
का
इतिहास

प्रकाशक

हिन्दुस्तानी एकेडेमी

इलाहाबाद-211 001

प्रथम सस्करण 1999

मूल्य 80/-

आवरण

मुद्रक

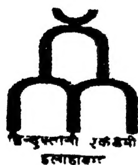
वीणा प्रिन्टिग प्रेस

92 दिलकुशा पाक नया कटरा

इलाहाबाद-211 002

फ्राँस का इतिहास

डॉ० हेरम्ब चतुर्वेदी



हिन्दुस्तानी एकेडेमी
इलाहाबाद

प्रकाशकीय

हिन्दुस्तानी एकेडेमी ने भारतीय इतिहास से सबधित अनेक महत्वपूण ग्रथो का प्रकाशन किया है। आज जबकि विश्व सिमटता जा रहा है और अन्यान्य देशो से भारत और भारतीय बुद्धिजीवियो का सपक बढता जा रहा है विश्व के प्रमुख देशो के इतिहास से अपने देश की भावी पीढी को परिचित कराना परमावश्यक हो गया है। हिन्दुस्तानी एकेडेमी ने 1974 मे 'लघु प्रकाशन योजना के अन्तर्गत इग्लैण्ड की शासन प्रणाली पुस्तक का प्रकाशन किया था। इस पुस्तक को राजनीति शास्त्र के अध्येताओ ने सराहा था। उसी क्रम मे फान्स का इतिहास पुस्तक का प्रकाशन किया जा रहा हे। इलाहाबाद विश्वविद्यालय के मध्यकालीन इतिहास विभाग के विद्वान रीडर डा० हेरम्ब चतुर्वेदी ने जब फान्स का इतिहास के प्रकाशन का प्रस्ताव किया तो इसे सहष स्वीकार कर लिया गया क्योकि फ्रासीसी क्रान्ति का प्रभाव सारे विश्व पर पडा था। फ्रान्स की समृद्ध कला साहित्य और सस्कृति की भी किचित झलक इस पुस्तक मे प्रस्तुत करके चतुर्वेदी जी ने इसे और भी उपयोगी बनाने का प्रयास किया है। इसके प्रकाशन के लिए उन्हे हिन्दी वाड्मय निधि से जो पाच सहस्र रुपये की राशि प्राप्त हुइ थी उसे उन्होने एकेडेमी को प्रदान करने की कृपा की हे। इसके लिए एकेडेमी उसके प्रति आधार ज्ञापित करती है।

विश्वास हे यह पुस्तक अध्ययन - अध्यापन मे रत पाठको को परितुष्टि प्रदान करेगी।

15 अगस्त, 1999

महेन्द्र प्रताप
सचिव

विषय-सूची

प्रस्तावना

शायद हमे इतिहास-प्रेम भी 'जेनेटिक' विरासत के रूप मे प्राप्त हुआ है। हमारे पितामह स्वर्गीय न्यायमूति बृजकिशोर चतुर्वेदी बार-एट-लॉ (म प्र उच्च न्यायालय) पिता स्वर्गीय शरद चन्द्र चतुर्वेदी एव चाचा श्री भरतचद्र चतुर्वेदी आई ए एस (सेवा निवृत्त) तीनो ने ही विश्वविद्यालय स्तर पर इतिहास विषय का अध्ययन किया था। पितामह तो शोध के लिए (रिलेशन्स ऑफ नवाब-वजीस ऑफ् अवध विद द ईस्ट इण्डिया कम्पनी) विलायत तक गए, कितु, ब्रिटिश शासको द्वारा प्रचलित, प्रेरित एव आश्रय-प्राप्त 'साम्राज्यवादी (इम्पीरियल) स्कूल ऑफ हिस्ट्री' के मानको के प्रतिकूल होने के कारण वह थीसिस अटक ही गइ। इसी प्रकार, पूज्य पिताजी ने भी व्यवसायिक प्रतिष्ठानो की नौकरी से पूर्व, माधव कालेज उज्जैन मे इतिहास के प्रवक्ता के रूप मे अध्यापन किया था अत हमारा इतिहास विषय का अध्ययन-अध्यापन और उसपर लेखन भी ऐतिहासिक अपरिहार्यता प्रतीत होती है।

'फ्रँास का इतिहास' तो शायद उऋण होने का एक माध्यम साबित हो। मानव-समाज को फ्राँसीसी समाज का अवदान बहुत तो हे ही बहुत महत्वपूर्ण भी है। उसी वृहद् मानव-समाज के एक प्रतिनीधि के रूप मे सम्भवत उसका ऋण चुक जाए। हिन्दी-प्रदेश के वासी होने के नाते अपनी मातृ-भाषा के भी ऋण के बोझ को शायद कुछ कम कर सकूँ।

लेकिन, इस पुस्तक का विषय, विचार तथा प्रेरणा हिन्दी आन्दोलन के अग्रणी नेता व विचारक, स्वर्गीय पडित श्रीनारायण जी चतुर्वेदी से मिली थी। वे 'हिन्दी वाङ्मय निधि' के अन्तर्गत हिन्दी के पाठको के लिए, प्रत्येक राष्ट्र के वस्तुपरक इतिहास पर पुस्तक लिखवाकर एक पूरी श्रखला विश्व के प्रमुख राष्ट्रो के इतिहास की-तैयार करना चाहते थे। फ्रँास के इतिहास - लेखन का दायित्व हमको सौंपा गया। उनके मृत्योपरान्त दो वर्षों तक पाण्डुलिपि ऐसी ही पडी रही - प्रकाशन के सारे प्रयास निष्फल ही रहे। अब शायद इसके प्रकाशन से अपने परिवार

के एक बुजुग से किए गए वन्दे की पूति एव उनके प्रति श्रद्धान्जलि भी सही अर्थो म अपित हो जाएगी।

हमारी स्कूला शिक्षा एक कौन्वेन्ट स्कूल (सत जोजफ इलाहाबाद) मे हुई थी। किन्तु, उसके साथ ही, एलिमेन्ट्री" हिन्दी पढने वाले हम, यदि हिन्दी भाषा मे दक्ष हो सके तो उसके लिए हम अपने नाना स्वर्गीय रायबहादुर हुकुमचद्र चतुर्वेदी क ही ऋणी हैं। उनकी तथा नानी की स्नेहछाया मे ही हमारा बचपन व अध्यापन-काल बीता। अत हिन्दी के सशक्त सस्कारो के लिए इन दोनो का ही ऋणा हूँ - शायद अब उऋण हो सकूँ !

इस पुस्तक के लेखन-क्रम मे पारिवारिक दायित्वो की पूर्ति मे जो भी कमी हुइ उसके लिए अपने परिजनो से क्षमा-प्रार्थी हूँ-विशेषकर, परिवार के चार छोटे बच्चो से जिन्हे समय नही दे पाया !

किन्तु यह पुस्तक प्रकाशित हो सकी इसका श्रेय श्रद्धेय प्रोफेसर शैलनाथ जी चतुर्वेदी को जाता है जिन्होने हिन्दी वाङ्मय निधि के अध्यक्ष के नाते हमें आथिक सहायता प्रदान कर यह काय सुलभ बनाया। श्री हरिमोन्न जी मालवीय अध्यक्ष, हिन्दुस्तानी एकेडेमी इलाहाबाद ने सहायता के आधार पर हिन्दुस्तानी ऐकेडेमी जैसी गरिमामयी सस्था से इसे प्रकाशित करके सामान्य पाठक लेखक व हिन्दी जगत पर बडा उपकार किया है।



डॉ० हेरम्ब चतुर्वेदी

आमुख

सम्भवत इतिहास और हिन्दी-दोनो से ही हमने जो पाया व निरन्तर प्राप्त कर रहे हैं उससे भी अऋण हो सके। यह पुस्तक इतिहास एव हिन्दी प्रेमियो को सादर समपित है !

हमे प्रसन्नता है कि हिन्दी वाड्मय निधि के सहयोग से प्रकाशित 'फ्रास का इतिहास हिन्दी के सुधी पाठको के हाथो मे पहुँच रहा है। इसके पूव निधि के सहयोग से तमिल साहित्य का इतिहास' 'सल्तनतकालीन प्रमुख इतिहासकार' 'देश के अभिधान तथा 'पॉचवीं-सातवीं सताब्दियो का भारत शीर्षक पुस्तके प्रकाशित की जा चुकी हें।

हिन्दी वाड्मय निधि की अवस्थापना हिन्दी के अनन्य सेवक पद्मभूषण प० श्रीनारायण चतुर्वेदी की पीडा का प्रतिफल है। उन्ही के शब्दो मे हिन्दी भाषी जनता को ऐसे विषयो पर पुस्तके नहीं मिल पाती जिनसे उसे कूपमण्डूकता से निकाला जा सके और भारत का उपयोग तथा कत्तव्यपरायण नागरिक बनाया जा सके। मैं अफसोस करके रह जाता हूँ कि अनेक मनोरजक और ज्ञानवर्द्धक पुस्तके जो अग्रेजी मे उपलब्ध हैं, हमारे हिन्दी पाठको को पढने को नहीं मिल सकतीं।

यह स्थिति मेरे चित्त मे इतनी अशान्ति उत्पन्न कर रही है कि मैं कुछ करने के लिये बाध्य हो गया हूँ। इस विषय पर व्यावहारिक दृष्टि से कइ वर्षे से विचारता रहा और अन्त मे मैं इस परिणाम पर पहुँचा कि मुझे कुछ करना ही चाहिए चाह वह कितना ही कम क्यो न हो। ऐसी पुस्तके सामान्य पाठक को सुलभ कराने के प्रयोजन से मैंने पचीस हजार रुपए जमाकर हिन्दी वाड्मय निधि के नाम से एक निधि बनाने का निश्चय किया।' स्वर्गीय चतुर्वेदी की इच्छा के अनुरूप निधि उस दिशा मे सतत प्रयत्नशील है।

फ्रास योरोप ही नहीं विश्व के महत्त्वपूर्ण देशो मे से एक है। योरोप के पश्चिमी भाग मे एटलाण्टिक महासागर के तट पर अवस्थित फ्रास योरोप का तीसरा सबसे बडा देश है। उसके पश्चिम मे इग्लिश चैनल के पार इग्लैंड है और तीन ओर वह बेल्जियम लग्जेमबर्ग, जमनी, स्विट्जरलैंड, इटली और स्पेन

की सीमाओ से लगा हुआ है। परिणामत उसकी भूमि विभिन्न जातियो का सगमस्थल बनी। इनमे एक फ्रेक जाति थी जिसके आधार पर इस भू-भाग का नाम फ्रास पडा।

योरोप मे प्रागैतिहासिक युग से लेकर आधुनिक युग तक मनुष्य के विकास मे जो भी स्थितियाँ आयीं, फ्रास का इतिहास उन सबका साक्षी है। राजतत्र-सामन्तवाद से लोकतत्र मे परिवतन की प्रक्रिया के स्वरूप का निदर्शन भी फ्रास के इतिहास मे होता है। अट्ठारहवीं शताब्दी के उत्तार्द्ध मे योरोप का सास्कृतिक नेतृत्व फ्रास कर रहा था। फ्रेच यूरोप के अभिजात्य वग की भाषा बन गयी थी। कला के क्षेत्र मे भी फ्रास शीर्षस्थ था। फ्रास का वास्तु योरोप के अन्य देशो का आदर्श बन गया। 1789 की महान् क्राति ने क्राति ने स्वतत्रता भ्रातृत्व और समानता क' सन्देश सारे विश्व को दिया। अपनी दीर्घकालीन इतिहास-यात्रा के अनन्तर फ्रास का विशिष्ट व्यक्तित्व उभरा जिसने योरोप ही नही दूरस्थ देशो को भी प्रभावित किया।

हिन्दी वाङ्मय निधि के अनुरोध पर इलाहाबाद विश्वविद्यालय के इतिहास विभाग मे उपाचार्य डा० हेरम्ब चतुर्वेदी ने विश्व के एक महत्त्वपूर्ण देश फ्रास का इतिहास लिखने की कृपा की है। हमे विश्वास है कि सरल भाषा एव सुबोध शैली मे प्रस्तुत यह पुस्तक सुबुद्ध हिन्दी पाठको को रुचिकर लगेगी। उनके प्रोत्साहन से हिन्दी वाङ्मय निधि को बल मिलेगा और वह स्व० चतुर्वेदी जी द्वारा निर्दिष्ट पथ का अनुसरण करती रहेगी।



शैलेन्द्र नाथ कपूर
प्रोफेसर, प्राचीन भारतीय इतिहास एव
पुरातत्त्व विभाग,
लखनऊ विश्वविद्यालय
सचिव
हिन्दी वाङ्मय निधि

53 खुर्शेदबाग
लखनऊ

भूमिका

इतिहास पढते-पढाते ढाइ दशक से अधिक बीत जाने के बाद हम इसी निष्कष पर पहुँचे हैं कि वस्तुत मानव के विकास का क्रमबद्ध अध्ययन ही इतिहास है। अत इतिहास मे व्यक्तियो का इतना महत्व नहीं है - और यदि हे भी तो मात्र उनका, जो अपने युग की प्रवृत्तियो को आत्मसात करने मे सक्षम और सफल होते हैं - तब वे लोग किसी विशेष काल व क्षेत्र-खड को प्रतिबिम्बित करने या उसका प्रतिनिधित्व करने के परिणामस्वरूप उस खड के महत्वपूण प्रतीक हो जाते हैं ! इस प्रकार इतिहास, मूलत मानव-सभ्यता का अध्ययन ही है। उत्पत्ति से लेकर वतमान तक के मानव के सपूण विकास का वृहद् अध्ययन एक ही स्थान पर सकलित कर के प्रस्तुत करना सम्भव नहीं हो पाता है अत इस अध्ययन की सुलभता के लिए इतिहासकार या तो कोइ भू-खड अथवा क्षेत्रीय अथवा भू-राजनीतिक इकाई का चयन कर लेता है, ताकि उसके विश्लेषणात्मक अध्ययन के माध्यम से वह मानव-विकास को निरूपित कर सके कभी-कभी वह इस भू-खड के अध्ययन हेतु भी मात्र एक निश्चित काल-खड का चयन करता है, ताकि, उसकाल मे-अर्थात् मानव-विकास के उक्त चरण मे क्या उपलब्ध हो पाया है-उसके अध्ययन के द्वारा उस देश या क्षेत्र का सूक्ष्म या माइक्रो' अध्ययन कर सके। इस माइक्रो अध्ययन के माध्यम से मानव के सर्वागींण विकास का क्रम-बद्ध अध्ययन सुलभ व सम्भव हो पाता है।

हमने भी उपरोक्त के आधार पर, एक क्षेत्र या देश-विशेष का चयन किया है, ताकि, उसके माध्यम से, मानव-विकास के वस्तुपरक अध्ययन पर पयाप्त प्रकाश डाल सके। फ्रॅास का चुनाव भी बहुत ही सहज था। पाश्चात्य विश्व के अध्ययन-क्रम मे फ्रॉस स्वाभाविक रूप से मानव-मन को आकषित करता है। जो राष्ट्र, जहॉ की भाषा एव सस्कृति, शताब्दियो तक पाश्चात्य विश्व को सपूणता मे, प्रभावित करती रही हो उसके अध्ययन की उत्कठा कोइ आश्चय नहीं है ! उत्सुकता का दूसरा आधार या बिदु है-फ्रॅसीसी क्रान्ति (1789 इ०)। यदि दसरे यूरोपीय देशो के साथ फ्रॅास का तुलनात्मक अध्ययन करे, तो स्पष्टत

प्रमाणित हो जाएगा, कि, उन देशो की स्थितियाँ यदि, फ्रँास से बदतर नहीं तो बेहतर भी नहीं थी- कमोबेश वैसी ही हालत पूरे यूरोप की थी। किंतु, क्रााँति का सूत्रपात फ्राँस मे ही सभव था-तो उसका कारण फ्रॅास की जन-मानस की चेतना थी। फ्रँासीसी जनता की चेतना, वास्तव मे, फ्रँासीसी सास्कृतिक पारिवेश का परिचायक और प्रतीक थी ! यदि साम्राज्ञी मेरी एन्तोनियत, क्रॉति पूर्व, पुरातन राज-वैभव, राज-समृद्धि एव राज-सस्कृति की प्रतीक थीं, तो, सम्राट लुई षोडश (xvi) निरकुशता का चरित-नायक था और ऐबे सिये जैसे व्यक्तित्व उसी प्रबुद्ध चेतना के प्रतीक थे, जिनके परिणामस्वरूप, फ्रँास मे 'क्राँतिकारी परिस्थितियों' का निर्माण स्वभावत सम्भव हो सका, जिसके चलते, 1789 ई० मे फ्रँास मे क्राँति हो गई ! यही नहीं, 1789 ई० की इस फ्रॉसीसी क्रााँति ने स्वतत्रता, समानता एव बधुत्व के सिद्धान्तो को आधुनिक विश्व के मूल-मत्र के रूप मे प्रतिष्ठित कर दिया। इन सिद्धान्तो का प्रचार-प्रसार-सिर्फ यूरोप मे ही नहीं और वह भी मात्र अठारहवीं-तथा उन्नीसवीं शताब्दियो के ही यूरोप मे ही नहीं हुआ अपितु, बीसवीं शताब्दी के एशिया एव अफ्रीका महाद्वीपो के देशो के स्वतत्रता-आन्दोलनो मे भी, उसकी प्रतिध्वनियाँ गूँजी थीं !1789 ई० के पश्चात, विश्व के किसी भी सामाजिक-आर्थिक-राजनीतिक आदोलन मे शायद ही उक्त फ्रॅसीसी क्रॉति की झलक न दिखी हो - इस दृष्टिकोण से यदि वे फ्रँासीसी क्रॉति की पुनरावृत्ति नहीं लगीं हो तो भी उक्त क्राँति की प्रतिध्वनियाँ अपने मे समायोजित किए हुए अवश्य थीं ! यही नहीं, जब-जब भी किसी निरकुश सत्ता का पतन हुआ है-तो चाहे एशिया हो या अफ्रीका या दक्षिण अमरीका और या तो भारत का ही कोई प्रदेश या प्रान्त हो, न जाने कैसे ढेरो मेरी एन्तोनियत भी मिली हैं - तब क्यो न फ्रँासीसी सस्कृति इतिहास के सामान्य छात्रो एव पाठको को आकषित करे ?

अत ऐसे समृद्ध सुसस्कृत एव प्रभावशाली फ्रॅास का तथा वहाँ की विश्व-व्यापी विरासत का विकास कैसे हुआ-यह भी सहज रूप से इतिहास के विद्यार्थियो के लिए-जिज्ञासा का विषय बन जाता है। आखिर कौन से अतीत से, या, किस पृष्ठ-भूमि से, इस फ्रॅास की उत्पत्ति एव विकास हुआ-यह जानने की बेचैनी भी होनी स्वाभाविक ही है और यह बेचैनी तब और भी अधिक बढ जाती है, जब फ्रँास का प्रारम्भिक व प्राचीन इतिहास, तथ्य और मिथ्या के मध्य कहीं धुँधलके मे घुल-मिल जाता है। तब पुरातात्विक अवशेषो, जनश्रुतियो एव लोक-साहित्य के माध्यम से उसकी पुनर्रचना करना सम्भव हो पाता है। शायद, फ्रँास

का यह इतिहास मानव्र-सभ्यता के विकास-क्रम को समझने मे एक सहायक भूमिका अदा करे और हम इस प्रकार ऐतिहासिक नैरन्तय को भी सहजता से समझ सकेंगे।

यूँ तो समय के विकास-क्रम की भाँति ही, इतिहास-लेखन का क्रम भी अबाध रूप से चलता ही रहता है, किन्तु समय की माँग एव विषय की विशेषताओ के चलते, इसकी परिभाषा विषय-वस्तु, आधार एव अवधारणा मे परिवतन स्पष्टत दृष्टिगोचर होता है। इतिहास की पहचान इतिहासकार की वस्तुपरकता पर निभर रहती है-यदि वह किसी युग, सस्था, व्यक्ति व्यक्तित्व विचार प्रवृत्ति या प्रवाह का विश्लेषणात्मक अध्ययन कर रहा हे तो उसे प्रयास करना चाहिए, कि, वह उस युग का साक्षात्कार पाठको से प्रत्यक्ष करा दे। कहीं पर भी पूवग्रहो को या अपनी अवधारणा को उस युग-विशेष पर (जिसका अध्ययन कर रहा हो) आरोपित करने का प्रयास नहीं करना चाहिए। अपितु, दूसरी ओर, एक साथक प्रयास यह होना चाहिए, कि, अन्य इतिहासकारो (पूववर्ती या समकालीन) के पूवाग्रहो एव अवधारणाओ को भी छानकर-अलग करके एक वास्तविक वस्तुपरक वैज्ञानिक और व्यवस्थित चित्र पाठको के समक्ष प्रस्तुत किया जा सके। और ऐसा चित्र सफलतापूवक तैयार करने के लिए आवश्यक होता है, कि पूर्ववर्ती तमाम इतिहासकारो के पूरे परिवेश का समझकर ऐतिहासिक तथ्यो को, उसी प्रकार पूर्वाग्रहो आदि से मुक्त कर दे, जैसे कि कोई सुघड माली-दाने-तिनके, झाड-झकार निकालकर एक सुव्यवस्थित फुलवारी तैयार करता है। ठीक उसी प्रकार के दायित्व का निर्वहन एक इतिहासकार को भी करना पडता है।

किसी भी बडे इतिहास-कैनवास को एक विस्तृत पटल पर 'पेट' या चित्रित करने के उपरान्त, यदि उसे कैमरे के माध्यम से पासपोर्ट-आकार की फोटो बनाने का प्रयास किया जाए, तब थोडी-बहुत कमी रह जाना स्वाभाविक ही है-यह कमी दो विभिन्न तकनीको के बीच के साम्य के अभाव के कारण अपरिहाय होती है। फ्राँस के इतिहास को दूरबीन से देखकर प्रस्तुत किया है अत सूक्ष्म या माइक्रो-अध्ययन पूर्णत सम्भव नही हो सका है, फिर भी माइक्रो और मैक्रो' की सपृक्त तकनीको का प्रयोग यथासम्भव किया गया है। इतिहास-अध्ययन लेखन या बिल्कुल उन अधे व्यक्तियो द्वारा हाथी के वणन की भाँति ही है और उससे कहीं अधिक भी है। उसे जितना स्पश या ऐन्द्रिय ज्ञान से समझ आए और जैसा अनुभव हो-वह दृष्टि-विहीन व्यक्ति उस हाथी को वैसा ही वर्णित कर दे-अपनी ओर से बिना कुछ जोडकर या घटाकर। यह कार्य समकालीन

इतिहासकार का है। कइ दशको या शताब्दियो बाद यदि कोइ उस विशेष काल-खड अथवा क्षेत्र या देश के इतिहास की पुनरचना करता है, तो उन चारो-पॉचों दृष्टि-हीन व्यक्तियो द्वारा किए गए हाथी के वणन को समायोजित करके सपूणता मे इतिहास-चित्र प्रस्तुत कर दे-तभी वह वस्तुपरकता और वैज्ञानिकता की कसौटी पर खरा उतरकर इतिहासकार के दायित्व का निर्वहन सफलतापूवक कर सकेगा। शायद इन्हीं मानको को ध्यान मे रखकर लिखा गया फ्रॉस का इतिहास सुधी पाठको को रूचिकर भी लगे और इतिहासकार की पैनी निगाहो को अखरे भी न ! यदि दोनो कसौटियो पर यह काय (पुस्तक-रूप मे) खरा उतरेगा तो लेखक की मेहनत और प्रयास साथक होगा !



[1]

फ्राँस का प्रारम्भिक इतिहास

फ्रॉस की भूमि पर मनुष्य के प्रथम प्रमाण, अतर हिमानी युग-तुलनात्मक-रूप से गर्म वाले काल के प्राप्त होते हैं। पुरातत्व मे प्राप्त उनके अवशेषो, विशेष तौर पर प्राकृतिक जन-जीवन के अवशेषो के द्वारा यही ज्ञात हुआ है। सिएन (Seine) मान् (Marne) Yonne (योन), ओई (Oise) तथा सोम्म (Somme) नदियो के कछारो मे उत्खनन द्वारा प्राप्त किए गए उपकरणो ने फ्रॉस के प्रागैतिहासिक काल पर पर्याप्त प्रकाश डाला है। गुफाओ मे अकित चित्रो से विशेषतया बारहसिगो घोडो व बैलो के जो चित्र विभिन्न क्षेत्रो से प्राप्त हुए हैं वे इसकी पुष्टि करते हैं।

इसके पश्चात् का युग पत्थरो को बारीक कारीगरी द्वारा उपकरण बनाने का युग है - जब मनुष्य अधिक साधन-सम्पन्न अधिक कमशील व अधिक शक्ति-शाली था। इसी काल में कृषि विकसित हुई, कपडो का प्रचलन प्रारम्भ हुआ भवन-निर्माण व मिट्टी के बर्तन का निर्माण भी शुरू हुआ था। लौह से परिचित तो मनुष्य काफी समय से था - इस युग मे वह कास्य निमित करने की कला भी सीख गया - ताँबे मे रागा के मिश्रण से कास्य के उत्पादन ने उपकरण - निर्माण की प्रक्रिया को पूर्णत परिवर्तित कर दिया तथा मनुष्य की क्रियाशीलता मे भी अभूतपूर्व वृद्धि कर दी ! ताँबा तो इस पूर्ण क्षेत्र मे ही प्राप्त होता था किंतु, रागा सुदूर क्षेत्रो मे (ब्रिटिश आईल्स मे कौर्नवाल नामक स्थान पर) ही प्राप्त होता था - इस प्रकार से व्यापार-मार्गों की नींव भी इसी काल मे पड गई थी !

इतिहास के सधिकाल मे, विशाल व घने जगल इस पूरे क्षेत्र मे व्याप्त हो गए तथा आदि मानव ने जगल के विरूद्ध भी सघर्ष इस काल मे शुरू कर दिया। जगलो से कृषि योग्य भूमि का उद्धार करने की प्रक्रिया व भू-उद्धार के विकास के प्रमाण हमे प्रर्याप्त रूप से प्राप्त हुए हैं।

इसा सन् से अनेक शताब्दियो पूर्व का वर्णन करने वाले इतिहासवेत्ताओ के मतानुसार यूरोपीय महाद्वीप के पश्चिमी छोर पर एक सु–परिभाषित क्षेत्र था समुद्र व पवत–श्रखलाओ के विभाजनो से स्पष्ट सीमाओ के साथ एक निश्चित भोगोलिक इकाई की पहचान सुगम थी। इस भौगोलिक इकाई–जो बाद मे फ्रॉस के नाम से प्रसिद्ध हुई थी – के दक्षिण में भूमध्यसागर व पायरनीस पर्वत श्रृखला, पश्चिम मे – अटलाटिक महासागर तथा, पूव मे ऐल्प्स पवत–श्रृखला – सीमाओ का निधारण करती थी। इस प्रकार से तीन दिशाओ मे निश्चित प्राकृतिक सीमाओ वाले क्षेत्र को इसवी की प्रथम सदी तक सम्राट जूलियस सीजर की प्रतीक्षा करनी पडी, जिसने फ्रॉस को चौथी प्राकृतिक सीमा–राईह्न क्षेत्र के रूप मे प्रदान कर दी !

एक लम्बे समय तक इस सुपरिभाषित सीमाओ वाले क्षेत्र का कोई नाम नहीं था। इसा पूर्व की दूसरी शताब्दी से गौलिया (Gallıa) अथवा गौल (Gaul) के सम्बोधन का प्रयोग इस क्षेत्र के लिए किया जाने लगा ! गौल की सुपरिभाषित प्राकृतिक सीमाएँ अभेद्य नहीं थीं – पायरनीस व ऐल्प्स दोनो ही पर्वत श्रृखलाएँ अपने दर्रो के लिए प्रसिद्ध थीं और राइह्न, जिसे कि सुलभता से पार किया जा सकता था – उसके द्वारा भी इस भौगोलिक क्षेत्र की घाटी मे उत्तर व मध्य युरोप से जनजातियो के रूप मे लोगो का आगमन शुरू हो गया ! सु–परिभाषित व स्पष्ट सीमाओ के साथ – साथ सभी ओर से जुडा हुआ गौल सौभाग्यशाली था, किंतु, ये ही भोगोलिक तत्व उसके दुभाग्य के लिए भी उत्तरदायी साबित हुए – सदैव आक्रमणकारियो को लालायित करता–सबका ध्यानाकषण का केद्र बना रहा ! अत• अनेक शताब्दियो तक गौल अनेक जनजातियो के क्रमिक आक्रमणो का क्रीडा–स्थल रहा है तथा इसी कारण से इन जनजातियो का विशाल मिश्रण–स्थल भी रहा है !

छठवीं शताब्दी ईसा पूर्व मे इस सुपरिभाषित क्षेत्र वाले देश (यदि आप ऐसे सम्बोधन की अनुमति दे तो) मे जो जनजातियॉ मौजूद थीं उन्हे लिग्यूस (Lıgures) या लिग्यूरियन कहा गया ह तथा ग्रीक ने उन्हे AıyveG और ये सपूण पश्चिम यूरोप मे ही फैल गए थे। तत्पश्चात्, दक्षिण से आइबेरियन (Iberıams) जनजाति के आगमन से लिग्यूरियन पृष्ठ–भूमि मे ठकेल दिए गए, यही नही, मारसियल्स (Marseılles) के क्षेत्र मे ग्रीको (Greeks) का आगमन सर्वाधिक महत्वपूर्ण था – गौल्स (Gauls) के जनक माने जाने वाले केल्ट्स (Celts) के आक्रमण–भी लिग्यूरियन को समाप्तप्राय करने मे उत्तरदायी तत्व

साबित हुए।

लिग्यूरियन की स्मृति एव नाम रोह्न (Rhone) के पूव मे तथा ऐल्प्स के दक्षिण ढलान पर आज भी शेष हैं - वे फ्राँस के उत्तर मे बसे थे। जबकि आइबेरियन जनजाति के लोग दक्षिणी फ्राँस के क्षेत्र मे अधिक बसे थे। अत रोह्न के पश्चिम मे, एक्यूटानिया मे तथा पायरनीस के दोनो तरफ आइबेरियन स्मृति चिहो के अवशेष अभी भी हैं।

वास्तव मे, दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व तक केल्ट् जनजाति वालो ने गौल को अपने देश के रूप मे स्वीकार नहीं किया था-वे लगभग पूण यूरोप मे ही फैले हुए थे। लगभग इसी समय गौल मे केल्ट्स जनजातियों को उत्तर से एक अन्य आक्रमणकारी जनजाति का सामना करना पडा इनका सशोधित नाम गौल्स था। वस्तुत शीघ्र ही, गौल के क्षेत्र मे, उत्तरी मैदानो से आइ सभी जातियो-जनजातियो को गौल कहकर ही सम्बोधित किया जाने लगा । अत तीसरी शताब्दी इसा पूव मे यूरोप के इस पश्चिमी क्षेत्र मे बसे लोग गौल अथवा गाल्स के नाम से पहचाने जाने लगे ।

यह भी सम्भव है, कि चौथी शताब्दी ईसा पूव तक जिन विभिन्न लोगो ने गौल को विजित किया वे थोडा-बहुत साम्य रखते थे। उनकी भाषाएँ लगभग मिलती-जुलती थी तथा आचार-विचार तक एक समान थे। अत मारीय मैदेलियन मारतिन का मत अधिक तार्किक प्रतीत होता है, कि, ये विजेता जिन्होने फ्रॉस के इस प्राचीन क्षेत्र पर विजयश्री प्राप्त की थी, एक जटिल गुट था जिसकी भाषाओ की समानता ही एक प्रमुख तत्व था।[1] उनकी राजनीतिक प्रभुसत्ता एक भूमध्यसागर को छोडकर शेष यूरोप मे फैली हुई थी- ऐल्प्स व एड्रियाटिक सागर से एशियाई रूस के घास के मैदानो अथवा स्टैप्स (Stenpes) तक तथा बाल्टिक सागर के तट से लेकर उत्तरी यूनान तक । पोइसन महोदय इन्हे आय मानते हैं।[2] वे तीसरी शताब्दी इसा पूर्व मे एशिया माइनर तक भा पहॅुच गए थे। कितु, अनुशासन के अभाव मे एव अपनी सस्थाओ की अन्तरनिहित अराजकता के कारणवश वे अपनी राजनीतिक प्रभुसत्ता को बनाए रखने मे सक्षम नहीं हो सके और अतत यूरोप के उसी पश्चिमी क्षेत्र मे पराजित होकर अपना गृह-राज्य मानकर रहने लगे ।[3]

इस समय ऐसा प्रतीत होने लगा कि राष्ट्र-राज्य की मौलिक आवश्यकताएँ व आधारभूत अर्हताओ की पूर्ति हो रही थी और गौल-एक पृथक राष्ट्र-राज्य

के रूप मे उभरने के लिए अगडाइ लेने लगा था। केल्ट् जनजाति ने अपनी पूवगामी जनजातियो को पूरी तरह से अपने मे समाहित कर लिया था-और उनको भी जो बाद के आक्रमणो के दौर मे इस क्षेत्र आए। अत यूनानी व रोमनों ने गौल मे बसे लोगो को एक ही नाम से सम्बोधित करना प्रारम्भ कर दिया-जो किसी जाति विशेष का द्योतक, न होकर इस सपूर्ण क्षेत्र व क्षेत्र-वासियो का सम्बोधन था[1] इस प्रकार से सगठित गौल लोगो के पास एक समुदाय के विकास का ठोस आधार भी था - उनके पास समान रीति-रिवाज, समान धर्म व धार्मिक मान्यताएँ, समान भाषा आदि सब कुछ था-बस एक ही तत्व का अभाव था, किंतु, वो ही तत्व मौलिक व अपरिहार्य था उनकी एकता का सगठित राजनीतिक स्वरूप तथा सस्थाओ का विकास जो इस सगठन के सातत्य के लिए आवश्यक था उनके काल मे गौलिक शहर थे, छोटे-छोटे गौलिक राज्य भी थे किंतु, कोइ गैलिक राष्ट्र-राज्य की परिकल्पना नहीं थी। प्रत्येक राज्य स्वतत्र और पृथक राजनीतिक ईकाई की भाँति कार्य करता रहता था तथा पारस्परिक सघष मे भी रत रहता था। उनके समाज की विशेषता ही थी-कट्टर व्यक्तिवाद तथा उसी के परिणामस्वरूप, राजनीतिक अराजकता !

रोम द्वारा गौल की विजय से न केवल गौल का राजनीतिक परिदृश्य परिवर्तित हो गया अपितु, उसके विकास-क्रम को एक नई दिशा तथा चेतना प्राप्त हो सकी ओर वह एक राष्ट्र-राज्य के रूप मे सगठित भाव से उभरने मे सफल हो सका। कैमिले जूलियन जैसे विद्वान रोम द्वारा राजनीतिक सत्ता हरण को व्यर्थ मे ही राष्ट्रीय स्वतत्रता पर तुषाराघात-अत इसे राष्ट्रीय अपमान मानते हैं'[4] क्योकि, जब राष्ट्र की अवधारणा ही विकसित न हो पाई हो-तो राष्ट्रीय अपमान कैसा? राम द्वारा विजय के फलस्वरूप ही गौल को एक राजनीतिक सविधान प्राप्त हो सका जिसके अभाव मे वह कभी भी एक राष्ट्र-राज्य के रूप मे उभरने मे समर्थ न हो पाता। गौलवासियो को एक सशक्त सगठन की आवश्यकता थी और, घनघोर व्यक्तिवादी होने के कारण वे स्वत तो कभी भी ऐसा सगठन निर्मित न कर पाते। अनेक शताब्दियो तक जन-जातियो का अक्रामक प्रवेश ऐसे ही होता रहता और वे भी क्रमश पूर्ववर्ती जनजातियो मे सम्मिलित होते रहते, किंतु, राष्ट्र-राज्य की परिकल्पना साकार न हो पाती। यही नहीं रोम द्वारा विजित होने के उपरान्त गौल को तीन-सौ वर्षों का लम्बा शाँति का काल प्राप्त हो गया, जो उनके लिए शाति का सर्वाधिक लम्बा काल का। राहईन-क्षेत्र मे सुरझा का अभेद्य कवच भी रोम ने ही प्रदान किया और सैन्य-अनुशासन भी। जहाँ गौल

ने फ्राँस के निर्माण के कुछ अस्फुट एव अव्यवस्थित तत्व ही प्रदान किए थे वहीं रोम द्वारा इस विजय ने व्यवस्था प्रदान कर दी।

रोम से आकर गौल को विजित करनेवाले प्रसिद्ध सेनानायक जूलियस सीजर के आग्मन से पूर्व, गौल के निवासी मूलत तीन भागो मे विभक्त से हो गए थे। ऐदुइ (Aeduı) जो सा ओन (Saone) लोइर (Loıee) एव साइन (Seıne) के मध्य के क्षेत्र पर आधिपत्य स्थापित किए हुए थे, अरवरनी (Arvernı) जो अधिकार अथवा मैत्री-सधियों के माध्यम से केद्रीय गौल के पठार के स्वामी थे। साथ ही, रोह्न (Rhone) लोइर (Loıve) एव एलाइर (Allıer) की घाटियो के मध्य के तमाम मार्गों पर भी उनका आधिपत्य स्थापित था। और अन्त मे सुइसियोन अथवा सोइसोन्नाइ्स (Suessıones or Soıssonnaıs) थे, जिनका आइन (Aısne) तथा ओइस (Oıse) के मध्य के क्षेत्र पर स्वामित्व था। अत शक्ति एव समृद्धि भूमध्यसागर से उत्तरी सागर के मध्य की व्यवसायिक धुरी पर एकत्रित और सगठित हो रही थी।[5] इन तीन वर्गों पर आधारित - सगठित गौल-निवासियो की पारस्परिक शत्रुता व वैमनस्य ने ही सीजर द्वारा गौल-विजय का मार्ग प्रशस्त किया।

किन्तु, सीजर के आगमन से पूर्व हमे मारसील्य्स (Marseılles) का इतिहास अथवा विकास-क्रम जानना आवश्यक हो जाता है, क्योकि, अपने निजी स्वार्थों की पूर्ति व व्यवसायिक हितो के रक्षार्थ उन्होने रोमन सैनिको को निरन्तर निमत्रित किया और अपने साथ-साथ गौल को भी अन्तत ले डूबे !

लगभग 600 ईसा पूर्व, भूमध्यसागर के लिग्यूरियन तट पर, आइ 'ओनिया (Ionıa) के एक शहर फोसिया (Phocea) से आए लोगो ने मारसील्य्स की स्थापना की। प्रारम्भ मे यह एक शक्तिहीन उपनिवेश था जहाँ आन्तरिक क्षेत्र मे विभिन्न जन-जातियो से उनकी प्रतिद्वन्दिता चलती रही, वहीं, दूसरी तरफ सामुद्रिक व्यवसाय मे कारथेज (Carthage) एव एट्रूस्कन (Etruscans) निवासियो की कट्टर प्रतिद्वन्दिता का भी सामना करना पडा ओर, शनै शनै अनेक बदरगाहो व बाजारो की स्थापना के साथ-साथ, निचले राइह्न क्षेत्र पर आधिपत्य स्थापित कर के बबर पश्चिम तथा हेलेनिक पूर्व के मध्य का समस्त व्यापार अपने हाथो मे केद्रित कर लिया। हाँलाकि मारसील्य्स ने गौल का हैलेनीकरण नहीं किया फिर भी, उसने इतना तो कर ही दिया कि पहली बार गौल के समस्त दक्षिण तट पर हैलेनिक सीमा निमित कर दी तथा इस प्रकार, गौल के क्षेत्र को पूर्वी

भूमध्यसागर की सभ्यता के प्रभाव के अन्तगत ला ही दिया और यह प्रभाव इसाइ मत के प्रथम प्रसार धर्म-युद्धो पुनजागरण से होता हुआ काफी अरसे तक सुस्पष्ट रूप से यहाँ स्थापित रहा।

अन्तत मारसीयल्स के कारण ही रोमवासी गौल मे प्रविष्ट हो सके। सर्वप्रथम उसने इन रोमन सैनिको का उपयोग अपने प्रतिद्वन्दियो-एट्रूस्केन् व कारथेज-वासियो के अभियानो के प्रतिरोध के लिए किया। फिर उसने अपने-आपको रोम व स्पेन के मध्य व्यापार का मध्यस्थ बना डाला और, तदुपरान्त, उसने गौल की विभिन्न जनजातियो को नियत्रित करने हेतु रोमन-सैनिको को आमत्रित कर दिया। और, साथ ही, अपने तथा अपने साथ-साथ गौल की परतत्रता को भी निमत्रण दे डाला।



[2]

गौल पर रोमन आधिपत्य का काल

लूसियन रोमियर के मतानुसार रोम-वासियो ने मात्र यश के लिए अपनी सभ्यता का प्रसार नही किया। उनके गौल विजित करने के निश्चित, किंतु, भिन्न उद्देश्य थे। उन्हे भूमि की तलाश थी जो उन्हे यहॉ सुलभ ही उपलब्ध थी ससाधनो की तलाश थी, जिसका वे भरपूर लाभ उठा सके तथा, निरन्तर आक्रमणो के विरूद्ध एक सुरक्षा-आधार भी गौल के रूप मे प्राप्त करने की सम्भावना प्रतीत हो रही थी और फिर जैसा कि ऊपर स्पष्ट कहा जा चुका है मारसीयल्स की नीति का भी रोम-वासियो के गौल-आगमन मे कम योगदान नहीं था। पूव मे भी रोम-वासियो अथात् सैनिको ने समय-समय पर धन के बदले मे सेन्य-सहायता प्रदान की थी किंतु, अब की बार उनकी नियत और इरादे बिल्कुल ही फक थे। उन्हे जहॉं एक तरफ अपने गरीब नागरिको के लिए जमीन की तलाश थी वहीं, दूसरी तरफ अपने व्यापारियो के लिए विकास-द्वारो की आवश्यकता भी थी रोमन-सैनिक आए-उन्होने दो युद्धो के सहारे रोहन् (Rhone) घाटी साफ कर दी-गौल वासियो को पूण पराजित कर अखर्नी के शासक बिट्युइट (Bituit) को विश्वासघात द्वारा गिरफ्तार कर लिया।

सवप्रथम अपने-आप को रोहन् से पूरब वाले क्षेत्र मे सुस्थापित करने के पश्चात्, नदी पार कर के उन्होने अपनी विजय-पताका स्पेन की सीमाओ तक विस्तृत कर दी और गौल के समस्त भूमध्य-सागरीय क्षेत्र पर रोमन आधिपत्य स्थापित हो गया और गौल का औपनिवेशिकरण प्रारम्भ हो गया। विजित क्षेत्रो मे रह रही जनजातियो के साथ विजेताओ का व्यवहार उनकी योग्यता व समसामयिक परिस्थितियो पर निर्भर था। विजेताओ द्वारा लगाए जाने वाले अधिभार और अवैध वसूली का बोझ जहॉ इन जनजातियो पर पडा वहीं उन्होने इसके विरूद्ध विद्रोह भी किए और अतत ये प्रान्त लैटिनीकरण का महत्व समझ सके।

रोमवासियो के दक्षिण गौल में इस प्रकार से बस जाने के लगभग पच्चीस वर्ष पश्चात् यह सुस्पष्ट हो गया कि स्वतत्र गौल-विभक्त और दुबल होकर

मध्य युरोप से हो रहे निरन्तर बबर आक्रमणो से कैसे अपने-आप को सुरक्षित एव सरक्षित रख पाएगा। गाल के लोगो ने ही रोमन सहायता की आशा करनी शुरू कर दी और इन परिस्थितियो मे 1 जनवरी 58 इसा पूव को गौल के रोम-अधिकृत क्षेत्र मे प्रशासन का दायित्व सँभाल चुके जुलियस सीजर को अपना सुनहरा अवसर प्राप्त हा गया। कितु, सपूण गौल विजित करने मे इस महान् विजेता को भी अनेक वष लग गए। जबकि सीजर के ही मतानुसार गौल की सनाओ मे अनुभवहीनता व एक सीमा तक अनुशासन-हीनता भी थी और उसकी अपना सैन्य-टुकडियाँ अथवा लीजन्स (Legions) पेशेवर सैनिको द्वारा निमित थीं। गाल की सेनाओ की परम्परागत शैली रोमन-विकसित तकनीकि अनुशासन एव अनुभव क आगे टिक नही सकी। साथ ही सुदृढ गुप्तचर व्यवस्था के कारण वह गाल की योजनाओ की पूण जानकारी प्राप्त कर लेता था और उसका लाभ उठान म भी सफल था। जूलियस सीजर ने 58 इसा पूव से 51 इसा पूव तक युद्धो के द्वारा गौल विजित किया-इस कार्य का सम्पादन दो चरणो मे सम्पन्न हुआ-प्रथम चरण मे गौल लोगो के लिए जूलियस सीजर एक सरक्षक था जो बबर जनजातियो के आक्रमणों से मुक्ति दिलाने आया था। किंतु, गौल-अभियान के दूसरे चरण मे, सीजर अपने वास्तविक स्वरूप मे उभर कर आया। गाल-वासियो ने उस एक विजेता के रूप मे पाया जो उन्हे परतत्र करने आया था। सीजर ने युद्वारम्भ-एदुई (Aedui) के अनुरोध पर, हेलवेशियन (Helvetian) आक्रमण का प्रतिरोध करने हेतु किया था। वह शनै शनै सैन्य- अभियानो का नेतृत्व करते-करते उत्तरी सागर के तट तक पहुँच गया और अब उसका वास्ता उत्तरी गोल निवासियो से पडा जो अपने वनो के रक्षार्थ उठ खडे हुए, क्तिु, सीजर की श्रेष्ठ सेनाओ के आगे उनका बस नहीं चल सका। कितु, 54 इसा पूर्व तक गौल - वासियो को सीजर के वास्तविक उद्देश्यो की जानकारी मिल गइ और, अन्ततोगत्वा, अपरिहार्य होकर ही रहा तथा स्वतत्रता के सग्राम का श्रीगणेश हो गया। ऐब्यूरोन्स (Eburones) के प्रमुख एम्बिओरिक्स के नेतृत्व मे, उत्तर-निवासी सीजर के विरूद्ध उठ खडे हुए और, शीघ्र ही, उनकी सफलता से प्रभावित और प्रेरित होकर, ऐड्रेनेस (Ardennles) से लोयर (Loire) तक का क्षेत्र विद्रोही हो गया। प्रतिक्रियास्वरूप एक बार फिर सीजर ने आक्रमण किया और उनका सफलतापूर्वक दमन किया। कितु, गौल के निवासी षडयन्त्रकारी हो गए और सुनियोजित ढग से विद्रोह की शुरूआत 52 ईसा पूर्व मे आरवर्नी (Arverni) के नए प्रमुख वसिन्ज्टोरिक्स (Vercingetorix) के नेतृत्व में हुइ।

ऐदुइ, रेमी एव लिगोन्स को छोडकर, शेष सभी गौलवासी एकीकृत रूप से रोम के आधिपत्य के विरूद्ध सघषरत हो गए और इस युवा सेनापति ने सीजर के सौभाग्य को अनथ के कगार तक तो ला ही दिया था। उसने समझ लिया था कि, उन्हे पराजित करने के लिए यह आवश्यक था कि उनकी एकीकृत शक्ति को विभाजित करके निरन्तर परेशान किया जाए व थकाकर विनष्ट किया जाए प्रत्यक्ष युद्ध से वह सदैव बचता रहा तथा, विद्रोही लोगो के मध्य सवाद बनाए रहा। किंतु, सीजर एक अनुभवी सेनापति था, जिसने प्रारम्भिक पराजयो के पश्चात् अपनी सैन्य-शक्ति पुनर्गाठित करनी शुरू कर दी और, अन्ततोगत्वा, गौल के स्वतत्रता सग्राम को दबाने मे पूणत सफल हो गया।

इसके पश्चात् तो लगभग पॉच शताब्दियो तक गौल रोम पर आश्रित रहा। वस्तुत यह भी स्पष्ट है कि, यदि गौल-वासियो ने बबर आक्रमणा के विरूद्ध सीजर की सहायता न ली होती तो भी आक्रान्ताओ से तो उनका राज्य पद-दलित होता ही तब शायद जनसख्या व जनजातियो के परिवतना से गौल का स्वरूप ही बदल जाता। जबकि, रोमन प्रभाव के चलते व इसाइ-धर्म से भी प्रभावित होकर गौल इतना सक्षम तो हो ही गया था कि बाद के आक्रमणो के दौरान (जो रोमन साम्राज्य के पतन के काल मे शुरु हुए थे-) हॉलाकि उनका प्रतिरोध तो सफलतापूर्वक न कर सका था फिर भी उन्हे अपनी सभ्यता के रग मे ढालने मे सफल रहा।

ताकिक निर्माण सस्थाओ का विकास रोम की सास्कृतिक विशेषता थी। उन्होने न तो गौल का व्यक्तित्व निर्मित किया और न ही उसकी एकता की दिशा मे कोइ ठोस कार्यवाही की। किंतु, उन्हे एक ताना-बाना व व्यवस्था प्रदान करके रोम-वासियो ने गौल का सुस्पष्ट रूप से परिभाषित अवश्य कर दिया। रोम के आधिपत्य के बाद ही लोगो को ज्ञात हो सका कि गौल की भौगोलिक सीमाऍ क्या हैं -जहाँ प्रकृति ने स्वाभाविक सीमाऍ निधारित नहीं की थी - उत्तर व पूव मे-रोम-वासियो ने सीमाएँ निश्चित कर दीं और आश्चर्यजनक रूप से ये सीमाऍ आज भी वैसी ही हैं-बावजूद सैकडो युद्धो तथा अनेक परिवतनो के। वस्तुत रोम द्वारा प्रदत्त गौल की सीमाऍ यूरोप की सवाधिक रक्त-रजित सीमा प्रमाणित हुई हैं।

इस प्रकार से भूमध्यसागर के विशाल तट पर एक विशिष्ट साम्राज्य की स्थापना सम्भव हो सकी जिसके अतर्गत विभिन्न सभ्यताएँ पनप सकी-तो उसमे रोम द्वारा प्रदत्त एक सरक्षात्मक व्यवस्था का भी महत्वपूर्ण योगदान था। रोम

ने पराजित लोगो के सस्कार-रिवाज वैसे ही रहने दिए, किंतु, अपनी सेना व अपनी विधि-सहिता सब पर समान रूप से थोप दी। किंतु, यह भी एक ऐतिहासिक विरोधाभास है, कि, विजेता देश ने अपने सुदृढ व सशक्त सस्थाओ के माध्यम से विजित देश की स्वतत्रता को ही सरक्षित करने का योगदान दिया। रोम ने ही अपने इस नव-विजित प्रान्त को एक एकीकृत मुद्रा-व्यवस्था प्रदान कर दी। नइ सस्थाओ के माध्यम से नए राज्य की अवधारणा परिपक्व होने लगी तथा आन्तरिक एकता के नए युग का सूत्रपात हुआ। जमनी मे रोमन-प्रवेश के प्रयास की असफलता ने गौल के एकीकरण को और भी सहायता पहुँचाइ-क्योकि, तब गौल, बबर जमनी के विरूद्ध रोमन साम्राज्य का सीमान्त प्रहरी बनाया गया। और, इसके अतिरिक्त, विकल्प भी क्या था ? जूलियन जैसा विद्वान भी मानता है कि रोमन विजेताओ ने गौल की सीमा पर एक स्थायी शत्रु को छोडकर गौल-वासियो को एकता तथा मतैक्य का ज्ञान प्रदान कर दिया। जब औगस्टस (Augustus) और उसके उत्तराधिकारियो ने राह्इन नदी के तट पर रोमन साम्राज्य की सीमा निधारित कर दी तो उसी समय से उन्होने गौल का भविष्य भी पूव-निधारित कर दिया।

रोमन साम्राज्य के अग बनकर व्यतीत किया गया काल कृषि के लिए खासतौर पर अत्यधिक समृद्धि का काल था। रोम के ही निर्देशन मे गौल-वासियो को यह आभास हो पाया, कि इश्वर ने उनकी जमीन को कितनी उवरता प्रदान की है। इस प्रकार, आर्थिक सम्पन्नता (जो पूर्व मे भी समृद्ध-विस्तृत व्यापार से प्राप्त थी) को एक ठोस आधार प्राप्त हो गया। रोम के आधिपत्य काल मे गौल की सेनाएँ - उस सैन्य-सगठन व अनुशासन से अवगत हो उसकी अभ्यस्त हो गईं जिसने उनकी निडरता व लडाकू-क्षमता मे चार चॉद लगा दिए। इसीलिए रोमन साम्राज्य की गौल को देन अथवा उसके ऐतिहासिक विकास मे योगदान का मूल्याकन करते हुए मारीय- मादेलियन-मारतिन ने ठीक ही कहा है, कि इससे गौल की तीन प्रमुख विशेषताएँ मुखरित हो गइ थीं उनकी भूमि का विशेष स्वरूप व उवरता उनकी सेनाओ की अभूतपूव क्षमता तथा साधारण बुद्धिमता शाब्दिक-सामर्थ्य एव वाक्-पटुता, जिसने प्रसिद्ध न्यायविदो अथवा विधिवेत्ताओ को भी जन्म दिया।[?] इसी प्रकार शॉति व्यवस्था प्रदान करके, रोमन प्रशासन ने गौल वासियो को एक ही स्थान पर निवास या प्रवास करने का प्रोत्साहन प्रदान किया जिससे अपनी भूमि के प्रति आकर्षण व मातृ-भूमि का सा प्रेम या भावना जागृत हुई,जिससे आगे चलकर फ्राँस मे राष्ट्र-राज्य का उद्भव सम्भव हो सका।

साम्राज्य का पतन - ईसाई मत का प्रचार-व-बर्बर आक्रमण

तीसरी शताब्दी के अन्त के करीब रोमन साम्राज्य अनेक घटनाओ से अत्यधिक प्रभावित हुआ-प्रभावित हुआ प्रारम्भ मे तो ऐसा प्रतीत हुआ कि ये साधारण घटनाएँ मात्र हैं जिनके कोइ दूरगामी परिणाम नहीं होगे कितु, इन्हीं ने रोमन साम्राज्य की पूण सरचना को ही परिवितित कर दिया। जैसे ही साम्राज्यी पद पर नियुक्ति के निश्चित नियम का परित्याग रोम मे हुआ वैसे ही उत्तराधिकार के लिए, प्रत्येक सम्राट के पश्चात्, प्रतिद्वन्दिताऐ तथा खूनी सघर्ष प्रारम्भ हो गए, जिससे राजनीतिक अस्थिरता व्याप्त हो गइ फिर बबर जनजातियो ने भी राइन की सुरक्षा को ध्वस्त कर दिया और वे गौल मे फैल गए-जिससे विनाश लीला शुरू हो गइ और, अन्त मे इस फेलती हुइ अराजक्ताओ ने राजनीतिक विद्रोहो को जम दिया-जिससे आरजकता भी पूण हो गइ।

रोमन समाज मे व्याप्त इस अराजकता ने समाज मे भेद-भाव को जन्म दिया-एक तरफ समृद्ध सम्पत्ति-सम्पन्न लोग थे तो दूसरी तरफ जन-सामान्य जो लगभग दासता के स्तर पर जी रहे । इस अराजकता ने सामन्तवाद कों प्रेरित किया क्योकि मूलत कृषक देश मे ग्रामीण क्षेत्रो मे अधिक सुरक्षा और सम्पन्नता अभी शेष थी, अत शहरी जनसख्या के एक भाग ने भी ग्रामो की तरफ पलायन शुरू किया और इस पूरी प्रक्रिया ने विकेद्रीकरण को बल प्रदान करके छोटी-छोटी स्वतत्र राजनीतिक इकाइओ का जन्म दिया।[10]

जिस समय समाज पर से राजसत्ता का नियत्रण शिथिल होने लगा-हाँलाकि, वे चाहते थे और प्रयासरत थे, कि यह नियत्रण बना रहे-उसी समय एक ऐसी नइ शक्ति का इस क्षेत्र मे प्रादुभाव हुआ, जिससे आस्था जुडी थी और यह था इसाइ मत। ईसाइ मत ने लोगो का ध्यान व आस्था ईश्वर की और खींचकर राज्य से विमुख कर दिया जिससे राज्य की मान्यता और साख पर और भी प्रतिकूल प्रभाव पडा।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि पॉचवी शताब्दी (इसवी) के बर्बर आक्रमणो ने रोमन-गौल राज्य का हिसात्मक अन्त अवश्य किया, कितु, इस अन्त अथवा पतन की प्रक्रिया तो-जैसा ऊपर विदित हो ही चुका है - दो सौ वष पूव ही प्रारम्भ हो गइ थी। वस्तुत साम्राज्य का विभाजन तो तीसरी शताब्दी मे ही धीरे-धीरे शुरू हो चुका था।

गौल मे इसाई धर्म रोम से नहीं, अपितु, पूर्व से आया-यूनान अथवा सीरिया

के व्यपारिक जहाजो के माध्यम से- जो प्रोवेन्स (Provence) के तट पर नित्य आते थे। शीघ्र ही ये दक्षिण व मध्य गौल मे फैल गए और राह्इन क्षेत्र तक हम आसानी से ईसाई समुदाय के प्रमाण प्राप्त करते हैं। सर्वप्रथम इन्होने शहरी क्षेत्रो मे अपना प्रभाव स्थापित करने मे सफलता प्राप्त की-ग्रामीण जनता उस भाषा से कदापि परिचित नहीं थी, जिसमे अधिकाशत प्रचार होता था-वे लैटिन तो कम ही जानते थे-यूनानी से तो बिल्कुल ही अनिभिज्ञ थे। अत ग्रामीण जनता का धर्म परिवर्तन बहुत धीमी गति से ही सम्भव हो पाया। अत इसाई धम को गौल के गावो की तुलना मे-शहरो मे अधिक अनुकूल वातावरण मिला।

एशिया माइनर (Asia Minor) से आ रहे धर्म प्रचारक तो आस्था - हैलेनिक (Hellenic) सस्कृति के मूल तत्व भी लाए- अधिक मानवीय, प्रभावशाली व सम्मोहक होने के कारण-वे लैटिन धर्माधिकारियो से भी अधिक सफल रहे, लेकिन उनका एक गुण उससे भी अधिक प्रभावकारी रहा और वो था-दानशीलता। अत वे एक प्रकार से पूरे रोमन साम्राज्य के नैतिक मूलाधार पर ही प्रहार कर रहे थे और इसी के परिणामस्वरूप प्रारम्भिक प्रचारको का अन्त बहुत क्रूर रहा! कितु, शहादत के लिए तत्पर प्रचारको को इससे बल और प्रेरणा ही प्राप्त हुई जिसके फलस्वरूप गौल मे तीसरी शताब्दी के अन्त अथवा चौथी शताब्दी इसवी के प्रारम्भ में, बीस बिशप-क्षेत्र निर्धारित होकर बीस बिशप कार्यरत् हो गए थे। फिर 313 ईसवी मे जब सम्राट कौन्सटैन्टाइन (Constantine) ने मिलान की विधि (Edict of Milan) के द्वारा इसाई मत को साम्राज्य मे मान्यता प्रदान कर दी तो धर्म परिवतन मे एक बाढ सी आ गई। बिशपो को एक नैतिक अधिकार प्राप्त हो गया-यहाँ तक कि, रोमन, गौल के प्रशसनिक पतन के दौरान वे शहरो के सरक्षक की भूमिका का भी निर्वहन करने लगे-गौल के सामाजिक जीवन के भाग्य निर्माता तो वे हो ही गए !

रोमन साम्राज्य के विभाजन के समय तक तो यूनानी शहरो व इटली के अतिरिक्त गौल ही ईसाई मत का मुख्य आधार था। फ्रॉस मे इसाई मत के कुछ अवशेष आज भी मिल जाते हैं-सबसे प्राचीन है मिनरवे (Minerve) का वह शिलालेख जो अब नारबोन सग्रहालय मे सुरक्षित है-जिससे स्पष्ट होता है कि, पाँचवी शताब्दी के मध्य से पूर्व बिशप रसटिकस ने एक पूजाघर का निमाण करवाया था। सबसे प्राचीन-वास्तविक चच छठवीं शताब्दी का है-जो पोइटस मे सेट जौन की बैपिस्ट्री के नाम से प्रसिद्ध है।

ग्रामीण क्षेत्र मे 'साइ-धम का प्रचार ईसा की चौथी शताब्दी से ही प्रारम्भ हो पाया। इस काय का श्रीगणेश सेट मार्टिन नामक एक साधु ने किया जो उससे पूव एक सैनिक व सेनाधिकारी रहा था। उनकी दयालुता मानवीयता तथा दानशीलता के चलते उन्हे प्रसिद्धि प्राप्त हुई जो इसी बात से प्रमाणित हो जाती है, कि आज भी फ्रॉस मे सेट मार्टिन के नाम के सैंकडो चच मिल जाते हैं। सेट मार्टिन के शिष्यो ने उनके धम-प्रचार के काय को और भी गति प्रदान की तथा अभूतपूव सफलता भी प्राप्त की।

ऐसा साम्राज्य जिसका नियत्रण शिथिल पड रहा था जिसका अन्तरिक ढॉचा कमजोर हो गया था जिसमे राजनीतिक अस्थिरता व्याप्त थी-स्वभावत बाह्य आक्रमणो के लिए आकषण स्थल हो ही गया। अत तीसरी शताब्दी के अन्त होते-होते अनेक जमन जनजातियॉ साम्राज्य के पश्चिम क्षेत्र मे प्रविष्ट होकर बस गई थीं। उन्होने मजदूरो व कृषक-मजदूरो के रूप मे कार्य करना भी प्रारम्भ कर दिया था। उन्हे सैनिक के रूप मे भी बडी सख्या मे स्थान मिलने लगा। हूण नेता अटीला के नेतृत्व मे हॉलाकि बबर सेनाओ को निष्फल व 451 इ० मे पराजित भी होना पडा था। किंतु, तीन दशक बाद तो वे यत्र-तत्र-सवत्र प्रतीत हो रहे थे।

इस प्रकार पाचवी शनाब्दी के अन्त तक रोमन-गौल तीन जर्मन राज्यो मे विभक्त हो-पूरी तरह से जर्मन-गौल मे परिवर्तित हो चुका था। प्रथम क्षेत्र था-लौइयर (Loıvre) से पायरनीस तक, भूमध्यसागर से महासागर तक तथा, स्पेन भी विजित कर लिया गया था-यहॉ पर विसीगौथ्स (Visigoths) का आधिपत्य था तथा इनकी राजधानी टूलूस (Toulouse) थी, दूसरे क्षेत्र मे रोह्न व सो 'ओन की लगभग समस्त घाटियॉ सम्मिलित थीं-इसे बुगुन्डियो का राज्य कहते थे, तीसरा शेष क्षेत्र सेलियन फ्रॉंक (Salıan Franks) लोगो का था-इनके अधीन समस्त उत्तरी भाग था (राह्इन से लोइर, तथा मोरवन से उत्तरी सागर तक)। उनका शासक ही फ्रॉस के प्रथम वश का सस्थापक था।

प्रारम्भिक आक्रमणो अथवा बलपूवक प्रवेश के पश्चात् तो, बाद मे ये बबर जनजातियॉ शनै शनै आती रहीं और यहॉ पर बसती रहीं जहॉ रोम के प्रभाव मे शहरीकरण की प्राक्रिया सशक्त हुइ थी वहीं फ्रॉक-शासन जो सैन्य व ग्रामीण स्वरूप का था-उसके कारण अन्ततोगत्वा सामन्तवाद की प्रवृत्तियॉ ही सशक्त हो सक्तीं थीं। साथ ही विजयश्री प्राप्त एव आधिपत्य स्थापित करने की शक्तियो

का प्रवाह उत्तर से हो रहा था, अत फ्राँस की एकता भी उत्तर से ही प्रभावित होनी थी। इसीलिए लियौन्स (Lyons) के स्थान पर पेरिस नई राजधानी हो गई। इस पूरी प्रक्रिया मे एक विरोधाभास भी मिलता है- वे क्षेत्र जो रोम के अधीन सुलभता से आ गए-उन्हीं क्षेत्रो ने फ्राँसीसी एकता मे सम्मिलित होने मे सर्वाधिक विलम्ब किया, उदाहरणार्थ दक्षिणी दक्षिण, पश्चिमी एव पश्चिमी क्षेत्र-।

ऐसा प्रतीत होता है तथा इतिहास ने प्रमाणित भी कर दिया है, कि, इन तमाम बर्बर जनजातियो मे फ्राँक ही युद्ध के लिए सर्वाधिक अनुशासित व प्रशिक्षित थे। उनका नेतृत्व 481 ई0 से क्लोविस (Clovis) को अपने पिता चाइल्ड्रिक (Childeric) की मृत्योपरान्त प्राप्त हुआ। 486 ई0 मे उसने अपना गौल विजय अभियान का सफलतापूवक श्रीगणेश किया। क्लोविस का दिमाग बहुत तेज था उसकी दूरदृष्टि समझ, विश्लेषणात्मक क्षमता व सामरिक दक्षता अद्भुत थी। उसने यह तक भली-भाँति समझ लिया था कि, यदि, उसे कैथोलिक धर्माधिकारियो का समर्थन व आम-जनता की सस्तुति प्राप्त हो जाए तो उसका गन्तव्य सुलभ हो जाएगा अत उसने 496 ई० मे ईसाई मत स्वीकार कर लिया। बर्गन्डी के शासक गोडेबाउड जो कि एक कट्टर इसाई परिवार का था- उसकी पुत्री से बिशपो ने क्लोविस का विवाह भी करवा दिया और इसी के पश्चात्, 500 ई० मे उसने बर्गुन्डी के शासक को, तथा 507 ई0 मे विसिगोथ शासक को पराजित (कर मृत्यु के घाट भी उतार दिया) करने मे सफलता प्राप्त की। इसी प्रकार, शेष प्रमुख फ्राँक जनजातियो के प्रमुख को पराजित कर अपने मार्ग से हटा दिया। इस प्रकार क्लोविस ने एक विशाल गैलो - जैर्मैनिक (Gallo-Germanic) राज्य की स्थापना कर ली थी, जिसमे सपूण गौल के अतिरिक्त, पायरनीस से लेकर वेसर, (weser) तक का जर्मनी का क्षेत्र भी सम्मिलित था। उसे गौल के ईसाई बिशप का समर्थन सदैव मिलता ही रहा। 511 ई० मे पेरिस मे उसकी मृत्यु हो गइ और यही चर्च मे (जो बाद मे सत जनेवीयूव (St Genevieve) के नाम से प्रसिद्ध हुआ) दफना दिया गया।

क्लोविस ने एक प्रकार से गौल के इतिहास की धारा ही मोड दी। यह निश्चित हो गया कि अब गौल का शासन व सगठन दक्षिण से उत्तर की ओर नहीं होगा अपितु, उत्तर से दक्षिण की ओर होगा तथा अपने फ्राँस विजेताओ के नाम पर उसका भी नाम भविष्य मे फ्राँस ही हो जाना है ।

□

[3]

फ्राँक-आधिपत्य-इस्लाम का आक्रमण-फ्राँस राज्य की शुरुआत

क्लोविस के वशजो-उत्तराधिकारियों जिन्हे प्राय मैरोविन्जियन (Merovingian) कहकर सम्बोधित किया जाता है - ने लगभग दो सौ चालीस वर्षों तक शासन किया - प्रभावकारी शासन तो वस्तुत डेढ शताब्दी तक ही स्थापित रहा-तत्पश्चात्, वास्तविक सत्ता महल के मेयरो के हाथो मे स्थानातरित हो गई जिन्होने कैरोलिग्यिन (Carolingian) वश की नींव डाली।

मैरोविन्जियन काल के गौल के इतिहास की वास्तविकता तीन प्रकार के विरोधाभासो को प्रतिबिम्बित करती है औस्ट्रेशिया (Austrasia) नामक पूर्वी क्षेत्र, जो कि जर्मैनिक प्रभाव का क्षेत्र था तथा न्यूस्ट्रिया (Neustria) था पाश्चिमी क्षेत्र, जो केल्टिक एव रोमन पारम्पराओ को सजोए हुए था फ्राँक क्षेत्र अर्थात् औस्ट्रेशिया व न्यूसट्रिया का सम्मिलित प्रान्त तथा, फ्राँक के सैन्याधिकार वाले एक्यूटैनिया एव बर्गुन्डी के मध्य प्रतिद्वन्दिता सुस्पष्ट थी, और अन्तत , बर्गुन्डी तथा एक्यूटैनिया के ही मध्य परस्पर विरोध। अत इस पूर्ण विभाजन से ऐसा प्रतीत होता है, कि, मैरोवियन शासक-गौल के नहीं अपितु फ्राँस के शासक थे।[11] इस काल मे भी ईसाई चर्च के स्तर मे वृद्धि ही होती रही। वह मात्र धामिक व नैतिक जीवन पर ही प्रभुत्व नहीं जमाए हुए था-बल्कि समकालीन बौद्धिक जीवन का प्रतिनिधित्व भी करता था।[12]

मैरोवियन शासक अपने लुंज-पुंज हाथो मे सत्ता केद्रित न रख सके और वह अधिक से अधिक महल के मेयरो के हाथो मे सिमटती चली गई। आखिर महल के मेयर के क्या कार्य थे ? सपूर्ण फ्राँक राज्य प्रशासन की भाँति ही महल के मेयर के कार्य भी सुपरिभाषित नहीं थे। वस्तुत , यह तो उस व्यक्ति पर पूणत निर्भर था जो मेयर के पद पर आसीन हो। जैसे-जैसे इस वश का पतन सुनिश्चित गति से होने लगा, वैसे-वैसे महल के मेयर मत्री से भी अधिक

महत्वपूण हो गए-वे शासक की ही भॉति काय करने लगे थे-कर-निधारण, उनकी वसूली सैन्य सेवाओ की मॉग अथवा उसके लिए आदेश देना युद्ध-घोषणा शॉति-स्थापना, तथा विदेश सम्बधो का निधारण आदि।

अत क्लोविस के वशजो के हाथ से सत्ता-क्रॉति के कारण नही बल्कि' अपने कारण गइ-क्योकि, अपनी अक्षमता के कारण वे उन कार्यो को बिल्कुल भी सम्पादित नही कर सके जिसके लिए राजतत्रीय व्यवस्था को स्थापित कर मान्यता प्रदान की गइ थी। व्यवस्था स्थापित करने के स्थान पर उनकी दुबलता, पारस्परिक मतभेदो व भ्रष्ट आचरण ने अराजकता को ही प्रोत्साहित किया। अपने आप को शिक्षित करने के स्थान पर वे चच को ही भ्रष्ट सस्था मे परिवतित करने मे सलग्न हो गए। वे इसाई मत के सरक्षक-प्रचारक का काय भी नही कर पाए, अपितु, उनके ही काल मे बबर जातियो के आक्रमणो से गिरजाघरो का भी विनाश हुआ और चच ने अपनी सुरक्षा के दृष्टिकोण से अपना राजनीतिक विकल्प भी निधारित करने का निश्चय किया।

वस्तुत आठवीं शताब्दी के आगमन के काल मे यह निर्णय अपरिहार्य हो चला था क्योकि इसाइयो को पश्चिम के साथ ही उत्तर, पूव एव दक्षिण स भी खतरे के चिह दृष्टिगोचर होने लगे थे। कितु, दक्षिण मे यह खतरा सर्वाधिक घातक साबित हो सकता था-अरब विजय का अग्रिम चरण बस यहीं पडना था-यह युद्ध तथा विकास का तार्किक क्रम था। अत इस पश्चिम की सुरक्षा कौन करता ? यह प्रश्न यक्ष प्रश्न का रूप धारण कर चुका था - फ्रॉंक शासित गौल हतोत्साहित हो इस दायित्व के लिए पूर्णत अयोग्य था। यह एक सकट की घडी मे योग्यता की तलाश का समय था। और अन्तत , इस काल की आवश्यकतानुसार व्यक्तिन्व वाला व्यक्ति भी तेजी से उभरने लगा - यह था- एक फ्रॉंक ही - चाल्स - मार्टेल (Charles Martel) जिसका अतीत आपराधिक था। तीन वर्षों मे उसने अपनी शक्ति इतनी सगठित कर ली थी, कि, उसका आधिपत्य आस्ट्रेशिया न्यूस्ट्रिया तथा बगुण्डी तक स्थापित हो गया था। वह एक्यूटैनिया व सेक्सन को भी पराजित कर चुका था। अत 732 ई० मे उसने अरब सेनाओ का प्रतिरोध किया तथा उन्हे पूर्णत पराजित कर, गौल को अन्तत इस्लाम से सुरक्षा प्रदान कर दी। इसी कारणवश वह धर्म का सरक्षक घोषित हो चर्च की सहानुभूति अर्जित करने मे भी सफल रहा। इसी के छोटे पुत्र 'पेपिन द शौर्ट' (अथवा छोटे कद-वाला) ने ईसाई धर्म के लिए ही-उनकी सुरक्षा-

सरक्षण हेतु-कार्य किए और लाभ व यश भी कमाया - 751 इ० मे वह नया शासक निवाचित हो गया। पोप स्टीफन द्वितीय जो लोम्बाड आक्रमणो से आतकित था-उसने भी पेपिन से सहाएता माँगी और उसने सहायता का प्रण लिया। पोप ने 28 जुलाइ 754 इ० को पेपिन को शासक घोषित किया तथा यह भी उद्घोषणा की कि उसका विरोध करने वाला धम से भी च्युत माना जाएगा-और इस प्रकार एक निवाचित शासक - दैवि - सिद्धान्त के राजत्व से परिपूण शासक मे परिणित हो गया।[13]

उसी वष (754 इ०) पेपिन ने पोप का ऋण भी उतार दिया। सवप्रथम उसने लोम्बार्डो से बातचीत करने का प्रयास किया फिर आल्प्स पार करके सूसा मे उन्हे पराजित कर, रेवेना तथा बाइजनटाइन साम्राज्य के ग्यारह अन्य शहर पोप को प्रदान कर-उस पैपल राज्य की स्थापना कर दी जो 1870 ई० तक वैसे ही चलता रहा था। शेष जीवन वह अपने राज्य को सुदृढ करने व व्यवस्थित करने मे व्यस्त रहा तथा 24 सितम्बर 768 ई० मे चौवन वर्ष की आयु मे उसकी मृत्यु हो गई। उसी का बडा पुत्र चार्लमेन (Charlemgne) अथात चाल्स-बडा था। वह एक बडे राज्य का उत्तराधिकारी बना जिसमे सपूर्ण प्राचीन गौल व लगभग समस्त जमनी भी सम्मिलित थे। विरासत के अतिरिक्त वह सौभाग्यशाली भी था, कि, एक पूण निरकुश शासक की भाँति लगभग आधी शताब्दी या पचास वर्षों तक शासन करने का अवसर मिला था। उसने युद्ध खूब लडे व जीते कितु ये नवीन विजयो के युद्ध न होकर शाति व्यवस्था कायम रखने या अवज्ञाकारिता उन्मूलन के युद्ध थे। कितु, हा उसी के शासन मे इटली भी व्यवहारिक-रूप से उसके अधीन आ गया था।

अब चार्लमेन ने अरबो का प्रतिरोध अभियान शुरू किया, जो गौल के दक्षिण को आतकित किए हुए थे। यह एक लम्बा सघर्षपूर्ण अभियान रहा, कितु अन्त मे वह पायरनीस के दोनो ओर एक सुरक्षा क्षेत्र निर्मित व उसे सुदृढ करने मे सफल रहा। उसने सेक्सनो के भी विरूद्ध बत्तीस-वर्षीय अभियान चलाया और अन्तत विजयी रहा। जो रोम-वासी भी न कर सके थे-वह चार्लमेन ने कर दिखाया-अपने अ-परिष्कृत ढग से ही सही,० उसने जर्मनी को एक निश्चित स्वरूप प्रदान कर दिया। जिन क्षेत्रों में रोमन सभ्यता भी न पहुँच सकी थी-चार्लमेन वहा भी प्रविष्ट होने मे सफल हुआ इसने डेनो, स्लावो, अवारो को वापस ढकेलने मे भी सफलता प्राप्त की। इन युद्धो व सैन्य-अभियानो के पीछे

एक उद्देश्य था-कैथोलिक यूरोप को एकीकृत करना और चालमेन इसमे पूर्णत सफल भी रहा। उसने कैथोलिक यूरोप को बर्बर इस्लामी आक्रमणो से एक सुदृढ सुरक्षा कवच भी प्रदान कर दिया। 800 इ० मे क्रिसमस की रात वह सन्त पीटर गिरजाघर मे प्रार्थना कर रहा था, कि, पोप लियो ने अप्रत्याशित भाव से उसको साम्रज्यी मुकुट पहना दिया।

चार्लमेन के साम्राज्य के दो आधार तत्व थे। एक भौतिक था-सैन्य प्रभुत्व तथा, दूसरा, नैतिक था-धर्मावलम्बन। किंतु, ये दोनो ही स्थायी साबित नहीं हुए, क्योकि, उसका साम्राज्य लगभग एक शताब्दी तक ही चला। इसकी एक विशेषता थी, कि, यह पूर्णत युरोपीय था, इसने एकीकृत यूरोप के विचार को पनपाकर सशक्त कर दिया (कि, बीसवीं शताब्दी के अन्तिम दशक मे यह साकार हो रही है।) था। इस साम्राज्य का पतन कोई दुर्घटना नहीं थी, अपितु, पतन के कारण इसम अन्तनिहित थे। यह इतना विस्तृत था, कि, सैन्य व प्रशासनिक नियत्रण सम्भव नहीं था, दूसरे, उत्तराधिकार मे साम्राज्य के विभाजन के सिद्धान्त की भी अहम् भूमिका थी, तीसरे, प्रत्येक क्षेत्र व प्रान्त को स्वत सुरक्षा करनी थी-जिसके फलस्वरूप सैन्य व अन्य सभी ससाधन एकीकृत रूप से प्रयुक्त न हो सके, चौथे, व्यक्तिगत सम्बधो की जटिलता एव बाहुल्य ने एक यूरोपीय राज्य के विचार को साकार रूप धारण करने मे विशेष अवरोधक का कार्य किया। फिर, अनतत, प्रशासनिक सुव्यवस्था के अभाव मे राज्य का एकीकृत रूप मे सगठित रह पाना सरल नहीं था। 814 इ० मे चार्लमेन की मृत्यु के साथ ही साम्राज्य का विभाजन उसके उत्तराधिकारियो मे नियमानुसार होने लगा तथा अगस्त 843 ई० मे वरदून (Verdun) की विभाजन की सधि ने इस विभाजन के ताबूत में अन्तिम कील और ठोक दी !

किंतु, साथ ही, वरदून की सधि द्वारा ही उस फ्राँस ने साकार रूप धारण किया, जो पूरे मध्यकाल मे बना रहा। चार्लमेन की मृत्यु के एक शताब्दी पश्चात् तक पश्चिमी फ्राँस, उत्तर के जल दस्युओ नार्मनों (Normans) के आक्रमणो से भयाक्रान्त रहा। इन नार्मन दस्युओं की एक विशेषता तो थी ही, कि, वे अनुशासित थे तथा उनका युद्ध का सामरिक ज्ञान भी अद्भुत था। नौवीं शताब्दी के प्रारम्भ में वे हर नदी व सागर मे दृष्टिगोचर होने लगे। वे फ्राँक साम्राज्य के उन क्षेत्रो में आक्रमण करने लगे जो असुरक्षित थे अथवा जिनकी सुरक्षा एक दुष्कर कार्य था। धर्माधिकारी व सामान्य जन सभी पलायन करने लगे। स्पष्टत कैरोलिन्जियन

शासक-व राजकुमार आदि अपने ही विवादो - प्रतिस्पधाओ मे फॅसे होने के कारण हतप्रभ रह गए थे इस नार्मेन आक्रमण से।

887 इ० के वर्ष के प्रारम्भ मे अन्तिम कैरोलिन्जियन शासक चाल्स द् फैट" को अमीरो ने अपदस्थ कर दिया। जिसके परिणामस्वरूप ईसाइ धमाधिकारी वर्ग द्वारा काल्पनिक पश्चिम इसाइ साम्राज्य काल्पनिक ही रह गया। अब छोट-`छोटे सामन्तो के चलते, जिसकी लाठी उसकी भैंस वाली कहावत ही सपूण फ्रॉस क्षेत्र मे चरितार्थ होती थी। इन सामन्तो ने भी शासको की भॉति कर-वसूली, सैन्य सेवाओ की वसूली न्याय प्रदान करना तथा अपने सिक्के भी प्रचलित करवाना शुरू कर दिया । एक स्वतत्र सप्रभु सिद्धान्त के अभाव में गौल के विभाजन की प्रक्रिया और गतिशील हो गई। यहाँ तक कि दसवीं शताब्दी मे तो बर्बर आक्रमणो से सुरक्षा प्रदान करने की भी उसकी भूमिका और इस कारणवश उसका महत्व भी जाता रहा। सेक्सनी के ड्यूका के नेतृत्व मे जर्मनी मे एक नए साम्राज्य की स्थापना हुई जिसने बर्बर आक्रमणो से अन्तत सुरक्षा प्रदान कराई।

यह भी इतिहास का एक अकाद्य सत्य है कि दसवीं शताब्दी फ्रॉंसीसी इतिहास का एक महत्वपूर्ण मोड है। सपूर्ण समाज यहाँ-तक की इसाई गिरजाघर भी भ्रष्ट होकर पतनशील थे-राजनीतिक व्यवस्था के अभाव मे !

शासको के अभाव मे यह भूमि वीरो से वीरान अब भी नहीं हुई थी। लोइर तथा सियन घाटियो के दो वीरो ने नार्मेनो के विरूद्ध युद्ध लडे और ये ही दो क्षेत्र फ्रॉंस की पहचान को बनाए रखने मे सफल हुए। इनमे प्रथम था, 'रौबर्ट द स्ट्रौंग'- इसी के पुत्र ने अन्तत केरोलिन्जियनो के वश का विनाश कर दिया-इसका नाम था इयूड्यस, 'पेरिस का काउन्ट' तथा 987 इ० को इसे मान्यता प्रदान करते हुए पश्चिम फ्रॉंसिया के एक बिशप ने हयूग्ज कपट-जो कि रौबर्ट द स्ट्रौंग का प्रपौत्र था-का सिहासनारोहण भी कर दिया। लेकिन, यह वश भी एक ऐसे क्षेत्र पर शासन करता रहा, जो पेरिस व औलीन्स के निकटवर्ती प्रदेश से निर्मित था-शेष स्थानो पर अराजकता का अन्त अब भी दृष्टिगोचर नहीं था।

ग्यारहवी शताब्दी मे शासन करने वाले इस नए वश के काल मे एक महत्वपूर्ण तथा सकारात्मक कार्य तो हुआ ही-प्रत्येक शासक की मृत्यु के पश्चात्, उत्तराधिकरियों के मध्य साम्राज्य का बँटवारा तो समाप्त हो गया तथा, वशनुगत

होते हो इसने धमाधिकारियो व अमीरो को भी नियत्रित करने की प्रक्रिया प्रारम्भ की, जिसके परिणामस्वरूप सामन्ती विभेद समाप्त होने लगे, केपेटियन शासक शेष सामन्तो से बहुत फर्क नहीं थे- न तो आचार-विचार मे और ना ही स्वार्थ सिद्धि मे। कितु मात्र उसी के शासन को दैवि मान्यता प्राप्त थी और वह ही न्याय-प्रशासन का सर्वोच्चाधिकारी था। अत उसका स्थान स्पष्टत बहुत ऊपर स्थापित हो गया। अत वशानुगत उत्तराधिकार के सिद्धान्तानुसार जब शासन सत्ता एक ही वश अथवा परिवार मे सिमट कर रह गई और फ्रॉस मे इस प्रकार केपेटियन वश का शासन प्रारम्भ हो गया तो उसी दिन से फ्राँस का भी जन्म सुनिश्चित हो गया।[14] कुछ इतिहासकारो के मतानुसार 'फ्राँस वहा के लोगो की इच्छा-शक्ति से निर्मित हुआ था। जबकि, एक दूसरा बडा वर्ग, इसके विपरीत मानता है कि, 'फ्राँस का निमाण उसके राजाओ ने ही किया था।' सत्य इन दोनो छोरो के मध्य मे स्थित है। न केपेटियन शासको ने भौगोलिक एकता समान हित समान स्मृतियो, भाषा की समानता आदि निर्मित की। कितु, दूसरी तरफ न तो भूगोल न समान भाषा, न आथिक कारण ही अपने आप मे फ्राँस की एक्ता के लिए पयाप्त थे। वे राजनीतिक एकता व स्थिरता के अभाव मे प्रान्तीय व क्षेत्रीय मतभेदो को मिटाने मे सक्षम नहीं थे, अपितु, उनको ओर अधिक प्रोत्साहित ही करते थे। अत केपेटियन शासको ने उन्हे सुरक्षा तो प्रदान कर ही दी तथा जनता को अपनी निष्ठा कोरी सस्थाओ व आस्थाओ के प्रति ही नहीं बल्कि, एक जीते-जागते मनुष्य के समक्ष प्रकट करने का अवसर प्रदान करके एक महत्वपूर्ण योगदान दिया। साथ ही, शाँति और व्यवस्था प्रदान करके इस क्षेत्र के परम्परागत सातत्य को पुनजन्म दिया तथा उनकी सत्ता के कारण उत्पन्न सस्थाओ के लाभ ने एक नए युग का सूत्रपात किया। व्युत्पत्ति के आधार पर तो 'पैट्री" (Patrie) अथवा देश का अर्थ ही होता है-विरासत की अविरलता को आगे बढाना। अत प्राचीन गौल के इस क्षेत्र मे वशानुगत सातत्य स्थापित हो गया और इसी मे समान प्रारब्ध का स्थायित्व-साकार रूप ग्रहण करके-एक राष्ट्र का बीजारोपण कर गया।

अत स्वाभाविक ही था कि इतनी समृद्ध परम्पराओ के उत्तराधिकारी होकर, केपेटियन शासको ने अपने-आप को चालमेन का उत्तराधिकारी घोषित कर दिया। उन्होने अपने आप को कभी जमन शासको से हीन भी नहीं माना, भले ही वे अब सम्राट के विरूद धारण किए हुए हो। वे अपने-आप को इनके समकक्षी-

समस्तरीय ही मानते रहे क्योकि, दोनो ही तो पूर्व के फ्रॉक साम्राज्य के पूर्वी व पश्चिमी क्षेत्रो मे स्वतत्र एव पृथक रूप से शासन कर रहे थे। अत इस प्रकार, जब गौल के निवासियो के मास्तिष्क मे एक मातृ-देश की कल्पना भी नहीं थी तब भी इन केपेटियन शासको के दिल-दिमाग पर यह विचार छाया हुआ था और सौभाग्यवश, वे ही भविष्य के- अर्थात् राष्ट्र के निर्माता थे। किंतु, ग्यारहवीं शताब्दी मे शासको का यह स्वप्न-सपूण फ्रॉस के स्वप्न मे परिवर्तित हो चुका था। पश्चिम के स्वामी की आध्यात्मिक विरासत का केन्द्र भी फ्राँस हो गया था, उसे प्यारा फ्रॉस पावन फ्राँस, गरिमामयी फ्राँस (Sweet France Holy France Glorious France) कहकर सम्बोधित किया जाने लगा था।[16]

यही फ्रॉस धर्म-युद्ध के सैनिको का केद्र व प्रश्रय 'बना। जब भी पोप सकट म आते हैं वे फ्रॉस की ओर सहायता की आशा से देखते हैं'-यह विचार सवमान्य था। और इसी से उस सातत्य का सकेत मिलता है, जिसने सभ्यता के केद्र रोमन गौल को ईसाइ-मत के प्रमुख केद्र फ्रॉसिया से जोडा फिर, पश्चिम फ्रॉसिया से और अन्तत केपेटियन-शासित फ्रॉस से जोड दिया ! जबकि इनके ठीक विपरीत जमन शासको ने चालमेन की परम्परा को भुलाकर धर्म की रक्षा तो दूर, पोप की शक्ति के विरूद्ध ही तलवार उठा ली। अत पोप के लिए भी फ्रॉस की ओर देखना अपरिहार्य हो गया था।

पश्चिम फ्राँसिया के सपूर्ण क्षेत्र मे हर तरफ शोषितो मे सवप्रथम केपेटियन की उदीयमान शक्ति को पहचाना व स्वीकार किया गया। जो चर्च थे वे भी भूपतियो के अत्याचार से सतप्त थे-उन्होने भी राजाश्रय मागी स्वतत्र शहर तो अपने-आप को शासक पर निभर मानने लगे केपेटियन शासक फिलिप प्रथम ने अपने राज्यारोहण के समय यह प्रण भी लिया, कि वह प्रत्येक व्यक्ति को आवश्यक न्याय प्रदान करेगा तथा सबके साथ समान व्यवहार किया जाएगा। इसके फलस्वरूप, समस्त क्षेत्र मे, सामन्तो के भी क्षेत्रो मे शासक के प्रतिनिधि न्याय दिलाने के नाम पर प्रविष्ट हो गए, तथा लुइ सप्तम के काल तक तो सामन्तो के विरूद्ध शासक से न्याय की गुहार करने वालो की गणना असख्य हो गई। आने वाली शताब्दियो के लिए एक दिशा व ऊजा प्राप्त हो गइ कि सामन्ती अत्याचारो के विरूद्ध कहॉ अपील की जा सकती है। कहाँ से न्याय की आशा की जा सकती है।

ग्यारहवीं व बारहवी शताब्दियो मे केपेटियन वश की सत्ता और यश मे

अभूतपूर्व वृद्धि हो गई। यह विकास क्रमिक व परिस्थितिजन्य था। परिस्थितियो का सामना करने के लिए, विशेषतौर पर, सामन्ती स्वामियो के अतिक्रिमणो के कारण-यह सम्भव हो सका। फिलिप अगस्तस ने अपनी मृत्यु के समय अपने पुत्र व भविष्य के लुई अष्टम से साधारण-जन व चर्च की सुरक्षा का विशेष आग्रह किया था। इसीलिए 1120 ई० मे जर्मन के सम्राट हेनरी पचम के आक्रमण के प्रतिरोध के लिए, केपेटियन शासक लुई के समथन मे सपूण देश से लोग-सामान्य जन-आ जुटे थे। इन लोगो के मास्तिष्क मे राष्ट्र-राज्य का कोई विचार नहीं था। कितु, बौद्धिक लोगो-लेखको-कवियो की लेखनी मे यह साकार रूप धारण करने लगा था।[17]



[4]

तेरहवी शताब्दी की फ्रॉसीसी संस्कृति-शतवर्षीय युद्ध व उसकी विभिषिका

इस प्रकार से जहाँ फ्रॉस एक राष्ट्र-राज्य का स्वरूप ग्रहण करता जा रहा था और जिस समय वह एक एकता के सूत्र मे अतनिहित भेदो को समेट रहा था वहीं, वह एक विश्व-व्यापी स्वरूप भी धारण कर रहा था। यह एक विशिष्ट व अभूतपूव घटना थी। वस्तुत बारहवीं तथा तेरहवीं शताब्दियो मे फ्रॉस ने एक प्रकार से धर्म-युद्धो को जन्म दिया था। पूर्ण पश्चिम को शौर्य को परिभाषित करना सिखाया वहीं उसके दरबार के शिष्टाचारो का अनुसरण स्पेन इटली इग्लेंड बोहिमिया, पोलैण्ड एव हेगरी मे स्पष्टत देखा जा सकता है। पेरिस के विश्वविद्यालय को विश्व-व्यापी स्वरूप भी इसी बात का द्योतक था। फ्रॉस ने ही मध्य-काल मे व्यापार को सामुहिक सगठन प्रदान करके, एक ऐसा समाधान निकाला-जिसने सामाजिक-शाति को स्थापित करने मे सवाधिक महत्वपूण भूमिका निभाइ और फ्रॉस के स्थापत्यकारो के गोथिक स्थापत्य शैली ने जहॉ नई सशक्त इमारतो को साकार रूप प्रदान किया वहीं, दूसरी तरफ भविष्य के पुनजागरण काल के स्थापत्य का आधार भी स्थापित कर दिया।

कितु, फ्रॉस के शासक को इस काल मे राजनीतिक शॉति व स्थायित्व प्राप्त नहीं था-उसे दो सप्रभु शक्तियो से सदैव भय का बोध होता रहता था। सर्वप्रथम तो था कैथोलिक विश्व का सप्रभु स्वामी-पोप-जो शासक को अपने अधीन घोषित करना चाह रहा था। फ्रॉस के केपेटियन शासक कैथोलिक चच के आज्ञाकारी पुत्र की भॉति काय करने को तत्पर थे। वे आस्था व मत के लिए सवत्र निछावर करने को भी तैयार थे कितु, वे अपने राज्य मे पोप के राजनीतिक हस्तक्षेप अथवा अतिक्रमण के लिए कत्तइ तैयार नही थे।

दूसरी सप्रभु शक्ति जो चेतावनी दे रही थी-वह सशक्त स्वेछाकारी फ्रेड्रिक बारबरोसा के रूप मे उभरी थी। उसी के काल मे जमन-क्षेत्रीय होली रोमन

साम्राज्य अपने-आप को शक्ति के आधार पर रोम के प्राचीन उत्तराधिकारी होने का उद्घोष करके फ्रॉसीसी क्षेत्र को अपने अधीन घोषित करने का इच्छुक था जिसमे उसे पोप का समथन भी प्राप्त हो गया, क्योकि, पोप तो फ्रॉसीसी शासक से वैसे ही कुपित था। किंतु-लुई नवम ने स्पष्टत इकार कर दिया कि वह अपने राज्य की सप्रभुता और स्वतत्रता मे किसी के भी साथ किसी प्रकार का कोइ समझौता नही करेगा। इस प्रकार उसने जहॉ एक तरफ फ्रॉस की सीमाएँ परिभाषित कर दी वहीं, दूसरी तरफ अपनी सप्रभुता भी घोषित कर दी।

ऐसा प्रतीत होता है, कि, अब धीरे-धीरे फ्रॉसीसी समुदाय मे यह जागृति घर कर रही थी कि वे एक सप्रभु राष्ट्र के नागरिक हैं। इसकी अभिव्यक्ति हमे उस काल के बुद्धिजीवियो के लेखन मे स्पष्टत दिखाइ देती है।[18] हाँलाकि केपेटियन वश के पूर्व-शासित क्षेत्रो मे (पेरिस व और्लीन्स के जिलो) हमे पूण राजनीतिक एकता दिखाई देती है किंतु, जो क्षेत्र शासको ने हाल ही मे विजित किए ओर जो फ्रॉसीसी ही थे उन क्षेत्रो मे सामन्तवादी विशिष्टता अब भी शेष थी। केपेटियन शासको ने भी इनको सबल समाप्त करने का प्रयास नही किया। नही तो सम्भवत कोइ प्रतिक्रिया अवश्य होती और एकीकरण के काय मे अवरोध उत्पन्न होता। अत इन शासको ने शॉतिपूर्ण व विवेकशील ढग से स्वत ही सम्मिश्रण को वरीयता प्रदान करने की नियत से क्षेत्रीय विशेषाधिकारो तथा शहरी व व्यापारी विशेषाधिकारो को मान्यता प्रदान करके, उनकी पुष्टि भी कर दी। वे उन रीति-रिवाजो को आदर भी प्रदान करते रहे तथा उन्हे स्वायत्त-शासन की भी स्वतत्रता प्रदान कर दी। और इसी कारणवश, हम पाते हैं, कि, इस काल मे केपेटियन शासक के प्रति निष्ठा एव कृतज्ञता का बोध चतुर्दिक बढने लगा। इस प्रकार तेरहवीं शताब्दी, फ्रॉस के इतिहास मे सम्मिश्रण के युग का सूत्रपात कर रही थी। सत लुइ का फ्राँस, विश्व को इस बात का एहसास करान लगा था, कि, वह अपनी उत्पत्ति एव विशेषताओ के प्रति जागरूक होकर क्या उपलब्धि अर्जित कर सकता था।

किंतु, सत लुई का फ्राँस कोई काव्यात्मक रमणीक समाज नहीं था उसमे भी सदैव की भॉति हर दूसरे समाज की तरह लोभ, हिसा व स्वार्थ सभी कुछ समाहित था। समृद्ध मध्यम वर्ग अपने सगठित गुटो का निर्माण करने लगा था और इनके हित प्राय राज्य के हितों के अनुकूल नहीं भी होते थे। धर्माधिकारी वर्ग मे भी दो उपवर्ग हो गए थे-एक जो शासक की ही भाँति पोप के स्वेच्छाचारी आदेशों से मुक्त रहना चाहता था और दूसरा, जो पूर्णत धर्म-भीरू होकर, सिर्फ

पोप की ही सत्ता को स्वीकार करता था कृषक वग राजनीतिक शाँति एव स्थायित्व का लाभ उठाकर, अपने स्थायित्व को सुदृढ करने लगा। यह कहना अधिक सत्य के निकट होगा कि तेरहवीं शताब्दी के फ्राँस मे रोम-वासियो के राजनीतिक विवेक तथा ईसाइ धर्म-शास्त्र की पवित्र धारा का सयोजन हो रहा था।

सत लुइ अपने युग के अनुरूप था। जहाँ एक ओर वह शाँति का पक्षधर मितव्ययी व विवेकशील था वहीं धर्म-युद्ध के लिए उत्साही भी था। 1248 इ० मे उसने स्वय एक क्रूसेड का नेतृत्व किया तथा फरवरी 1250 इ० मे पूणत पराजित हुआ। मिश्र के अमीरो द्वारा बदी बना लिया गया तथा पैसा देकर उसे मुक्त कराया गया। किंतु, शीघ्र ही दूसरे अभियान की तैयारी प्रारम्भ कर दी एव 1 जुलाइ 1270ई० को कूच करके ट्यूनिस तक पहुँचा था वहीं हैजे म उसकी मृत्यु हो गई।

लुइ के पुत्र फिलिप तृतीय (III) का शौर्यपूण अभियानो की ओर झुकाव कुछ और अधिक था उसने तो मूल्यहीन अभियानो पर अपना राजकोष लगभग रिक्त कर दिय। था। तथा, इन्हीं व्यथ के अभियानो ने परवर्ती शासक फिलिप द फेयर' के काल मे अधिक करो का लगाना अपरिहार्य कर दिया था। राजकोष रिक्त होने के कारण राज्य के मूलभूत काय भी सम्भव नहीं रह गए थे अत कर लगाया जाना आवश्यक था। ये ही घटनाऐ, वस्तुत आने वाले सौ-वर्षीय युद्ध एव उसके पश्चात् की अव्यवस्था के पूर्व सकेत थीं।

किंतु सौ-वर्षीय युद्ध से पूव एक अन्य महत्वपूर्ण विकास-धर्म के क्षेत्र मे हो रहा था-उसकी चर्चा करे बिना आगे बढना कुछ अनुचित प्रतीत होता है। उस काल की समृद्धि, विकास एव धार्मिक मान्यताओ ने एक ऐसा वातावरण तैयार कर दिया था, जिसमे आस्थावान ईसाईयो का मठो (मोनास्ट्रियो) मे रहना आवश्यक नहीं रहा गया था। धार्मिक-जगत मे भी पूरी व्यवस्था स्थापित हो चुकी थी। अब तो ईसाई मत को समृद्धि से सम्बधित कुछ विरोध आदि की प्रवृत्तियो का सामना करना था। तथा नए युग की मान्यताओ से उत्पन्न होने वाली नई समस्याओ का सामना करने मे यह धामिक व्यवस्था पूर्णत सफल नहीं हो पा रही थी अत नए आन्दोलनो का जन्म स्वभाविक हो गया-जो पूर्णत धार्मिक ही थे और नई समस्याओ धाराओ ज्ञान व विज्ञान को आत्मसात करके ईसाई मत को समृद्ध भी करते रहे। ये भिक्षु लोग-अपने अपने जनक के नाम पर, फ्राँसिस्कन एव डोमिनिकन कहलाए।

फ्राँसिस्कन सघ के सस्थापक विश्व-प्रसिद्ध 'फ्राँसिस औफ् असीसी थे। एक समृद्ध व्यापारी के पुत्र होने के बावजूद भी उन्होने सब-कुछ त्याग दिया। 1210ई० मे सन्यास धारण कर त्याग, मानवता, दानशीलता परोपकार, विश्व-प्रेम के सिद्धान्तो का ही प्रचार किया। लगभग इसी समय अर्थात् 1215 ई० मे एक स्पेनी कुलीन वश के सदस्य डोमीनीक् ने भी इसी प्रकार के सिद्धान्तो का प्रचार-प्रसार प्रारम्भ किया। वे वस्तुत, पोप के तथा कैथोलिक मत के सेवक और सच्चे प्रचारक ही थे तथा फ्राँसिस्कन सघ से सम्बद्ध एक अन्य प्रसिद्ध व्यक्ति थे-सत बोनावेन्त्यूरा व रोजर बेकन और डोमिनिकन से सम्बद्ध सर्वाधिक प्रसिद्ध नाम था-सत टोमस एक्यूइनास, जहाँ फ्रॉसिस्कन की सदस्यता तेरहवीं शताब्दी के अन्त तक हजारो मे पहुँच गइ वहीं, डोमिनिकन अपना प्रभाव- क्षेत्र ग्रीनलैण्ड तक विस्तृत करने मे सफल रहे थे।

जहाँ तक अधिसख्य कृषको का प्रश्न है वे काफी अनिभिज्ञ व अशीक्षित थे और सम्भवत इसी कारणवश, अन्धविश्वासी व अवैज्ञानिक थे। कितु, शहरो मे प्रगति निरतर व तीव्र गति से हो रही थी। नई व्यवस्था ने जिस सुदृढ सुरक्षा को जन्म दिया उससे सचार व यातायात सुलभ हुआ तथा व्यापार मे अभूतपूव वृद्धि हुइ। इस व्यावसायिक व औद्योगिक विकास ने न केवल धन की बृद्धि की, अपितु, एक सशक्त श्रम सगठन को भी जन्म दे दिया। प्रत्येक शहर मे व्यवसाय व व्यापार को प्रोन्नत करने एव सुचारू ढग से चलाने के लिए श्रेणियो का सगठन मौजूद था। बुजुग-प्रशिक्षित शिल्पकार इनके सचालन के लिए उत्तरदायी होते थे तथा इनकी एक निर्वाचित सभा ही श्रेणी के समस्त कार्यो का सपादन करती थी। वह उत्पादो के स्तर का निरीक्षण करती, भ्रष्टाचार को नियत्रित करती तथा अपने नियम-कानूनो का कठोरता से पालन करवाती। कितु यातायात की धीमी गति और बढते दामो ने प्रत्येक शहर व प्रान्त को अपनी आवश्यकताओ मे लगभग आत्म-निर्भर सा बना दिया था। अत उद्योग विशिष्ट क्षेत्रो मे सीमित रह गये। परन्तु, उस काल मे धन व्यापार से ही आ रहा था। अत बडे व्यापारिक प्रतिष्ठानो का जन्म स्वाभाविक ही था और, इसी ने, अतत राज्य को विवश कर दिया, कि, वह सडकों का पुनर्निमाण करे व सेतुओ का निर्माण करे। समुद्र मे नौकायन भी सुलभ हो गया था, वस्तुत फ्राँस ही पूर्व के भूमध्यसागरीय यूरोप तथा मध्य एव उत्तर यूरोप के मध्य व्यापार का मुख्य-मार्ग था। आग्सबर्ग व न्यूरेमबर्ग से स्पेन, तथा सिसली एव टस्कनी से इग्लैण्ड तक के व्यापार-मार्ग फ्राँस होकर ही जाते थे, अत फ्राँस तो भौगोलिक कारणो से अत्यधिक

लाभ की स्थिति मे था।

इन्हीं अनेक भू-राजनीतिक कारणो के चलते फ्रेंच भाषा का बीजारापण भी सम्भव हो सका-लेटिन सिफ क्लको व अध्यापको की भाषा रह गइ था-शेष जनता साधारण बात-चीत मे फ्रेच का प्रयोग करने लगी थी किंतु, फ्रेच सिफ बोल-चाल की ही भाषा नही रही वह शाघ्र ही, साहित्यिक अभिव्यक्ति की भाषा हो गइ थी। चतुथ धम-युद्ध एव सत लुइ क इतिहास जसी दो ऐतिहासिक कृतियो की रचना भी इसी काल मे फ्रेच मे ही हुइ तथा वेनिस का निवासी एव प्रसिद्ध यात्री मार्को पोलो अपने यात्रा-वृत्तान्त सकलन फ्रेच भाषा मे हा करवा रहा था। तेरहवी शताब्दी मे फ्रेच भाषा क बीजारोपण से लेकर प्रसार व अभूतपूव वृद्धि के अनेकानेक कारण थे केपेटियन शासको की महानता का लाभ उस भाषा का प्राप्त होना स्वाभाविक था जो उसके राज्य की भाषा थी फ्रॉसासी मेन्नो की व्यापारिक सफलताएँ इग्लैण्ड से लेकर एशिया माइनर तक फ्रॉसीसी शौय का विस्तार फिर उस भाषा की अपनी मौलिक विशेषताएँ एव सवाधिक महत्वपूण भूमिका - पेरिस के विश्वविद्यालय न निभाइ और फ्रेच भाषा नव-सस्कृति व नव चेतना की ही द्योतक हो गई।

इस प्रकार, हम देखते हैं कि महान केपेटियन शासको के कार्यो के चलते तथा पाश्चात्य के नैतिक एव भौतिक विकास-क्रम के कारण धम-युद्धो के पश्चात् क काल मे फ्रॉस-यूरोप का सवाधिक समृद्ध देश बन चुका था और, यही नहीं फ्रॉसीसी नागरिको के अन्त करण मे राष्ट्रीय प्रारब्ध की भावना भी प्रबल हो रही थी और सम्भवत इसी ने फ्रॉस को शत-वर्षीय युद्ध के काल के आक्रमणो विनाशो एव दुभाग्यो को सहने व साथ ही सातत्य को बनाए रखने की क्षमता प्रदान की, वस्तुत दुर्भाग्य का आगमन शासको के व्यक्तित्वो के पतन के कारण सवप्रथम हुआ।

शत-वर्षीय युद्ध का तात्कालीक कारण था-फ्रॉस के राज्य मे उत्तराधिकार का प्रश्न। ईंलैंड का शासक एडवड तृतीय अपनी मॉ की तरफ से पूव फ्रॉसीसी शासक फिलिप द फेयर' का सम्बधी था (वह फिलिप का नवासा था) अत अपने-आप को वह अपने नाना के रिक्त सिहासन का दावेदार मानता था। किंतु, फ्राँस के अभिजात वर्ग की सभा मे वह ताज फिलिप द फेयर' के भतीजे वेलोइस के फिलिप को सौंप दिया। अत दोनो राज्यो के मध्य वैमनस्य की शुरूआत हो गई। जबकि वास्तव मे, फ्राँस तथा ब्रिटेन की शत्रुता का श्रीगणेश इग्लैंड मे नौरमन के राज्य की स्थापना के साथ ही होगा। अनेकानेक घटनाओ, बहानो

मे भी फँस गया ! जनता का रोष अभिजात वर्ग के विरूद्ध अभिव्यक्त हुआ तथा शहरो के विरोध स्वरूप ऐस्टेट्स जनरल-की बैठक अवश्यसम्भावी हो गइ थी। 'फिलिप द फेयर' के काल से ही शासक इसकी बैठक नए करो के प्रावधानो के लिए बुलाने लगे थे। अत पोइटस की इस विभीषिका के कारण, युवा डौफिन चाल्स इसकी बेठक बुलाने को बाध्य था। इस बैठक मे सवाधिक महत्वपूण भूमिका शहरी मध्यम-वर्ग ने निभाइ जिन्हे एतेइन मार्सेल का सफल नेतृत्व भी प्राप्त हो गया था। इस मध्यम-वग ने शासक वश के प्रति निष्ठा प्रकट करते हुए, परामर्श-दाताओ के विरूद्ध आक्रमण बोल दिया किंतु, जो दूसरा वर्ग इनके समथन मे उठ खडा हुआ था-वह तो वेलोइस वश के शासन का ही विरोधी था-वे नेवार्रे के चाल्स के अधिकार को स्वीकार करते थे या फिर इग्लैंड के शासक को ताज सौंपने की बात करते थे।

विरोध या रोष मात्र शहरो तक ही सीमित न था। फ्रॉस के ग्रामीण क्षेत्रो मे भी इसे अभिव्यक्ति दी- कृषक श्रमिको ने तथा यह जैक्यूरी के नाम से सम्बोधित हुआ। यह कुलीन वर्ग के विरूद्ध रोष था उन्हे भी गुइलौम काल (मेलौ निवासी) नामक एक सफल नेता मिल गया था। इस आदोलन ने यह सदैव के लिए ही स्पष्ट कर दिया कि अभिजात् वर्ग व कृषको के मध्य विश्वास व पारस्परिक सम्बधो का विच्छेदन हो गया-जो कि, स्पष्टत सामन्तवाद के पतन के प्रथम सकेत थे। ये गरीब जन व कृषक अब अभिज्ञ हो गए थे कि यदि, उन्हे सुरक्षा व न्याय की आशा करनी हो तो शासक ही प्रदान कर सकता है। और इन्हीं परिस्थितियो ने उस जागृति को जन्म दिया-जो आगे चलकर जौन् औफ आर्क' के रूप मे अभिव्यक्त हुई।

अन्तन 1360 इ० मे ब्रेटिग्नी की सधि ने दोनो राज्यो के मध्य युद्ध को विराम दिया, जिसके अनुसार फ्रासीसी शासक जौन ने न केवल एक विशाल हर्जाना देना स्वीकार किया, बल्कि, इग्लैंड के शासक को फ्रॉस का एक चौथाइ क्षेत्र भी सौंप दिया। जो क्षेत्र इग्लैंड के शासक के अधीन हो गया वहॉ की फ्रासीसी जनता ने विरोध प्रकट किया और विभिन्न देशो के रगरूट युद्ध-विराम से उत्पन्न बेरोजगारी के शिकार हो गए तथा अपनी-अपनी सैन्य टुकडी का दुरूपयोग क्षेत्र मे अवयवस्था फेलाकर लूट-पाट मे करने लगे। ऐसी परिस्थितियो मे, 1364 इ० मे, जौन की मृत्यु के उपरान्त, शासन डाउफिन चाल्स को प्रात हुआ, जिसने चार्ल्स पचम का विरुद धारण किया और सोलह वष शासन किया। वह समझदार शासक था, जिसे एक सुसगठित सेना के महत्व का ज्ञान था और

ने इस प्रतिद्वन्दिता की अग्नि मे घृत का कार्य किया। नव-विश्व के अन्वेषण से पूर्व-इग्लैंड के लिए यूरोपीय महाद्वीप के अतिरिक्त प्रसार का कोई क्षेत्र भी उपलब्ध नही था और, इसके लिए पश्चिमी फ्राँस एव फ्लैंडर्स को पार करना अपरिहार्य था। इसके अतिरिक्त गैस्कनी का भी महत्वपूर्ण योगदान था। इसका इग्लैंड के साथ मदिरा-व्यापार महत्वपूर्ण था अत वहाँ पर फ्राँसीसी प्रसार का विरोध करना ऐडवर्ड तृतीय व इग्लैंड के लिए स्वाभाविक ही था। इसी प्रकार फ्लैंडस पर फ्राँसीसी आधिपत्य के प्रयास ने इग्लैंड को फ्राँस के शासक के पद पर अपना दावा प्रस्तुत करने को विवश कर दिया था, क्योकि, इससे इग्लैंड का कपडा उद्योग सकट मे पड जाता, अत फ्लैंडस वासियो ने अपने व्यवसायिक हितो के अनुरूप इग्लैंड के ऐडवड तृतीय को फ्राँस के शासक के रूप मे मान्यता भी प्रदान कर दी तथा इग्लैंड की सेनाओ ने वैलोइस के फिलिप षष्ठम की नौ-सेना को 1339-40 इ० मे पराजित कर दिया। इसी प्रकार थल-युद्ध मे भी 1346 इ० मे फिलिप छठवा पराजित हो गया। अब इग्लैंड ने इन विजयो का लाभ उठाकर कैलेस की घेरेबदी प्रारम्भ कर दी ताकि, इग्लैंड से फ्राँस का माग उनके लिए निष्कटक हो सके और अगली दो शताब्दियो तक कैलेस इग्लैंड के एक शहर की भाँति रहा तथा फ्राँस-विजय के अभियान के लिए 1347 इ० मे यह आधार के रूप मे प्रयुक्त भी हुआ।

परम्परागत शत्रु इग्लैंड से पराजित हो फ्राँस हतोत्साहित एव नि शक्त हो गया था। साथ ही अकाल ने रही-बची कसर भी पूरी कर ली अत राज्य कर-लगाने व ऋण लेने के लिए बाध्य हो गया-शायद अब भी गनीमत होती-कितु फ्राँस को इटली के माग से पूर्वी विश्व से आए हैजे जेसी महामारी ने भी घेर लिया (1348 न 1349 इ०)। लोग भयभीत होकर पलायन करने लगे, जिसके परिणामस्वरूप उत्पादन व व्यापार भी अस्त-व्यस्त हो गया 1350 ई० मे फिलिप छठवे की मृत्यु हो गइ तथा राज्य की बागडोर उसके पुत्र जोन के हाथो मे आ गइ जो दुभाग्य से मानसिक रूप से विक्षिप्त था।

जोन अथवा जौन द्वितीय की प्रतिद्वन्दिता फिलिप द फेयर के एक अन्य नवासे नवार्रे के चार्ल्स से थी जिसे शासक ने 1356 ई० मे बदी बना लिया तथा उसके समथको ने निचली नौरमेंडी का राज्य इग्लैंड को सौंप दिया और, इसी ने फ्राँस व इग्लैंड के मध्य एक नवीन युद्ध को आमत्रण दे दिया-सितम्बर 1356 इ० के इस युद्ध मे पूणत पराजित होकर जौन तथा उसका कनिष्ठतम पुत्र चौदह-वर्षीय फिलिप दोनो बदी बना लिए गए-इस प्रकार, फ्राँस गृह-युद्ध की विभीषिका

मे भी फॅस गया ! जनता का रोष अभिजात वर्ग के विरूद्ध अभिव्यक्त हुआ तथा शहरो के विरोध स्वरूप ऐस्टेट्स जनरल-की बैठक अवश्यसम्भावी हो गइ थी। फिलिप द फेयर' के काल से ही शासक इसकी बैठक नए करो के प्रावधानो के लिए बुलाने लगे थे। अत पोइटस की इस विभीषिका के कारण युवा डौफिन चाल्स इसकी बठक बुलाने को बाध्य था। इस बैठक मे सवाधिक महत्वपूण भूमिका शहरी मध्यम-वर्ग ने निभाई जिन्हे एतेइन मार्सेल का सफल नेतृत्व भी प्राप्त हो गया था। इस मध्यम-वग ने शासक वश के प्रति निष्ठा प्रकट करते हुए, परामर्श-दाताओ के विरूद्ध आक्रमण बोल दिया किंतु, जो दूसरा वग इनके समथन मे उठ खडा हुआ था-वह तो वेलोइस वश के शासन का ही विरोधी था-वे नेवार्रे के चाल्स के अधिकार को स्वीकार करते थे या फिर इग्लैंड के शासक को ताज सौंपने की बात करते थे।

विरोध या रोष मात्र शहरो तक ही सीमित न था। फ्रॉस के ग्रामीण क्षेत्रो मे भी इसे अभिव्यक्ति दी- कृषक श्रमिको ने तथा यह जैक्यूरी के नाम से सम्बोधित हुआ। यह कुलीन वग के विरूद्ध रोष था, उन्हे भी गुइलौम काल (मेलौ निवासी) नामक एक सफल नेता मिल गया था। इस आदोलन ने यह सदैव के लिए ही स्पष्ट कर दिया कि अभिजात् वर्ग व कृषक्रो के मध्य विश्वास व पारस्परिक सम्बधो का विच्छेदन हो गया-जो कि, स्पष्टत सामन्तवाद के पतन के प्रथम सकेत थे। ये गरीब जन व कृषक अब अभिज्ञ हो गए थे कि यदि, उन्हे सुरक्षा व न्याय की आशा करनी हो तो शासक ही प्रदान कर सकता है। और इन्हीं परिस्थितियो ने उस जागृति को जन्म दिया-जो आगे चलकर 'जौन् औफ आक' के रूप मे अभिव्यक्त हुई।

अन्तन 1360 इ० मे ब्रेटिग्नी की सधि ने दोनो राज्यो के मध्य युद्ध को विराम दिया जिसके अनुसार फ्रासीसी शासक जौन ने न केवल एक विशाल हजाना देना स्वीकार किया बल्कि, इग्लैड के शासक को फ्रॉस का एक चौथाइ क्षेत्र भी सौंप दिया। जो क्षेत्र इग्लैंड के शासक के अधीन हो गया वहॉ की फ्रासीसी जनता ने विरोध प्रकट किया और विभिन्न देशो के रगरूट युद्ध-विराम से उत्पन्न बेरोजगारी के शिकार हो गए तथा अपनी-अपनी सैन्य टुकडी का दुरूपयोग क्षेत्र मे अवयवस्था फेलाकर लूट-पाट में करने लगे। ऐसी परिस्थितियो मे 1364 इ० मे, जौन की मृत्यु के उपरान्त, शासन डाउफिन चाल्स को प्रात हुआ जिसने चार्ल्स पचम का विरुद धारण किया और सोलह वर्ष शासन किया। वह समझदार शासक था, जिसे एक सुसगठित सेना के महत्व का ज्ञान था और

इसीलिए, 1380 ई० मे उसकी मृत्यु हुइ तो इग्लैंड अपनी फ्राँसीसी विजयो से लगभग हाथ धो बैठा था और उसके पास मात्र कैलेस, शेरबोर्ग, ब्रेस्ट, तथा बोद्यू के बदरगाह ही शेष बचे थे। अपने क्षेत्रो को पुनविजय करने के साथ-साथ, चार्ल्स पचम ने अनेक आर्थिक सुधार भी प्रस्तावित कर राज्य को एक दृढ आधार प्रदान करने का प्रयास किया। स्टेट्स-जनरल को उसने कर-जिलो मे प्रतिनिधि नियुक्त करने का अधिकार दिया। ये प्रतिनिधि समस्त साम्राज्य (जो कर-जिलो मे विभक्त कर दिया गया था) मे कर- निर्धारण व उसकी वसूली के अधिकारी होते थे। व्यापार पर कर निधारित कर, चुगी की भी समुचित व्यवस्था कर दी कितु, फिर भी उसे अपने सैन्य अभियानो के कारण ऋण भी लेना पडा-अकेले वित्तीय-सुधारो से राज्य मे अधिक सम्पन्नता तथा स्थिरता सम्भव नहीं थी।

चाल्स छठवा जब गद्दी पर बैठा तब उसकी आयु मात्र बारह वष की थी-उसके चार चाचाओ आदि ने सत्ता आपस मे विभाजित कर, राज्य से स्वाथ-पूति का कार्य प्रारम्भ कर दिया। इससे राज्य का अत्यधिक अहित भी हुआ। 'युवा शासक ने अपने इन सम्बधियो से छुटकारा पाने के लिए पूर्व सलाहकारो को पुन नियुक्त करने का प्रयास भी किया कितु, राज्य-काय के निर्वहन मे अधिक मेहनत पडने पर वह बीमार पड गया। इस बीच औलीन्स तथा बर्गुन्डी के ड्यूको के मध्य भी प्रतिद्वन्दिता बढ गई और 1407 इ० (नवम्बर) मे 'ड्यूक ऑफ् औलीन्स' की हत्या हो गइ जिसके परिणामस्वरूप इन दोनो परिवारो के मध्य गृह-युद्ध प्रारम्भ हो गया। इससे ऊबकर तथा बर्गुन्डी के ड्यूक ने जनता को अप्रत्यक्ष रूप से उकसा दिया और कैबोश् के नेतृत्व मे कैबोशियन विद्रोह (जन-विद्रोह था) का श्रीगणेश 1413 इ० मे हो गया। विद्राहियो ने राजमहल घेर लिया तथा शासक से सुधार के चाटर पर हस्ताक्षर करवाकर, मध्यम वर्ग के नेतृत्व मे व उसकी प्रेरणा से एक आतक का युग स्थापित कर दिया कितु, शीघ्र ही इस विद्रोह का अन्त भी हो गया तथा निर्भयी जौन (जो बर्गुन्डी का ड्यूक था) को भी अपदस्थ कर दिया गया। अब इग्लैंड के शासक ने गृह-युद्ध का लाभ उठाकर निभय जौन से समझौता कर नौर्मेण्डी मे अपनी सेनाऍ प्रविष्ट करा दी तथा फ्राँसीसी सेना को अब तक की सबसे करारी पराजय का सामना करना पडा। नोर्मेन्डी के साथ ही फ्राँस का दसरा बडा रोएन भी इग्लैंड के शासक हेनरी पचम के अधीन हो गया (लगभग सात माह की घेरेबदी के बाद) 1420 इ० मे चाल्स छठे ने 'ट्रौयस की सधि' पर हस्ताक्षर करके इग्लैंड

के शासक को फ्राँस के सिहासन का उत्तराधिकारी स्वीकार किया तथा डाउफिन की बहन कैथरीन से उसका विवाह भी करा दिया। इस प्रकार 1420 इ० मे हेनरी पचम ने अपनी सेनाओ के साथ पेरिस मे प्रवेश किया किंतु, इसीके दा वष बाद ही इन दोनो शासको-हेनरी पचम और चार्ल्स षष्ठम की मृत्यु हो गइ। इसी काल मे चच मे भी विभाजन हो गया तथा एविग्नान तथा रोम मे दो अलग-अलग पोप स्थापित हो गए तथा कैथोलिक मत का विरोध इग्लैंड म जौन वाइक्लिफ तथा बोहेमिया मे जौन हस्स के रूप मे मुखरित होने लगा था।



[5]

बर्जुवा राजतंत्र का काल-पुनर्जागरण काल-फ्रॉसिस प्रथम व चार्ल्स पचम का काल

जब आक्रमण एव गृह-युद्ध के बादल छटे तब फ्रॉस के राजनीतिक रगमच पर हमे दो शासक दृष्टिगोचर होते हैं-प्रथम दुबल चार्ल्स सप्तम तथा, दूसरा, इग्लैंड का हेनरी षष्ठम, जिसकी बाल्यावस्था के कारण उसके चाचा बेडफोड के ड्यूक इग्लैंड-अधीन फ्रॉस का प्रशासन देखते थे। इग्लैंड के शासक का समर्थक 'फिलिप द गुड' समस्त बगुन्डी का स्वामी था। इस प्रकार, हम कह सकते हैं कि जहॉ धामिक विश्व मे एक साथ-दो-दो पोप थे वैसे ही राजनीतिक विश्व मे फ्रॉस को दो शासको की उपस्थिति की त्रासदी झेलनी पड रही थी। और ऐसी उहा-पोह की स्थिति मे फ्रॉस ने अपने इतिहास की महान व सच्ची राष्ट्र-प्रेमिका और चरितनायिका जो 'आन ऑफ् आर्क को जन्म दिया (1412 ई०), जो अपने राष्ट्र को विदेशी आक्रान्ताओ से मुक्त कराने के लिए 1429 ई० मे निकल पडी तथा अप्रैल के माह मे 29 तारीख को वह और्लीन्स जा पहुँची, जिसकी घेरेबदी इग्लैंड की सेनाऍ कर रही थीं। सफेद घोडो पर सवार फ्रॉसीसी सेनाओ का नेतृत्व करते हुए वह विदेशी सैनिको को खदेडने मे सफल रही (8 मई 1429 इ०)। उसकी एक योजना थी-इस विजय से फ्रॉसीसी लोगो का उत्साह वधन हो सकेगा और फिर, उसमे चार चॉद लगाने हेतु फ्रॉसीसी शासक का सिहासनारोहण व अभिषेक करना अत्यावश्यक था। चाल्स सप्तम् प्रारम्भिक इकार के पश्चात् रीइम्स के लिए निकल पडे जहॉ 16 जुलाइ को गिरजाघर मे उनका धूम-धाम से अभिषेक किया गया कितु, चाल्स के परामर्शदाताओ ने इग्लैंड के शासक को लगभग ढाइ माह की अवधि अपने पुनगठन हेतु प्रदान कर दी, जिसके परिणामस्वरूप सुव्यवस्थित होकर उन्होने

पेरिस पर आक्रमण कर दिया। 8 सितम्बर को तीर से घायल जो आन भी मैदान से हटने को बाध्य हो गइ थी, जिसके परिणामस्वरूप फ्राँसीसी शासक भी मैदान छोडकर लोइर के प्रासाद मे वापस लौट गया। 1430 ई० की बसत मे अधीर जो आन ने वगुन्डी आक्रन्ताओ का सामना करने का निश्चय किया तथा 23 मइ को वह दुभाग्य से बदी बना ली गई, जो उसकी मुक्ति के लिए हजाने की प्रतीक्षा करता रहा तत्पश्चात् उसे अग्रेजो के हाथो दस हजार स्वर्ण पौंडो मे बेच डाला। निस्सेदह शासक उसका हर्जाना दे सकता था लेकिन उसके परामशदाताओ जो उसके हाथो अपमानित हुए थे-वे उसकी मुक्ति के कदापि पक्षधर नही थे।

इग्लैंड वासी जो आन को आसानी से मौत के घाट उतार सकते थे, कितु, इसका कोइ प्रत्यक्ष राजनीतिक लाभ उन्हे नहीं दिख रहा था। अत उनहोने उसे अपमानित करने का निणय लिया क्योकि, इससे फ्राँसीसी लोगों की प्रेरणा-स्रोत पर करारा प्रहार होता तथा साथ ही उसके द्वारा सम्पन्न हुआ फ्राँसीसी शासक का अभिषेक हास्यास्पद प्रमाणित होता। इस पूरी योजना के पीछे यह विचार काय कर रहा था कि, कैसे भी हो यह प्रसारित हो जाए कि चार्ल्स सप्तम एक चुडैल के हाथो बदी बना एक मूर्ख है।[19] चार माह तक उसको अपमानित किया जाता रहा उससे अनेकानेक प्रश्न पूँछे गए, परीक्षण किए गए, अन्तत 28 मइ 1431 इ० को उसे एक अपधर्मी घोषित कर दिया गया तथा, उस काल मे इसकी एक ही सजा थी-जीवित जला दिया जाना-30 मई को इस प्रकार फ्रॉस की इस निडर राष्ट्रप्रेमिका ने अपने राष्ट्र के लिए अपने प्राण तक उत्सग कर दिया! और उसके शत्रु तक रो पडे !

जो आन औफ् आर्क ने एक वर्ष की अल्पावधि मे फ्राँस के इतिहास मे एक महत्वपूण परिवतन ला दिया था। उसके कार्यों ने फ्राँको-ब्रिटिश राज्य के विचार को ही समाप्त कर दिया। साथ ही फ्राँसीसी एकता और उस एकता के वेध प्रतीक राजा को आम जनता का सरक्षकत्व प्रदान कर दिया तथा जो 'आन औफ् आक की पहल ने आधुनिक दृष्टिकोण से राष्ट्रीय चेतना का आधिकारिक जागरण किया। इन्हीं सबके परिणामस्वरूप तथा जो 'आन औफ् आर्क के त्याग के कारण फ्रॉस मे एक नई शुरूआत सम्भव हो सकी। 1435 ई० मे एर्रास की सधि के द्वारा दोनो प्रतिद्वन्दिी फ्राँसीसी राज्यो- अर्मैग्नाक तथा बर्गुन्डी मे शाँति सम्भव हुइ तथा इसी के अगले वर्ष, पेरिस ने अपने द्वार चार्ल्स सप्तम के लिए सहष खोल दिए। उधर, सौभाग्यवश (फ्राँस के दृष्टिकोण से) बेडफोर्ड

के ड्यूक की मृत्यु हो गइ तथा इग्लैड की राजनीति तदुपरान्त एक भँवरजाल मे फँस गइ। अत इन परिस्थितियो का लाभ उठाते हुए, फ्रास की सेनाओ ने 1449 इ० से 1453 इ० के मध्य विभिन्न अभियानो द्वारा नार्मेन्डी तथा फिर गुयेन पुनविजित कर लिया। इग्लैंड के अधीन अब मात्र केलैस रहा गया था। कितु, चाल्स सप्तम के अधीन मात्र फ्रॉस से अग्रजो को ही खदेडने मे सफलता नही प्राप्त हुइ अपितु, राजतत्र भी पुनर्गाठित हुआ एव, साथ ही राज्य भी सुदृढ हो गया।

शॉति व व्यवस्था स्थापित होते ही आथिक गतिविधियो के पुन प्रारम्भ होने से भी सवाधिक लाभ चाल्स सप्तम की सरकार ने उठाना प्रारम्भ किया। इसने एक दूसरी धारा को भी जन्म दिया और वह थी बुजुवा महत्वाकाक्षाएँ कितु, इसके साथ-साथ फ्रॉस की आम जनता मे भी जबरदस्त राष्ट्रीय जागृति का सशक्त विकास हुआ। मध्यम-वग के सदस्यो ने विनष्ट सामन्तो से जमीन व सम्पत्ति खरीदनी शुरू कर दी वित्तीय सस्थाओ एव न्यायालयो मे पद प्राप्त किए तथा नए सामन्तो (नोबल्स औफ् द रोब) के रूप मे समाज मे स्थापित हो-प्रतिष्ठित होने लगे। इस प्रकार हम पाते हैं कि, चाल्स सप्तम के शासन के अन्त मे इग्लैंड का मात्र कैलेस पर ही अधिपत्य शेष रह गया था। बगुन्डी फ्राँसीसी शासक के आधिपत्य को स्वीकार चुकने के बाद भी महत्वाकाक्षी था अत खतरा बना हुआ था। चार्ल्स सप्तम की 22 जुलाई 1461 इ० मे मृत्यु के पश्चात्, उसका पुत्र लुइ एकादश (जो अपने पिता की अतिम यात्रा तक मे सम्मिलित नही हुआ था) नया शासक बना। सिहासनारोहण के पूव ही वह घृणा का पात्र हो गया। उसने चार्ल्स सप्तम के सलाहकारो को अपदस्थ किए गए लोगो को वापस नियुक्त किया, धर्माधिकारी वर्ग भी अव्यवस्थित कर दिया कुलीन वर्ग को भी अपमानित कर दिया तथा आम जनता का भी दमन प्रारम्भ कर दिया, जिसके परिणामस्वरूप उसके विरूद्ध विद्रोह भडकने लगे तथा उसका मार्ग-दशन करने हेतु लीग औफ् द पब्लिक गुड' की स्थापना 1465 इ० मे की गई। एक सक्षिप्त युद्ध के पश्चात् उसने जनता की सभी मॉगे स्वीकार कर ली कितु, तीन माह के अन्दर ही अपने विरोधियो मे फूट डालकर सभी आश्वासन वापस ले लिए। अत 1468 ई० मे उसके विरूद्ध पुन विद्रोह भडक गया। चार्ल्स द बोल्ड' ने हस्तेक्षेप करने का निर्णय लिया कितु, उसके परामर्शदाताओ को लुइ एकादश ने पद्रह हजार स्वण मुद्राएँ देकर हल्की शर्तो वाली पेरोन की सधि के लिए तैयार कर लिया। अतत 1470 इ० मे कुलीनो की एक सभा

टूस मे हुइ तथा इसने पेरोन की सधि को अमान्य घाषित कर दिया। शीघ्र हा चाल्स को शॉति के लिए विवश होना पडा-इसके पश्चात् कूटनीतिक उपाया द्वारा फ्रॉस के राजा ने बगुन्डी के ड्यूक को उसके विनाश की कगार तक पहुँचान मे सफलता प्राप्त की-तथा ऐलसेस-लारेन विजित करने के प्रयास मे पहले 1476 इ० मे स्विस सेनाओ द्वारा पराजित हुआ तथा जनवरी 1477 इ० मे युद्ध के दारान मारा गया।

इस प्रकार, लुइ एकादश का काल फ्रॉस म पुनविजय का ही काल मात्र नहा था-यह नैतिकता से च्युत राजनीति का काल भी था-राजनीति मात्र राजनीति क लिए-यह अब स्पष्ट होने लगा था ' लुइ एकादश की मृत्यु 30 अगस्त 1483 इ० को हुइ तथा उसका तेरह वर्षीय पुत्र चालस अष्टम नया शासक बना। लुइ की पुत्री ऐन जो अपने भाइ से नौ वष बडी थी व जिसका विवाह पियरे दि बोज्यू के साथ हुआ था। वह तथा पियरे राज्य का भार सम्भालने लगे। बोज्यू ने ही स्टेट्स-जनरल की अत्यधिक मॉगो से 1484 इ० मे लुइ एकादश की उपलब्धियो को सुरक्षित रखा कुलीन वर्गों के विद्रोह को भी नियत्रित किया (1485 इ०), तथा बल द्वारा ब्रिटैनी की उत्तराधिकारी ऐन को चाल्स अष्टम से विवाह के लिए विवश कर-शासक की स्थिति को और भी सुदृढ कर दिया।

चौदहवीं शताब्दी मे, जब फ्रॉस-इग्लैंड युद्ध मे रत थे तब इटली ने पूव के सभी व्यापार-मार्गो पर अपना आधिपत्य स्थापित कर लिया था और वह अपनी समृद्धि के कारण नए युग के लिए आधार प्रस्तुत करने मे सक्षम हुआ तथा पाश्चात्य सस्कृति का नवीन केद्र-बिदु बनकर उभरा। यह आधार इटालियन पुनर्जागरण के लिए उत्तरदायी था, जिसकी सृजनात्मक शक्ति पेट्रार्क से लेकर माइकेल-ऐन्जेलो तक दो शताब्दियो तक प्रवाहित होती रही। इस काल की विशेषता जहाँ एक ओर मानववाद थी वहीं, दूसरी ओर व्यक्तिवाद थी। 29 मई 1453 इ० को कुस्तुथतुनिया के पतन (अथवा तुर्को द्वारा विजित कर लिए जाने से) के कारण एशिया के साथ भूमध्यसागरीय समुद्र व्यापार -माग पूरी तरह कट गए। यह मार्ग अनतत सोलहवी शताब्दी मे फ्रॉस के फ्राँसीस प्रथम तथा तुर्की सुल्तान सुलेमान के समझौते के बाद ही खुल सका था। कितु, इस घटना ने नए-मार्गो की तलाश का मार्ग प्रशस्त किया-जिसकी पहल पुर्तगाल ने की। तत्पश्चात् स्पेनी अग्रेजी, फ्रॉसीसी व डच ने भी इस प्रक्रिया को बल व गति प्रदान किया। इन सबके परिणामस्वरूप समृद्धि का केद्र भी भूमध्यसागर से एटलाटिक महासागर को स्थानातरित हो गया और इसके प्रकारान्तर मे यूरोप

का सामाजिक राजनितिक व आथिक सतुलन ही परिवततित हो गया। इन परिस्थितियो मे पूँजीवादी व अफसरशाही पर आधारित आधुनिक यूरोप का उदय सम्भव हो गया।

दुभाग्यवश जब यूरोप के अन्य देश नए व्यापार मार्गो से लाभ कमाने लगे थे और, जबकि, फ्रॉस भी पूणत सक्षम था-उसने अपने अवसर गॅवा दिए-एटलाटिक महासागर की दिशा मे व्यापार-प्रयास के स्थान पर उसने इटली विजय के प्रयास की भूल करदी। लगभग अध शताब्दी तक फ्रॉस के प्रयास निष्फल ही रहे और वह इटली मे मात्र क्षणिक विजय ही प्राप्त कर सका, किंतु, दूसरी ओर, अनेक इटली निवासी इसी काल मे आकर फ्रॉस मे स्थायी रूप से निवास करने लगे अत एक प्रकार से वे फ्रॉस का औपनिवेशीकरण करने मे सफल हो गए। चाल्स अष्टम जो कि अपने बाल्यकाल से ही इटली के स्वप्न देखा करता था-नेपल्स विजित करने मे सफल भी रहा था कितु, इटली मे जन विद्रोह के कारण उसे वापस लौटने को बाध्य होना पडा था (1494-1495 ई०)। 1498 ई० मे इस शासक की एक दुघटना मे मृत्यु हो गइ-वह सतानहीन था अत उसी का चचेरा भाइ (कजन) औलींन्स का लुइ लुई द्वादश (XII) के नाम से गद्दी पर बैठा। वह भी मिलान विजित करने मे सफल कितु, नेपल्स विजित करने मे निष्फल रहा (1504 ई०)। कुछ वर्षो के उपरान्त फ्रॉस ने इटली मे युद्ध पुन प्रारम्भ कर दिया जिसमे पोप जूलियस द्वितीय स्वय वेनेशिया के विरूद्ध था-लुइ सफल रहा (1509 इ०) कितु, पोप ने पाला बदल लिया और वह फ्रॉस के विरूद्ध इग्लैंड, स्पेन, वेनिस तथा स्विस राज्यो का समथक हो गया। अप्रेल 1512 इ० मे मिलान विजित करते हुए इन सयुक्त सेनाओ ने फ्रॉस पर आक्रमण कर दिया-लुई पैसे से शाति खरीदने को इच्छुक हो गया। 1515 ई० मे उसकी मृत्यु हो गइ व सत्ता उसके दामाद व वजन फ्रॉसिस प्रथम के हाथो मे आ गइ।

फ्रॉंसिस प्रथम ने अपने सैन्य अभियान द्वारा स्विस सेनाओ को पराजित कर के स्थायी शॉति की सधि पर हस्ताक्षर करने को बाध्य कर दिया। साथ ही यह भी निश्चित किया, कि फ्रॉसीसी शासक वहाँ से भाडे के सैनिक भी प्राप्त कर सकेगा तथा 1516 ई० मे पोप लियो दशम ने 'बोलोग्ना का कोकोडा भी प्रदान कर दिया। इसी प्रकार स्पेन के साथ नोयोन की सधि के आधार पर फ्रॉंसीस प्रथम को मिलान तथा नए स्पेनी शासक चालर्स को नेपलस प्राप्त हो गया।

इटली पर फ्रॉसीसी अभियानो के परिणामस्वरूप जिन सबधो की नींव पडी उसने फ्रेंसासी पुनजागरण को जन्म दिया किंतु, फ्रॉस मे कला से अधिक साहित्य मे पुनजागरण का प्रभाव पडा।

फ्रॉसिस प्रथम व चार्ल्स पचम

जहॉ ग्यारहवी से लेकर पद्रहवी शताब्दी तक के फ्रॉस के इतिहास मे हमे फ्रॉस व इग्लैंड के मध्य युद्ध का विस्तार उल्लेख मिलता है, वहीं सोलहवीं शताब्दी मे आस्ट्रिया के साथ युद्ध का श्रीगणेश होता है, जिसकी प्रतिध्वनि व जिसके पूवाग्रह 1919 ई० की सधि तक को प्रभावित कर गए, वस्तुत प्रतिद्वन्दिता के बीज उस काल मे पड गए जब लुई एकादश ने अव्यवहारिक ढग से 'चार्ल्स द बोल्ड की पुत्री अर्थात् बर्गुन्डी की मेरी को आस्ट्रिया के मैक्समिलन के साथ विवाह के लिए विवश कर दिया था। जब 1516 ई० मे युवा चार्ल्स पचम स्पेन का नया शासक बना तो वह चार घरानो का उत्तराधिकारी था-बर्गुन्डी, आस्ट्रिया एरेगौन तथा कैस्टाइल। इसी के तीन वर्ष बाद बावजूद फ्रॉसिस प्रथम की उपस्थिति के- वह अपने-आप को जर्मनी का सम्राट घोषित करवाने मे सफल हो गया (1519 इ०) और तब उसकी आयु मात्र उन्नीस वर्ष थी।

चाल्स पचम व फ्रॉसिस प्रथम के प्रतिकूल व्यक्तित्वो के कारण विवाद तो अपरिहाय प्रतीत होने ही लगा था। फ्राँसिस प्रथम को उत्तराधिकार में एक समृद्ध फ्रॉस प्राप्त हुआ था अत उसका दरबार अपनी चमक-दमक व शान-शौकत मे अद्वितीय था। किंतु, इसी अपव्ययता ने शीघ्र ही राजकोष रिक्त कर दिया। इस कारणवश, फ्रँासिस प्रथम को वित्तीय नियत्रण के प्रयास करने पडे, करों मे वृद्धि करनी पडी तथा ऋण लेना प्रारम्भ कर दिया-आतरिक स्त्रोतो से भी एव विदेशी बैंकरो म भी और अन्त मे, राज्य के पदो की भी निलामी व बिक्री प्रारम्भ हो गई- इसने जहॉ अफरशाही को सशक्त किया वहीं कार्यालयो की सख्या मे अभूतपूव वृद्धि ने राज्य के केन्द्रीयकरण को बढावा दिया। लगभग सभी समृद्ध सामन्ती घराने समाप्त हो गए थे- सिवाय बूरबौं के और उसका स्वामी, चाल्स फ्रॉसिस प्रथम की माँ से रूष्ट व असतुष्ट होकर, सम्राट चार्ल्स पचम की सेवा मे चला गया।

फ्रासिस प्रथम का केद्रीयकृत राज्य तीन भागो मे अर्थात् दिशाओ मे-चार्ल्स पचम के साम्राज्य से घिरा हुआ था अत अपने विस्तार के लिए तो उसे अन्तत उसी साम्राज्य से देर-सबेर टकराना तो था ही। दूसरी ओर, चार्ल्स पचम का

साम्राज्य, फ्रॉंसिस प्रथम के राज्य का चौगुना-पचगुना तो था ही। फिर भी उसकी साम्राज्यी महत्वकाक्षाएँ सतुष्ट नही थी-वह बगुन्डी पर विशेषतया अधिकार करने का इच्छुक था, अत फ्रॉस-जमन युद्ध ताकिक व अपरिहार्य था। वह, यदि, इग्लैंड के साथ समझौता कर लेता तो फ्रॉस के निकास-द्वार तक बद हो जाते, तथा, उत्तर एव पूव मे एक विजय ही पेरिस को असुरक्षति करने के लिए पर्याप्त थी। कितु, उसकी अधीन राज्य सुदृढ नही थे - वे एक - दूसरे से भिन्न भी थे-यहॉ उसे मात्र फ्रॉस से ही भय हो सकता था अत यह भय निर्मूल करना आवश्यक था। कितु, फ्रॅास ने इन्ही कोमल असुरक्षित क्षेत्रो पर आक्रमण किया-सेवौय (इटली) तथा लौरैन पर, जमनी के कुछ क्षेत्रो से सधि स्थापित की और साथ ही तुर्को से भी समझौता कर लिया। चार्ल्स पचम ने उत्तर से प्रोवेन्स पर आक्रमण भी कर दिया। दोनों पक्षो ने इग्लैंड को अपना समर्थक और यदि नहीं, तो तटस्थ बनाने का प्रयास किया।

इग्लैंड के हेनरी अष्टम ने फ्रॉंस के विरूद्ध समर्थन प्रदान किया व पहले युद्ध मे फ्रॉंस को भारी क्षति का सामना करना पडा, फ्रॉंसिस गिरफ्तार हो गया तथा मेडरिड की सधि के कारण ही मुक्त हो पाया (14 जनवरी 1526 ई०) जिसके अनुसार राजकुमारो को बँधक के रूप मे चार्ल्स को सौंपा तथा बगुन्डी का प्रान्त भी प्राप्त कर लिया। कितु, मुक्त होते ही फ्रॉंसिस प्रथम ने बर्गुन्डी देने से इकार कर दिया, सफल कूटनीतिक चालो द्वारा इग्लैंड को अपनी तरफ कर लिया, जर्मनी के प्रोटेस्टेट राजकुमारो से सधि कर ली तथा तुर्की सुल्तान सुलेमान से भी समझौता कर लिया-जिसकी विजय सेनाएँ हँगरी मे उपस्थित थी तथा वियना पर दबाव बढाकर, चार्ल्स के राज्य पर पीछे से प्रहार कर उसे असुरक्षित कर रही थीं। अब चाल्स अपने सैन्य अभियानो मे असफल तथा फ्रॉसिस सफल होता गया। 1547 इ० मे फ्रॉसिस प्रथम की मृत्यु हो गइ। उसका उत्तराधिकारी हेनरी द्वितीय था, जिसे फ्रास मे धम-सुधार आदोलन से उत्पन्न परिस्थितियो का सामना करना पडा। इस बीच बीमार चाल्स पचम ने 1555 इ० मे सिहासन त्याग दिया-उसके पुत्र फिलिप द्वितीय ने स्पेन नेपल्स तथा आधुनिक नीदरलैंड्स का राज्य उत्तराधिकार मे प्राप्त किया आस्ट्रिया, चार्ल्स के भ्राता फर्डिनेड को सम्राट के पद के साथ प्राप्त हुआ-वो वेसे भी बोहेमिया व हगरी का शासक था। 1557 इ० मे पोप पौल चतुथ के कहने मे आकर, हेनरी द्वितीय ने पुन

युद्ध आमत्रित करने की भूल कर दी। स्पेनी सेनाओ ने फ्रॉस पर उत्तर से सफल आक्रमण कर दिया (1557 इ०) किंतु स्पेनी समथक इग्लैंड से गाइस ने केलेस वापस प्राप्त करने मे सफलता प्राप्त कर ली (1558 इ०)। हेनरी द्वितीय धम-सुधार आदोलन से उत्पन्न परिस्थितियो मे व्यस्त हो गया तथा स्पेन ने ससाधन के अभाव मे युद्ध स्थगित कर दिया। अत दोनो ने अप्रैल, 1559 इ० मे सधि कर ली। जुलाई 1559 इ० मे हेनरी द्वितीय की मृत्यु हो गइ।

साम्राज्य फ्रॉसिस प्रथम के राज्य का चौगुना-पचगुना तो था ही। फिर भी, उसकी साम्राज्यी महत्वकाक्षाएँ सतुष्ट नही थी-वह बगुन्डी पर विशेषतया अधिकार करने का इच्छुक था, अत फ्रॉस-जमन युद्ध ताकिक व अपरिहार्य था। वह, यदि, इग्लैंड के साथ समझौता कर लेता तो फ्रॉस के निकास-द्वार तक बद हो जाते तथा उत्तर एव पूर्व मे एक विजय ही पेरिस को असुरक्षति करने के लिए पर्याप्त थी। किंतु, उसकी अधीन राज्य सुदृढ नही थे - वे एक - दूसरे से भिन्न भी थे-यहाँ उसे मात्र फ्रॉस से ही भय हो सकता था अत यह भय निर्मूल करना आवश्यक था। किंतु, फ्रॅास ने इन्हीं कोमल असुरक्षित क्षेत्रो पर आक्रमण किया-सेवौय (इटली) तथा लौरैन पर, जमनी के कुछ क्षेत्रो से सधि स्थापित की और साथ ही तुर्को से भी समझौता कर लिया। चार्ल्स पचम ने उत्तर से प्रोवेन्स पर आक्रमण भी कर दिया। दोनों पक्षो ने इग्लैंड को अपना समर्थक और यदि नहीं, तो तटस्थ बनाने का प्रयास किया।

इग्लैंड के हेनरी अष्टम ने फ्रॉस के विरूद्ध समर्थन प्रदान किया व पहले युद्ध मे फ्रॉस को भारी क्षति का सामना करना पडा, फ्रॉसिस गिरफ्तार हो गया तथा मेडरिड की सधि के कारण ही मुक्त हो पाया (14 जनवरी 1526 ई०), जिसके अनुसार राजकुमारो को बंधक के रूप मे चार्ल्स को सौंपा तथा बर्गुन्डी का प्रान्त भी प्राप्त कर लिया। किंतु, मुक्त होते ही फ्रॉसिस प्रथम ने बगुन्डी देने से इकार कर दिया, सफल कूटनीतिक चालो द्वारा इग्लैंड को अपनी तरफ कर लिया, जर्मनी के प्रोटेस्टेट राजकुमारो से सधि कर ली तथा तुर्की सुल्तान सुलेमान से भी समझौता कर लिया-जिसकी विजय सेनाएँ हॅगरी मे उपस्थित थी तथा वियना पर दबाव बढाकर, चार्ल्स के राज्य पर पीछे से प्रहार कर उसे असुरक्षित कर रही थीं। अब चाल्स अपने सैंन्य अभियानो मे असफल तथा फ्रॉसिस सफल होता गया। 1547 इ० मे फ्रॉसिस प्रथम की मृत्यु हो गइ। उसका उत्तराधिकारी हेनरी द्वितीय था, जिसे फ्रास मे धम-सुधार आदोलन से उत्पन्न परिस्थितियो का सामना करना पडा। इस बीच बीमार चाल्स पचम ने 1555 इ० मे सिहासन त्याग दिया-उसके पुत्र फिलिप द्वितीय ने स्पेन, नेपल्स तथा आधुनिक नीदरलैंड्स का राज्य उत्तराधिकार मे प्राप्त किया आस्ट्रिया, चार्ल्स के भ्राता फर्डिनेड को सम्राट के पद के साथ प्राप्त हुआ-वो वेसे भी बोहेमिया व हगरी का शासक था। 1557 इ० मे पोप पौल चतुथ के कहने मे आकर, हेनरी द्वितीय ने पुन

युद्ध आमत्रित करने की भूल कर दी। स्पेनी सेनाओ ने फ्रॉस पर उत्तर से सफल आक्रमण कर दिया (1557 इ०) किंतु स्पेनी समर्थक इग्लैंड से गाईस ने केलेस वापस प्राप्त करने मे सफलता प्राप्त कर ली (1558 इ०)। हेनरी द्वितीय धम-सुधार आदोलन से उत्पन्न परिस्थितियो मे व्यस्त हो गया तथा स्पेन ने ससाधन के अभाव मे युद्ध स्थगित कर दिया। अत दोनो ने अप्रैल, 1559 इ० मे सधि कर ली। जुलाई 1559 ई० मे हेनरी द्वितीय की मृत्यु हो गइ।

[6]

फ्रॉस मे पुनर्जागरण-धार्मिक-विवाद-लुई चतुर्दश का काल

सोलहवी शताब्दी के फ्राँस मे इटली की ही भॉति व उसी की प्रेरणा एव प्रभाव मे फ्रॉस मे पुनर्जागरण का प्रसार हुआ और इस युग मे-फ्रॉस मे स्थापत्यकार तथा मूतिकार अपनी दक्षता और मौलिकता से विश्व को प्रभावित करने मे सफल रहे। लूवे के नए प्रासाद का कार्य पेरिस का पियरे लेस्कौट् प्रारम्भ करता है, इसी प्रकार फिनिबर्ट डैलौर्म जीन बुलान्ट भी प्रसिद्ध स्थापत्यकार थे फ्राँसीसी मूतिकारो मे माइकल कोलोम्ब लिग्यिर-रिशियर पियरे बोतेम्प्स तथा सवाधिक प्रसिद्ध जीन गौंजो नई शैली मे दक्ष थे। पुनर्जागरण काल का महान कलाकार लोनार्डा द विची अपने दिन फ्राँसिस प्रथम के अतिथि के रूप मे फ्रॉस में व्यतीत करता है और यही उसकी मृत्यु भी हो जाती है। सोलहवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध मे मानववाद का प्रसार पश्चिमी यूरोप मे गति से होता है। इसके प्रभाव मे फ्राँसीसी साहित्य के सवश्रेष्ठ रचनाकार इसी काल मे अपनी कृतियो की रचना करते हैं उदाहरण के लिए-गुईलौम बूदे, हेनरी ऐस्टाइन, कवि क्लेमेत मरोत प्लेइ आद जोएकिम दू बेले एव रोन्सार्द, लेखक फ्रेकोइस रेबेलैस जीन काल्विन तथा मोतेन। इस काल मे विज्ञान ने भी अभूतपूर्व विकास देखा। इस काल की गतिविधियो ने कला को फैशन के रूप मे स्थापित कर दिया।

किंतु, इस पुनजागरण ने मनुष्य के मस्तिष्क को उद्वेलित कर दिया। इस काल के आविष्कारो व भौगोलिक अन्वेषणो ने मानवीय विकास को एक नई गति प्रदान कर दी जिसके परिणामस्वरूप लोग धर्म के स्वरूप धमाधिकारी के आचरण, बाइबल के वास्तविक अर्थो की खोज मे तल्लीन हो गए और धीरे-धीरे धम मे सुधार की आवश्यकता का प्रश्न एक स्थापित मत का रूप धारण करने लगा और आन्तरिक धामिक सुधार के मुद्दे ने शीघ्र ही एक विरोध का रूप ग्रहण कर लिया जिसकी चपेट में पूरा ईसाई-जगत ही आ गया।

आस्था के प्रश्न पर कुछ तो कैथोलिक चच से ही अपना सम्बन्ध-विच्छेद कर गए। कुछ अन्य इसी मत मे रहकर आन्तरिक सुधारो के पक्षधर थे और अन्तत ट्रैन्ट की सभा मे वे ये सुधार क्रियान्वित करने म सफल भी हो गए- तथा इस प्रोटेस्टेट आन्दोलन के विरोध मे प्रति धम सुधार अथवा कैथोलिक- मत सुधार आन्दोलन स्थापित कर गए। किंतु, धर्म के इस विवाद का फ्राँस के ऊपर प्रतिकूल प्रभाव पडा-धामिक तथा धम-शास्त्र के सिद्धान्तो के विवाद ने दोनो तरफ कट्टर दृष्टिकोणो को जन्म देकर शत्रुता का रूप प्रदान कर दिया और फ्रॉस एक बार पुन सकट के घेरे म आ गया। राज्य की सप्रभु शक्ति के विरूद्ध तो पार्लेमेट एव पेरिस विश्वविद्यालय उठ खडे हुए शहरी जनसख्या ने भी विरोध करने की ठान ली। इन परिस्थितियो का लाभ उठाते हुए तथा इन्हीं की आड मे विदेशी शक्तियो ने एक बार पुन फ्रॉस मे अतिक्रमण का प्रयास किया स्पेनी दूत कैथोलिक फ्राँस की सुरक्षा के नाम पर चार्ल्स पचम के पुत्र की साम्राज्यी महत्वाकाक्षा की पूर्ति का अवसर तलाश रहा था तो दूसरी ओर इग्लैंड की रानी प्रोटेस्टेट मत की सरक्षिका के रूप मे वे शहर एव बदरगाह पाने का अवसर खोज रही थी, जो शत-वर्षीय युद्धो के दौरान उसके हाथा से निकल गए थे[20]। इसके अतिरिक्त इस धार्मिक-विवाद ने उत्तरी यूरोप मे शासका, सम्राटो व सामन्तो को अपने-अपने क्षेत्रो मे चर्च की सम्पत्ति अपन अधीन करने का सुनहरा अवसर भी प्रदान कर दिया, तथा वे चर्च को भी अपने अधीन करने के कार्य मे जुट गए। इस विवाद के परिणास्वरूप सरकार के लिए एक नवीन प्रश्न उठा, कि वह आन्तरिक क्षेत्र मे कोन-से धम अथवा मत को राजाश्रय प्रदान करे ? फ्राँसीसी शासक ने आस्था के स्थान पर राष्ट्रीय एकता को वरीयता प्रदान करते हुए, कैथोलिक मत का पक्ष लिया।

किंतु, लूथर से भी पूव एक बुजुग फ्रॉन्सीसी विद्वान लिफेव्र दे तेपल्स ने बाइबल के सप्रभु अधिकार का उद्घोष कर दिया था। और, वह चच मे आन्तरिक सुधार के सिद्धान्त का पक्षधर था। लूथर के लेखन का प्रचार व प्रभाव, फ्रॉस मे 1520 ई० के पश्चात्, दृष्टिगोचर होने लगता है और उसके अनुवादक लुइ दि बकुइन को मृत्यु-दण्ड दिया जाता ह (1529इ०)। 1534 ई० मे चच के द्वार पर विरोध पत्र चिपका दिया जाता हे तथा, 1536 ई० मे जौन कैल्विन की पुस्तक क्रिश्चियन इन्स्टीट्यूट्स प्रकाशित होकर, प्रोटेस्टेट मत के आधार फ्रॉस मे स्थापित कर देती हैं। किंतु, फ्राँसिस प्रथम के कठोर कदमो से बचने के लिए कैल्विन बेसल मे शरण लेने के लिए बाध्य हो जाता है। उसने मात्र प्राथना

के महत्व को रेखाकित करके व्यथ के आडम्बरपूर्ण अनुष्ठानो का विरोध किया- वह लूथर से भी अधिक क्रॉतिकारी तथा सुधारवादी था। चर्च के अधिकारियो मे वरीयता क्रम को समाप्त कर, इन अधिकारियो के निवाचन के सिद्धान्त को प्रचलित किया। जेनेवा मे राजनीतिक परिवतन के उपरान्त एक धामिक क्रॉति हो चुकी थी। कैल्विन ने अपने-आप को वही स्थापित किया तथा अन्य प्रोटेस्टेट मतावलम्बी भी वहॉ शरण लेने हेतु पहुॅचे। 1564 इ० मे कैल्विन की मृत्यु हो गइ तथा मृत्योपरान्त उसका प्रभाव यूरोप मे चतुदिक फैल गया।

किंतु, धम-सुधार आन्दोलन अथवा प्रोटेस्टेट क्रॉति जमनी वतमान नीदरलैड्स, स्विटजरलैंड के अधिकाश कैंटनो मे स्थापित हो चुकी थी तथा हेनरी अष्टम के काल मे इग्लैंड ने भी रोम के साथ सम्बध-बिच्छेद कर लिए थे। किंतु, फ्रास के शासक ने कैथोलिक मत के विरूद्ध चल रहे इस आन्दोलन का भरपूर विरोध किया, कभी-कभी तो नृशस हत्या तक करवा डाली (1545ई० का प्रोवेस मे वाउदोइस नर-सहार) किंतु, साथ ही कैथोलिक-मत मे आतिरक सुधार की आवश्कता भी सबको स्पष्टत समझ मे आने लगी थी। अत टाइरोल मे ट्रेट की आम-सभाएँ 1545 ई०, 1551 ई० तथा अन्तिम बार 1563इ० मे हुइ जिसके द्वारा कैथोलिक चर्च मे व्यापक-मौलिक सुधार प्रस्तावित हो निश्चित हो गए तथा कैथोलिक चर्च के सिद्धान्त भी परिभाषित व दोष-रहित कर दिए गए।

1559इ० मे हेनरी द्वितीय की मृत्यु के समय फ्रॉस मे ऐसा कोइ प्रान्त अथवा क्षेत्र शेष नहीं बचा था जहॉ प्रोटेस्टेट समुदाय न मिले। उत्तराधिकारी के रूप मे युवा हो रहे फ्रॉसिस द्वितीय था जो मेरी स्टुअट का पति था। उसने मात्र सत्रह माह शासन किया, उसके बाद उसका भाइ चलर्स पचम जो मात्र दस वर्ष का था-नया शासक बना ओर उसके काल मे महारानी-मॉ अथात् हेनरी द्वितीय की विधवा, 'कैथरीन दि मेदिसी ने वास्तविक सत्ता सम्भाली और एक चौथाई शताब्दी तक सत्ता पर प्रभाव बनाए रखने मे वह सफल रही। वह शॉति की इच्छुक थी, क्योकि उसी के माध्यम से राजतत्रीय विशेषाधिकार सुरक्षित रह सकते थे तथा राजवशीय सत्ता भी सुनिश्चित थी। वह कैथोलिक एव प्रोटेस्टेन्ट दोनो मतो के मध्य के विवाद को वार्ता द्वारा समाप्त करने हेतु प्रयत्नशील थी, अत उसने 1561 ई० मे एक ऐसी बैठक का आयोजन भी किया, किंतु सफलता नहीं मिली। जनवरी 1562 ई० मे उसने प्रोटेस्टेट मतावलम्बियो को ग्रामीण क्षेत्रो व शहरो की परिधि के बाहर, अपने ढग से पूजा-अर्चना का अधिकार प्रदान

कर दिया किंतु, इसका उल्लघन 1 मार्च 1562 इ० को गाइस के ड्यूक ने किया जिसके फलस्वरूप वासी मे प्रोटेस्टेटो का जन-सहार हुआ। कोडे के राजकुमार ने ताज के बढे हुए हाथ को अस्वीकार करते हुए क्रोध मे विद्रोह कर औरलीन्स पर अधिकार कर लिया। अत फ्रॉस मे गृह-युद्ध का श्रीगणेश हो गया जिसमे प्रोटेस्टेटो को इग्लैंड एव जमनी तथा कैथोलिको को स्पेन से सहायता का आश्वासन प्राप्त हो गया। ाअतत माच 1563 ई० की एम्बोइस की राजाज्ञा द्वारा कुछ वर्षो के लिए शॉति स्थापित हो गई।

1567 ई० मे दोनो पक्षो के मध्य विवाद पुन भडका 1569 ई० मे प्रोटेस्टेटो को दो बार हार का सामना करना पडा। 1570 इ० मे कैथरीन ने उन्हे चार सुरक्षित स्थल प्रदान कर फिर शॉति से स्थापित की। किंतु, सभा मे कौलिग्नी की नियुक्ति (पुननियुक्ति) से उसका प्रभाव युवा शासक चार्ल्स नवम पर बढना स्वाभाविक था। अगस्त 1572 ई० मे नेवारे के हेनरी (प्रोटेस्टेटो का नेता) चाल्स की बहन मार्ग्रेट से विवाह करने को तैयार था। इस विवाह म प्रोटेस्टेट भी बडी सख्या मे उपस्थित रहने पेरिस पहुँचे, जिससे गाइस परिवार अत्यधिक रूष्ट व क्रुद्ध हो गया। कैथरीन को दूसरी तरफ शका थी कि चार्ल्स उसके प्रभाव से न निकल जाए। 22 अगस्त को गाइस परिवार के एक सेवक की गोली से कौलिग्नी घायल व शासक नाराज हो गया। अत , गृह-युद्ध के बादल फ्राँस के आकाश पर पुन मडराने लगे। 24 अगस्त को हेनरी 'दि गाइस' ने कौलिग्नी की हत्या स्वय अपने निर्देशन मे करवा दी। चार्ल्स नवम ने क्रुद्ध होकर अपने दरबार मे उपस्थित प्रोटेस्टेटो को मौत के घाट उतरवा कर गृह-युद्ध का उद्घोष कर दिया। अन्तत चार्ल्स नवम ने शाँति स्थापित करवाइ तथा, कुछ समय उपरान्त 1574 इ० म मात्र चौबीस वर्ष की उम्र मे उसकी मृत्यु हो गई। तत्पश्चात् हेनरी द्वितीय व कैथरीन का योग्यतम पुत्र हेनरी तृतीय का सिहासनारोहण हुआ।

हेनरी तृतीय एक अयोग्य तथा सतानहीन शासक था अत जब उसके अंतिम भाई ऐलकौन् की मृत्यु हो गई (1564 ई०), तब उत्तराधिकार का प्रश्न एक गम्भीर समस्या के रूप मे उपस्थित हुआ। बूरबौन् वशीय नेवारे का हेनरी निकटतम पुरुष उत्तराधिकारी था, किंतु, प्रोटेस्टेट होने के कारण कैथोलिक चौकान्ने हो गए। कैथोलिको ने 'होली लीग' अथवा पवित्र सघ की स्थापना गाइस के ड्यूक के नेतृत्व मे इसी राजनीतिक उद्देश्य के लिए सगठित की। इन्हे स्पेन के फिलिप द्वितीय का भी समर्थन प्राप्त हो गया, जो अपने साम्राज्य विस्तार की योजना बनाने लगा। हेनरी तृतीय ने भी प्रोटेस्टेट विरोधी दृष्टिकोण स्थापित करके फ्राँस मे

तीन हेनरियो के युद्ध का सूत्रपात किया (1585-89 इ०)-हेनरी तृतीय, गाइस का ड्यूक हेनरी तथा नेवारे क हेनरी के मध्य। कितु, कैथोलिक लीग की प्रारम्भिक सफलताओ से हनरी तृतीय परेशान हो गया-उसे प्रतीत होने लगा कि वह पवित्र सघ (लीग) के हाथो कठपुतली होता जा रहा है। अत गाइस के हेनरी की हत्या करवा दी-कैथोलिक उसके प्रत्यक्ष विरोधी हो गए और वह उनसे बचने हेतु नेवारे के हनरी के साथ जा मिला, तथा जब दोनो की सयुक्त सेनाएँ पेरिस की घेरबदी कर रही थी तब एक कट्टर भिक्षु ने हेनरी तृतीय की हत्याकर, वेलोइस-वश का शासन समाप्त कर दिया (1 अगस्त वे 1589 इ०)

अतत ताज नेवारे के हेनरी को प्राप्त हुआ तथा उसने हेनरी चतुर्थ का विरूद धारण किया, कितु, पवित्र सघ का विरोध व सैंय अभियानो का सामना उसे करना पडा जिससे ऊककर उसने 1593 इ० मे प्रोटेस्टेट मत का परित्याग कर कैथोलिक मत पुन स्वीकार कर लिया। इस प्रकार फ्रॉस मे धामिक युद्धो का अत हुआ और वह 1594 ई० मे सिहासनारूढ हो गया तथा फ्रॉस की सत्ता पर बूरबौन् वश स्थापित हो गया। फ्रॉस को स्थायी धामिक- राजनीतिक शाँति प्रदान करने के लिए उसने नान्तेस की राजाज्ञा जारी कर दी (1598 इ०), जिससे प्रोटेस्टेट धमावलम्बियो को पूजा का अधिकार, सार्वजनिक पदो का अधिकार आदि प्राप्त हो गए। उन्हे कुछ सुरक्षित-सशक्त स्थान भी प्रदान किए गए थे जिसने राज्य के अन्तर्गत राज्य को स्वीकार कर-भविष्य के गृह-युद्ध की सम्भावनाओ को जागृत रखा। फिर भी, हेनरी चतुथ के ही कारण फ्रॉस यूरोप का प्रथम राष्ट्र बन गया, जहाँ धार्मिक सहिष्णुता स्थापित हुई थी।[21]

तीस वर्षो के लम्बे गृह-युद्धो के पश्चात्, फ्राँस मृत-रूप मे प्रतीत होता था। जन-सामान्य एव मध्यम वग कानून-व्यवस्था व आन्तरिक शाँति के आकाक्षी थे और इन्ही परिस्थितियो-मन स्थितियो ने फ्राँस मे सशक्त राजतत्र को अपरिहाय बनाकर उसकी सफलता सुनिश्चित कर दी थी। हेनरी चतुथ ने आतरिक शॉति स्थापित करके बाह्य शाँति के लिए वविन्स की सधि पर हस्ताक्षर कर के, स्पेन के साथ युद्ध को समाप्त कर दिया। तत्पश्चात् उसने कुलीनो की शक्ति को नियत्रित करने की नीति पर क्रियान्वयन प्रारम्भ कर दिया तथा सली के ड्यूक (वित्त-मत्री) की सहायता से फ्राँस के अथिक पुनर्गठन का कार्य भी प्रारम्भ कर दिया। आथिक क्षेत्र मे भ्रष्टाचार को समाप्त कर इमानदारी को प्रश्रय देकर, बजट का घाटा समाप्त कर दिया, कृषि को भी प्रोत्साहित किया गया व खाद्यान्नो के क्रय-विक्रय मे चुगी-व्यवधानो को भी समाप्त कर दिया, उत्पादन तथा व्यापार को

भी प्ररित किया गया ओर इसी के लिए, अमेरीका क उपनिवेशन को भी प्रश्रय प्रदान किया गया हेनरा चतुथ न ही फ्रॉस मे रेशम उद्योग की स्थापना की। इस प्रकार से आतरिक शॉति व समृद्धि सुनिश्चित करके वह विश्व म फ्रॉस का स्थिति सुदृढ करने के लिए प्रयासरत हो गया। उसे सम्झ मे आ गया था कि हप्सबग को पराजित करे बिना यह सम्भव नहीं है किंतु, इस नीति के क्रियान्वयन से पूव ही उसकी हत्या हो गइ (मइ 1610 इ०) किंतु इसी विदश नीति के क्रियान्वयन के फलस्वरूप रिशलू, मेजैरिन एव लुइ चतुदश फ्रास को विश्व के रगमच पर स्थापित करन म सफल हो सके।

हेनरी चतुथ की मृत्योपरान्त उसका नौवर्षीय पुत्र लुइ त्रयोदश गद्दी पर बैठा किंतु सरक्षिका उसकी मॉ मरी दि मेदिसी बनी जिसने अपने पति की नीतियो के विरूद्ध काय प्रारम्भ कर दिया। उसने स्पेन के साथ समझौता करते हुए, फ्रॉंस के प्रोटेस्टेट समथको को त्याग दिया। उसके सरक्षणत्व मे फ्रॉस एक बार पुन गृह-युद्ध के कगार पर पहुच गया था कि, सौभाग्य से रिशूल के आगमन से पूरा परिदृश्य ही परिवततित हो गया 11617 इ० मे लुइ ने शासन अपने हाथो मे ले लिया तथा 1624 इ० मे रिशलू को अपना प्रधान-मत्री नियुक्त कर दिया। इस तारीख से अगले अठारह वर्षो तक फ्रॉस पर उसी का प्रभाव रहा।

रिशलू के समस दो काय थे-फ्रॉस मे शासक को सर्वसत्ताधारी बनाना तथा यूरोप म फ्रॉस को सवशक्तिशाली बनाना। जहॉ तक सम्राट की स्वेच्छाचारिचता का प्रश्न था, तो इसके तीन प्रमुख व्यवधान थे एक अभिजात वर्ग, दूसरे हयूगनौट्स तथा तृतीय पार्लेमेन्त। हयूगनौट्स को विशेषाधिकार प्राप्त हो गए थे जिनसे सुरक्षित वे षडयत्र व विद्रोह करते थे-उनके अभेद्य समझे जाने वाले ला रोशेल को विजित करके रिशलू ने उन्हे एलाएस की सधि द्वारा कैथोलिको के समान अधिकार ता प्रदान कर दिए, किंतु, उनके राजनीतिक विशेषाधिकार समाप्त कर दिए, ताकि, वे स्वतत्र सप्रभु राजनीतिक इकाई मे परिवर्तित न हो जाएँ। अभिजात् वर्ग को भी नियत्रित करने के विभिन्न प्रयास किए गए। उनके दुर्गो को असुरक्षित कर दिया उनके द्वन्द-युद्ध पर रोक लगा दी गई। कुलीनो ने प्रतिरोधस्वरूप षडयत्र करके शासक को अपदस्थ व रिशलू की हत्या करने का प्रयास किया-षडयत्र खुलते ही रिशलू ने न्यायिक दण्ड व शेष को बल द्वारा आतकित करके नियत्रित रहने को विवश कर दिया। अब उसने केंद्रीकरण हेतु प्रत्येक प्रान्त मे एक नए प्रकार के राज्याधिकारियो अथवा 'इटेडेटों' की नियुक्ति प्रारम्भ कर दी जिहे अपने प्रान्तो मे वित्तीय न्यायिक व पुलिस प्रशासन के पूर्ण अधिकार प्राप्त थे। इनके

द्वारा जहाँ कुलीनो के समस्त अधिकार समाप्त हो गए वहीं, चूँकि वे शासक द्वारा नियुक्त होते थे अत सत्ता शासक के हाथो मे केद्रित हो गई। अन्तत रिशलू न फ्रॉस की सामन्ती पार्लेमेन्त की बैठक बुलवाकर उसे बेकार सस्था मे परिणित कर दिया- वह अब मात्र न्यायिक कार्य ही करती थी, तथा प्रान्तीय सभाओ की आवश्यकता को नकारती थी। इस प्रकार प्रतिनिधि सस्थाओ के नियोजित ह्रास का लाभ शासक को ही प्राप्त हुआ जो इसके चलते निरकुश अधिकारो का स्वामी हो गया।

फ्रास को विश्व-शक्ति के रूप मे स्थापित करने हेतु उसने स्पेन व आस्ट्रिया पर प्रभुत्व वाले हैप्सबग वश के प्रभुत्व के विरूद्ध युद्ध का सचालन किया। 1618 इ० मे बोहेमिया ने हैप्सबर्ग के विरूद्ध विद्रोह किया जो पहले गृह-युद्ध मे तत्पश्चात्, डेनमाक स्वीडन सयुक्त प्रान्त (युनाइटेड प्रोविन्सिसेज), स्पेन तथा अन्त मे फ्राँस के सम्मिलित हो जाने क कारण एक यूरोपीय-युद्ध मे परिणित हो गया, जिसे तीस-वर्षीय युद्ध कहते हैं। 1625 ई० में स्पेनी मिलान तथा जमनी के मध्य प्रमुख माग अवरूद्ध करने हेतु वैल्टेलाइन पर आधिपत्य स्थापित कर लिया गया । कैथोलिक होते हुए भी उसने यूरोप के प्रोटेस्टेट देशो की सहायता कर सम्राट के विरूद्ध सयुक्त रूप से युद्ध करने को प्रेरित किया-डच को अथिक सहायता व थोडी सहायता इग्लैंड व डेनमार्क को भी इसी उद्देश्य की पूति हेतु प्रदान की तथा युद्ध के अतिम चरण मे तो वह स्वय युद्ध मे कूद पडा। उसने पुतगाल तथा केटालोनिया के प्रान्त को विद्रोह के लिए उकसाया-इसकी आड मे उसने रौसिलों प्राप्त कर के, पायरनीस तक फ्राँसीसी पुनप्रसार के द्वार खोल दिए। हाँलाकि, वह अपने उद्देश्यो की पूर्ति अपने जीवन काल मे नहीं देख पाया। फिर भी, मेजरीन न इन्ही नीतियो को उनके तार्किक अन्त तक पहुँचा कर फ्रॉस को यूरोप मे महत्वपूर्ण स्थान पर स्थापित करने मे सफलता प्राप्त की। रिशलू की मृत्यु 4 दिसम्बर 1642 इ० को तथा उसके स्वामी लुइ त्रयोदश की उसके पाच माह पश्चात् 14 मई 1643 ई० को हो गइ।

लुइ त्रयोदश की मृत्यु के समय उसका पुत्र जो लुइ चतुर्दश के विरूद के साथ सिहासनारूढ हुआ, मात्र चार-वर्षीय था अत एक सरक्षक-परिषद का वह निमाण कर गया था, जिसको उसकी विधवा आस्ट्रिया की ऐन ने अस्वीकार कर के मात्र मैजरिन को ही सलाहकार नियुक्त करके शासन करना शुरू कर दिया। सर्वप्रथम, मेजरीन कुलीन वर्ग के विरोधी सगठन का उन्मूलन कर अपनी व ऐन की सत्ता सुरक्षित कर ली किंतु, अर्थिक क्षेत्र मे वह विरोध का उन्मूलन

नहीं कर सका। तीस-वर्षीय युद्ध के चलते बढते व्यय के लिए आतिरिक्त कर लगाने पर पेरिस की पालियामेट ने अन्तत सभी सस्थाओ की बैठक आहूत कर सत्ताइस आर्टिकल्स प्रपत्र सौंपकर, शासक के कर निर्धारण के विशेषाधिकार को सीमित कर दिया। किंतु, ऐन ने इसका विरोध कर के जन-विरोध अथवा फ्रोंड' को जन्म दे दिया। अन्तत मार्च 1649 इ० मे शाँति स्थापित हो सकी किंतु, 1650 ई० मे ऐन द्वारा उनके नेता कोडे के बदी बनाए जाने से गृह-युद्ध फिर भडका-मेजरिन, कोडे को मुक्त सत्ता सोंपकर सत्ता त्याग का प्रदशन कर के जमनी चला गया। किंतु, विरोधी सकल्पहीन व प्रशिक्षणहीन होने के कारणवश, फ्रॉस पुन राजनीतिक अराजकता मे फँम गया। काडे स्वय पेरिस वासियो से अलग होकर स्पेनियो से मिल गया (सितम्बर 1651 इ०) अत अक्टूबर 1652 इ० मे ससद ने स्वय सरक्षक व शासक को शासन हेतु पुननिमत्रित किया।

विदेश नीति मे मैजरिन ने मात्र रिशलू की नीति का पालन किया। 1643 इ० मे कोडे की स्पेनियो पर प्राप्त विजय (रोक्रोई मे) ने उसकी विदेश नीति की सफलता का उद्घोष किया-इससे फ्राँस की उत्तरी सीमा भी सुरक्षित हो गइ। इस युद्ध के अतीम वर्षो मे फ्रॉस के दोनो सेनापतियो कोडे व ट्यूरेन्न ने साम्राज्यी सेनाओ पर अनेक महत्वपूर्ण विजये प्राप्त कीं। बवेरिया के मैक्समिलन को पराजित किया तथा वियना को भी अपने अभियान से असुरक्षित कर दिया तथा नए सम्राट फर्डीनेन्ड तृतीय को 'वेस्टफैलिया की सधि पर हस्ताक्षर करने को विवश कर दिया। इस प्रकार 1648 ई०। मे 'तीस वर्षीय युद्ध' समाप्त हो गया। इस सधि के अनुसार प्रोटेस्टेट मत और विशेषतय काल्विनवाद यूरोप मे मान्यता प्राप्त धर्म हो गया-उन्ह कैथेलिको के समानाधिकार प्राप्त हो गए तथा इस सधि से फ्रॉस को मेट्ज तोउल एव वदून के धम-प्रान्त (बिशप्रिक) प्रान्त प्राप्त हुए उसे स्ट्रासबग छोडकर शेष पूण एल्सेस प्राप्त हुआ। इससे राहइनलैण्ड मे स्थान पाकर जर्मनी का द्वार भी फ्राँस के लिए खुल गया। इस प्रकार रिशलू की योजनाएँ पूर्ण हुई-उसी की नीति के अनुसरण द्वारा । मैजरीन की 8 मार्च 1661 ई० को मृत्यु हो गइ।

लुई चतुर्दश तब बाइस-वर्ष का था। उसने सभी सत्ताधिकार अपने हाथो मे सरक्षित कर लिए, तत्पश्चात् बावन वर्षो तक उसने स्व-शासन किया ओर अतत अपने लिए एक देव-तुल्य स्थान अर्जित कर लिया और जनता ने उसके आगे सिर झुका दिया किंतु, उन्हे अनुभव होने लगा कि शासक उनके बीच

का नहीं हैं और फ्रॉसीसी मात्र उसी से प्रेम करना जानते थे जो उनका अपना हो[22]। फिर भी उसके काल मे राष्ट्रीय एकता बनी रही-फ्रॉसीसी शासको के पास न तो वक्त था, न इच्छा थी, न ही उनकी नीति थी, कि, वे एक सस्थागत कुलीन तत्र की स्थापना फ्राँस मे होने दें-वे अपनी स्वेच्छाचारिता के लिए ही अधिक उत्सुक रहते थे। अत उसके काल मे भी प्रशासन मे मध्यम-वर्गीय नव कुलीनो का वचस्व बना रहा किंतु, यह भी उसी के काल की विशेषता थी कि उसने बिना उनकी प्रेरणा को प्रतिबधित व दासत्व-प्रदान करे ही सवाधिक बुद्धजीवियो-लेखको को राज्याश्रय-प्रदान किया। इसी प्रकार समकालीन कलाओ को भी उसने प्रश्रय दिया।

इस प्रकार अपना व्यक्तिगत शासन स्थापित व व्यवस्था सुदृढ करके, उसने जीनबैपटिस्ट कोल्बर्ट को अपना वित्तीय निरीक्षक (कन्ट्रोलर-जनरल ऑफ् फाइनेन्सेस) 1665 इ० मे नियुक्त किया-जिसके फलस्वरूप वित्तीय सरक्षण की प्रक्रिया शुरू हो सकी। पद्रहवीं शताब्दी के अन्त से ही फ्रॉस अपने ससाधनो का व्यय ही करता रहा था-उसने उन्हे नियोजित ढग से बढाने का प्रयास नहीं किया। वह व्यापार से अधिक युद्धो मे सलग्न रहा। अत सामान्य आथिक विकास व व्यवसायिक एव जल-सेना के विकास मे न केवल पहले शुरू हो चुके देशो-पुतगाल तथा स्पेन से पिछडा, अपितु, इग्लैंड व हौलैण्ड से भी पिछडने लगा। अत 1661 इ० के बाद फ्रॉस के समक्ष दो विकल्प थे-एक वह अपने ससाधनो का विकास करे व व्यापारिक-वृद्धि करे एव यूरोप मे अपने राजनीतिक प्रभुत्व की स्थापना करे। लुइ चतुदश के समक्ष दोनो विकल्प थे। अपने शासन के प्रथम काल मे उसने दो उद्देश्यो की पूति का प्रयास किया और वह सफल रहा किंतु, जब दूसरे काल मे मात्र प्रभुत्व के प्रसार मे सलग्न हुआ तो फ्रॉस हतोत्साहित व शक्तिहीन हो गया।

सौभाग्य स उसका पहला काल कौल्बट के प्रशासन का काल है। कौल्बट के विचारानुसार किसी भी राज्य की समृद्धि उसकी शक्ति का निधारण करती हैं। अत उसने सवप्रथम लेखा को फ्रॉस मे सुदृढ आधार प्रदान करते हुए आय-व्यय पर पूर्ण नियत्रण कर बजट प्रक्रिया प्रारम्भ की, उसने सुनियोजित ढग से औधोगिक विकास किया-वस्त्र-उद्योग, चित्रपट (टेपिस्ट्री), रेशम व स्वर्ण उत्पादन एव उनसे निर्मित वस्तुओ का उत्पादन शीशो का निमाण, स्टील व अस्त्र-शस्त्र निमाण तथा लेस का उत्पादन फ्राँस मे होने लगा। इन उद्योगो को

व्यर्थ है अत इसको प्रोत्साहित करने के लिए उसने चुगी आदि की व्यवस्था की विदेशी उत्पादो से प्रतिद्वन्दिता के दृष्टिकोण से आयातित माल पर ऊँचे कर लगाकर अपने को सरक्षण भी प्रदान किया। कितु, उसका सवाधिक महत्वपूण काय था-फ्राँस को एक नो-सैनिक तथा व्यापारी-बेडा प्रदान करना। वह फ्रॉस को उतना ही विस्तृत औपनिवेशिक साम्राज्य प्रदान करने का इच्छुक था जैसा अन्ततोगत्वा, इग्लेंड के भाग्य मे आया। जिस प्रकार व्यापार उद्योग को प्रेरित-प्रोत्साहित किया था, वेसे ही कृषि को भी प्रश्रय प्रदान किया गया-कृषि से सलग्न पशु-पालन आदि पर भी राज्य ने ध्यान दिया। जल-ससाधन व वन्य-ससाधनो के प्रयोग के भी नियम निधारित कर दिए गए। इसी प्रकार विधि-नागरिक व आपराधिक-दोनो का निमाण करवाया गया। इस प्रकार हम कह सकते हे कि रिशलू के साथ-साथ कौल्बट भी आधुनिक फ्रॉस का निमाता था।

सन्य-पुनगटन के क्षेत्र मे भी लुइ चतुदश को एक याग्य प्रशासक के रूप मे लोवोइस प्राप्त हा गया था। भर्ती करने की विधि से अस्त्र-शस्त्र तक सब कुछ आधुनिक हा गया तथा सन्य-अस्पतालो का निमाण भी द्रुत गति से हुआ। उसने युद्ध-कायालय (वार ऑफिस) का निमाण कर-सैंय-सचालन के महत्त्व को समझा व स्पष्ट किया। पुनगठन सेना की प्राप्ति के कारण, पुनगठित लुइ चतुदश अब फ्रॉस का प्रभुत्तव स्थापित करने मे तल्लीन हो गया-उसका ध्यान पतन की ओर अग्रसर स्पेन पर गया-वह नीदरलैंण्ड्स को स्पेन से पृथक करके स्पेन के सिहासन पर बूरबोन् वशीय व्यक्ति को विराजमान करने का इच्छुक था। उसने स्पेन के विरूद्ध पतगाल को स्वतत्रता के लिए उकसाया तथा उसकी अतराष्ट्रीय स्थिति सुदृढ करने की दृष्टि से पुतगाल व इग्लेंड के मध्य वैवाहिक गठबधन स्थापित कर दिया।

वह स्पेनी नीदरलेंड्स प्राप्त करने का इच्छुक था अत अन्तरण (डवोल्यूशन) के सिद्धान्त के चलते उसने अपना दावा भी प्रस्तुत किया जिसे स्पेन के चाल्स द्वितीय ने इकार कर युद्ध का श्रीगणेश कर दिया। लुइ ने स्पेन के फिलिप चतुथ की पुत्री मेरिया थेरेसा से विवाह किया था अत अन्तरण के द्वारा फिलिप चतुथ की मृत्योपरान्त वह उसपर स्वामित्व का इच्छुक था। लुइ ने फ्लण्डस पर आक्रमण करके अनेक दुर्गो पर तथा फ्रॉचे-कोम्ते पर आधिपत्य स्थापित कर लिया। हॉलण्ड ने प्रतिरोधस्वरुप इग्लैंड एव स्वीडेन के साथ त्रिगुट सधि (टिपल एलाइन्स) कर लुइ को ए-ला-शेपेल की सधि मानने को विवश कर दिया जिसके अनुसार

फ्रॉचे-कोम्ते तो वापस देना पड गया किंतु, नीदरलैंण्ड्स के शेष दुग फ्रॉस के पास ही रह गए।

अपने उपरोक्त प्रसार मे हौलैण्ड को अवरोधक मानकर, तथा, अपने विरोधी हयूग्नौट्स को उनके द्वारा प्रश्रय प्रदान करने पर वह क्रुद्ध हो उनके विरूद्ध कायवाही के लिए बाध्य हुआ-फिर व्यापारिक प्रतिद्वन्दिता ने आग मे घृत का काय किया। किन्तु, एक अच्छे कूटनीतिज्ञ की भॉति उसने इग्लैण्ड के साथ डोवर की गुप्त सधि करक, उसे होलण्ड से अलग कर दिया, स्वीडन को रिश्वत द्वारा अपने पक्ष मे कर लिया एव सम्राट लियोपोल्ड प्रथम को निष्पक्ष रहने हेतु तैयार कर लिया। तत्पश्चात् 1672 इ० मे युद्ध प्रारम्भ कर दिया तथा अनेक प्रान्त हस्तगत कर लिए। किंतु, अब तक पूरा यूरोप ही फ्रॉस के महत्वाकाक्षी सैन्य अभियानो से चौकन्ना हो उठा तथा स्पेन, सम्राट एव जर्मन राज्य हौलैण्ड के पक्षधर हो गए। इग्लैंड मे भी जनमत ने चार्ल्स द्वितीय को हौलैण्ड के साथ सधि करने के लिए विवश कर दिया। यह युद्ध अब एक यूरोपीय युद्ध मे परिवतित हो गया जिसमे फ्रॉस ने कुछ महत्त्वपूण विजये प्राप्त की, किंतु, दोनो ही पक्ष, थक-कर, शॉंति के लिए बाध्य हो 'गए व निमवेगेन की सधि' (1678 ई०) ने शॉति स्थापित कर दी, जिसके अनुसार फ्रॉंस को फ्रॉचे-कोम्टे व नीदरलैण्ड्स के अनेक दुर्ग प्राप्त हो गए शेष क्षेत्र उसने वापस लौटा दिए-मात्र ऐलशेस को छोडकर। अत , उसकी सत्ता व शक्ति पर बहुत प्रतिकूल प्रभाव नहीं पडा - उसने चेम्बर्स औफ् रीयूनियन' नामक कुछ न्यायालयो की स्थापना, जीते हुए प्रान्तो के आश्रित-राज्यो पर अपना आधिपत्य स्थापित करने हेतु की तथा, इस प्रकार से साम्राज्य के बीस महत्वपूर्ण शहर, जिसमे लक्समबग व स्ट्रासबर्ग केसाथ इटली का कैलेस-सम्मिलित थे प्राप्त कर लिए। इस प्रकार उसके राज्य के साथ-साथ उसकी प्रतिष्ठा मे भी वृद्धि हुइ।

किंतु, इसी के बाद अनेक रिक्त बिशपो के स्थानो से आर्थिक लाभ व उनपर शासक के इच्छानुसार नियुक्ति के प्रश्न पर पोप से उसके मतभेद हो गए। यही नहीं, उसके कट्टरपन के चलते पाक जैनसैनिस्ट मतावलम्बियो पर अत्याचारो मे भी वृद्धि हुई और, अन्त मे, मदान्ध (सत्ता के कारण) लुई ने नैन्टस के नियम समाप्त करके, प्रोटेस्टेटो की स्वतत्रता ही समाप्त कर दी। हयूगनौट भी देश से पलायन करने को बाध्य हुए, जिसके परिणामस्वरूप फ्रॉंस के उद्योगो पर प्रतिकूल प्रभाव पडा-तथा, इससे इग्लैंड, हौलैण्ड व ब्रैन्डनबर्ग जेसे अनेक प्रोटेस्टेंट देशो को लाभ मिल गया। इसके चलते, यूरोप के प्रोटेस्टेट राज्य भी

फ्रॉस के विरोधी हो गए तथा फ्रॉस के विरूद्ध सम्राट विलियम का साथ देने को तैयार हो गए एव 1686 इ० मे आग्स्बग सघ (लीग औफ् औग्स्बग) का निमाण किया। इस सघ के सदस्य-हौलैण्ड स्पेन स्वीडन तथा सम्राट विलियम थे किंतु, गोरवमयी क्रॉति के पश्चात् विलियम ही इग्लैंड का शासक बन गया तब इग्लैंड भी इस सघ मे सम्मिलित हो गया। जहॉ रिशलू ने यूरोप के प्रोटेस्टेट शासको को हैप्सबर्ग के विरूद्ध एकजुट किया था, वही लुइ चतुदर्श ने उस नीति का परित्याग करके, फ्रॉस को सकट के कगार पर पहुॅचा दिया। इस सघ के निमाण से 1688 ई० मे युद्ध प्रारम्भ होकर 1697 ई० तक चलता रहा और अन्तत दोनो पक्षो ने राइसविक की सधि द्वारा 1697 ई० मे शॉति स्थापित कर दी, जिसके अनुसार स्ट्रासबग के अतिरिक्त शेष सभी क्षेत्र व शहर लुइ ने समर्पित कर दिए तथा विलियम को इग्लैंड का शासक भी स्वीकार कर लिया। स्पेनी उत्तराधिकार के प्रश्न के उभरने के कारण भी लुई शॉति व व्यवधान रहित एकाग्रता चाहता था। चाल्स द्वितीय की अस्वस्थता के कारण उसकी मृत्यु से पूव ही, उत्तराधिकार का प्रश्न एक ज्वलन्त मुद्दा बन गया था। फ्रॉंस आस्ट्रिया तथा बैवेरिया जो वैवाहिक सम्बन्धो द्वारा स्पेनी राजवश से सम्बन्द्ध थे, वे इस प्रश्न से प्रत्यक्ष रूप से जुडे हुए थे, वस्तुत चार्ल्स द्वितीय, लुई चतुदश का साला था अत वह डौफिन को उत्तराधिकारी घोषित करवाकर, बूरबौन् वश को स्पेन मे भी स्थापित करना चाहता था। इसी प्रकार, लुइ की पत्नी मेरिया (तथा चाल्स) की बहन मारग्रेट का विवाह लियोपोल्ड प्रथम से हुआ था-वह अपनी पुत्री मारिया ऐन्तोनियो को उत्तराधिकारी मानती थी अत बैवेरिया के जोसेफ फर्डीनेन्ड को उत्तराधिकारी मानती थी, किंतु, उसके पति ने जोसेफ के स्थान पर अपना दावा प्रस्तुत कर दिया-फ्रॉस व आस्ट्रिया के दावे को स्वीकार करने से यूरोपीय सत्ता-सतुलन बिगड जाता और, यूरोपीय युद्ध की सम्भावना को टालने के लिए, इग्लैंड के विलियम तृतीय व फ्रॉंसीसी लुई चतुर्दश ने विभिन्न दावेदारो के मध्य कुछ स्पेनी प्रान्तो के वितरण का निर्णय ले लिया। किंतु, इन गतिविधियो से क्रुद्ध होकर अपनी मृत्यु-शैय्या पर पडे चार्ल्स ने एक वसीयत द्वारा अपना समस्त राज्य एनजो के फिलिप को दे डाला (यह लुई चतुर्दश का पौत्र डौफिन का द्वितीय पुत्र था) और लुई के इकार करने पर, यह आर्कड्यूक चार्ल्स को प्रदान हो जाना था। किंतु, विभाजन की पूर्व सधियो का अनदेखा कर, लुई ने यह वसीयत स्वीकार कर ली-और यूरोपीय शासक हतप्रभ रह गए। यह स्पष्ट हो गया, कि, लुई स्पेन व फ्रॉंस को एकीकृत करने का इच्छुक है। अत विलियम

तृतीय के नेतृत्व मे महागुटीय सघ (ग्रैंड एलाइन्स) निर्मित हुआ उधर लुइ ने होलेण्ड के सीमान्त दुर्गों पर अधिकार कर लिया तथा जेम्स द्वितीय के पुत्र को इग्लैंड का शासक स्वीकार कर इग्लैंड के उत्तराधिकार के प्रश्न पर हस्तक्षेप का प्रयास किया। स्वाभाविक ही था, कि ये दोनो देश क्रुद्ध हो गए। 1701 ई० मे इटली से युद्ध की शुरूआत हो गइ-1709 इ० तक फ्रॉसीसी सेना खदेडी जा चुकी थी किंतु लुइ का पौत्र फिलिप पचम स्पेनी सिहासन पर आरूढ था और वह अब शॉति का इच्छुक था, किंतु, विरोधी सघ के इच्छानुसार वह अपने पौत्र को बल द्वारा अपदस्थ करने के विरूद्ध था, अत शॉति सम्भव नहीं थी। तभी 1710 इ० मे इग्लैंड मे राजनीतिक सत्ता के परिवतन के फलस्वरूप बनी टोरी सरकार हर हालत मे, शॉति की पक्षधर थी, अत यूट्रेक्ट की सधि 1713 इ० मे सम्भव हो सकी, जिसके अनुसार लुई का पौत्र फिलिप पचम, स्पेन के शासक के रूप मे स्वीकृत हो गया फ्रॉस ऐलसैस (स्ट्रैसबग सहित) रख सकता था, किंतु, राह्इन के दाए तट पर अधिकृत किए गए दुग उसे वापस करने पडे। सम्राट ने एक पृथक 'रास्टाड' की सधि द्वारा फ्रॉंस के साथ शॉंति स्थापित की।

हॉलाकि इस युद्ध के परिणामस्वरूप फ्रॉस के क्षेत्रीय नुकसान निम्न थे फिर भी वह पूर्णत शक्तिहीन हो गया था। उसके ऋण बहुत अधिक बढ गए थे तथा यूरोपीय प्रतिष्ठा मे अभूतपूव कमी आ गई थी। जनता मे असतोष व्याप्त था तथा इसने पहली बार शासक की नीति के विरूद्ध अपने को अभिव्यक्त किया, अत फ्रॉस के आतरिक विकास व इ्तिहास के दृष्टिकोण से यह हानिकारक प्रमाणित हुआ। लुई चतुर्दश की अन्तत सितम्बर 1715 ई० को मृत्यु हो गइ। जिस स्थिति मे फ्रॉस उसकी मृत्यु के समय पहुँच गया था उसमे उसे चाल्स पचम अथवा लुई एकादश अथवा एक हेनरी चतुथ की आवश्यकता थी, किंतु, दुर्भाग्यवश उसे लुई पचदश जैसा बिगडा हुआ बालक उत्तराधिकारी के रूप मे प्राप्त हुआ !



[7]

फ्रॉस की क्रॉति

अठारहवीं शताब्दी का पूर्वाद्ध फ्रॉस के लिए एक नाजुक मोड था। नया शासक लुइ पचदश पॉच वर्षीय अनाथ बालक लुइ चतुदश का प्रपोत्र था तथा उसके सरक्षक का दायित्व पूव शासक के भतीजे औलीन्स के फिलिप के ऊपर आ गया हॉलाकि लुइ चतुदश ने एक परिषदीय व्यवस्था की थी। यह सरक्षण का काल आठ वष अथात् 1715 इ० से 1723 ई० तक चला। यह वस्तुत आराम का काल था-यह गतिविधियो से पलायन का सधि-काल था। लुइ चतुदश ने करोडो लीव्र का ऋण राज्य पर छोडा था। इसको चुस्त-दुरूस्त करने का बीडा जौन लौ नामक स्कौटलेण्ड वासी वित्त-विद् ने उठाया जिसे बैंक्गि के विषय मे अच्छा ज्ञान था। उसने 1716 इ० मे एक बेंक की स्थापना की जो 1718 इ० मे स्टेट बैंक मे परिणित हो गया। इसी प्रकार व्यापार-व्यवस्था को सुदृढ करने हेतु उसने मिसिसिपी कम्पनी तथा कम्पनी ओफ द इण्डीज का निमाण किया-किन्तु दो वर्षो मे ही यह बेंक बठ गया। (1720 इ०) 1723 ई० मे सरक्षक की भी मृत्यु हो गई। लुई पचदश अपने शिक्षक फ्ल्यूरी के प्रभाव मे था अत डुक दी ब्रबौन को समस्त अधिकार सौंप दिए गए, किंतु, उसे 1726 ई० मे हटाकर फ्ल्यूरी ने अधिकार अपने हाथो मे केद्रित कर लिए तथा सत्रह वर्षो तक फ्रॉस का प्रशासन सम्भाला-बाह्य शॉंति व आन्तरिक सुदृढ आर्थिक आधार के चलते देश पर से सकट के बादलो को दूर रखा, ओरी की सहायता से पूराने कौल्बर्ट-सिद्धान्तो पर, वित्तीय-व्यवस्था सुधारी गइ। फ्ल्यूरी के काल मे मात्र जेनसेनिस्टों के विरोध का सामना करना पडा। वह इटली के अलेबेरोनी से यूट्रेक्ट की सधि द्वारा स्थापित व्यवस्था को सुरक्षित रखने का इच्छुक था अत हौलैण्ड इग्लैंड तथा शीघ्र ही आस्ट्रियन सम्राट के एक सयुक्त सघ का निर्माण भी किया। फ्रॉस। व स्पेन के सम्बधो के सेतु के लिए लुइ पचदश का विवाह, स्पेनी शासक फिलिप पचम की पुत्री इन्फैंटा ऐना मारिया (उम्र मात्र तीन वष) से कर दिया गया तथा 1729 ई० मे एक फ्राको-स्पेनी सधि भी

सम्पन्न हो गइ जिसके परिणामस्वरूप इग्लैंड के ऊपर फ्रास की निर्भरता कम हो गइ।

इधर फरवरी 1733 ई० मे अगस्तस द्वितीय की मृत्यु के कारण पोलेण्ड का निवाचित राजसिहासन रिक्त हुआ तथा स्टैनिस्लास लेक्जिस्की (जो लुइ पचदश का अब श्वसुर था) ने अपना दावा प्रस्तुत किया-वस्तुत , पीटर महान के आक्रमण के समय वो ही पोलैण्ड का शासक था तथा अपदस्थ हुआ था। दूसरी ओर, अगस्तस तृतीय न आस्ट्रिया व रूस के समथन से अपना दावा प्रस्तुत किया-स्टैनिस्लास ने छह माह इन दोनो सेनाओ का प्रतिरोध किया फिर पलायन के लिए विवश हुआ। लुइ का वह श्वसुर था तथा पोलेण्ड फ्रास का परम्परागत समथक था। अत फ्रॉसीसी हस्तक्षेप स्वाभाविक हो गया। 1734 ई० मे सभी पक्षो के मध्य प्रारम्भिक वाता तथा 1738 इ० मे वियना की सधि द्वारा समझौता हो गया।

1740 इ० से पुन उस काल का श्रीगणेश होता है, जब फ्रास समुद्र के रास्ते प्रसार के विकल्प का परित्याग करके महाद्वीप मे अपनी शक्ति को स्वय विनष्ट हो जाने देता है। सवप्रथम आस्ट्रिया के उत्तराधिकार के प्रश्न (1740-1748 इ०) तत्पश्चात् सप्त-वर्षीय युद्ध (1756-1763 इ०) मे वह फॅस जाता हे ओर, इस निर्णायक काल मे वह यूरोप मे अपनी सवाधिक महत्वपूर्ण स्थिति भी खो देता है।

1739 इ० मे इग्लैंण्ड व स्पेन के मध्य युद्ध छिड जाता है तथा दो फ्रॉसीसी बेडे स्पेन की सहायताथ भेजे जाते हैं। तब तक 20 अक्टूबर 1740 ई० को चाल्स षष्ठम की मृत्यु के कारण आस्ट्रिया मे उत्तराधिकार का प्रश्न उभर कर आता है। फ्रॉसीसी राजनीति (दरबारी) उसे वशीय विवादो व महाद्वीपीय युद्धो मे फॅसा देती हे। वे आस्ट्रिया को पराजित करने के अवसर को कैसे त्याग सकते थे? युद्धो के दोर मे एक ऐसा समय आया कि, आस्ट्रियाई मैरिया थेरेसा 1743 इ० मे फ्रॉस के विरूद्ध आस्ट्रिया इग्लैंड हौलैण्ड हैनोवर सैक्सनी व साडिनिया का एक महासघ निमित करनेमे सफल रही। फ्रॉस का एकामत्र सहारा स्पेन था। इसी बीच फ्ल्यूरी की मृत्यू हो गइ व लुई पचदश ने स्वय शासन सम्भाला। 1745 इ० से शासन पर जीअन पोइसोन जो माकुइस दि पोम्पादूर के नाम से प्रसिद्ध थी वह लुई की प्रेमिका व मध्यम-वर्गीय शिक्षित एव महत्वाकाक्षी महिला थी। उसका अगले बीस वर्षो मे फ्रासीसी शासन पर प्रभाव रहा और फ्रॉस की

जनता की वह घृणा की पात्रा बन गई। वह मात्र प्रेमिका रहती तो सम्भवत किसी को भी कोइ आपत्ति न होती कितु, उसने इसको भी सावजनिक पद की भॉति दुरूपयोग करना शुरू कर दिया। फ्ल्यूरी की मृत्यु के पश्चात् फ्रॉस की वित्तीय स्थिति बिगडती ही चली गई। जन-असतोष गहराने लगा। लोग मूलत राजशाही विरोधी होने लगे। 1750 ई० के पश्चात् जन-घृणा अपना सिर उठाती है तथा लोग शासन से दरबारी प्रभाव को हटाने के लिए सकल्प-बद्ध हो जाते हैं-वे क्रॉति को अपरिहाय मानने लगते हैं-वे स्टेट्स-जनरल के सयोजन की मॉग करने लगते हैं कितु, फिर भी, औस्ट्रिया के उत्तराधिकार के युद्ध तक तो वे शॉत व सयत रहते हैं, कितु, अक्टूबर 1748 इ० मे ए-ला-शैपेल की सधि के पश्चात्, जब फ्रॉस को अपनी पूर्व विजयो एव सैन्य प्रसारो से हाथ धोना पडता है तो स्थिति अस्थिरता की ओर अग्रसर होने लगती है।

फ्रास मे अब एक नवीन मध्यम-वर्ग (समृद्ध व सत्ता से सम्बद्ध) का उदय हो चुका है जो इस जन-असतोष को अभिजात वग धमाधिकारी वग एव शासक के विरूद्ध प्रयोग करने मे कोई हिचक नहीं दिखाता है तथा, इन तीनो को ही फ्राँस की दुर्व्यवस्था के लिए समान रूप से उत्तरदायी व शत्रु मानता है। वस्तुत दरबारी अमीर तथा उच्च अफ्सरशाही अपने स्वार्थ के कारण समृद्ध व्यवसायियो के सम्पर्क मे रहने को विवश हैं, अत धन का एक नया महत्व व नई भूमिका फ्रॉसीसी इतिहास मे स्पष्टत उभरने लगती है। वो एक नवीन समीकरण के जाल को जम देती है तथा लोगो के मस्तिष्क व व्यवहार को प्राचीन व परम्परागत सूत्रो एव बधनो से मुक्त करा देती है। इसी धन के बाहुल्य के चलते राज्याश्रय से अधिक समृद्ध व्यक्तियो का व्यक्तिगत प्रश्रय था और इसने कलाओ को अत्यधिक प्रोत्साहित किया, कि, वह अपने परिष्कृत व सर्वश्रेष्ठ स्तर तक पहुँचने मे सफल रहीं। चित्रकला के क्षेत्र मे रूपचित्र (पार्ट्रेट) मध्यम व कुलीन वर्गो मे प्रचलित व प्रतिष्ठित थी। 1737 ई० से प्रमुख कलाकार अपनी कलाकृतियो की प्रदशिनी लगाने लगे थे। तथा, इसी काल मे कला-समीक्षा व आलोचना प्रारम्भ हो प्रचलित हो गइ। अठारहवीं शताब्दी मे ही अपने व्यवहारिक क्रियान्वयन के कारण विज्ञान की लोकप्रियता भी बढने लगी और इसी वातावरण ने दो महान दाशनिक लेखक, व बुद्धजीवियो को जन्म दिया-मोटेस्कयू एव वोल्टेयर-जो नव-ताकिक-ज्ञान के परिष्कृत रूप का प्रतिनिधित्व करते थे। अन्तत व्यवसायिक विकास व उपनिवेशवाद के चलते, नए सम्पर्को, नए देशो, नए आदर्शों, नइ अवधारणाओ व नव-ज्ञान से अभिज्ञ होकर, फ्राँस के लोगो ने पुरातन आस्थाओ,

एव रीति-रिवाजो को त्यागना प्रारम्भ कर दिया था। यही नही ये नवीन विचार, फ्रॉसीसी सामाजिक सरचना को भी परिवतित करने मे सफल रहे। अत , इस प्रकार से, बौद्धिक व सामाजिक परिवर्तनो ने अन्ततोगत्वा एक नवीन व्यवस्था हा परिकल्पित कर दी जो वतमान व्यवस्था का सशक्त विकल्प बन गई। लुइ के शासन की अलोकप्रियता से जमे जन-असतोष मे अग्नि मे घृत का काय किया था। इन चितको (फिलोसौफ्स) के व्यवस्था विरोधी आक्रमणो व अभियान ने।

इस सधि-काल मे,-जब कि पूण विश्व परिवतनशील था लुइ पचदश का शासन था उसे पौम्पदूर परामश देती थी-कितु, राष्ट्र-भर मे कोई ठोस समर्थन नही था न ही अपनी इच्छा-शक्ति व स्थिरता थी और न ही कोइ प्रधान मत्री था। अत अनिणयो व प्रतिस्पर्द्धाओ का दौर था जिसमे न केवल शासक की व्यक्तिगत लोकप्रियता कम हुइ, अपितु, राजशाही की आधिकारि शक्ति मे भी कमी आ गइ और, इस प्रकार लुई धार्मिक प्रतिद्वन्दिता भी रोकने मे असमथ हो गया। जैनसैनिस्टो व केथोलिको की लडाई सडक पर उतर आई और ससद हस्तक्षेप करने को विवश हो गइ। अन्तत पेरिस की पार्लेमेन्त ने क्षेत्रिय पार्लेमेन्तो के समर्थन से यह उद्घोषित कर ही दिया कि, शासक से अधिक महत्वपूर्ण तथा वरीय-राष्ट्र है। कितु, पौम्पदूर पर इस सब का कोइ प्रभाव नहीं पडा- वह पूववत् ही शासन करती रही और, अततोगत्वा, उसी के प्रभाव मे जेसुइट सघ पर भी प्रतिबध लगा दिया गया।

सप्तवर्षीय युद्ध (1756-1763 ई०) ने जहॉ फ्रॉस के प्रभुत्व के द्वार बद कर दिए वहीं, दूसरी ओर इग्लैंड व प्रशिया के प्रभाव और इसके प्रकारान्तर, फ्रॉस की असुरक्षा के भा स्पष्ट सक्ेत दे दिए। सप्त-वर्षीय युद्ध के दौरान लडी गइ लडाइयो का एक ही कहानी थी-फ्रॉसीसी पराजय। नेतृत्व की कमी के साथ-साथ समथन का भी अभाव था, अत थल व जल-दोनो मे पराजय का हा मुॅह देखनी पडा। तथा 10 फरवरी 1763 इ० को पेरिस की सधि द्वारा इस अपमानजनक युद्ध की समाप्ति हुइ। इसमे फ्रॉस ने इग्लैंड को कनाडा आहियो की घाटी व मिसीसिपी का पूण बॉया तट समर्पित कर दिया। वे भारत मे भी पॉडिचेरी, चदरनगर, कारिकल यनाओन व माहे बिना रक्षकसेना (गेरीसन) के रख सकते थे। कितु, फिर भी लुइ पचदश के शासन के अतिम वर्षो मे फ्रॉस को कुछ लाभ भी हुआ-उसे लौरेन (1766 इ०) तथा कोर्सिका (1768 इ०) प्राप्त हुए। कितु,

अव्यवस्थित राजतत्रिय व्यवस्था इसका कोइ लाभ न उठा सकी और अलोकप्रियता के अनुपात मे अव्यवस्था ही ओर अधिक बढ गई थी।

पोम्पदूर की मत्यु 1764 ई० मे हो गई तथा, उसके पश्चात् की सरकार उजाशील थी-वह तत्काल प्रतिक्रिया करती थी तथा वह इतने समय तक ही क्रियाशील रही जितने म वह अपनी नीतियो के विरूद्ध अत्यधिक अलोकप्रियता अजित कर सकी।[25] क्याकि लुइ पचदश की भी मृत्यु 1774 इ० म हो गइ। उसकी मृत्यु के बाद उसके पौत्र लुइ षोडश का सिहासनारोहण हुआ। वह बीस वष का था तथा उसकी पत्नी व साम्राज्ञी मारिया थेरेसा की पुत्री मेरी ऐन्तोनियत उन्नीस वष की थी। जो लाग अब भी राजतत्रीय व्यवस्था के पक्षधर थे उनकी आशाएँ लुइ षोडश पर टिकी हुइ थीं। दूसरी ओर, नइ रानी की अपव्यायिता ने रिक्त राजकोश को ऋणो से लाद दिया ओर इस प्रकार वह जन-असतोष व आलोचना का केद्र हा गइ। लुइ षोडश न टर्गो को वित्त का महानियत्रक नियुक्त किया। टर्गो ने अनेक आथिक सुधार प्रस्तावित किए उसने कर की असमानता का समाप्त करने का प्रयास किया खाद्यान्नो पर से प्रतिबध हटाकर मुक्त-व्यापार प्रारम्भ किया मध्यकालीन शिल्प-श्रेणियो को समाप्त कर दिया। कितु, पुरातन व्यवस्था के पोषक व लाभ कमाने वाले उसके विरूद्ध हो गए, अत मइ 1776 इ० को उसे अपदस्थ करके जेनेवा निवासी नेक्कर को नया मत्री नियुक्त किया जो धारा के साथ तेरने मे विश्वास रखता था अत उसने नए कर लगाने के स्थान पर ऋण लने को प्रश्रय दिया। कितु, अन्तत उसे भी सुधार पर उतरना पडा कितु उनके लाभ निष्प्रभावी हो गए, क्याकि फ्रॉस तब तक अमरीकी स्वतत्रता सग्राम मे सक्रिय हो इग्लैंड से दो-दो हाथ करके प्रतिशोध पूण करने का इच्छुक हो गया था। तत्पश्चात् केलोन तथा ब्रायन भी क्रमश वित्त-नियत्रक के पद पर आसीन हुए, कितु वे भी असफल ही सिद्ध हुए। केलोन भी अपने पूववर्ती टर्गो एव नेक्कर के निष्कष पर ही पहुँचा कि जब तक दो उच्च वग - धमाधिकारी एव कुलीन- करो से सुरक्षित हैं तब तक कोइ सुधार सम्भव ही नही हैं। अत केलोन ने नोटेबल्स की सभा आहूत करने का आग्रह किया कितु यह सभा भी निष्फल रही (1787 इ०) कितु, इस सभा ने तथा पेरिस के पार्लेमेन्त ने सवधानिक कितु गत एक सौ पचहत्तर वर्षो से निष्क्रीय अतात-जनरल (ऐस्टेट्स-जनरल) की बेठक आहूत करने का सुझाव दिया। ब्रायन को भी इसी सस्था से डूबते को तिनके का सहारा वाली आशा थी। वस्तुत इस सस्था की बैठक की मॉग सवप्रथम अमरीका स्वतत्रता-सग्राम

के उत्साह मे सराबोर वीर माकुइस दी लफायत ने की थी। शासक व उसके सहयोगियो की यह मान्यता थी कि सम्भवत इससे कोइ लाभ ही हो जाए-नहीं तो-कम से कम उससे किसी को हानि तो न होगी-और यह सम्भवत उनकी सबसे भयकर भूल प्रमाणित हुइ, क्योकि, इसी सभा के आयोजन से फ्रॉस मे क्रॉति का सूत्रपात हो गया।[26] कितु, क्रॉति के प्रारम्भ मे व बाद के चरणो मे भी वह सुधारो को प्रोत्साहित करता कितु उनके क्रियान्वयन के पूव ही पीछे हट जाता था। इस अस्थिरता का एक ही परिणाम हो सकता था-कि वे शक्तियॉ जिहे उसने अनेकानेक कारणो से मुक्त कर दिया था-उन्होने उजा व गति प्राप्त कर एक तूफान का रूप धारण करके उसे व राजतत्र दोनो को विनष्ट कर दिया।[27]

इस बिगडती स्थिति मे मूल्यो मे अभूतपूव वृद्धि, कितु, वेतनो मे समानात्र वृद्धि के अभाव ने गरीबी व बेरोजगारी को बढावा दिया तथा, 1788 इ० मे भीषण अकाल ने स्थिति को ओर भयावह बना दिया, 1789 इ० के प्रारम्भ का जाडा भी फ्रॉस के लिए अभूतपूण था-जब फ्रॉस की अधिकाश बडी नदियॉ जम गइ थीं। फ्राँस मे एक परम्परा रही थी, कि, अनेक ग्रमीण सदियो की ऋतु मे काम की तलाश मे शहरो की ओर जाते थे और अब प्रतिकूल परिस्थितियो मे तो पेरिस मे भी अभूतपूर्व जनसख्या का जमावडा था, जो बेकार निराशोन्मत्त व साहसी थे - वे प्रत्येक सुधार का जबरदस्त स्वागत करते थे - अत वे ही अन्तत उत्तरदायी थे- फ्रॉस मे उस 'क्रॉतिकारी परिस्थिति के निमाण के लिए जिसने फ्राँस मे क्राँति को अपरिहार्य कर दिया था।[28]

चूँकि, सम्राट लुई षोडश ने मई 1789 ई० तिथि निधारित कर दी थी - आतात-जनरल की बैठक हेतु- तीनों एस्टेट्स अलग अलग बैठका में विचार-विमर्श करते व निर्णय लेते थे जिसके परिणामस्वरूप प्रथम दो वर्ग-धर्माधिकारी एव कुलीन वर्ग-जो सयुक्त रूप से विशेषाधिकार-प्राप्त वर्ग का गठन करते थे-सदैव विजयी हो जाते क्योकि प्रत्येक कर-सुधार के मुद्दे पर दो एक के अनुपात मे मत-विभाजन होकर वे असफल ही रहते थे। अन्तोगत्वा नेक्कर ने इस व्यवस्था मे परिवतन करके तृतीय वर्ग अथवा एस्टेट् को दुगने प्रतिनिधि भेजने व प्रति व्यक्ति एक मत के आधार पर निर्णय लिए जाने की व्यवस्था कर दी, कितु, यदि परम्परागत ढग से अलग-अलग वर्गो की अलग-अलग बैठको का आयोजन होता तो स्वाभाविक था, कि, जन-साधारण की अभिलाषाएँ पूर्ण नहीं हो सकतीं

थी और न ही फ्रॉस दुष्चक्र से निकल ही सकता था। 1789 इ० के बसत मे 'केहियस (मॉग-पत्रो) के आधार पर प्रतिनिधियो के चुनाव ने सपूण फ्रॉस मे एक नए उत्साह तथा आशा का सचार किया। 5 मई 1789 इ० को लुइ षोडश ने सत्र का उद्‌घाटन किया तदुपरान्त नेक्कर ने आथिक अत्यवस्था का विस्तृत विवरण प्रस्तुत किया। दूसरे दिन विशेषाधिकार प्राप्त वग ने अलग-अलग बैठके प्रारम्भ की कितु, तृतीय विशेषाधिकार-विहीन वग ने अपने एक-साथ एक ही बेठक पर अटल रहने का निणय ले लिया। अत एक सवैधानिक प्रश्न उठ खडा हुआ जिसने एक सकट को जम दिया-नेक्कर व सम्राट दोनो ही अतिम निणय मे चूक गए और तृतीय वग ने शेष दो वर्गो को भी उनके साथ एकीकृत रूप से बैठक करने का आह्वान कर, 17 जून 1789 इ० को अपनी बैठक को राष्ट्रीय सभा घोषित कर दिया- क्योकि यही विशेषाधिकार विहीन वग फ्रॉस का बहुसख्यक वग अर्थात् वास्तविक राष्ट्र था। शासक के सैनिको द्वारा अपने बैठक के कक्ष के द्वार बद किये जाने पर पास के टेनिस-कोट मे शपथ ग्रहण करके (जून 20) क्रॉति का बिगुल बजा दिया गया। 27 जून को सम्राट ने भी शेष दो विशेषाधिकार प्राप्त वर्गो को इसमे सम्मिलित होने का आदेश दे दिया और, इस प्रकार स्वय सम्राट ने सत्ताधिकार राष्ट्रीय सभा के हाथो मे सौंप दिया।[29]

दूसरी ओर, धमाधिकारी वर्ग के अनक सदस्य भी स्वेच्छा से इस राष्ट्रीय सभा मे सम्मिलित हो गए बल्कि, यूँ कहे, कि वे तृतीय एस्टेट के सदस्य बन गए, बावजूद प्रथम एस्टेट के सदस्य होने के। वे निम्न उपवर्गीय पादरी थे, जिनकी समस्त समानताएँ तृतीय एस्टेट के साथ थीं, न कि अपने धमाधिकारी वर्ग के। अत उनका यह कार्य आश्चर्यजनक कदापि नहीं था। इसी प्रकार, कुछ उदारवादी सदस्य भी इसी तृतीय एस्टेट (वर्ग) की सख्या मे अभूतपूव वृद्धि करने मे सहायक हो गए । राष्ट्रीय सभा के प्रारम्भिक वर्ष मे सवाधिक प्रतिभावान व अमरीका स्वतत्रता सग्राम का फ्राँसीसी नायक लफायत् इसी वर्ग का सदस्य था। इसी प्रकार मिराब्यू भी इसी वर्ग का था कितु, वह एक युगदृष्टा राजपुरुष था और इस वर्ग का होने के कारण, जन-साधारण की शकाओ के ऊपर कभी नहीं उठ सका।

प्रशासन, एक बार पुन शक्ति प्रदर्शन की योजना बनाने लगा। पेरिस व वसाइ के इर्द-गिर्द सैंय-टुकडियाँ एकत्र की जाने लगीं। 11 जुलाई को सम्राट ने नेक्कर को पदच्युत कर दिया। पेरिस विद्रोह के लिए अमादा-सा प्रतीत होने लगा। 13

जुलाइ को 'क्रॉतिकारी म्युनिस्पेलिटी' का गठन हो गया तथा वे बैस्टाइल के शास्त्रागार को लूटने हेतु दढ-सकल्प थे। चार घटे के लम्बे सघष के पश्चात् जन-शक्ति विजयी रही। 16 जुलाइ को सम्राट के नेक्कर को पुन नियुक्त किया कुलीन वग के अनेको सदस्य सशकित हो विदेशो को पलायन करने लगे। किंतु, पेरिस के उदाहरण का अनुसरण शेष फ्रॉस ने किया तथा क्रॉतिकारी म्यूनिस्पेलिटी के गठन की प्रक्रिया हर ओर शुरू हो गइ। कृषको ने आदोलन की राह ली एव चैत्यू ऋण व किराए से सम्बधित दस्तावेजो को नष्ट करना व जलाना प्रारम्भ कर दिया। उधर राष्ट्रीय सभा मे भी भावुकता के क्षणो मे 4 अगस्त को सामन्तो ने स्वत ही विशेषाधिकारो को त्यागना शुरू कर दिया। तथा, 26 अगस्त को राष्ट्रीय सभा ने मानवाधिकारो की उद्घोषणा ('डिक्लेरेशन ऑफ् द राइट्स ऑफ् मैन') को पारित कर दिया।

शासक तथा उसके दरबार ने एक बार फिर प्रयास किया कि, वे क्राँति को वही रोक दे। दूसरी ओर, अनुशासनहीनता सवत्र फैल रही थी व इसने बोरोजगारी व मॉग को बहुत बढा दिया। इधर, 5 अक्टूबर को सात-आठ सौ सशस्त्र लोगो ने वसाइ की ओर कूच किया एव राजमहल का मार्ग अवरूद्ध कर दिया था। लफायत व उसके 'नेशनल गार्ड्स' ने प्रासाद मे लूट-पाट के खतरे को टाल दिया किंतु, शासक ने वर्साइ छोडने का निर्णय ले लिया तथा उग्र भीड से घिरकर, सपरिवार पेरिस आ गया तथा 16 अक्टूबर को राष्ट्रीय सभा भी पेरिस मे ही स्थापित हो गई। वास्तविकता यह थी कि, सम्राट व राष्ट्रीय सभा दोनो ही जन-आदोलन के बदी बन चुके थे। वस्तुत विशेषाधिकारो की समाप्ति के बाद, एक सवैधानिक राजतत्र को प्रतिष्ठित कर क्राँति वहीं रूक गइ होती किंतु, इसके लिए आवश्यक था कि राष्ट्रीय सभा पेरिस के स्थान पर कहीं और स्थापित होती व पेरिस के राजनीतिक क्लबो तथा जन -आदोलनो के दबाव एव प्रभाव से सुरक्षित रहती।

इसी दौर म, 28 जुलाई 1790 ई० को 'सिविल कौन्स्टीट्यूशन ऑफ क्लर्जी पारित हो गया। इसके अनुसार बिशपो की सख्या 134 से घटकर 83 कर दी गई व उनकी भी नियुक्ति का प्रावधान जनता द्वारा निवाचन के आधार पर किया गया तथा, इस प्रकार से निर्वाचित बिशपो को नागरिक शपथ (सिविल ओथ') भी लेना अनिवार्य कर दिया गया। आधे धमाधिकारियो व सात बिशपो के अतिरक्ति शेष ने शपथ लेने से इकार कर दिया। इस प्रकार प्रति-आदोलन अथवा आदोलन के विरूद्ध प्रतिक्रिया प्रारम्भ हो गई, जो सिर्फ दरबार एव विशेषाधिकार-प्राप्त

वर्गो तक ही सीमित न रही अपितु, धामिक क्षेत्र या धामिक लोगो के मध्य भी व्याप्त हा गइ थी। 1791 इ० की बसत मे कैथोलिक पोप ने इस सिविल कॉंस्टीट्यूशन की भत्सना कर दी और इस प्रकार, क्रॉतिकारी फ्रॉस एव पोप के मध्य सम्बध-विच्छेद हो गए।

सम्राट को उसके दरबारियो ने विदेशी सहायता पर निभर रहने की सलाह दे दी एव वह आस्ट्रिया के शासक से सहायता की आशा करने लगा तथा 20-21 जून 1791 इ० की रात्रि को राजपरिवार ने भेष बदलकर फ्रॉस से पलायन का प्रयास किया। 21 जून की मध्यरात्रि को वेरेन्स मे उन्हे पहचान लिया गया तथा बाद मे राष्ट्रीय सभा के कमिश्नरो द्वारा पेरिस वापस लाया गया। इस बिदु तक तो जनता व्यवस्था-विरोधी होने के बावजूद राजतत्र के प्रति निष्ठावान बनी हुइ थी किंतु, अब एक विश्वासी शासक के अभाव मे फ्राँस एक गणतत्र हो गया ! वस्तुत जिस दिन सम्राट पेरिस लौटा था, उसी दिन से कोडिलियर्स क्लब ने राजतत्र समाप्त करने की मॉग करना प्रारम्भ कर दिया था जबकि राष्ट्रीय सभा म अब भी बहुमत राजतत्र व सम्राट को सुरक्षित रखने के पक्ष मे था। जैकोबिन क्लब विभाजित था। कितु, पेरिस की जनता के मध्य गणतत्रवाद का आदोलन जोर पकडने लगा। 17 जुलाइ को लफायत् ने नेशनल गाड्स को भीड पर गोली चलाने के भी आदेश दे दिए। क्राँतिकारी नेताओ के विरूद्ध दमन-चक्र जारी हो गया-व उनके नेता दाँतन व मरात् भूमिगत हो गए। इसी दौर मे, 14 सितम्बर के नवीन सविधान पेश हुआ व राष्ट्रीय सभा मे पारित हो गया व सम्राट ने भी इसके प्रति निष्ठा की शपथ ली। यह मध्यम-वर्गी सविधान था। जिसमे निधारित कर-सीमा वालो को ही मताधिकार प्रदान किया गया था, उसके आदेशो पर एक मत्री के भी हस्ताक्षर व उसकी स्वीकृति आवश्यक थी सम्राट दो सत्रो तक किसी भी कानून पर स्वीकृति रोक सकता था। सबको सावजनिक क्षमा प्रदान करके 30 सितम्बर 1791 ई० को अपने उद्देश्य की पूति के पश्चात् राष्ट्रीय सभा ने अपना काय-काल समाप्त घोषित कर दिया। इस प्रकार वह एक प्रबुद्ध राजनीतिक व समाजिक व्यवस्था प्रदान करने मे सफल रही कितु, आथिक मामलो मे एसिग्ना' जैसी कागजी-मुद्रा का प्रचलन कर-आथिक दिवालियेपन को कुछ अवधि के लिए और टाल दिया था। और धार्मिक क्षेत्र मे तो इस सविधान-सभा की उपलब्धि और दयनीय थी- उसने ऐसे फूट व भेद को जम दिया था कि उसने गृह-युद्ध की भूमि तैयार कर दी थी। इसी प्रकार, विदेशी-सम्बन्धो मे भी यथावत् को बरकरार रखते हुए, देश को युद्ध के कगार पर पहुँचा

दिया था।

1791 ई०मे नवीन सविधान-सभा का निर्वाचन हो गया। अपने ही बनाए नियमो के अनुसार पुराने सदस्य इसके सदस्य नहीं हो सकते थे। इसकी पहली बेठक 1 अक्टूबर 1791 इ० को हुई। इसी बीच साम्राज्ञी के निरन्तर प्रभाव के कारण लुइ ने अस्ट्रिया के साथ अपने बचाव के लिए सवाद जारी रखा, तथा यूरोपीय शासक भी अपने सिहासन के लिए, चितित होकर एक-जुट होने लगे कि, कहीं फ्रॉसीसी क्रॉति की प्रेरणा व प्रभाव उनकी सता को भी चेतावनी न दे दे। जन सामान्य अब तक निराश हो रहा था-वह प्रत्येक सभा को मध्यम-वग की प्रतिनिधि-सभा के रूप म देख रहा था। जैकोबिन क्लब व राजनीतिक दल- असतुष्ट तत्वो का एक बडा केद्र हो गया था वह राजतत्र को समाप्त कर क जन-सामान्य हेतु अधिक राजनीतिक अधिकार चाहता था। यह एक सगठित दल भी था जिसके केद्र या शाखाएँ समस्त फ्रॉस मे फैले हुए थे तथा इनके पास दॉतन मरात् व रोब्सपियर जेसे विश्वसनीय, योग्य व सफल नेता भी थे। इस सभा मे दूसरा राजनीतिक दल जिरोंडिस्ट' था- इसके अधिकाश सदस्य जिरोड क्षेत्र के थे अत यह नाम पडा-ये पहले उत्कट क्रॉतिकारी थे कितु, बाद मे मध्यम-मार्गी हो गए थे। वे मध्यम-वग के नियत्रण मे, गणतत्र की स्थापना के इच्छुक थे। इन दोनो दलो मे एक समानता थी- वे पुरातन-व्यवस्था के तो विरोधी थे ही। कितु, शासक, कुलीन व धर्माधिकारी वग पुरातन-व्यवस्था की पुनर्स्थापना के इच्छुक थे। आस्ट्रिया व प्रशा इनके पक्षधर थे-कितु, वे युद्ध के पक्ष मे नहीं थे। युद्ध के पक्षधर तो फ्राँस के ही विभिन्न तत्व थे। शासक इसलिए युद्ध चाहता था कि इसमे पराजित होकर फ्रॉस विदेशी शक्तियो द्वारा राजतत्र की पुनस्थापन्ा को अस्वीकार न कर सकेगा। उत्क्ट राजनीतिक दल युद्ध इस लिए चाहते थे कि सम्राट के राष्ट्र-विरोध व विदेशी शत्रुओ से सम्बध की कलइ खुल जाएगी और उसका पतन अपरिहाय हो जाएगा तथा तब गणतत्र की स्थापना सरल हो जाएगी अत युद्ध भी उपरोक्त कारणो से अपरिहार्य हो गया था व प्रारम्भ मे फ्राँसीसी सेनाओ को पराजय का सामना करना पडा। ्आस्ट्रिया व प्रशा की सेनाएँ पेरिस के निकट पहुँचीं तो उसके सेनापति ने ब्रन्सविक मनिफेस्टा घोषित कर दिया जिसके अनुसार आक्रमणकारी सेनाएँ सफ्लता प्राप्त कर राजतत्र बहाल करके सम्राट को पुनस्थापित कर देगी। लोगो का शकाएँ निमूल नही थी कि लुइ विदेशी-सम्पर्को से पत्राचार कर रहा था एव शत्रुओ के साथ मिलकर राष्ट्र-विरोधी गतिविधियो में सम्बद्ध था। अत पेरिस

की जनता का उद्वेलित होना स्वाभाविक था। 10 अगस्त 1792 इ० को उसने राजमहल पर धावा बोल दिया-पेरिस की उग्र भीड को परिस कम्यून नियत्रित करता था और उसे जैकबिन नियत्रित करते थे। अब इस सभा ने राजतत्र समाप्त करना तथा 'राष्ट्रीय कनवेन्शन' के आयोजन द्वारा नए सविधान निमित करना पारित करवा लिया तथा यह निणय भी कर लिया गया कि राष्ट्रीय कनवेन्शन के गठन हेतु चुनावो क सम्पन्न होने तक एक अन्तरिम सरकार का गठन हो ओर दॉतन इस अन्तरिम सरकार का अधिनायक बन गया!

10 अगस्त 1792 इ० के पश्चात्, सविधान का विचार अपनी गरिमा खोने लगा था तथा अब जिरोडिन्स' अथवा राष्ट्रीय सभा के प्रमुख वक्ताओ एव जैकोबिन अथवा पेरिस कम्यून' के प्रतिनिधिया के मध्य सघष प्रारम्भ हो गया। जैकोबिन्स मौउन्टेन (पवत) भी कहलाते थे क्याकि वे सभा म ऊँचा सीटो पर स्थान-ग्रहण करते थे'।[30] इसी बीच फ्रॉस मे विदेशी आक्रमणकारी सेनाएँ प्रविष्ट हो गइ ओर 15 अगस्त से 2 सितम्बर के मध्य ही लफायत भी फ्रॉस का पक्ष छोडने को विवश हो गया था। अत भय और हडबडाहट मे कम्यून तथा दॉतन ने पेरिस की जनता का आह्वान किया कि, वे खतरे मे फॅसे देश की सुरक्षा हेतु उठे और आवश्यक कार्यवाही करे। भय व आशाकित लोग अब देश-द्रोहियो को तलाशने लगे तथा राजशाही के समथको का व्यापक सहार शुरू हुआ जो सितम्बर माह मे होने के कारण सितम्बर नर-सहार' या 'मसेकर' के नाम से प्रसिद्ध हुआ। पेरिस की उग्र भीड जो पेरिस को नियत्रित करती थी-वह मध्यम-वर्गी व मार्गी सरकार से, बढती हुइ कीमतो एव सैन्य-पराजयो से पूणत असतुष्ट थी। वे आक्रमणकारी विदेशी सेनाओ एव उनके विजय के अवसर पर, राजतत्र की पुनस्थापना के विचार से सशक्ति तथा भयभीत थे। लगभग ग्यारह सौ लोगो का वध हो गया था। ओर, इसा बीच प्रशा व आस्ट्रिया की सेनाएँ फ्रॉस मे प्रविष्ट हो आर्गोन की ओर अग्रसर हो गइ थी। कितु, फ्रॉसीसी सेनाएँ उनके प्रतिरोध मे सफल रहीं- यह विजय उनके लिए उत्साह-वद्धक साबित हुई। वाल्मी मे प्राप्त इस विजय वाले दिन ही सविधान-सभा ने कन्वेन्शन को स्थान दिया-जिसका निवाचन वयस्क मताधिकार के आधार पर हुआ तथा यह जैकोबिन बहुमत वाली सभा थी!

अपने प्रथम सावजनिक सत्र मे - 21 सितम्बर 1792 इ० को सवसम्मति से राजतत्र समाप्त करने का कानून पारित कर दिया। दो माह टालने के पश्चात् क्रॉति के अधिकारियो को राजप्रासाद से सम्राट के विदेशी-शक्ति व निवासित

फ्रॉसीसियो के साथ पत्रव्यवहार के साक्ष्य मिले और सम्राट के मुकदमे की शुरूआत हो गइ तथा 20 जनवरी को गुलेटियन द्वारा मृत्यु-दण्ड दे दिया गया व 21 जनवरी रविवार को इस दण्ड का क्रियान्वयन हो गया। जो माउन्टेन दल के रोब्सपियर दॉतन एव मरात चाहते थे वह सम्पन्न हो गया। अब तो क्रॉति न वापस हो सकती थी और न समझौता ही सम्भव था-अब तो उसे अपने शत्रुओ का विनाश करना था अथवा खुद दम तोड लेना था। विदेशी शक्तियॉ किंतु, इस नृशस हत्या से दहल गई थी अत फरवरी व माच के माहो मे औस्ट्रिया प्रशा, इग्लैंड, स्पेन हौलैण्ड साम्राज्य के विभिन्न राज्य व इटली ने फ्राँस के विरुद्ध प्रथम कोएलिशन अथवा सयुक्त मोर्चे का उद्घाटन कर दिया।

इस प्रकार से विदेशी सयुक्त मोर्चे से भयभीत व आन्तरिक विद्रोहो से आतकित फ्राँस बढती कीमतो व बेरोजगारी का सामना कर रहा था। माउन्टेन' दल ने पेरिस की उग्र भीड को अपना अविभाज्य अग बना लिया था एव मध्य-वर्गी व मार्गी जिरोडिन्स को राष्ट्रीय 'कन्वेन्शन' से निष्कासित कर दिया। अब 'कन्वेन्शन' पूणतया जैकोबिन हो गया था। इन समस्त समस्याओ के निवारण हेतु, रोब्सपियर ने अपने तर्को आदर्शो व उत्कट विचारो पर आधारित आतक का शासन' (रेह्न औफ टेरर) शुरू कर दिया। उसके मतानुसार, उसके सद्गुणो पर आधारित गणतत्र या रिपब्लिक ऑफ् वर्च्यू को बनाए रखने हेतु यह आतक आवश्यक था। क्रॉति के शत्रुओ का विनाश अपरिहाय था अन्यथा वे क्रॉति को विनष्ट कर देते-इस भय ने आतक को तार्किक आधार प्रदान कर दिया। जैकोबिन नेशनल कन्वेन्शन ने इस आतक के क्रियान्वयन हेतु दो समितियो का गठन किया । प्रथम थी सार्वजनिक सुरक्षा की समिति अथवा द कमिटी ऑफ् पब्लिक सेफ्टी जिसमे गेब्सपियर सहित बारह सदस्य थे-यही वास्तविक सरकार थी-इसके पास निरकुश अधिकार थे। यह सेनाओ को निर्देषित करती, विदशो से सम्बध निधारित करती एव कन्वेन्शन के सदस्यो (डिप्टीज जैसा कि वे कहलाते थे) को कमिस्सार के रूप मे प्रान्तो मे तथा सेनाओ को निष्ठावान बनाए रखने हेतु वहॉ नियुक्ति करती थी। द्वितीय समिति सामान्य सुरक्षा की थी- द कमिटि ऑफ् जेनेरल सिक्योरिटी । यह वस्तुत एक राजनीतिक पुलिस समूह था जिसका काय क्रॉति के विरोधियो की तलाश कर रिवोल्यूश्नरी ट्रिब्यूनल या विशेष न्यायालयो मे मुकदमा करना होता था।

इस आतक के युग ने लगभग 20,000 (बीस हजार) लोगो को मौत के

कूट-कूट कर भर दी गई सैन्याधिकारियो की नियुक्ति मात्र योग्यता के आधार पर की जाने लगी अत सैनिक अब क्रॉति के आदश के लिए लडने लगे थे- जिसके फलस्वरूप सेना मे एक नइ चेतना का प्रसार हुआ व 1794 इ० मे यूरोषीय कोएलिशन की सेनाओ को पराजित करने मे फ्राँस सफल रहा। विदेशी आक्रमण एव गृह-युद्ध फ्रॉस को और जुझारू बना रहे थे।

जेकोबिन दल भी दो उपवर्गो मे विभक्त था-एक मध्यम-वर्गीय जा सम्पत्ति के अधिकार व स्वतत्र-व्यापार का पक्षधर था तथा दूसरा उत्क्टवादी जो गराबा के पक्ष मे नवीन भू-आवटन के पक्ष मे था। अन्ततोगत्वा युद्ध के लिए व्यापक जन-समथन की मॉग ने पलडा उत्क्टतावादी की ओर कर दिया। अत कामता व वेतनो पर सीमाबधन हेतु मेक्सिमम लौज पारित कर दिए फ्रॉसीसी कुलीन वग के वे सदस्य जो निवासित हो गए थे अथवा जो क्रॉंति-विरोधी थ-उनकी सम्पत्ति जब्त करके गरीबो में वितरित करने वाला लौज ऑफ् वटास भा पारित कर दिया गया। इसी प्रकार खाद्यान्न एव आपूति पर राशन-प्रतिबध लागू हो गए तथा मुद्रा-नियत्रण उपायो द्वारा मुद्रास्फीति नियत्रित करने का प्रयास हुआ, स्वण के नियात पर प्रतिबध लगा दिया गया। तब भी एसिग्ना का मूल्य दिनो दिन घटता रहा। नए उत्तराधिकार नियम द्वारा सम्पत्ति का विभाजन सभी जीवित बच्चो मे समान रूप से किया जाने लगा तथा सबकुछ वड को दन का नियम समाप्त हो गया ।

आतक के युग के कुछ काल के लिए इसाइ मत पर प्रतिबध लगा दिय गया था एव तक की पूजा प्रारम्भ हो गइ थी। 1794 इ० मे कन्वेन्शन न चच व राज्य को पूणत विभक्त कर दिया था। तथा सभी धर्मो के प्रति सहिष्णुता का व्यवहार किया जाने लगा था। शिक्षा के क्षेत्र मे परिवतनस्वरूप सावजनिक प्रारम्भिक शिक्षा अनिवाय कर दी ग इ थी एव एक वगहीन सैन्य स्कूल की स्थापना की गइ। इसी प्रकार सितम्बर 22 1792 इ० को प्रथम दिवस मानकर एक नवीन कैलेण्डर निमित किया गया। प्रत्येक माह मे दस दिन के तीन सप्ताह अथात् तीस दिवस होते थे। प्रत्येक दसवे दिन अवकाश होता था। यह केलेण्डर नेपालियन के काल मे निरस्त हो गया था। सामाजिक जावन म भी सहजता का साम्राज्य था। फ्रॉसीसी फेशन के कपडो का परित्याग कर दिया गया था। क्तिु, विचाग की अभिव्यक्ति की स्वतत्रता पर पूण रोक लग गइ थी तथा सभी पुस्तको लखो व मेग्जीनो पर सेसर लगा दिया गया था।

फ्रॉसीसी क्रॉंति का अतिम चरण-स्वाभाविक रूप से प्रतिक्रिया का ही निश्चित था और वही हुआ भी। उत्कट जैकोबिन के स्थान पर एक रूढिवादी सरकार स्थापित हो गइ तथा थमिडोरियन प्रतिक्रिया का श्रीगणेश हुआ। नए कैलेण्डर के द्वितीय वर्ष मे थमिडोर मास के नवे दिवस अथात् जुलाइ 27, 1794 इ० को रोब्सपियर को भी मृत्यु-दण्ड प्रदान कर दिया गया। इस प्रकार, क्रॉंति ने अपने अनेक सन्तानो की ही भॉंति राब्सपियर की भी बलि प्राप्त कर ला। अब आतक समाप्त हुआ। बुजवा का नियत्रण भी कन्वेन्शन पर स्थापित हो गया। सेसरशिप समाप्त हो गइ, राजनीतिक बदियो को मुक्त कर दिया गया कीमत व वेतन-प्रतिबधन कानून समाप्त हो गए जिरोडिस्ट, धमाधिकारी व अन्य निवासित (विशेषतया कुलीन) ने फ्रॉस वापस लौटना प्रारम्भ कर दिया। पब्लिक सेफटी व जनरल सिक्योरिटी की समितियो को भी भग कर दिया गया। जैकोबिनो के विरूद्ध आतक को श्वेत अथवा वहाइट टेरर की सज्ञा से सम्बोधित किया गया है, कितु, इसके विरूद्ध पेरिस के सामान्य जन की प्रतिक्रिया स्वाभाविक की उन्होने कन्वेन्शन पर चढाइ कर दी व सैन्य टुकडियो की सहायता से ही उन्हे तितर-बितर किया जा सका।

अब नवीन सरचना वाले नेशनल कन्वेन्शन ने 1795 ई० का सविधान अथवा तृतीय वष का सविधान पारित कर दिया जिसका विरोध एक ओर उत्कट राजनीतिक तत्वो व दूसरी ओर, राजशाही समथको ने किया। निवाचन की प्रक्रिया अप्रत्यक्ष हो गइ। जनता एलेक्टस को तथा वे ससद-सदस्यो को निवाचित करते थे। कम से कम श्रमिक के सौ दिन के वेतन के बराबर आय वाले ही एलेक्टर्स हो सक्ते थे। ससद के दो सदन थे-निचला-अथात् कौन्सिल ऑफ् फाइव हन्ड्रेड' तथा चालीस वष से अधिक आयु वालो हेतु उच्च सदन या 'कौन्सिल औफ् एल्डस'। कायकारी के रूप मे पाच सदस्यो की एक डायरेक्ट्ररी भी थी। एल्डर्स द्वारा प्रेषित सूचि मे से निचला सदन इनका निर्वाचन करता था। इस नए सविधान ने नागरिको के अधिकारो के साथ-साथ, उनके कतव्यो को भी स्पष्टत इगित कर दिया। इसी प्रकार प्रसिद्ध विचारक मोटेस्क्यू द्वारा परिभाषित एव अमरीका के सविधान द्वारा क्रियान्वित अधिकारो के विभाजन को भी नइ सरकार मे स्थान प्राप्त हो गया।

प्रारम्भ मे ही डायरेक्ट्री के विरूद्ध राजतत्रीय तत्वो का विद्रोह हुआ, जिसे नेपोलियन ने अक्टूबर 1795 ई० मे उन्मूलित कर दिया, तदुपरान्त जन-सामान्य का विद्रोह हुआ, जिसको दबा दिया गया। डायरेक्ट्री मुद्रा-स्फीति को भी नियत्रित

करन मे पूणत असफल रही एसिग्ना का इतना अधिक अवमूल्यन हो गया कि कागजी मुद्रा समाप्त कर के पुन धातु के सिक्के प्रचलित व मान्य हो गए। युद्ध के क्षत्र मे डायरेक्ट्री का काल अधिक उपलब्धियो का रहा प्रथम कोएलिशन ही ध्वस्त हो गया जब प्रशा स्पेन व हौलैण्ड ने 1795 इ० मे शाँति-स्थापित कर ली जिसके परिणामस्वरूप फ्राँस के विरूद्ध युद्ध मे मात्र इग्लैंड एव आस्ट्रिया भी सलग्न रह। फ्रॉस ने प्रशा से राह्इनलैंड प्राप्त कर लिया उत्तरी इटली के राज्यो पर भी उसने प्रभुत्व स्थापित कर दिया इसी प्रकार बल्जियम एव हॉलण्ड के समथक के रूप मे, फ्राँस ने उस पर नियत्रण बनाए रखा। इस तरह से पहली बार फ्राँस इतनी सुरक्षित तथा सुदृढ स्थिति म आ गया था। कितु, ये युद्ध बहुत मॅहगे प्रमाणित हुए तथा डायरेक्ट्री क पास तो सेना पर व्यय करने हेतु धन ही शेष नही था-सेनानायक अपनी भू-सम्पत्तियो के सहार अपना काय चलाने लगे जिसके फलस्वरूप वे अपने प्रकार से स्वतत्र सत्ता तथा शक्ति के केद्र हो गए। 1795 इ० तथा 1797 इ० के चुनावो मे राजतत्रीय तत्वो को सबल दबा दिया गया। 1797 इ० मे तो उन्हे अनेक स्थान प्राप्त हो गए, कितु गणतात्रिक सदस्यो ने सविधान का उल्लघन करते हुए नेपोलियन को निर्देशित कर, इन वैधानिक रूप से निवाचित सदस्यो को अपदस्थ कर दिया, और इस प्रकार वे सेना के साथ-साथ सेनानायको की कृपा पर आधारित और निर्भर हो गए। सितम्बर 4 1797 ई० के इस कूप दे ताँत् के पश्चात्, डायरेक्ट्री अधिनायकवादी हो गई तथा सरकार सदैव ही अव्यवस्थित रही। इसी बीच सेनानायक नेपोलियन ने ऑस्ट्रिया मे सफलता प्राप्त की जिसने उत्तरी इटली पर फ्राँस के नियत्रण को मान्यता प्रदान कर दी कितु, इग्लैंड को परोक्ष रूप से पराजित करने की योजना मिस्त्र विजय की असफला के कारण धूल-धूसरित हो गई तथा नेपोलियन की इस युद्ध के कारण अनुपस्थिति मे डायरेक्टरी उत्तरी इटली भी हार गई एव 1798 ई० में इग्लैंड, ऑस्ट्रिया एव रूस का सयुक्त सैकेन्ड कोएलिशन फ्रॉस के विरूद्ध अग्रसर होने लगा।

कितु, अब तक डायरेक्ट्री पूर्णत अलोकप्रिय हो चुकी थी, सैन्य पराजयो मुद्रा-स्फीति भ्रष्टाचार तथा सरकार की सामान्य कमजोरियो के साथ-साथ प्रतिदिन जैकोबिन अथवा राजतत्रिय षडयत्रो की अफवाहो ने लोगो को यह समझने व मानने के लिए बाध्य कर दिया था, कि, किसी परिवर्तन के पश्चात् ही सही स्थायित्व आवश्यक है। एक विजयी एव लोकप्रिय सेनानायक लोगो की ताकिक पसद थी-फ्राँस मे व्यवस्था पुनर्स्थापित करने हेतु पाँच मे से दो निदेशको-ऐबे

सिए व रोजर-ड्यूलौस ने जहा नेपोलियम को नइ सरकार के गठन के लिए आमत्रित किया वही अन्य तीन निदेशको ने इसका विरोध किया-इनमे से भी एक बरास ने त्याग-पत्र देना स्वीकार किया। कितु, गोहियर एव दू मौउलिन को निरन्तर विरोध के कारण माग से अलग रखने हेतु, कम्यून से दूर-सत क्लाउड मे ससद का आयोजन किया गया। कितु, यहाँ भी बोनापाट के विरूद्ध माहौल बन गया था किसी प्रकार से नेपोलियन के बडे भाइ लूसियन-जो पॉच सौ की काउसिल का अध्यक्ष का-ने स्थिति सम्भाल ली थी। शाम को (बल्कि रात्रि मे नौ बजे) डायरेक्ट्री को समाप्त करने ससद स्थगन करने का प्रस्ताव पारित करके कायकारी अधिकार तीन कौंसलो-ऐबे सिए रोजर-ड्यूकलौस एव, नेपोलियन बोनापाट के हाथ मे स्थानारित कर दिए। यह ब्रमियर (क्रॉति के कैलेण्डर का एक महीना) का 'कूप दे ताँत् कहलाया (नवम्बर 9 1799 इ०)



[8]

नेपोलियन-युगीन फ्रॉस

नइ व्यवस्था स्थापित करने के लिए नेपोलियन ने एक नवीन सविधान का निमाण कराया। इसका बाहरी आवरण तो गणतात्रिक था कितु, वास्तविक सत्ता तीन कौंसलो मे से प्रथम कौंसल अथवा नेपोलियन के हाथा मे केद्रित थी। उसे दस वर्षीय अवधि के लिए यह पद प्राप्त हुआ था। वास्तव म तो नेपोलियन एक सैन्य अधिनायक था। उसे विधि निमाण सेना के निदेशन युद्ध घोषित करने तथा कायकारी अधिकारियो की नियुक्ति क अधिकार-प्राप्त थे-क्योकि वह सवैधानिक सभा को ही नियत्रित करता था। तृतीय वष के सविधान के अनुसार कोसिल ऑफ स्टेट -प्रथम कौंसल के साथ विधि निमाता था और कौंसिल औफ स्टेट' की नियुक्ति नेपोलियन द्वारा होती थी।अत उसके व्यक्तित्व मे कायकारी व सवैधानिक दोनो ही शक्तियो समाहित थी। ट्रिब्यूनेट विधि पर बहस कर सकती थी कितु उसे उसपर मत देने का अधिकार नहीं था सविधान पीठ उसपर वोट डालती थी कितु, उसे बहस का अधिकार नहीं था। लोगो ने 1799 इ० मे सविधान को सस्तुति प्रदान कर दी। एलेक्टस (जिनपर सम्पत्ति अहता लागू होता था) का चुनाव-व्यस्क मताधिकार के आधार पर होता था। इन सबसे यह स्पष्ट हो जाता है कि वास्तविक सत्ता नेपोलियन के हाथो मे ही केद्रित थी। 1802 इ० मे नेपोलियन को आजीवन प्रथम कौंसल नियुक्त कर दिया गया-तथा उसे अपना उत्तराधिकारी नामित करने का भी अधिकार प्रदान कर दिया था। इसी प्रकार, 1804 इ० मे लोगो की सहमति प्राप्त करके वह फ्रॉस का सम्राट बन बैठा। तत्पश्चात् वह इटली का राजा बन गया तथा 1806 इ० मे उसने ऑस्ट्रिया के सम्राट को बाध्य कर दिया, कि वह पवित्र रोमन सम्राट का विरूद धारण न करे अपितु, अपने आप को मात्र ऑस्ट्रिया का सम्राट ही सम्बोधित करवाए !

यद्यपि नेपोलियन एक अधिनायक था उसने फ्रास को एक सक्षम व सामान्य रूप से इमानदार सरकार प्रदान करी। उसने प्रशासन विधि चच शिक्षा व वित्त

आदि के क्षेत्रो मे आवश्यक सुधार क्रियान्वित किए। सवप्रथम उसने प्रशासन का केद्रीकरण किया। जिलो को राष्ट्रीय सभा ने डिपार्टमेन्ट का सम्बोधन दिया था–नोपोलियन ने हर जिले मे 'प्रीफेक्ट' नियुक्त किए। उसने गुप्तचरी का सुदृढ सगठन खडा कर दिया था, ताकि, व्यवस्था बनी रह सके, समाचार-पत्रो व पुस्तको की सेसरशिप कठोरता से लागू की गई, स्वतत्र सम्भाषण, प्रेस व सभाओ तथा विरोध मात्र पर प्रतिबध अपरिहार्य हो गया था, फिर भी सरकारी नौकरियो मे चयन, योग्यता के आधार पर शुरू हो गया। नेपोलियन ने अपना ध्यान ऊजा व धन लोक-निर्माण कार्यो, पेरिस के सौंदयकरण सडक नहर व पुल निर्माण मे लगाया।

1801 इ० मे नेपोलियन तथा पोप पाइस सप्तम के मध्य एक समझौता हुआ जिसे कौंकौडा कहते हैं तथा यह 1905 इ० तक चलता रहा। इसकी शर्तो के अनुमार, चच ने नेपोलियन के शासन को वैध मान्यता प्रदान कर दी, चच ने क्रॉति के युग मे जब्त की गइ अपनी सम्पत्ति पर से अपना अधिकार समाप्त मान लिया अथात् पुनवितरण मे जिन गरीबो को ये भू-भाग आवटित हो गए थे उनका स्वामित्व बना रहा, बिशप नामित करने का अधिकार फ्रॉस-सरकार को प्राप्त हो गया-निम्न धमाधिकारी की नियुक्ति का अधिकार बिशप को था पोप को बिशप को अपदस्थ करने का अधिकार अवश्य प्राप्त था टिथ जैसा शोषक-कर (जिसकी वसूली चच करता था) समाप्त कर दिया गया-हॉलाकि इससे चच की आय का एक स्त्रोत कम हो गया कैथोलिक मत को बहुसख्य फ्रॉसीसियो के धम के रूप म स्वीकार कर लिया गया किंतु, अन्य मतो व धर्मो के प्रति भी सहिष्णुता की नीति अपनाइ गइ। चच के समस्त अधिकारियो एव कमचारियो को वेतन राज्य द्वारा प्रदान किया जाता था।

लेकिन नेपोलियन का सवाधिक महत्वपूण सुधार उसकी विधि सहिता अथवा कोड नेपोलियन था। इसकी सरचना एव सकलन 1804 से 1810 इ० के मध्य हुआ था। उसके विधि विशेषज्ञो ने अनक वर्षो तक परिश्रम करके, क्रॉति एव राजतत्रीय परम्पराओ को समान्वित किया। उन्होने रोमन तथा सामन्ती विधिया जेसे दो विरोधा धाराओ को समन्वित करके एक सुदृढ एकीकृत विधि सहिता के निमाण मे सफलता प्राप्त की। यह नवीन कोड चारो भागो मे विभक्त था सिविल अथवा दिवानी क्रिमिनल अथवा अपराध- विधि कमशियल अथवा वाणिज्यिक एव पीनल अथवा दण्ड-सहिता। दिवानी सहिता तो आगे-चलकर, बेल्जियम हालेण्ड, इटली जापान व अमरीकी प्रान्त लुइसियाना मे

भी लागू कर दिया गया। सभी व्यक्तियो को कानून के समक्ष बराबरी का दजा प्राप्त था हॉलाकि न्यायालयो म राज्य के हिता को अधिक प्रश्रय प्राप्त था। अपराध पता लग्गने अथवा न्याय के रूप मे भी यातना का प्रयोग होता रहा तथा इसी प्रकार छोटे-मोटे अपराधो मे मृत्यु-दण्ड भी समाप्त नहीं किया गया था। किंतु, पत्नियो छोटी उम के बच्चो एव अवैध बच्चो को सुरक्षा एव सरक्षण प्रदान करने वाले विशेष कानून समाप्त कर दिए गए। पिताओ को ही सतानो पर समस्त अधिकार प्राप्त थे-माताओ को उनसे वचित रखा गया था। गैर-धामिक अथवा सिविल विवाहो तथा तलाक को वैधानिक मान्यता प्रदान कर दी गइ। वाणिज्यिक-सहिता द्वारा मध्यम-वग को अधिक लाभ प्राप्त हुआ श्रमिक-सघा को अवध घोषित कर दिया गया तथा ऋण, सविदा अथवा अनुबध वसीयत सम्पत्ति एव प्राधिकरणो से सम्बधित नए कानून बनाए गए अथवा पूववर्ती कानूना मे परिस्थितिजन्य सशोधन किए गए।

शिक्षा के क्षेत्र मे भी नेपोलियन-प्रशासन की उपलब्धि अद्वितीय रही। उसने सावजनिक प्राथमिक विद्यालयो की स्थापना प्रत्येक गॉव म की उसने माध्यमिक स्कूल अथवा हाइ स्कूल' अथवा लाइसीज , अध्यापक प्रशिक्षण स्कूलो तकनीकि स्कूलो को वृहद स्तर पर स्थापित किया। इस पूरी व्यवस्था पर नियत्रण हेतु उसने 1808 इ० मे 'यूनिवसिटी ऑफ फ्राँस की स्थापना करी-जो पूण शिक्षा व्यवस्था का प्रशासनिक केद्र था। हॉलाकि इस पूर्ण व्यवस्था का एक उद्देश्य नेपोलियन के प्रति निष्ठावान नागरिक तयार करना था।

फ्रॉस की क्रॉति एव क्रॉति के काल ने नेपोलियन के उदय को अपरिहार्य बनाया था-फ्रॉस की आथिक स्थिति य। वित्तीय सकट ने विशेषतया- अत नेपोलियन ने वित्ताय सम्बन्धो को नियत्रित करने एव सुव्यवस्थित करने हेतु बेंक ऑफ् फ्रॉस का स्थापना करी मुद्रा-व्यवस्था को भी एक सुदृढ आधार प्रदान किया, वित्ताय वजट को भी सतुलित किया गया। नेपोलियन न कर-वसूलो की व्यवस्था को भी पुननिमित किया-उसने इस काय के लिए वेतनभोगी सरकारी प्रतिनिधियो अथवा कमचारियो को नियुक्त किया तथा पूव के भ्रष्ट कर-अनुबधको को हटा दिया। उसने इस बात का भी ख्याल रखा कि कर सब पर बराबर से वितरित हो किसी एक वग पर अधिक कर न लगाए जाएँ तथा, सभी लोग समय पर कर जमा कर दिया करे। उसने क्रॉतिकारी भू-वितरण को मान्यता प्रदान कर के कृषको की भी निष्ठा प्राप्त कर ली थी। वे उसे अपना सरक्षक मानने लगे।[31] यह राष्ट्र के भौतिक हितो से सम्बद्ध प्रश्न था अत उसने प्रतिक्रिया

के स्थान पर इसमे क्राँति का पक्ष लिया।[32]

उपरोक्त वर्णित महत्वपूर्ण व आश्चर्यजनक प्रशासनिक उपलब्धियो मे फिर भी, नेपोलियन की आशिक उजा का ही व्यय हुआ, क्योकि, इन्ही वर्षो मे नेपोलियन की सैंय-कार्यवाहियो, युद्ध-विजयो व सफल कूटनीतिक गतिविधियो ने यूरोप को चकाचौंध एव प्रभावित किया। शनै शनै यूरोप मे फ्राँस के प्रभाव का विस्तार होने लगा व भावी फ्रॉसीसी साम्राज्य की पृष्ठभूमि तैयार होने लगी।[33] वैसे भी यूरोप के प्रति फ्राँसीसी आक्रामक नीति क्रॉति की विरासत थी।

नेपोलियन को सवप्रथम रूस, ओस्ट्रिया एव इग्लैंड की सेनाओ के द्वितीय कोएलिशन' का सामना करना पडा। किंतु, शीघ्र ही रूस इससे पृथक हो गया तथा औस्ट्रियाई सेना को नेपोलियन ने पराजित कर दिया जिसके फलस्वरूप उसने औस्ट्रिया को लूनेविले की सधि' पर हस्ताक्षर करने को विवश कर दिया (1801 इ०)। इस सधि की शर्तें अक्षरश वही थीं जैसी कैम्पो फोमियो की सधि की थी। अब इग्लैंड कोएलिशन मे अकेला रह गया एव वह युद्ध से भी पूणत थक व हताश हो चुका था अत उसने भी 'अमीन्स की सधि' द्वारा 1802 इ० मे शाँति स्थापित कर ली। इसकी शर्तो के अनुसार इग्लैंड ने फ्राँस के विजित उपनिवेश व अन्य क्षेत्र उसे वापस देना स्वीकार किया। नेपोलियन ने जबकि, दूसरी ओर, इग्लैंड को विनमय मे कुछ भी प्रदान नहीं किया अपितु, यूरोपीय बाजारो मे अग्रेजी उत्पाद के पुनप्रवेश पर भी प्रतिबध लगाए रखा ' 'लूनेविले की सधि के अनुसार नेपोलियन को जर्मनी के मानचित्र मे परिवतन करने की स्वतत्रता प्राप्त हो गइ, उसने जमनी के तीन सौ से अधिक रियासती राज्यो को समाप्त कर दिया इनके अधिकाश भाग उसने दक्षिण के राज्यो जेसे बावेरिया वुर्टेम्बर्ग एव बेदेन आदि को सौंप दिए-जो उमके प्रति निष्ठावान भी थे-उसका मूल उद्देश्य फ्रॉस के प्रभुत्व वाले एक तृतीय जमनी का निर्माण था ताकि वह औस्ट्रिया एव प्रशा के प्रभुत्व वाले जमनिया के प्रभाव को सतुलित कर सके।[34]

इग्लैंड इस पराजय-भाव वाली अमीन्स की सधि से पूणत असतुष्ट था व हर कीमत पर शीघ्रताशीघ्र उसको निष्फल करने का इच्छुक था, अत एक वष बाद ही 1803 इ० मे फ्रॉस के विरूद्ध युद्ध का श्रीगणेश कर दिया। नेपोलियन ने युद्ध-परक तैयारियॉ करते हुए, सवप्रथम अपने नवीन विश्व-साम्राज्य की स्थापना के विचार का परित्याग करते हुए, सयुक्त राज्य अमेरिका को उसका

क्षेत्र लुइसियाना बेच दिया। 1805 इ० आते-आत इग्लैंड ने पुन फ्रॉस के विरूद्ध यूरोपीय देशो के एक नवीन सयुक्त मोर्चे का निमाण कर दिया जिसे थड कोएलिशन' के नाम से जाना गया। इसमे भी वे ही पुराने देश इग्लैंड रूस एव ओस्ट्रिया सम्मिलित थे।

नइ घेरेबदियो के फलस्वरूप सवप्रथम ट्रैफेलगर का युद्ध (1805 इ०) हुआ। इग्लैंड के म्हान एडमिरल लोड नेल्सन ने केप ट्रफेलगर (स्पेन) के तट पर फ्रॉस व स्पेन की सयुक्त जल-पोतो म से आधी डुबो दी व उन्ह बुरी तरह से पराजित कर दिया-इस युद्ध मे इग्लैंड को एक भी पोत अथवा जहाज की क्षति नहीं उठानी पडी कितु, युद्ध की विभीषिका के चलत एडमिरल नेल्सन वीरगति को प्राप्त हुए। इस युद्ध ने एक निणायक भूमिका निभाइ व स्पष्ट सकेत दे दिए, कि समुद्र पर आदेश इग्लेड का ही सवमान्य होगा तथा इसी के कारण ब्रिटेन पर आक्रमण की योजना का परित्याग नेपोलियन को करना पडा । जहॉ इग्लैंड न अपनी प्रभुसत्ता जल-युद्ध अथवा समुद्र म स्थापित कर ली थी नेपोलियन थल पर लडाइ मे अब भी अजेय था। उसने आस्टलिट्ज क युद्ध मे आस्ट्रिया एव रूस की सयुक्त सेनाआ को पराजित करक आस्ट्रिया को प्रेसबग की सधि पर हस्ताक्षर करने को विवश कर दिया इस सधि की शर्तो के अनुसार नेपोलियन क दक्षिण के समथक राज्यो को अनेक आस्ट्रियाइ क्षेत्र प्राप्त हो गए तथा वेनशिया को औस्ट्रिया से पृथक कर के नेपोलियन क इटली साम्राज्य का अग बना दिया गया। इस प्रकार, फ्रॉस को उत्तरा इटली पर सपूण नियत्रण प्राप्त हो गया एव मध्य यूरोप मे उसका प्रभुत्व निश्चित-सा हो गया। अगले वष नेपोलियन ने अपने सरक्षकत्व मे पश्चिम जमन राज्यो का एक कान्फेडरेशन ऑफ द राइन अथवा राइन क्षेत्रीय राज्यो क सघ की स्थापना कर दी। तथा साथ ही उसने ओस्ट्रिया के शासक फ्रॉसिस द्वितीय को बाध्य किया कि वह अपने पवित्र रोमन सम्राट का खिताब त्याग द व मात्र ऑस्ट्रिया के सम्राट का विरूद धारण करे रहे। जमनी के पुनगठन के इन कदमो व सुधारो के कारण हा उसे जमन एकता का पितामह माना जाता हे।[5] कितु, जमन राज्यो पर फ्रॉसीसी प्रभुत्व की स्थापना से प्रशा रुष्ट हो गया व उसने फ्रॉस के विरूद्ध मोचा सम्भाल लिया कितु, शीघ्र ही जेना एव आस्टाड्ट के युद्धो मे नेपोलियन की सनाओ से पराजित हुआ-अब नेपोलियन ने बलिन म प्रवश भी किया। यही नहीं नेपोलियन ने अब थड काएलिशन के तीसरे दश की ओर अपना ध्यान केद्रित करते हुए, फ्रीडलेड के युद्ध मे रूसी सेनाओ का

परास्त किया (1807 इ०)। इसी क परिणामस्वरूप दोनो सम्राट ति
पर मिले एव 'तिलसिट की सधि' हुइ। यह नेपोलियन की सत्ता का
था। जार एलेक्जडर प्रथम एव नेपोलियन ने वस्तुत यूरोपीय महाद्व
अपने प्रभाव-क्षेत्रो के रूप मे विभक्त कर लिया। रूस को अपने प्र
क्षेत्र के रूप मे फिन्लैण्ड पूर्वी यूरोप के अनेक भाग एव तुर्की प्राप्त हु
पश्चिमी यूरोप को नेपोलियन के प्रभुत्व वाले क्षेत्र के रूप मे स्वीकार
गया। साथ ही रूस ने अपने क्षेत्रो मे ब्रिटिश व्यापार को निषेघ घो
स्वीकार कर लिया। कितु, इस सधि से सवाधिक क्षति प्रशा का
आधा क्षेत्र नेपोलियन के नियत्रित राज्यो (जमन-राज्यो) को प्रदान
गया। इसी प्रकार एल्बे के पश्चिम के प्रशा-क्षेत्र से एक नवीन व
के राज्य का निमाण करके नेपोलियन के भाइ जैरोम के अधीन कर
तथा प्रशा-नियत्रित पोलिश (पोलण्ड के) प्रान्त ग्रेण्ड डची ऑफ
नाम से नेपालियन के समथक सेक्सनी के शासक को प्रदान कर
प्रशा की सेनाओ को मात्र ब्यालिस हजार सेनिको तक सीमित कर
तथा फ्रॅसीसी सेनाआ ने बलिन पर आधिपत्य स्थापित कर लिया।
लेकर डैन्माक तक का समस्त तट फ्रॉस के अधीन आ गया।

इस प्रकार से 1812 इ० आते-आते, फ्रासीसी साम्राज्य अप
पर पहुँच गया था। नेपोलियन ने नए राष्ट्रो का निमाण करने के साथ
बडे विरूद भी निमित किए तथा इन दोनो को अपने मित्रो तथा
मे वितरित कर दिया। महान् जुलियस सीजर के गौल की भॉति नेप
साम्राज्य को तीन भागो मे विभक्त किया जा सकता है। प्रथम, तो फ्रॉसीस
विशिष्ट' था जो प्रत्यक्ष रूप से नेपोलियन द्वारा प्रशासित था इसमे फ्रॉस
हौलैण्ड राह्इनलेण्ड डेन्माक तक का जमन तट इलिरियन प्रान्त (यु
का डालमाशिया प्रान्त) रोम सहित उत्तरी इटली के अधिकाश भाग
थे। नेपोलियन के पुत्र का भी विरूद रोम के शासक' था। द्विती
निभर देशो की हम गणना कर सकते हैं जो नोपोलियन के सम्बधियो
मित्रो द्वारा प्रशासित थे। उसके भाइयो को स्पेन एव वेस्टफैलिया (पश्चि
के सिहासन प्राप्त थे उसके सौतेले पुत्र को इटली के राजदूत का पद
उसका निष्ठावान सेनानायक मूरत्, नेपल्स का शासक था उसका मित्र
का शासक ही वौरसौ का ग्रैण्ड ड्यूक (शासक) था, इसी प्रकार स्वि
का महासघ भी उसके प्रति निष्ठावान व्यक्तियो के शासनाधीन था। तृ

राष्ट्रीय आत्मनिधारण को ही सशक्त करते हैं, अत नेपोलियन के लिए
हो गया कि अपने वृहद् साम्राज्य को सातत्य प्रदान करने के लि
प्रवृत्तियो को हा निष्फल कर दे जिनके कारण वह स्वय सत्ता प्र
सफल रहा था। अन्ततोगत्वा 1789 इ० मे प्रारम्भ हुइ क्रॉति ने ऐ
प्रवाहित कर दी थी, जिनमे राजतत्रीय व्यवस्थाएँ पनप ही नही सक्ती थीं
का साम्राज्य, इस प्रकार अन्तनिहित विरोधी प्रवृत्तियो के कारण प
गया-यह अपरिहाय था।[37]

नेपोलियन इतिहास क्रम को भली-भॉति समझता था-वह
कि इग्लड की फ्रॉस से परम्परागत शत्रुता है अत उसे बिना प
हुए यूरोपीय महाद्वीप पर फ्रॉसीसी प्रभुसत्ता स्थापित नही हा सकत
इग्लैड मूलत एक आपनिवेशिक शक्ति था, जो इन उपनिवेशो का उ
माल की खरीद एव उत्पादित वस्तुओ के बाजार के रूप मे करत
वह इग्लेंड का दुकानदारो का राष्ट्र अथवा, ए नेशन ऑफ शापकी
था। अत उसका दृष्टिकोण था, कि, चूँकि, इग्लैंड की जल-सेन
अद्वितीय है-उसे पराजित करना दुष्कर ही नहीं असम्भव ह इसीलिए
रूप से उसके आथिक हितो पर प्रहार कर के-पराजित किया जा
इस कारणवश उसने अपने प्रभाव-वाले यूरोपीय क्षेत्रा म अथात्
यूरोप मे ही महाद्वीपीय व्यवस्था लागू कर दी। 1806 इ० मे जारी का
डिक्रीज (कानून) द्वारा नेपोलियन क आश्रित एव समथक राज्या व
उत्पाद आयात करने पर प्रतिबध लगा दिया गया। दूसरी ओर इस
फ्रॉसीसी अथ-व्यवस्था को सुदढ करना चाहता था। उसके विचार
बार यूरोप के बाजार से ब्रिटिश सामान हटते ही वह स्थान फ्रॉस ए
उत्पाद प्राप्त कर सक्ते थे। ब्रिटेन की प्रतिक्रिया भी प्रभावी एव गं
1807 इ० मे आडस इन कासिल द्वारा नेपोलियन के आदेशो का
वाले दशा के जल-यान पर ब्रिटिश बदरगाहो म प्रवेश पर प्रतिबध
गया तथा ऐस जल-पोत, जिन्होने ब्रिटेन को कर अदायगी नही व
भी जब्त किया जा सक्ता था। इस प्रकार, ब्रिटेन भी यूरोप के वेकरि
स्त्रोतो को निष्प्रभावी करने के लिए जाल बिछा रहा था। स्वाभाविक
फ्रॉसीसी जल-सेना के अभाव मे ब्रिटेन के नियम तो पूर्णत प्रभा
रहे। उसके प्रत्युत्तर मे नेपोलियन ने मिलान डिक्री (धारा) उद्घोषि

राष्ट्रीय आत्मनिधारण को ही सशक्त करते हैं, अत नेपोलियन के लिए अपरिहाय हो गया, कि अपने वृहद् साम्राज्य को सातत्य प्रदान करने के लिए, वह इन प्रवृत्तियो को ही निष्फल कर दे जिनके कारण वह स्वय सत्ता प्राप्त करने मे सफल रहा था। अन्ततोगत्वा, 1789 इ० मे प्रारम्भ हुइ क्रॉति ने ऐसी शक्तियॉ प्रवाहित कर दी थीं, जिनमे राजतत्रीय व्यवस्थाएँ पनप ही नही सक्ती थीं। नेपोलियन का साम्राज्य इस प्रकार अन्तनिहित विरोधी प्रवृत्तियो के कारण पतनशील हा गया-यह अपरिहाय था।[37]

नेपोलियन इतिहास क्रम को भली-भॉति समझता था-वह जानता था कि इग्लड की फ्रॉस से परम्परागत शत्रुता है, अत उसे बिना पराजित किए हुए यूरोपीय महाद्वीप पर फ्रॉंसीसी प्रभुसत्ता स्थापित नही हा सकती ह। ओर इग्लैड मूलत एक आपनिवेशिक शक्ति था, जो इन उपनिवेशो का उपयाग कच्चा माल की खरीद एव उत्पादित वस्तुओ क बाजार के रूप म करता था। अत वह इग्लॅड को दुकानदारो का राष्ट्र अथवा, ए नेशन ऑफ शापकीपॅस कहता था। अत उसका दृष्टिकोण था, कि चूँकि, इग्लैंड की जल-सेना की शक्ति अद्वितीय हे-उसे पराजित करना दुष्कर ही नहीं असम्भव ह इसीलिए, उस परोक्ष रूप से उसके आथिक हितो पर प्रहार कर के-पराजित किया जा सकता ह। इस कारणवश उसने अपने प्रभाव-वाले यूरोपीय क्षेत्रा म अथात् लगभग पूण यूरोप मे ही महाद्वीपीय व्यवस्था लागू कर दी। 1806 इ० मे जारी का गइ बलिन डिक्रीज (कानून) द्वारा नेपोलियन क आश्रित एव समथक राज्यो को ब्रिटिश-उत्पाद आयात करने पर प्रतिबध लगा दिया गया। दूसरी ओर इसके द्वारा वह फ्रॉसीसी अथ-व्यवस्था को सुदृढ करना चाहता था। उसके विचारानुसार एक बार यूरोप के बाजार से ब्रिटिश सामान हटते ही वह स्थान फ्रॉस एव फ्रॉसीसा उत्पाद प्राप्त कर सकते थे। ब्रिटेन की प्रतिक्रिया भी प्रभावी एव गतिशाल थी-1807 इ० मे आडस इन कासिल द्वारा नेपोलियन के आदेशा का पालन करन वाले दशा के जल-यान पर ब्रिटिश बदरगाहो म प्रवेश पर प्रतिबध लगा दिया गया तथा ऐस जल-पोत जिन्होने ब्रिटेन को कर अदायगी नही की हे उन्हे भी जब्त किया जा सकता था। इस प्रकार, ब्रिटेन भी यूरोप के वेकल्पिक उत्पाद स्त्रोतो को निष्प्रभावी करने के लिए जाल बिछा रहा था। खासतौर से प्रभावी फ्रॉसीसी जल-सेना के अभाव मे ब्रिटेन के नियम तो पूर्णत प्रभावशाली बने रहे। उसके प्रत्युत्तर मे नेपोलियन ने मिलान डिक्री (धारा) उद्घोषित कर दी।

नक अनुसर (ब्रिटिश आदेशानुसार अपने-आप को जो तटस्थ ... रह ह) ब्रिटिश आज्ञाओ का पालन करन वाल सामुद्रिक जहाज फ्रॉस बदी बनाए जा सकत थ। इस प्रकार क आदेशा प्रति-आदशा क चलत ...य दश वास्तव मे असतुष्ट एव रुष्ट हा गए तथा सयुक्त राज्य अमरिका तमाम दशो न कुछ समय क लिए ता अपनी जहाजरानी गतिविधियो प ...र प्रतिबध ...पित कर दिया। नपाल्यिन का आशा थी कि आर्थिक-... गज्यिक गतिविधियो क अवरुद्ध हान क कारण इग्लड क व्यवसायी वर्गो हिता का दबाव अपना सरकार एव शासन पर हागा कि वह युद्ध समाप्त क शाघ्र हा नपालियन स समझाता कर। किंतु, जमानी वास्तविकता इसक ... विपरीत थी-यूराप का हा काय ब्रिटिश उत्पाद क अभाव म नहा चल रहा था अत तस्करी अपन चरम पर पहुँच गया था जिस फ्रॉसीसी जल-... राकन म पूणत असफल सिद्ध हुइ। अत फ्रॉसीसा व्यापार को इससे क्षति हुइ ज्बकि इग्लड का सयुक्त राज्य अमराका म नवान बाजार प्राप्त हा गए पूण यूराप बिना ब्रिटिश माल क कसमसान लगा था व वकल्पिक स्रोता अभाव म महाद्वितीय व्यवस्था का विराधी हाता जा रहा था। आर यही कारण यूरोप मे राष्ट्रवाद क पुनरुत्थान का जिसक परिणामस्वरूप अन्तत नेपोलियन पतन हो गया था।

...ोलियन का पतन

नेपालियन का पतन-उसकी व्यवस्था क अन्तर्निहित व आत्मघाती दोषा कारण-अपरिहाय था।[6] फ्रास के विजय अभियाना ने प्रतिक्रियास्वरूप अनन्त ...टश प्रतिराध को जन्म दिया-मइ 1803 इ० स प्रारम्भ होकर 1814 इ० तक ...न्तर युद्धा का क्रम चलता रहा। शॉति स्थापना की सम्भावनाएँ क्षीण होनी वह इस लम्बे अतराल मे वह स्थापित भा नही हुइ। नेपालियन को महाद्वीपीय ...वस्था द्वारा ब्रिटन को पराजित करन हतु अपनी तटीय सीमा अथवा सामुद्रिक ...ाओ का भा निरन्तर विस्तार करना आवश्यक हो गया था। और, इसक ...स्वरूप ब्रिटिश प्रतिराध व अन्य यूरापीय दशा की फ्रॉस से अप्रसन्नता बढती गइ। यह विजय एव प्रतिरोध का एक अजीब दुष्चक्र था। इसी प्रकार से ...लियन का साम्राज्य अपने भीतरी विरोधाभासा के कारण भा आत्मघाती था। विरोधाभास उसके वशीय एव राष्ट्रवादी नीतियो के मध्य था। अत उसके स्व-निमित विशाल साम्राज्य का पतन तो अवश्यम्भावी ही था।

नेपोलियन के द्वारा विजित देशो का राष्ट्रवाद उसकी सत्ता को शनै शनै क्षीण करने लगा था। इन तमाम देशो के राष्ट्रवादी तत्व अपनी रीतियो एव परम्पराओ के साथ-साथ, स्व-शासन के प्रबल इच्छुक थे, वे फ्रॉसीसी सेनाओ के साथ प्रविष्ट एकीकृत विधि व प्रशासनिक एकरूपता से खिन्न थे, सकीर्ण तत्व क्रॉतिकारी नारो व विधि के विरूद्ध थे तथा उदारवादी तत्व, सैन्य-अधिनायकवाद के विरूद्ध थे। और सभी तत्व उसके द्वारा सैनिको व धन की मॉग से असतुष्ट व रूष्ट थे। विरोध, प्रतिरोध, एव विद्रोह उपयुक्त अवसर की तलाश मे स्थगित मात्र था।

1803 इ० से 1813 ई० तक चला स्पेनी अथवा प्रायद्वीपीय युद्ध, नेपोलियन के ससाधनो को विनष्ट करने वाला सबसे प्रमुख युद्ध था। नेपोलियन को महाद्वीपीय व्यवस्था के चलते छोटे से देश पुर्तगाल पर आक्रमण करना पडा क्योकि उसने इग्लैंड के साथ व्यापार न करने से इकार कर दिया था। आगे चलकर प्रसिद्ध ड्यूक ऑफ वैलिग्टन के नेतृत्व मे ब्रिटिश सेनाए अपने पुराने समर्थक की सहायताथ भेजी गईं तथा, इसी समय, अपने बूरबौं शासक चार्ल्स चतुर्थ के स्थान पर, नेपोलियन के भाई जोजफ को शासक बनाए जाने के कारण, स्पेन ने विद्रोह कर दिया था-महाद्वीपीय एव क्रौंतिकारी-विधि के आगमन ने पुरातन स्पेनी विधि एव परम्पराओ का स्थान लेना प्रारम्भ कर दिया और इसके परिणामस्वरूप स्पेनी राष्ट्रवाद की उत्पत्ति हुई तथा नपोलियन को निरन्तर सेनाएँ भेजने के लिए बाध्य होना पडा किंतु, फिर भी, वह गुरिल्ला युद्ध का सफलतापूवूक सामना न कर सका। इस स्पेनी प्रतिरोध ने जहाँ एक ओर नेपौलियन का ध्यान व उर्जा नष्ट किया वही, दूसरी ओर दूसर लोगो को भी नेपोलियन के विरूद्ध जागृत होने का उदाहरण व आवश्यक प्रेरणा प्रदान करी। अन्तत ड्यूक ऑफ वैलिग्टन, स्पेन से शासक जोजफ सहित समस्त फ्रॉसीसी ताने-बाने को स्पेन से खदेडने म सफल रहा। स्पेन मे एक कैथोलिक राजशाही सरकार पुन स्थापित हो गई।

औस्ट्रिया एव प्रशा दोनो की अपमानजनक पराजय, जर्मन राष्ट्रवाद के उदय के लिए उत्तरदायी तत्व साबित हुए। जमन अस्मिता व श्रेष्ठता सर्वप्रथम जमन बुद्धिजीवियो ने स्थापित करना प्रारम्भ किया अत उन्होने जमनवासियो को गौरवमयी अतीत का स्मरण कराते हुए, उन्हे वतमान अधीनता की जजीरो को काटने के लिए जागृत किया। इसी के परिणामस्वरूप, सबसे सशक्त जर्मन राज्य औस्ट्रिया ने अन्तत, 1809 ई० मे इस विजेता के विरूद्ध युद्ध का बिगुल

ना ही दिया किंतु, पूणत पराजित होकर 'स्कोनब्रन की सधि (1809 इ०)
हस्ताक्षर करने के लिए बाध्य होना पडा। इस अपमानजनक सधि की शर्तो
अनुसार उसके डाल्मेशियन प्रान्त फ्राँस को प्राप्त हो गए तथा बौग्सौ की
ग्ड डची का क्षेत्र विस्तृत हो गया। ऑस्ट्रिया से स्थायी समथन के साथ-
थ, पुरुष सतान व उत्तराधिकारी की आशा मे नेपोलियन ने सम्राट फ्रॉसिस
तीय की एक पुत्री मेरी लुई से 1810 ई० म विवाह भी कर लिया।

जेना के इस युद्ध की औस्ट्रियाइ पराजय ने प्रशा को झकझोर दिया
310 ई० मे बलिन विश्वविद्यालय की स्थापना के साथ ही वह ज्मन सस्कृति
राष्ट्रवाद की धुरि बन गया। उसने अपनी सैन्य-व्यवस्था भी इतनी सुचारू कर
। थी कि सधि की शर्तों के अनुसार, जितने सैनिक रखे जा सकते थे उसके
न गुणे वह आरक्षित रखता था। इसी प्रकार प्रशासन मे आवश्यक सुधार कर
उसे पूर्णत केद्रीकृत कर दिया था ताकि शासक के हाथो मे अधिक अधिकार
शक्ति सीमित हो सके तथा नेपोलियन के विरूद्ध माचा ले सकने के लिए
ज्य को अधिक सक्षम व तत्पर बनाने की तैयारियाँ की जाने लगीं ।

इसी प्रकार, रूस को भी महाद्वीपीय व्यवस्था से अत्यधिक कष्ट व
नि हो रही थी ओर वह प्रतिकूल आर्थिक परिस्थितियो के कारण, किसी भी
कार, नेपोलियन के बधन से मुक्त होने के उपाय तलाश रहा था। वह फ्रॉस
औस्ट्रिया के निकटतम सम्बधो से सतर्क था फिर, नेपोलियन की हैप्सबर्ग
जकुमारी के साथ विवाह से उसे अपनी सत्ता के ह्रास के चिह स्पष्टत दिखाई
ने लगे, यूरोपीय महाद्वीप मे एक शक्ति के रूप मे, उसको अपना स्थान नगण्य
ने का खतरा दिखाइ देने लगा। इनके अतिरिक्त वह पोलैण्ड मे फ्राँस की
ठपुतली सरकार को भी सहन नहीं कर पा रहा था। तथा, उसकी आशाओ
अनुरूप उसकी पूर्वी महत्वाकाक्षाओ की पूर्ति मे भी नेपोलियन ने कोइ विशेष
हायता प्रदान नहीं करी। अन्ततोगत्वा इन सबके परिणामस्वरूप विश्व सैन्य
तहास की सर्वाधिक दुस्साहसिक दुघटना घटी-नेपोलियन का मौस्को अभियान
समे इतिहास की सबसे विशाल छह लाख दस हजार की सशक्त सेना पूणत
नष्ट हो गइ व उसमे मात्र बीस हजार ही शेष बचे रह गए थे।[39] रूस द्वारा
हाद्वीपीय व्यवस्था का पक्षधर न बनने के कारण, कुपित नेपोलियन ने रूस
र आक्रमण कर दिया-किंतु, रूसवासी प्रत्यक्ष युद्ध से बचते हुए पीछे हटते
ले गए । पीछे हटना एक सामरिक योजनाबद्ध प्रक्रिया थी-पीछे हटती हुई

रूसी सेनाएँ शहरो, ग्रामो, खेतो एव खलियानो मे आग लगाकर नष्ट करती गईं अर्थात् ' स्कोर्च्ड अर्थ ' तकनीक अथवा युद्ध पद्धति अपनाकर, आक्रमणकारी सेनाओ को न केवल सुरक्षित प्रश्रय से ही अपितु, खाद्यान्न से भी वचित कर दिया। नेपोलियन इस आशा मे बढता गया, कि मौस्को पहुँचकर इन दोनो समस्याओ का समाधान हो जाएगा। कितु, मौस्को मे भी उसे निराशा ही हाथ लगी-उसपर आधिपत्य स्थापित होने पर नेपोलियन को ज्ञात हुआ कि, अधिकाश शहर जल चुका है अत आसन्न रूसी ठडक से आश्रय व सुरक्षा के अभाव मे वह वापस लौटने को बाध्य हो गया। वापस लौटती सेनाओ को रूसी सेनाओ के प्रतिदिन के आक्रमणो के साथ-साथ भयानक सर्दी, बिमारी व अव्यवस्थित होने के बोझ का भी सामना करना पडा। परिणामस्वरूप नेपोलियन की सेनाएँ पूर्णत हतोत्साहित हो गई।

रूस के इस प्रकरण के फलस्वरूप ही प्रारम्भ मे प्रशा तथा, शीघ्र ही ऑस्ट्रिया भी, अपने पूर्व शत्रु के विरूद्ध उठ खडे हुए एव ब्रिटेन रूस के साथ चतुर्थ सयुक्त मोर्चे अथवा 'फोथ कोएलिशन" का निमाण कर डाला (1813 ई०)। हॉलाकि-नेपोलियन ने एक नवीन सेना पुनर्गाठित कर ली वह ' लीप्जिग के महान युद्ध" मे पराजित हो गया (1813 इ०)। इस युद्ध मे नेपोलियन के विरूद्ध लगभग सभी प्रमुख देश सम्मिलित थे अत इसे राष्ट्रों का युद्ध अथवा 'द बैटल ऑफ नेशन्स भी सम्बोधित किया गया है। अब तक सभी यूरोपीय राष्ट्र नेपोलियन के विरूद्ध एकजुट हो गए व पेरिस की ओर कूच कर दिया। नेपोलियन ने अपने पुत्र नेपोलियन द्वितीय के पक्ष मे पद त्याग कर के एल्बा के छोटे से द्वीप मे सम्राट के विरूद एव 200 000 पौंड के साथ रहना स्वीकार कर लिया। इस प्रकार की उदार शर्तो के साथ एलाइज अथवा मित्र देशो ने स्वाधीनता के युद्ध अथवा वौर ऑफ लिब्रेशन को अजाम दिया।

तदुपरान्त यूरोपीय शक्तियो का एक सम्मेलन वियना मे आयोजित हुआ ताकि शाँति एव व्यवस्था स्थापित हो सके। 1792 ई० के पूव वाली सीमाओ तक फ्रॉस को पुनगठित कर दिया गया (उसके मात्र विजित देश-प्रदेश ही उससे पृथक कर दिए गए)। शीघ्र ही बूरबौं उत्तराधिकारी लुइ अष्टादश (या अठारहवॉ सिहासनारूढ हुआ। उसने तत्काल अपनी फ्रॉसीसी जनता को एक उदारवादी सविधान प्रदान कर दिया, जो चाटर ऑफ 1814 के नाम से प्रसिद्ध है। इसी के साथ, नेपोलियन विधि सहिता, नवीन कर-प्रणाली, बैंक ऑफ फ्राँस तथा

अन्य अनेक शिक्षण प्रशासनिक एव सस्थागत सुधार जो सर्वप्रथम नेपालियन ने प्रस्तावित व क्रियान्वित किए थे वे बरकरार रखे गए। लुइ अठारहव ने पुरातन व्यवस्था को पुनस्थापित करने का कोइ प्रयास नहीं किया। फिर भी माच 18,5 इ० मे नेपालियन एल्बा से वापस लौटा तथा एक अत्यन्त व वास्तविक उदारवादी सरकार प्रदान करने का आश्वासन दिया। किन्तु, बेल्जियम के वाटरलू नामक स्थान पर वह अपने जीवन मे अतिम बार पराजित हुआ। विजय का सेहरा ड्यूक ऑफ वैलिग्टन के माथे पर बँधा। उसे अब की बार दक्षिण एटलाटिक के सेन्ट हेलेना नामक द्वीप मे निवासित कर दिया गया (18 जून 1815 इ०)।



[9]

प्रतिक्रिया का युग

नेपोलियन के साम्राज्य ने यूरोप को एक प्रकार की व्यवस्था एव एकता प्रदान की थी। उसके प्रतिरोध व प्रतिक्रिया ने इसके प्रतिकूल एक भिन्न प्रकार की एकता को जन्म दिया, जिसका मुख्य उद्देश्य फ्राँस को परास्त करना था। और यह एकता ही नेपोलियन के दोनो निर्वासनो के लिए उत्तरदायी थी। नेपोलियन ने अपनी इच्छानुसार यूरोप के मानचित्र को पूर्णत तहस-नहस कर दिया था अत उसका पुननिमाण आवश्यक था। साथ ही आवश्यक था भविष्य की क्रॉंतियो व नेपोलियनो के उदय से सपूर्ण यूरोप को सुरक्षित तथ सरक्षित रखना। यूरोप के तमाम देशो ने नेपोलियन के विरूद्ध असामान्य एकता का प्रदशन किया था, अत अब वे असामान्य ढग से पराजित फ्रास के विजित प्रदेशो के विभाजन-वितरण के लिए वियना मे एकत्रित हुए। वियना सम्मेलन का मूल उद्देश्य क्रॉति से पूर्व की स्थिति मे यूरोप को पुनर्स्थापित करना था। इसमे यूरोप के प्रत्येक देश के प्रतिनिधियो ने भाग लिया, कितु, औस्ट्रिया, इग्लैंड, प्रशा व रूस-के अर्थात् चान्सलर मैटरनिख लौर्ड कैस्लरेह, फ्रेड्रिक विलियम द्वितीय एव जार एलैक्जैन्डर प्रथम क्रमश मुख्य थे। फ्रॉस को भी न्यायसगत प्रतिनिधित्व प्रदान करने के दृष्टिकोण से तैलेरॉ को निमत्रित किया गया था। कितु, इन मुख्य प्रतिनिधियो मे भी केंद्रीय भूमिका ास्ट्रियाइ चान्सलर मैटरनिख ने निभाइ और यूरोप उसी के सिद्धान्तो पर आधा रत व्यवस्था के अनुरूप 1848 ई० तक चलता रहा, अत 1815 ई० से 1848 ई० तक का काल 'मैटरनिख का युग' सम्बोधित होता है।

इस सम्मेलन के मौलिक व आधारभूत सिद्धान्तो मे फ्रॉस, के भावी आक्रमणो व आक्रामक महत्वाकाक्षाओ के विरूद्ध प्रतिरोध स्थापित करना मुख्य था और इसी दृष्टिकोण से औस्ट्रियन नीदरलैण्ड्स (भावी बेल्जियम) व लग्जमबर्ग को हौलैण्ड के साथ सम्बद्ध कर के, उत्तर मे एक 'बफर राज्य' निर्मित कर दिया गया, प्रशा को राहइनलैण्ड का क्षेत्र प्रदान कर दिया गया था, जैनोआ व सैवोय का एक भाग सार्डिनिया (पीडमौंट्) के राज्य को प्राप्त हुआ, जमनी के

क्षेत्र औस्ट्रिया व प्रशा को उनके हितो के अनुसार विभक्त कर दिए गए नथा उन्तालिम राज्यो का जमा महासघ औस्ट्रिया का अध्यक्षता मे निर्मित कर वहाँ स फ्रॉसीसी प्रभाव को पूणत निमूल कर दिया था। इसी प्रकार, नेपोलियन की विजयो से अत्यधिक प्रभावित एक अन्य क्षेत्र था इटली-वहाँ भी उसक प्रभाव को कुण्ठित किया गया। ओस्ट्रिया ने लोम्बार्डी पुन प्राप्त कर लिया। औस्ट्रियन नीदरलैण्ड्स के स्थान पर, उसे वैनेशिया भी प्रदान किया गया, पोप के राज्य पोप को पुनप्राप्ति हो गए। बूरबाँ शासक नेपल्स के राज्य पर पुनस्थापित हो गए। अन्य व्यवस्थाओ के अन्तगत पामा मौडेना व टस्कनी की डचियाँ आस्ट्रियाइ शासको के अधीन आ गई, डेनमाक से नौर्वे लेकर स्वीडन को तथा स्वीडन से फिन्लैन्ड लेकर रूस को प्रदान कर दिया गया। इस सम्मेलन ने स्विट्जरलैंड की तटस्थता की गारटी भी दी तथा, दास-व्यापार को निषध घोषित कर दिया गया।

वियना सम्मेलन का एक प्रसिद्ध प्रतिपादित सिद्धान्त वैधता का था, जिसको सवप्रथम फ्राँसीसी तैलेराँ ने पारिभाषित कर के यूरोप के मानचित्र को परिवतित करने का दोष क्राँति व नेपोलियन पर मढ कर, फ्राँसीसी राजतत्र को सुरक्षित कर लिया। अन्तत सभी यूरोपीय शक्तियो ने लुई अठारहवे को फ्राँस के वैधा शासक के रूप मे स्वीकार कर लिया। इसी प्रकार स्पेन एव इटली मे वहाँ के नेपोलियन के पूव के वैध शासको को अपने-अपने राज्य पुन प्राप्त हो गए।

1815 ई० के वियना सम्मेलन द्वारा स्थापित व्यवस्था के फलस्वरूप फ्राँस मे बूरबाँ वश का लुई अष्टादश, जो अभागे लुई षोडश का भाई था-सिहासनारूढ हुआ। उसे दो कट्टर विरोधी राजनीतिक दलो क सामना एक साथ करना पडा। एक ओर उदारवादी थे, जिसमे गणतत्रवादी व बोनापार्टी अथवा बोनापार्ट-वादी थे-जो बूरबाँ वश की पुनर्स्थापना के विरूद्ध थे। दूसरी ओर उत्कट-राजतत्रवादी थे-इसमे मुख्यत कुलीन व धर्माधिकारी वर्ग के सदस्य थे, जो शासक से भी अधिक राजतत्रीय थे तथा, जो क्राँति का प्रतिशोध लेने मे अधिक उत्सुक थे। इन दोनो धाराओ के मध्य लुई अठारहवाँ एक मध्यम-मार्ग के अनुसरण का इच्छुक था। उसने निर्वासित जीवन का भी अनुभव किया था और वह उसकी पुनरावृत्ति का कदापि इच्छुक नहीं था। अत वह समझौते की नीति का अनुसरण करने का पक्षधर था। वह क्राँति की विरासत को राज्तत्र के साथ समन्वित करने हेतु प्रयासरत था। वह यह भलि-भाँति समझ चुका था कि बूरबाँ वश की पुनर्स्थापना।

का अथ पुरातन-व्यवस्था की पुनर्स्थापना नही था। वह समयानुसार प्रशासन मे परिवतन के महत्व को समझता था। अत वह क्रॉतिकारी व्यवस्था के मूलभूत तत्वो पर आक्रमण नही करता था। उसने स्वेच्छा से लोगो को एक ' चाटर अथवा सविधान प्रदान किया, जिसमे एक निवाचित सदन की व्यवस्था थी उसमे व्यक्तिगत स्वतत्रता एव समानता को भी स्वीकार किया गया लोगो को धामिक एव प्रेस की स्वतत्रता प्रदान कर दी किंतु, उत्कट राजतत्रीय तत्व इसके पूणत विरुद्ध थे और उन्होने क्रॉति के रचनाकारो के विरूद्ध एक 'श्वेत आतक' या ' वाहइट टेरर ' प्रारम्भ किया, जो दक्षिणी फ्रॉंस मे फैल गया। चैम्बर ऑफ् डिप्टीज मे भी इन्हीं तत्वो को बहुमत प्राप्त हो गया-शासक ने घबडाकर चैम्बस का विलय कर नए चुनावो की तत्काल घोषणा कर दी। इन चुनावो मे उसकी नीति के अनुयायी बहुमत मे हो गए, जो "फ्राँसीसी लोगो को राजशाही मे परिवतन करने व राज-सिहासन के राष्ट्रीयकरण' के कायक्रम के क्रियान्वयन के लिए दृढ सक्ल्प थे। अत , उनकी सहायता से फ्राँसीसी शासक ने फ्रॉस का पुनगठन प्रारम्भ किया-सर्वप्रथम, वित्तीय व्यवस्था दुरूस्त की गइ-तथा कुछ ही समय मे फ्रॉस ने युद्ध हजाना भी पूरा चुका दिया, जिसके परिणामस्वरूप ए-ला-शैपेल के सम्मेलन ने फ्राँस से आधिपत्य की सेनाओ को हटाने का निणय ले लिया व फ्राँस को यूरोपीय महासम्मेलन अथवा कन्सर्ट का सदस्य घोषित कर दिया ।1818 ई० तक फ्राँसीसी भूमि से विदेशी सैनिको की अपमानजनक उपस्थिति समाप्त हो गई। आवश्यक सैन्य-सेवा के आधार पर फ्राँसीसी सेना को भी पुनर्गठित किया गया प्रेस पर से भी प्रतिबध समाप्त कर दिए गए, कितु उदारवादी सुधारो का क्रम ड्यूक दि बेरी की हत्या के कारण एकदम से अवरूद्ध हो गया। अत जन-भावना उदारवादियो के विरूद्ध हो गई तथा नए चुनावो मे उत्कट राजतत्रीय-समथक सत्तासीन हो गए एव प्रतिक्रिया व दमन के युग का सूत्रपात हुआ। शासक भी निष्क्रिय रूप से राष्ट्र को अनुदार होते देखता रहा। मेटरनिख की सहमति से तथा पुनर्स्थापित बूरबौं वश को सैंय गौरव प्रदान करने की नियत से स्पेन के फर्डीनेन्ड सप्तम के दमनकारी राज्य की पुनर्स्थापना के लिए सैन्य सहायता भी भेज दी, जिसके परिणामस्वरूप फ्राँसीसी विदेश नीति वृहद् यूरोपीय नीति विशेषत पवित्र सघ (होली एलायन्स) के अनुरूप हो गई। इसी बीच 1824 ई० मे लुई अठारहवे की मृत्यु हो गई।

लुई का भाई चार्ल्स दशम के विरूद के माथ सिहासनारूढ हो गया। वह पुनर्स्थापित निर्वासितो का नेता था, अत क्रौंति के कार्यों को समाप्त कर

के पुरातन व्यवस्था की पुनस्थापना उसका मुख्य उद्देश्य था। जन-स्वतन्त्रता की कीमत पर उसने कुलीन व धर्माधिकारी वर्ग के हितो के अनुरूप शासन प्रारम्भ किया। उच्च वर्गो को क्रॉति की क्षति-पूर्ति के लिए बची रकम प्रदान की गइ धर्माधिकारी वर्ग को अपने विशेषाधिकार पुन प्राप्त हो गए जसुइट वापस आ गए-केथोलिक-मत विरोधी आचरण पर कठोर दण्ड का प्रावधान हो गया।

विदेश नीति के कारण यह काल फ्रॉंस की अतराष्ट्रीय छवि की पुनस्थापना के दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण रहा है। फ्रॉंस ने न केवल एल्जियर्स विजित कर लिया अपितु, यूनान के स्वतन्त्रता-सग्राम मे भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाइ व उनको सहायता प्रदान करी। कितु, चार्ल्स दशम का शासन निरकुशवादी होता जा रहा था-पोलिग्नैक की अध्यक्षता वाले मत्रिमडल के गठन के बाद तो - प्रेस की स्वतन्त्रता समाप्त कर दी गइ ससद भग हुइ चुनाव प्रक्रिया मे मौलिक परिवर्तन हुए मताधिकारियो की सख्या म अभूतपूर्व कमी की गइ अत विद्रोह की पूर्ण पृष्ठभूमि निर्मित हो गइ। और इस निरकुशवादी शासन के विरूद्ध भडके विद्रोह को जुलाइ क्रॉंति के नाम से जाना जाता है। विद्रोहियो ने शासक की सेना को पराजित करके राजधानी पर पेरिस की उग्र उदारवादी क्रॉंतिकारी भीड का आधिपत्य स्थापित कर दिया। चार्ल्स ने पलायन कर, अपने पौत्र के समर्थन मे पद- त्याग भी कर दिया कितु, लोगो ने उसे अस्वीकार कर ड्यूक ऑफ और्लीन्स की अध्यक्षता मे एक अन्तरिम सरकार का गठन किया। लुइ फिलिप (ड्यूक ऑफ और्लीन्स) बूर्बों वश की एक उपशाखा का सदस्य था जो उदारवादी था। लुइ फिलिप ने किग ऑफ द फ्रेन्च' के विरूद से पद-ग्रहण किया। पुन धार्मिक स्वतन्त्रता व प्रेस की स्वतन्त्रता स्थापित हो गइ, सविधान मे आवश्यक सुधार किए गए, जिससे लोगो को अधिक स्वतन्त्रता प्राप्त होने के साथ-साथ उनके हितो की रक्षा हो सके। नए शासक ने सविधान के अनुरूप शासन करने का आश्वासन प्रदान किया। पेरिस के लोगो द्वारा एक सवैधानिक सरकार के गठन की सफलता ने उदारवाद की सफलता का उद्घोष किया तथा इसी के परिणामस्वरूप बेल्जियम जर्मनी इटली पोलैण्ड व इग्लैंड मे भी लोगो ने स्वतन्त्रता व स्व-शासन के लिए आदोलन प्रारम्भ कर दिए-जिससे वियना सम्मेलन द्वारा स्थापित व्यवस्था को एक जबरदस्त चुनौती मिली। उसमे स्थापित वैधता का सिद्धान्त और्लीन्स वशीय सत्ता-प्राप्ति के पश्चात् अस्वीकृत हो गया था। बेल्जियम द्वारा स्वतन्त्रता प्राप्ति ने इसी प्रकार इस सम्मेलन द्वारा निर्मित कृत्रिम यूरोपीय व्यवस्था के पतन का सूत्रपात कर दिया-यह, इस व्यवस्था की पहली दरार थी

जो शीघ्र ही, एक न पट सकने वाली खाइ मे परिवतित हो गइ और अन्तत यह पूण व्यवस्था को ही समाप्त करने मे उत्तरदायी सिद्ध हुइ। राष्ट्रवाद के सिद्धान्त की न केवल यह पहली सफलता थी, अपितु, इसे अनेको अनुयायी भी प्राप्त हो गए। फ्रॉस व इग्लैंड ने बेल्जियम की स्वतत्रता को समथन प्रदान करके अपने को मेटरनिख की रूढिवादिता के विरूद्ध खडे पाया। हॉलाकि इटली जर्मनी व पोलैण्ड मे प्रतिक्रियावादी शक्तियाँ सफल रही कितु, फिर भी अन्ततोगत्वा, विजय क्रॉतिकारी विचारो को ही प्राप्त हुइ-जो पृष्ठ-भूमि फ्रॉस का क्रॉति ने तैयार की एव 1830 की जुलाई क्रॉति ने जिसे उवरता प्रदान की वह अन्तत 1870 इ० आते-आत तक अपने ताक्कि अन्त तक पहुॅचने मे सफल रही ।



[10]

लुई फिलिप का काल

(1830-1848 ई०)

1830 इ० की क्रॉति के परिणामस्वरूप पदासीन लुइ फिलिप साधरण जीवन व्यतीत करता था। अपने बच्चो को उसने सावजनिक स्कूला मे शिक्षा-प्रास करने के लिए भेजा। वह एक सवैधानिक शासक के रूप म काय करना पसद करता था। उसने सम्पत्ति प्रावधान अथवा सामा को घटाकर मताधिकारियो की सख्या दुगुनी कर दी, लोगो को अधिक अधिकार प्राप्त हुए प्रेस की सेसरशिप पर प्रतिबध लगा दिया गया कुलीनो के वशीय अधिकार भी समाप्त कर दिए किंतु, बावजूद इन सुधारो के वह कोइ प्रजातत्रिक तो था नहीं और न ही समय क साथ, परिवतनशील का तथा परिवतित समय को समझने की क्षमता रखता था। और उसकी, इसी गतिहीनता ने 1848 इ० म उसके पतन का मार्ग प्रशस्त किया।

और तो और, लुई फिलिप के रूप मे स्थापित जुलाई मोनार्की ' (अथवा राजतत्र) का आधार दुर्बल था। उसे राज्य के किसी वर्ग का पूण समथन प्राप्त नहीं हुआ। "लैजिटिमिस्ट" (वैबता के सिद्धान्त के समथक) बूर्बौं वश की स्थापना के इच्छुक थे, गणतत्रवादी अथवा 'रिपब्लिकन्स" जिनके कारण जुलाई क्राँति" सम्भव हुई थी, हर प्रकार के राजत्र के विरोधी थे तथा शासक के द्वारा अधिक उदारवादी सुधारो के क्रियान्वयन न किए जाने से असतुष्ट थे, 'बोनापार्टिस्ट' नई शक्तिहीन विदेश नीति के विरूद्ध थे, अत राज्य की प्रत्येक प्रमुख सवेद ।एँ-भावनाएँ इस प्रशासन से असतुष्ट थी। कोई भी गैर-वशीय शासक के प्रति न कोई गैर-प्रजातात्रिक सविधान के प्रति, और, न ही कोई, ऐसी सरकार के ही प्रति निष्ठावान हो सकता था, जो सैन्य विजयो के अभाव मे भी शासन चला रही हो, अत यह एक मध्यम-वर्गीय राजतत्रीय व्यवस्था थी जो सीमित मताधिकार के साथ उन्हीं के हितों की रक्षा कर सकती थी। बुर्जवा प्रकृति की सरकार के बावजूद भी वह सदैव उनके राजनीतिक नेतृत्व से सहमति नहीं रखता था। अत प्राय ही शासक, उसके मत्रियों व सदन के मध्य विवाद बने ही रहते थे। उसके शासन-काल के प्रारम्भिक दस वर्षों मे एक के बाद एक, लगभग

दस प्रधान मत्री नियुक्त हुए। अतत 1840 ई० मे गुइज्जोत् की नियुक्ति के पश्चात् ही इस समस्या का समाधान हो सका।

इसी प्रकार, वैधता के सिद्धान्त के समर्थको-अनुयायियो द्वारा भी सत्ता पलटने के असफल प्रयास होते रहे-सवप्रथम 1832 ई० मे डचस्स दि बेरी के नेतृत्व मे प्रोवेन्स एव ला वेन्दी मे, उसके पुत्र के राज्यारोहण के अधिकार को लेकर विद्रोह भडका। 1834 इ० मे लियोन्स मे गणतात्रिको का विद्रोह भी हुआ तथा 1835 इ० मे तो शासक की हत्या का प्रयास तक हुआ। इसी प्रकार 1835 इ० मे ही तथा 1840 इ० मे लुई नेपोलियन द्वारा सत्ता हस्तगत करने के प्रयास के फलस्वरूप, स्ट्रासबर्ग एव बोलोन् मे विद्रोह हुए। हॉलाकि ये सभी आन्दोलन असफल रहे फिर भी, इन्होने लुई फिलिप के विरूद्ध तैयार खडी शक्तियो की ओर तो इशारा कर ही दिया।

गुइज्जोत् के आगमन के पश्चात्, लुइ फिलिप की रूढिवादी नीतियो का क्रियान्वयन उसी के द्वारा होता रहा-चूँकि इसमे राजनीतिक भ्रष्टाचार निहित था अत सरकार का विरोध शनै शन बढता ही गया और इस विरोध ने दो आन्दोलनो को जम दे दिया-एक, राजनीतिक व दूसरा सामाजिक परिवतन हेतु। सदन मे प्रसिद्ध इतिहासकार व राजनीतिज्ञ तियर्स ने मताधिकार के आधार को आर विस्तृत करने के सुधार का प्रयास किया व, साथ ही, सीमित राजतत्र की ही हिमायत करी, कितु, गुइज्जोत् ने वतमान व्यवस्था मे परिवतन से इकार कर दिया अत सुधारवादी राजनीतिक दल और अधिक सक्रिय हो गया।

दूसरा आन्दोलन जो राजनीतिक रगमच पर उभर रहा था, वह समाजवाद था। आद्योगिक क्रॉति ने जहॉ पूँजीवादी वग को समृद्ध किया, वहीं श्रमिक वग को विपन्नता की ओर ढकेल दिया। इस नए वातावरण ने फोरियर के लेखन को तो प्रभावशाली नही बनने दिया कितु, लुइ ब्लैंक ने सामाजिक समस्या के वास्तविक समाधान के द्वारा न केवल फ्रॉस मे अपितु, विश्व मे भी अपना प्रभाव स्थापित करने मे सफलता प्राप्त करी। अपनी प्रसिद्ध कृति 'द औगनाइज्जेशन ऑफ् लेबर' मे व्यक्तिगत पूँजी के उन्मूलन स्वतत्र प्रतिस्पद्धा व काम के अधिकार आदि सिद्धातो का प्रतिपादन किया जिसने समाजवाद के विकास मे अभूतपूव योगदान प्रदान किया। सरकार के विरोध के कारण श्रमिको ने गुप्त सगठनो की स्थापना करी जो अत्यधिक सक्रिय हो उठे व अन्तत जुलाइ राजतत्र को 1848 इ० म उखाडने मे भी सफल रह।

कितु, अपने बुजुवा स्वभाव के चलते औद्योगिक क्रौति का पूण प्रभाव फ्रॉस के आथिक विकास पर पडा। व्यापार व वाणिज्य का विकास हुआ जिससे भोतिक समृद्धि हुइ सडको नहरो व रेलवे लाइनो का जाल सा पूरे फ्रॉस म बिछ गया। इसी काल मे ब्रिटेन को हारे अपने उपनिवेशो के स्थान पर, एक नए औपनिवेशिक साम्राज्य की स्थापना करने का अवसर भी प्राप्त हुआ। चाल्स दशम के काल मे प्रारम्भ हुई अल्जीयर्स विजय की योजना भी इसी काल मे पूण हुइ। साथ ही अफ्रीका के गिनया तट पर व मैडागास्कर मे आधिपत्य स्थापित होने लगा। परम्परागत शत्रु इग्लैंड से भी वह शौति अथवा आन्तॉ कांडियल' स्थापित करने मे सफल हो गया। उसने इटली व पोलैंण्ड के विद्रोहो को समथन देने से इकार कर दिया था। कितु, इससे फ्रॉसीसी जनमत उसका विरोधा हो गया। इसी प्रकार बेल्जियम आदोलन मे ब्रिटेन के समथक दश की भूमिका निभाइ व फ्राँस को अधिक लाभ न दिला सका। 1833 इ० मे महमत अली को समर्थन देने के बावजूद भी पूर्वी प्रश्न के हल मे उसको अनदेखा कर दिया गया - उसने युद्ध तक की धमकी दे डाली कितु, वह कारगर न हो सकी। उसने इग्लैंड की महारानी विक्टोरिया को दिए आश्वासन के विरूद्ध स्पेनी रानी की बहन व उत्तराधिकारी से अपने पुत्र का विवाह कर के एक कूटनीतिक विवाद को जम दे दिया। अत फ्राँसीसी जनता जो सैंय सफलता व गौरव की आदि हो गई थी, वह लुई फिलिप के शासन मे पूर्णत असतुष्ट हो गइ ।

नई पीढी जो नवीन विचारो से अवगत थी, वह असतुष्ट, एव भ्रष्टाचार के विरूद्ध हो गइ। चूँकि, समृद्ध पूँजीवादी वर्ग के सहयोग व सहभागीदारी से प्रशासन चल रहा था अत निम्न वर्गो के साथ-साथ परम्परागत कुलीन वग भी इससे रूष्ट हो गया। गणतत्रवादी सवप्रथम विरोध पर उतरे तथा, शीघ्र ही, समाजवादियो ने भी उनके साथ हाथ मिला लिया अत 1848 इ० की क्रॉति सपूण थी। अन्तत मताधिकार के प्रश्न पर ज्वालामुखी फूट गया। गुइज्जोत् के विरोध तथा बाद मे सैनिको द्वारा गोलियो के चलाए जाने के कारण, पेरिस मे विद्रोह भडक उठा। लुइ फिलिप ने अपने पौत्र को पद स्थानातरित करके, इग्लैंड पलायन करने मे बुद्धिमत्ता समझी। लामार्तीन के नेतृत्व मे एक अन्तरिम सरकार का गठन हुआ एव फ्रॉस दोबारा एक गण्तत्र में परिणित हो गया ।

कितु, जहॉ गणतत्रवादी इस सफलता को ही अन्त मान रहे थे समाजवादी इसके द्वारा समाजिक पुनगठन के स्वप्न को साकार करने के इच्छुक थे। दूसरी ओर फ्रॉस का कृषक वग समाजवाद का विरोधी था-उसे अपने भू-स्वामित्व

से वचित हो जाने का भय था। लामार्तीन ने अपने व लुई ब्लैंक के समाजवादी दल के मध्य समझौता करके, सरकार चलाने का प्रयास किया। रोजगार को अधिकार की माँग जोर पकडने लगी तो सरकार ने इसे स्वीकार कर लिया। शीघ्र ही, चुनावो द्वारा एक निवाचित राष्ट्रीय सभा को स्थायी समाधान हेतु उत्तरदायित्व सौंपने का निश्चय हुआ। इस राष्ट्रीय सभा मे लुइ ब्लैंक के समाजवादी दल से कही अधिक सख्या मे लामार्तीन व उसके मध्यम-मार्गी ही निवाचित हुए। इसका मुख्य कारण प्रान्तो के कृषको का समाजवादियो के विरूद्ध मताधिकार का प्रयोग था। अत समाजवादियो ने सशस्त्र विद्रोह का निर्णय लिया कितु सरकार ने उसका दमन किया, तथा, समाजवादियो के सिद्धान्तो के अनुरूप स्थापित राष्ट्रीय कार्यालयो (कारखानो) को भी समाप्त कर दिया-जो उनके विद्रोह के केद्र भी हो गए थे। पेरिस मे समाजवादियो ने विद्रोह को भीषणता प्रदान कर दी क्तिु, जनरल कैविग्नैक को सरकार द्वारा अधिनायक के अधिकार प्राप्त हो जाने से, विद्रोह का उन्मूलन हो सका । अब राष्ट्रीय सभा ने गणतत्र हेतु सविधान का निर्माण किया सबको मताधिकार देकर, एक-सदनीय ससद की व्यवस्था करी राष्ट्रपति कार्यकारी का अध्यक्ष निधारित हुआ उसका चार वर्षों के लिए प्रत्यक्ष निर्वाचन होता था। नेपोलियन के भतीजे लुई नेपोलियन को उसी की स्मृति के आधार पर, अधिक मत प्राप्त हुए व वह अध्यक्ष निवाचित हो गया तथा गणतत्रवादी सदस्य जनरल कैविग्नैक पराजित हो गया। इसी से स्पष्ट हो गया कि गणतत्रवादी फ्राँस मे अधिकाश लोग अभी भी राजतत्रवादी थे। -

समाजवादी विद्रोह से फ्रॉस को बचाने के लिए, फ्राँस-वासियो ने उसे बोनापार्ट जैसे निरकुश के हाथो सौंप दिया। जैसा कि नेपोलियन के शासन से ही स्पष्ट हो गया था बोनापार्टवाद - गणतत्रवाद का पूर्णत विरोधी था ' लुई नेपोलियन भी प्रा'म्भ से समझ गया था, कि इस द्वितीय गणतत्र का आधार कमजोर है। 1849 ई० के चुनाव में गैर-गण-तत्रवादियो का बहुमत भी हो गया अत गणतत्रीय राष्ट्रीय सभा उनके हाथो मे स्थानातरित हो गई जिनकी गणतत्र मे ही कोइ आस्था नहीं थी। लुइ नेपोलियन ने सर्वप्रथम सेना को गौरव प्रदान करने का आश्वासन प्रदान करके, उसे अपने पक्ष में कर लिया पोप की सहायतार्थ रोम को फ्राँसीसी सेना भेजकर धमाधिकारियो का भी पूण समर्थन प्राप्त करने में वह सफल रहा। उसने अपने कार्यकाल को ससद से ही बढाने का प्रयास किया - किंतु, असफल रहा। अतत 1851 इ० के दिसम्बर मे "कूप दे तात् द्वारा - सदन भग कर, प्रमुख विद्रोही नेताओ को बदी बना दिया जनमत द्वारा

उसको दस - वर्षीय कायकाल प्रदान हुआ व उसे सविधान - सशोधन के भी अधिकार प्रदान कर दिए। जनवरी 1852 ई० मे नए सविधान का क्रियान्वयन हुआ तथा नए जनमत द्वारा वह सम्राट बन बैठा एव नेपोलियन तृतीय का विरूद धारण कर लिया।

नेपोलियन तृतीय प्रजातत्र के रक्षक के रूप मे सत्ता के चर्मोत्कष पर पहुॅचा था कितु, फिर त्रह साम्राज्यवादी की भॉति शासन करने लगा। उसका शासन निरकुश राजतत्र पर आधारित था । समस्त कायकारी अधिकार उसने अपने हाथो मे केद्रित कर लिए। वस्तुत फ्रॉस से राजनीतिक स्वतत्रता समात हो चुकी थी प्रेस प्रतिबधित थी तथा, गुप्तचर-व्यवस्था भी सुदृढ हो गइ थी। कितु, निरकुशवाद के बाद भी उसका शासन प्रबुद्ध व जन-हित का शासन प्रतीत होता है। उसके काल मे रेलवे का विस्तार हुआ मुक्त-व्यापार प्रोत्साहित हुआ व्यापार व उद्योग समृद्ध हुआ। यही नही, निम्न वर्गों की ओर भी उसका ध्यान केद्रित हुआ। उसने सहकारी समितियॉ निमित करने की आज्ञा प्रदान करी श्रमिक-सगठनो एव उनके हडताल के अधिकार को भी मान्यता प्रदान करी, उन्ह चिकित्सा व वित्तीय सुविधाए प्रदान करी मृत्यु व दुघटनाओ के बीमो का प्रावधान किया-जिससे श्रमिक वर्गो का असतोष समात हुआ तथा वे इस सुशासन के पक्षधर हो गए ! यही नही पेरिस के सौंदर्यीकरण एव अन्य लोक-निर्माण के कार्यो द्वारा लोगो के रोजगार की समस्या का भी समाधान हो गया तथा इससे उसके दरबार का वैभव व उसकी कीति भी फैली।

लुई नेपोलियन भली-भाँति जानता था, कि आतरिक समृद्धि व सुख ही सबकुछ नहीं है-वह लुई फिलिप की भॉति, अति शॉति पूण विदेश नीति का शिकार भी नहीं बनना चाहता था। वह जानता था, कि फ्रॉस-वासी मात्र गौरवमयी एव आक्रामक विदेशी नीति से ही सतुष्ट हो सकते थे-वे पूव-गरिमा व यूरोपीय प्रभुत्व के भूखे थे। अत उसन केथालिक मत के नए नेता के रूप मे यूरोपीय राजनीति मे सक्रिय हिस्सेदारी निभानी शुरू कर दी तथा उस काल के राष्ट्रवादी आन्दोलनो को भी समर्थन प्रदान कर दिया। प्रारम्भ मे तो इस आक्रमक विदेश नीति ने न केवल लुइ नोपोलियन अपितु, फ्रॉस की भी प्रतिष्ठा को चर्मोत्कप पर पहुॅचा दिया। कितु, अन्तत इसी विदेशी नीति ने फ्रॉंस को ऐसी विषम परिस्थितियो मे पहुँचाया, कि फ्रॉस पतनशील हो गया।

अपने निवाचन के तुरन्त बाद उसे रोम मे अपनी विदेश नीति का मुख

दिखाइ दे गया जहॉ मेजिनी के नेतृत्व मे, पोप के शासन को अपदस्थ करके एक गणतत्र की स्थापना हो गइ थी। वह पोप की सत्ता पुनस्थापित करने मे सफल हो गया तथा कैथोलिक धर्म के नए सैन्य नेतृत्व का क्षमता वाले इस व्यक्तित्व की प्रतिष्ठा भी स्थापित हो गई। तत्पश्चात् क्रीमिया युद्ध से अधिकाधिक लाभ प्राप्त करने के उद्देश्य से उसने इग्लैंड के साथ इसमे हस्तक्षेप किया। वह चाहता था, कि, पूव मे फ्राँस की प्रतिष्ठा पुनस्थापित हो सके एव रूस से नेपोलियन के अभियान की असफलता का प्रतिशोध भी इसके द्वारा प्राप्त किया जा सके। वस्तुत युद्ध की समाप्ति नेपोलियन की राजधानी पेरिस मे आयोजित शॉति वाता से ही हुई। इससे फ्रॉम्प को गरिमा के अतिरिक्त आर कोइ विशेष लाभ नहीं हुआ। रूस के निकोलस की पराजय से, लुई नेपोलियन न केवल यूरोपीय महाद्वीप का अद्वितीय शासक बन गया, अपितु, यूरोपीय राजनीति का केद्र भी पेरिस स्थानातरित हो गया। तत्पश्चात् राष्ट्रवाद के पक्षधर के रूप मे उसने वलाशिया तथा मोल्डाविया का एकीकरण करके रूमानिया के नए राज्य के निमाण मे अभूतपूर्व योगदान भी दिया । कितु, विदेश नीति के क्षेत्र मे उसकी सवाधिक चमत्कृत कर देने वाली सफलता इटली मे प्राप्त हुइ। अनेकानेक कारणो से उसने औस्ट्रिया के विरूद्ध साडिनिया के शासक की सहायता करी-वह इटली के राष्ट्रवादी तत्वो का वास्तविक हमदर्द था। इसके अतिरिक्त उसे इटली की परिस्थितियो मे एक अवसर प्राप्त हुआ कि, वह 1815 ई० की वियना की अपमानजनक सधि को फाड सके-इसी के चलते, इटली मे ओस्ट्रिया के प्रभाव वाली व्यवस्था का निमाण हुआ था। अत उसने 1859 ई० मे औस्ट्रिया को इटली से खदेडने मे साडिनिया के शासक की सहायता करी। कितु, इस अभियान के मध्य मे ही उसने औस्ट्रिया के साथ 'विलाफ्रैंका की सधि' कर ली तथा अपने समर्थक सार्डिनिया के शासक से सलाह करना भी अवश्यक नहीं समझा। कितु, शीघ्र ही, उसने साडिनिया के राज्य मे टस्कनी, मौडेना एव रोमाग्ना का विलय हो जाने दिया और अपनी सहमति के मूल्य के रूप मे नाइस तथा सेवौय हस्तगत कर लिया। अब वह अपनी सत्ता एव प्रतिष्ठा के चर्मोत्कर्ष पर पहुॅच गया था।

1860 इ० के पश्चात् तो ऐसा प्रतीत होने लगता है, कि विदेश नीति क क्षेत्र मे उसका भाग्य ही उससे रूठ गया। 1863 ई० मे रूसी आधिपत्य के विरूद्ध उसने पोलिश विद्रोह को समर्थन का आश्वासन देकर भी सहायता नहीं पहुॅचाई-बस जार से पोलैण्ड मे अत्याचार के विरूद्ध अपने क्रोध की ही अभिव्यक्ति करता रहा, जिसका भी अनदेखा कर जार ने पोल विद्रोह का क्रूरता

से दमन कर दिया। वह इस प्रकार दोनो-पोलैण्ड वासियो तथा जार को असतुष्ट ही कर सका। इससे भी अधिक असफलता उसे मेक्सिको क अभियान मे मिली। मेक्सिको के गृह-युद्ध का लाभ उठाते हुए, उसने औस्ट्रिया के आकड्यूक मेक्समिलन को 1864 इ० मे वहाँ का शासक नियुक्त करवा दिया और वहाँ के गणतत्र को समाप्त कर दिया। कितु, जैसे ही सयुक्त राज्य अमरीका अपने गृह-युद्ध से मुक्त हुआ-उसने फ्रॉस की सेना को मेक्सिको छोडने के लिए बाध्य कर दिया। यह लुइ नेपोलियन व फ्रॉस दोनो के लिए अपमानजनक था।

कितु, शेष औपनिवेशिक अभियान सफल ही रहे। उसने सीरिया म फ्रॉस व कैथोलिक हितो की सुरक्षा एव सरक्षण हेतु एक सफल अभियान निदेशित किया इग्लैड के समर्थन से वह चीन में फ्रॉसीसी व्यापार के विस्तार मे सफल रहा, तथा, 1864 इ० मे कोचिन चीन की प्राप्ति से फ्रॉसीसी औपनिवेशिक साम्राज्य का विस्तार भी किया।

कितु, फिर भी मेक्सिको की असफलता की छाया इन विजयो से कहीं अधिक सशक्त थी और वह नेपोलियन बोनापार्ट का मौस्को ही प्रमाणित हुइ। क्योकि मैक्सिको का असफलता के पश्चात् ही 1866 ई० मे प्रशा की सेनाओ की औस्ट्रियाइ सेनाओ के विरूद्ध अभूतपूर्व विजय प्राप्त हुइ। जर्मनी के पुननिमाण की प्रक्रिया मे नेपोलियन से न तो सहायता-समर्थन की आशा की गई और न ही उसका सदर्भ ही आया अत यह अपने-आप मे लुई नेपोलियन व फ्राँस के लिए अपमानजनक था-एक यूरोपीय महाशक्ति के रूप मे उसका अनदेखा कया जाना था। यही नहीं, इसकी भी पराकाष्ठा तब हुई जब नेपोलियन ने इस अनदेखा किए जाने की क्षतिपूति के लिए, राहईन क्षेत्र का कुछ भाग सैन्याभियान द्वारा हस्तगत करना चाहा तो बिस्माक ने उसे पराजित करके, उसकी वास्तविक नशाएँ उजागर करके उसकी विजेता की छवि पूर्णत नष्ट-भ्रष्ट कर दी।

चूँकि, लुई नेपोलियन की वास्तविक छवि ही एक विजेता की थी-वह फ्रॉसीसियो की विजयी महत्वाकाक्षाओ को पूर्ण करने के आश्वासन पर ही सत्ता के समस्त अधिकारो को अपने हाथो मे केद्रित करने मे सफल रहा था, अत इन नकारात्मक परिणामों के कारण, उसकी छवि व आन्तरिक स्थिति भी कमजोर हो गई, अत समस्त दिशाओ से उसकी नीति पर आक्रमण प्रारम्भ हो गए। लोगो को उसके प्रबुद्ध निरकुशवाद का वास्तविक स्वरूप समझ मे आने लगा था, कि, राज्य की नीतियो के क्रियान्वयन मे निरकुशवाद ही प्रधान

था-प्रबुद्धता तो लुप्तप्राय थी। अत गणतत्रवादियो एव समाजवादियो ने उसके विरूद्ध आवाज उठाई। लुइ नेपोलियन ने उदारवादियो का समर्थन चाहा किंतु, उन्होने भी सुधारो की माँग करी-नेपोलियन ने समय-समय पर उनकी कुछ माँगे स्वीकार भी करीं-1860, 1861 व 1867 ई० मे निर्वाचित प्रतिनिधियो को स्वतत्रता के अनेक अधिकार प्राप्त हो गए-वे राज्य की नीति की आलोचना करने के साथ-साथ सविधान सम्बधी विषयो पर भी मत प्रकट कर सकते व सलाह दे सकते थे। 1868 ई० मे प्रेस को अधिक स्वतत्रता एव राजनीतिक जन-सभाओ की अनुमति भी प्राप्त हो गई। 1869 ई० मे सविधान के एक मौलिक परिवतन क परिणामस्वरूप, मत्रियो को ससद के प्रति उत्तरादायी बना दिया गया। ओर तो और, धर्माधिकारियो, जिनके लिए उसने कितना कुछ किया था, उन्होने भी उसका विरोध प्रारम्भ कर दिया, क्योकि उनको लगा, कि, लुई नेपोलियन की इटली के प्रति नीति पोप के राजनीतिक अधिकार-क्षेत्र व सत्ता को ही समाप्त कर देगी।

लुइ नेपोलियन को समझ मे आने लगा कि, उसकी पकड अब ढीली पडती जा रही है और कोई आश्चर्यजनक सैन्य-सफलता ही उसकी स्थिति एव प्रतिष्ठा को पुनर्स्थापित कर सकती है। किंतु, उसकी इस महत्वाकाक्षी योजना ने ही उसे बिस्मार्क के हाथो मे खेलने को विवश कर दिया-जब 1870 ई० मे उसने प्रशा के साथ युद्ध को अपरिहार्य कर दिया, जिसमे वह पूर्णत पराजित होकर, सेडन मे बँदी बना लिया गया। उसके इस सैन्य पतन के साथ साम्राज्य का भी पतन हो गया तथा, फ्राँस का तीसरे गणतत्र के लिए एक दुष्कर व कष्टदायी मार्ग पर चलने हेतु बाध्य होना पडा।



[11]

1870 ई० के पश्चात् फ्रॉस का इतिहास

जैसे ही लुइ नेपोलियन की सेडन के रण-क्षेत्र मे हुइ पराजय की सूचना पेरिस पहुँची एक अतरिम गणतत्र की स्थापना व एक राष्ट्रीय सुरक्षा की सरकार का गठन हो गया। कितु, 1871 इ० की पेरिस-समपण की घटना के चलते इस सरकार का पतन हो गया। साथ ही एक राष्ट्रीय सभा का निवाचन किया गया ताकि, वह जर्मनी के साथ हुई सधि की पुष्टि कर सके। तियर्स को कायकारिणी का प्रमुख अथवा चीफ ऑफ द एग्ज्क्यूटिव' चुना गया। तियस ने एलसस तथा लौरेन का एक भाग जर्मनी को प्रदान करके उसके साथ सधि कर ली और युद्ध का हजाना देना भी स्वीकार किया एव हजाने की अदायगी तक फ्राँस के खर्चे पर उसके पूर्वोत्तर क्षेत्र पर जर्मन आधिपत्य सेना की उपस्थिति निश्चित हो गई थी।

फ्रॉस की पराजय के पश्चात् वहाँ पर गृह-युद्ध का भी वातावरण निमित होने लगा। राष्ट्रीय सभा मे उत्कट राजतत्रवादियो का बहुमत था, जो गणतत्र के कट्टर विरोधी थे। जबकि पेरिस के लोग-जन समान्य न केवल गणतत्रवादी थे अपितु, वे अपने दृष्टिकोण से साम्यवादी थे-अत भयभीत रहते थे, कि कहीं सभा द्वारा एक राजतत्र की पुनर्स्थापना का प्रयास न कर दिया जाए। राष्ट्रीय सभा ने अपनी बैठक का स्थान बोर्दू से स्थानातरित करते समय, पेग्मि के प्रति अपने अविश्वास का प्रदर्शन करते हुए, वर्साय को चुना। पेरिसवासियो को यह एक अपमान लगा। पेरिस मे इस समय अनेक प्रज्ज्वलनशील तत्व उपस्थित थे - बेरोजगार सैनिक बेरोजगार श्रमिक, समाजवादी गणतत्रवादी तथा इन सबके ऊपर, अराजकतावादी। परिस्थितियो को मात्र एक चिगारी की आवश्यकता थी और वह सरकार ने पेरिस से सरकारी बदूकों को स्थानातरित करके, प्रदान कर दी। पेरिस तत्काल विद्रोह कर उठा विद्रोहियों ने तत्काल कम्यून की स्थापना कर दी, पेरिस के लिए पूर्ण स्व-शासन की माँग करी, व प्रान्तो में भी जन शासन हेतु कम्यूनों की स्थापना की माँग कर दी। इस प्रकार, वे समस्त फ्राँस

को साम्यवादी आधार पर व्यस्थित करने के इच्छुक थे। किंतु, अन्तत वसाइ से सरकारी सैनिको ने पेरिस मे प्रवेश करके, प्रत्येक सडक एव मोहल्ले के लिए सघष करते हुए पेरिस पर नियत्रण प्राप्त करके साम्यवादियो का दमन कर उनसे भय्कर प्रतिशोध लिया।

अब नियस ने राष्ट्रीय पुनर्निमाण का कार्य प्रारम्भ किया। सवप्रथम, ऋण प्राप्त कर के, दो वर्षो के अदर, युद्ध हजाने की अदायगी कर के, फ्रॉस को जमन-आधिपत्य सेना से मुक्त करा दिया। तत्पश्चात्, उसने प्रशा के आधार पर फ्राँसीसी सेना का पुनर्गठन कर डाला, 1872 ई० मे कानून पारित करके, सेन्य सेवा अनिवाय कर दी। सविधान-पुननिमाण कार्य ने तब उसका ध्यानाकषित किया। राष्ट्रीय सभा मे राजतत्रवादियो का बहुमत था और सपूर्ण देश मे ही राजतत्र के समर्थक अधिक थे। तियस स्वय औलींन्स वश का समथक होने के नाते राजतत्रवाद का पक्षधर था। किंतु, अपने आप मे राजतत्रवादी भी तीन प्रमुख गुटो मे विभक्त थे प्रथम चाल्स दशम के पौत्र कौम्प्टे दे शैम्बोड के समर्थक अथवा बूर्बो वश के पक्षधर थे, दूसरा वर्ग कौम्प्टे दे परिस या लुई फिलिप के पात्र अथवा ओर्लीन्स वश का समथक था तीसरा गुट नेपोलियन तृतीय के पुत्र राजकुमार 'इम्पीरियल' अथवा बोनापार्ट वश का पक्षधर था। अत इन विषम विभाजन की परिस्थितियो मे तियस ने गणतत्र को इसी कारण से स्वाकार किया, कि, वह न्यूनतम विभाजन पर आधारित है- और इसी कारणवश राजतत्रवादियो ने राजतत्र की पृष्ठभूमि तैयार करने हेतु तियस को पद त्यागने के लिए, अन्तत , बाध्य कर दिया एव सेनापति मार्शल मैक्मोहन को नया राष्ट्रपति निवाचित कर के राजतत्र की पुनर्स्थापना का मार्ग प्रशस्त किया।

अब तियस को मार्ग से हटाने के पश्चात्, बूर्बो एव औलीन्स वशो ने पारस्परिक समझौता किया। इसमे यह निश्चित हुआ, वि कोम्प्टे दे चैम्बोड जो निस्सतान था, वह शासक बन जाए एव उसका उत्तराधिकारी औलींन्स वशीय कोट ऑफ् पेरिस हो। किंतु, चैम्बोड इतना अधिक बूर्बों वादी था कि, वह अपना वशीय श्वेत राज्य ध्वज त्यागने और क्रॉति का तिरगा ध्वज स्वीकार करने को तैयार नही था अत वह हेनरी पचम का विरूद धारण करके सिहासनारूढ होते-होते रह गया। इसी बीच ओजस्वी नेता गैम्बेटा फ्रॉस के प्रान्तो के ग्रामाचलो का दौरा करके लोगो को राजतत्र से विमुख करने मे सफल रहा था-वह गणतत्रवादी था। और इन तमाम कारणो के चलते 1875 इ० मे एक राजतत्रवादी राष्टपति व राजतत्रवादी बहुमत वाली राष्ट्रीय सभा ने एक मत के बहुमत से गणतत्र की

स्थापना फ्रॉस मे कर दी ।

1875 इ० के सविधान के अनुसार, राष्ट्रपति सात वर्ष की अवधि के लिए दो सदनो वाले ससद द्वारा निर्वाचित होगा। ससद का उच्च सदन सेनेट' था जिसके सदस्यो का अप्रत्यक्ष निर्वाचन होता था, निचला सदन 'चेम्बर ऑफ् डिप्टीज कहलाता था तथा इसकें सदस्यो का निर्वाचन प्रत्यक्ष मताधिकार द्वारा होता था-सभी नागरिको को मताधिकार प्राप्त था। मत्रियो का सदन के प्रति उत्तरदायित्व निर्धारित कर दिया गया था। राजतत्रवादियो ने फ्रॉस मे 'कूप द्वारा राजतत्र की स्थापना का विफल प्रयास किया व, अतत राजतत्रवादी राष्टपति माशल मैक्मोहन ने अपने पद से 1879 ई० मे त्याग-पत्र दे दिया। गैम्बेटा का उम्मीदवार जूल्स ग्रेवी उसके स्थान पर नया राष्ट्रपति निर्वाचित हुआ। पूण मत्रिमडल एव ससद भी गणतत्रवादी निर्वाचित हुए थे । 1882 ई० मे गैम्बेटा की मृत्यु तक फ्राँस मे तृतीय गणतत्र को पर्याप्त स्थायित्व प्राप्त हो चुका था।

किंतु, फिर भी फ्रॉस मे गणतत्रवाद के अनेक विरोधी अब भी शेष थे जो यह विश्वास करते थे कि, तृतीय गणतत्र भी अपने पूर्ववर्ती दो अन्य गणतत्रो की नियति को प्राप्त होगा 1886 ई० मे नियुक्त युद्ध मत्री जनरल बूलैन्जर के नेतृत्व मे इन विरोधी तत्वो का ध्रुवीकरण प्रारम्भ हो गया। उसने सैनिको को अनेक सुविधाएँ प्रदान करके अपने पक्ष मे कर लिया तथा जर्मनी के विरूद्ध प्रतिशोध के युद्ध के नाम से लोगो के जनमानस मे स्थान बना लिया। अत राजतत्रवादी, बोनापार्टवादी एव धर्माधिकारी वर्ग उसके समर्थन मे आ गए-वे ससदीय शासन के स्थान पर "बूलैन्जिस्ट अधिनायकवाद" स्थापित करने के इच्छुक थे। राष्ट्रपति ग्रेवी के दामाद के भ्रष्टाचार ने इन्हे एक अवसर भी प्रदान कर दिया। किंतु, चूँकि बूलैंजर सही समय पर योजना को क्रियान्वित करने मे असफल रहा अत यह योजना व्यर्थ गई। बूलेन्जर को बदी बनाए जाने के आदेश दिए-गए। वह बेल्जियम पलायन कर गया और वहॉ उसने आत्म-हत्या कर ली। इस पूरे प्रकरण से गणतत्र और सशक्त एव स्थायी हो गया, क्योकि, उसके विरोधियो का पर्दाफाश हो गया।

किंतु, भ्रष्टाचार के आरोपो से गणतत्र एक बार पुन घिरा जब पनामा नहर कम्पनी के डायरेक्टरो द्वारा ससद-सदस्यो व मत्रियो को धन दिए जाने की बात सामने आइ। इससे गणतत्र की लोकप्रियता पर भी प्रतिकूल प्रभाव पडा। यही पर्याप्त नहीं था, 1894 ई० मे तृतीय गणतत्र को ड्रेफ्स काण्ड' से गुजरना पडा। ड्रेफस एक ज्यू यहूदी सैन्याधिकारी (कप्तान) था, जिसे शत्रु देश जर्मनी

को गुप्त राष्ट्रीय दस्तावेज देने के अपराध मे दक्षिण अमरीका के "डेविल्स आइलेंड" कारावास भेज दिया गया था। अनेक लोगो को इस प्रकरण मे न्यायिक प्रक्रिया पर सदेह था। 1896 इ० मे जब कर्नल पिक्कार्ट को गुप्तचर विभाग का प्रमुख नियुक्त किया गया तो उसके हाथ वह दस्तावेज लगा जिसपर उसका दण्ड आधारित था। यह दस्तावेज नकली था, जिसे एक अपदस्थ मेजर ऐस्टरहेजी ने तैयार किया था। सरकार तथा युद्ध मत्रालय-कायालय दोनो ही सरकार व मत्रालय की छवि के कारण इस मामले को दबाने के इच्छुक थे, अत पिक्काट को विदेश सेवा मे स्थानातरित, करके हेनरी को वहाँ नियुक्त कर दिया। कितु, इधर इस विवाद से पूरे राष्ट्र में उथल-पुथल मच गई थी व लगभग समस्त राष्ट्र ड्रेफस-समथक एव ड्रेफस-विरोधी गुटो मे विभक्त हो चुका था। ड्रेफस-समथको में एमिली जोला, एनातोले फ्राँस एव क्लेमेनक्यू जैसे प्रतिभाशाली व्यक्तित्व थे - ज्यू, प्रोटेस्टेट, उत्कटतावादी तथा समाजवादी आदि थे। जबकि, उसके विरूद्ध पेरिस की उग्र भीड, सेना, चर्च एव जनतत्रवादी एकीकृत थे। यह प्रकरण तत्कालीन फ्राँस की सामाजिक, राजनीतिक एव सवैधानिक विवाद की धुरी मे परिणित हो गया था। यह प्रगतिवादी एव रूढिवादी अधिकारी एव स्वतत्रता के स्वरूप राज्य के नागरिक एव सैन्य स्वरूप के मध्य सघष मे परिवर्तित हो गया था।

ड्रेफस के समथक पुन मुक्कदमे की मॉग उतने ही जोर-शोर से करने लगे, जितने जोर से उसके विरोधी उस माँग का विरोध कर रहे थे। इस बीच 1898 इ० मे कनल हेनरी ने स्वीकारोक्ति, कि यह नकली दस्तावेजो पर निमित प्रकरण है और फिर हेनरी ने आत्महत्या भी कर ली-सरकार को विवश होकर पुन सुनवाई करनी पडी एव उसका दण्ड घटाकर दस-वर्षीय कैद मे परिवतित कर दिया। खैर राष्ट्रपति लौबेत ने यह दण्ड भी क्षमा कर दिया। कितु, ड्रेफस समथका ने 1906 इ० मे नए सिरे से सुनवाई पुन प्रारम्भ करी। वस्तुत ड्रेफस बेदाग छूट गया तथा उसे पदोन्नति भी प्रदान की गइ। ड्रेफस का निरपराधी प्रमाणित होना गणतत्र के शत्रुओ की जबर्दस्त पराजय थी, इसके द्वारा सैन्याधिकारी के ऊपर कायकारी शासन का वर्चस्व स्थापित हो गया तथा सैन्यवाद व धमवाद को भी एक सशक्त धक्का लग गया।

एक अन्य महत्वपूर्ण विषय, जिस पर तृतीय गणतत्र ने निणय लिया वह राज्य एव धम अथवा चच के पारस्परिक सम्बधो की परिभाषा थी। यह एक राजनीतिक प्रश्न अधिक था, क्योकि, धमाधिकारी अधिकाशत राजतत्रवादी थे। गैम्बैटा ने तो 1877 ई० मे ही घोषित कर दिया था कि, धमवाद गणतत्र

का शत्रु है। धमाधिकारी वर्ग, बूलैन्जर के समथक था तथा ड्रेफस - विरोध के अभियान मे भी ये जुटे रहे थे तथा, शिक्षा गणतत्रवादियो का प्रिय विषय था और वे शिक्षा से धमाधिकारी अथवा राजतत्रवादियो के प्रभाव को क्षीण करना चाहते थे। ड्रेफस प्रकरण के ठडे पडते ही 1901 इ० मे 'लौ ऑफ ऐसोशिएशन (सघ या सगठन की विधि) पारित करके गैर-मान्यता (सरकारी) प्राप्त धामिक सगठनो को अवैधानिक घोषित कर दिया। और इस प्रकार के अवैधानिक सगठन के सदस्यो को शिक्षण सस्थाओ मे अध्यापन का अधिकार प्रदान नहीं किया गया। 1904 इ० मे तो शिक्षा को पूणत पथ निरपेक्ष घोषित करके, धमाधिकारियों से अध्यापन का अधिकार पूणत छीन लिया गया। अत मे, 1905 इ० मे पारित एक्ट ऑफ् सेपेरेशन द्वारा नेपोलियन का 'कोनकोर्डा समाप्त कर दिया गया। राज्य ने धमाधिकारियो को वेतन देना समाप्त कर दिया, न ही किसी धम को अब राज्य अनुदान ही प्रदान कर सकता था। इस प्रकार से चच एव राज्य दोनो पृथक इकाइयो के रूप मे स्थापित हो गए-दोनो की पारस्परिक निभरता जो प्राचीन काल से चली आ रही थी, इस प्रकार समाप्त हो गइ।

किंतु, जिस क्षेत्र मे तृतीय फ्राँसीसी गणतत्र की उपलब्धियॉ अधिक महत्वपूण थीं वह औपनिवेशिक विस्तार था। वस्तुत इस विस्तारवादी व आक्रामक औपनिवेशिक प्रसार की नीति का मुख्य प्रवतक ज्यूल्स फेरी था जो 1881 इ० मे तत्पश्चात् 1883 से 1885 इ० तक प्रधान मत्री रहा था। उसी के द्वारा नियोजित नीति के परिणामस्वरूप ग्रेट ब्रिटेन के बाद फ्रॉस की गणना द्वितीय ओपनिवेशिक महाशक्ति के रूप मे होती थी। फ्रॉस ने एल्जिरिया मे अपना अधिपत्य तो लुइ फिलिप के काल में स्थापित कर लिया था। अब वह पश्चिमोत्तर अफ्रीका मे प्रसार की योजना बनाने लगा। 1881 इ० मे इसी प्रकार ट्यूनिस मे अभियान निर्देशित करके वहॉ के शासक को फ्रॉस का सरक्षणत्व स्वीकार करने के लिए बाध्य कर दिया। किंतु, इसपर इटली की नजर भी थी अत रुष्ट होकर उसने आस्ट्रिया व जमनी के साथ ट्रिपिल एलायन्स' (त्रिगुटीय सधि) मे अपने आप को सम्मिलित कर लिया। इसी प्रकार सहारा का एक बडा रेगिस्तानी भू-भाग -फ्रॉस के अधीन आ गया-जिसमे फ्रॉसीसी बस भी नही सकते थे[1] पश्चिम अफ्रीका मे फेरी ने फ्राँसीसी कौंगो की स्थापना करी तथा मेडागास्कर की ओर भी एक अभियान निर्देशित किया। अतत मैडागास्कर 1896 इ० मे फ्रॉसासा आधिपत्य के अन्तगत आगया तथा 1904 इ० मे मोरक्को भी फ्रॉसीसी प्रभुत्व

का क्षेत्र हो गया। इसी प्रकार सेनेगल, गिनिया दहोमी आइवरी कोस्ट (तट) एव नाइजर का क्षेत्र फ्रॉसीसी प्रभाव-क्षेत्र हो गए थे और, बावजूद जमनी के विरोध के ,मोरक्को अतत 1912 इ० मे फ्रॉस के औपनिवेशिक साम्राज्य का अविभाज्य अग बन चुका था। फ्रॉस ने नेपोलियन तृतीय के काल मे, इण्डोचीन मे कुछ क्षेत्र हस्तगत कर लिए थे-उसने कम्बोडिया एव कोचिन-चीन पर आधिपत्य स्थापित कर लिया था। फेरी के अधीन इन्डोचीन पर आधिपत्य तब पूण हो गया था जब टोन्किन पर विजय प्राप्त कर ली एव अन्नाम पर सरक्षणत्व (प्रोटेक्ट्रेट) स्थापित कर दिया।

औपनिवेशिक साम्राज्य-निमाण की प्रतस्पधा के चलते यूरोप शनै शनै दो स्पष्ट गुटो मे विभक्त हो गया था। बिस्माक की नीति के चलते जमनी ओस्ट्रिया एव इटली की त्रिराष्ट्रीय गुटबदी अथवा ट्रिपिल एलायन्स स्थापित हो गइ थी (1882 इ०) जिसके फलस्वरूप फ्रॉस का पृथकीकरण पूण हो गया था। उसकी लम्बी पूर्वी सीमा पर सशक्त जमन सैन्य साम्राज्य था, जो उसका प्रत्यक्ष विरोधी एव शत्रु था। साथ ही ब्रिटेन के साथ भी उसके सम्बध सौहादपूण न थे। मिस्र व पश्चिमी अफ्रीका मे दोनो के हितो मे परस्पर वैमनस्य था। रूस ही एकमात्र ऐसा देश था जो फ्रॉस को सुरक्षित समर्थन प्रदान कर सकता था। 1890 इ० मे फ्रॉस को वह अवसर भी प्राप्त हो गया जब बिस्मार्क के पतन के पश्चात् जर्मन शासक कैसर विलियम द्वितीय ने रूस के साथ 1887 इ० मे सम्पन्न पुनराश्वासन सधि' ("रीइनश्योरेन्स ट्रीटी") को समाप्त प्राय हो जाने दिया। रूस भी इस प्रतिद्वन्दिता के वातावरण मे अकेले सुरक्षित अनुभव नहीं कर रहा था। रूस व औस्ट्रिया के हित बाल्कन क्षेत्र मे पूर्णत विरोधी थे। साथ ही त्रिराष्ट्रीय गुटबदी के चलते जर्मनी तो औस्ट्रिया की हर-हाल मे सहायता करने के लिए वचनबद्ध था। इसके अतिरिक्त, रूस को अपने आन्तरिक-आर्थिक विकास के लिए धन की आवश्यकत थी-जो जर्मनी उपलब्ध करवाने मे तत्पर नहीं था अपितु, फ्राँस तैयार था। इस प्रकार राजनीतिक व आर्थिक कारणो से रूस के लिए फ्राँसीसी मित्रता अपरिहार्य हो गई थी एव 1894 ई० मे दोनो के मध्य परस्पर द्विराष्ट्रीय सधि ("ड्यूवैल एलायन्स) सम्पन्न हो गई। इस सधि की मुख्य धारा यही थी, कि, यदि फ्राँस पर जर्मनी का अथवा जर्मन-समर्थित औस्ट्रिया का आक्रमण हो तो रूस सहायता करेगा और यदि, इसी प्रकार रूस पर इन दो शक्तियो का समर्थित आक्रमण हो तो फ्राँस हर प्रकार की सहायता

के साथ तत्पर रहेगा-यह बिस्माक की त्रिराष्ट्रीय गुटबदी का उत्तर था।

रूस के साथ स्थायी सम्बधो का सुरक्षा कवच निमित करने के बाद फ्रॉस स ने ब्रिटेन के साथ भी अपने सम्बधो को सुधारने के लिए प्रयास किया। 1882 इ० मे इग्लेड द्वारा मिस्त्र पर आधिपत्य पर प्रत्यक्ष असतोष फ्रॉस अभिव्यक्त कर ही चुका था। मध्य अफ्रीका मे भी दोनो के हित टकरा रहे थे। 1898 इ० मे तो फ्रॉस अभियान दल द्वारा ऊपरी नाइल नदी (पश्चिम अफ्रीका मे) पर बसे सरोदा पर आधिपत्य स्थापित कर लेने से दोनो देशो के मध्य युद्ध के बादल मॅडराने लगे, क्योकि फसोदा इग्लैड के प्रभाव क्षेत्र के अन्तगत आता था। अन्तत यह सकट फ्राँस द्वारा वहॉ से हट जाने से समाप्त हो गया। दोनो ने अब जमनी के रूप मे समान आक्रामक शत्रु के चलते अपने पारस्परिक सम्बधो को सुधारना आवश्यक ही नही अपरिहाय समझा और "आँतात् कौर्डियल (हार्दिक समझौता) पर हस्ताक्षर कर दिए (1904 ई०)। इस समझौते के कारण ही दोनो देशो के मध्य-न्यूफाउन्डलैंड मत्स्य उद्योग, सियाम, मैडागास्कर पश्चिम अफ्राका व मिस्त्र तक के विवाद सुलझा लिए गए। जहॉ फ्राँस ने मिस्त्र मे इग्लैंड के हितो के महत्व अत प्रभुत्व को स्वीकार किया। वहीं इग्लेंड ने भी मोरक्को मे फ्रॉस की स्थिति को स्वीकारा। 1907 इ० मे इस समझौते को विस्तृत करके उसमे रूस को भी सम्मिलित कर लिया गया तथा इग्लैंड ने रूसी हितो के विरूद्ध फारस अफगानिस्तान एव तिब्बत मे हस्तक्षेप न करने का वचन दिया। अत, इस प्रकार, फ्रास, रूस एव इग्लैंड के मध्य त्रिराष्ट्रीय समझौता ("ट्रिपिल आतात्") सम्पन्न हो गया, जो "ट्रिपिल एलायन्स" की शक्ति को सतुलित कर सकता था।

मोरक्को मे फ्रॉस को हार्दिक समझौते से जो विशेष महत्व का स्थान प्राप्त हुआ था (1904 इ० मे) उसे अपनी तानज्यिर यात्रा के दौरान, 1905 इ० मे कैसर विलियम द्वितीय ने चुनौती दे दी। उम्पने घोषित किया, कि, वह हर-हाल मे, मोरक्को मे जर्मन व्यसायिक हितो की सुरक्षा एव सरक्षण प्रदान करेगा। व उसके इस दृष्टिकोण के चलते एक अन्तर्राष्ट्रीय सकट उत्पन्न हो गया जिसके समाधान हेतु, 1906 ई० मे एल्जीसीराज मे अन्तराष्ट्रीय सम्मेलन हुआ। इसके द्वारा सम्पन्न समझौते के अनुसार, जर्मनी एव अन्य शक्तियो के हितो को भी मोरक्को मे सुरक्षित स्थान प्राप्त हो गया तथा यह भी निर्णय हुआ, कि,मोरक्को मे फ्राँस एव स्पेन को ही पुलिस अधिकार प्राप्त होगा। कितु, न केवल फ्राँस ने मोरक्को मे अपनी स्थिति को बनाए रखा, अपितु, उसे और भी सुदृढ किया। अत 1911 ई० मे जर्मनी ने तोप-युक्त पोत अगादीर भेज कर, एक चुनौती और

प्रस्तुत कर दी ताकि, यह स्पष्ट हो जाए, कि, मोरक्को मे फ्राँस की स्थिति अद्वितीय कदापि नहीं है। परन्तु, चूँकि, फ्रॉस के पक्ष मे इग्लैंड तत्पर था अत जमनी को फ्रॉस के साथ अन्तत एक समझौता करना पडा। इस समझौते के अनुसार जमनी ने मोरक्को मे फ्रॉस के अति महत्वपूर्ण स्थिति को स्वीकार किया एव फ्रॉस ने जमनी को फ्रॉसीसी कौन्गो का एक बडा भाग प्रदान कर दिया। इस प्रकार दो गुटो मे विभक्त यूराप सकट टालने मे सफल हो गया !



[12]

प्रथम विश्व-युद्ध और फ्रॉस

1914 - 1918 ई०

1914 इ० की अगस्त मे जो युद्ध फूट पडा वह शाघ्र ही विश्व-व्यापी हो गया। यह महायुद्ध वस्तुत एक पीढी व अधिक के परिवतनो एव विकास का परिणति थी। मूलत , इसकी पृष्ठ-भूमि मे जमना की भूमिक काफी महत्वपूण था। टिपिल आतात् के निमाण को जमनी न केवल अपनी महत्वाकाक्षा की पूति मे व्यवधान के रूप मे देख रहा था-अपितु, उसकी दृष्टि मे यह एक एसा घटना थी जो उसके अन्तराष्ट्रीय प्रभाव को पयाप्त-रूप से कम कर देती। अत 1907 इ० से 1914 इ० के मध्य वह आतात् को विघटित करने के प्रयास मे जुट गया। साथ ही बाल्कान मे एकमात्र विश्वास-पात्र मित्र औस्ट्रिया की स्थिति को सुदृढ करने एव तुर्की को अपनी ओर मिलाने के काय मे भी जुट गया। उसकी महत्वाकाक्षा यह भी थी कि विश्व-राजनीति मे वह महाशक्तियो के साथ समानता के आधार पर बात-चीत करे। और जमनी की यह नीति ही मुख्यत उत्तरादायी थी कि, 'ट्रिपि आतात्' एव मध्यदेशीय शक्तियो ('सेंट्रल पावर्स') के सम्बधो मे थोडे-थोडे अन्तराल मे सकट उत्पन्न होने लगे थे-ये सकट भी किसी व्यापक-स्तरीय भावी युद्ध के स्पष्ट सकेत भी थे !इन सकटो के आविभाव-केन्द्र-बिदु दो थे-एक जो, फ्रॉंस से प्रत्यक्षत सम्बधित था - वह मोरक्को की परिस्थिति से उत्पन्न होता था। दूसरा बाल्कान की समस्या एव वहा पर औस्ट्रिया तथा रूस के पारस्परिक वैमनस्य से सम्बधित था। कितु, ये दोनो ही, जर्मनी की महत्वॉंकाक्षा के एक समान सूत्र से जुडे हुए थे - दोनो मे ही जमनी क हित प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से सपृक्त थे ! वह सूर्य के प्रभा-मण्डल मे एक बडा तथा महत्वपूर्ण स्थान तलाश रहा था !

विशेषतौर से जर्मनी को 1909 ई० के 'फ्रैको-जर्मन' समझौते पर रोष स्वाभाविक रूप से था, क्योकि, इस के द्वारा मोरक्को पर फ्रॉंस का विशेष राजनीतिक हित व अधिकार स्वीकार कर लिये गये थे। जर्मनी अब मोरक्को का फ्रॉंसीसी साम्राज्य मे पूर्ण विलय रोकने का इच्छुक था अन्यथा, विकल्प के रूप मे वह कुछ हर्जाना प्राप्त करने का इच्छुक था। 1911 ई० मे मोरक्को की राजधानी

प्रस्तुत कर दी ताकि यह स्पष्ट हो जाए, कि, मोरक्को मे फ्रॉस की स्थिति अद्वितीय कदापि नहीं है। परन्तु, चूँकि फ्रॉस के पक्ष मे इग्लैंड तत्पर था अत जर्मनी को फ्रॉस के साथ अन्तत एक समझौता करना पडा। इस समझौते के अनुसार, जर्मनी ने मोरक्को मे फ्रॉस के अति महत्वपूर्ण स्थिति को स्वीकार किया एव फ्रॉस ने जमनी को फ्रॉसीसी कौन्गो का एक बडा भाग प्रदान कर दिया। इस प्रकार दो गुटो मे विभक्त यूरोप सकट टालने मे सफल हो गया !



खडा कर दिया और तीसरे सकट ने तो विश्व-व्यापी वेमनस्य शत्रुता व प्रतिद्वन्दिता को मूर्त-रूप प्रदान कर दिया। और, यह तीसरा सकट दूसरे सकट के पद्रह माह के अन्दर ही उत्पन्न हो गया जब औस्ट्रिया के सम्राट के भतीजे ड्यूक फ्रॉंसिस फर्डिनेन्ड की हत्या बोस्निया की राजधानी सारायेवो मे एक छात्र द्वारा कर दी गई।

इस हत्या के प्रतिशोध-स्वरूप औस्ट्रिया की भावी योजना सबिंया को समाप्त करने की ही थी और, इसमे उसे जर्मनी का पूर्ण एव अघ-समथन भी प्राप्त था। रूस स्वय एक स्लैव राष्ट्र था अत उसे एक स्लैव राष्ट्र को पूर्णत मृतप्राय करने की चाल नही पच सकी। उसने जोर देकर कहा कि यह प्रश्न तो पूरे यूरोप को प्रभावित करता है क्योकि, बाल्कान से सम्बधित सभी निणय यूरोपीय शक्तियो के सम्मेलनो व साभाओ मे हुए थे। किंतु, औस्ट्रिया का यह दृष्टिकोण था कि चूँकि यह मामला उसके एव सबिया के बीच का द्विपक्षीय मामला है, अत इसमे समस्त यूरोपीय देशो के सम्मेलन का कोइ औचित्य ही नहीं हे। रूस ने अतत औस्ट्रिया के विरूद्ध सैन्य तैयारियॉ प्रारम्भ कर दीं ओर रूस की इस कायवाही के चलते जर्मनी-जो "ट्रिपिल एलायन्स" द्वारा औम्टिया से बँधा हुआ था-को भी मैदान मे उतरना पडा। किंतु, रूस के विरूद्ध जमन युद्ध उद्घोष का अर्थ था फॉंस के विरूद्ध भी जर्मनी की युद्ध-घोषणा क्योकि, इधर रूस व फ्रॉस भी मैत्री एव शत्रु से युद्ध मे पारस्परिक सहायता के लिए वचनबद्ध थे।

अब तक के वातावरण मे इग्लैंड पूर्णत पृथक एव तटस्थ रहा था। किंतु, तात्कालिक व द्रुत-गति से विजय एव लाभ प्राप्त करने के लोभ मे जमनी ने बेल्जियम से अपनी सेनाओ के लिए एक माग देने की मॉग करी ओर उसके इकार करने पर, उसके क्षेत्र मे अपनी सेना को प्रविष्ट करके, इग्लैंड को भडका दिया-क्योकि बेल्जियम की तटस्थता का आश्वासन प्रशा (1870 इ० के पूव का जमन-राज्य) सहित सभी यूरोपीय शक्तियो ने दिया था। अत इग्लैंड ने इस समझौते के उल्लघन-कता जर्मनी के विरूद्ध युद्ध का एलान करना, अपनी विवशता ही मानी। साथ ही बेल्जियम के तट पर शत्रु के आधिपत्य स्थापित हो जाने से, इग्लैंड की सुरक्षा भी भेदी जा सकती थी, अत इस दृष्टिकोण से भी वह युद्ध का भागीदार हो गया।

जमनी के आकस्मिक आक्रमण से बेल्जियम की सेनाएँ व सीमान्त

फेज के निकट कुछ अनुशासनहीन जन-जातियो ने अव्यवस्था फैला दी। स्वाभाविक ही था, फ्रॉस को सैन्य बलों के साथ हस्तक्षेप करना ही पडा ताकि व्यवस्था पुनस्थापित हो सके। जर्मनी ने इसी के प्रतिरोध-स्वरूप व आतात् के परीक्षण हेतु युद्ध-पोत "पैंथर" अगादीर के बदरगाह भेज दी थी (देखे ऊपर भी पृ० 101-102)। इससे जर्मनी यह भी स्पष्ट करना चाह रहा था कि फ्रॉस ही मोरक्को का एकमात्र भाग्य-निमाता नहीं है-उसे भी मोरक्को मे हस्तक्षेप करने का पूरा अधिकार है। ब्रिटिश सरकार ने प्रत्युत्तर-स्वरूप एक 'क्रयूसर' जहाज भेजकर यह स्पष्ट कर दिया था, कि, वह भी अपने समर्थक फ्रॉस के सहायतार्थ तत्काल उपस्थित होगा। अत जर्मनी ने तुरन्त सकट न खडा करने की नियत से समझौता कर लिया। इसके परिणामस्वरूप, मोरक्को पर फ्रॉसीसी 'प्रोटेक्ट्रेट' या सरक्षणत्व स्थापित हो गया, कितु, फ्रॉस ने मोरक्को मे एक खुला द्वार छोड दिया तथा फ्रॉसीसी कौन्गो का एक भाग भी जर्मनी को देना स्वीकार कर लिया।

कितु, इस घटनाचक्र ने जमनवासियो की फ्रॉस के प्रति शका भय एव घृणा को सशक्त भी कर दिया। फ्रॉसीसी भी फ्रॉसीसी कौगो प्रदान करने को आपदा काल मे, जमनी द्वारा जबदस्ती वसूला गया क्षेत्र मानते थे। वे इसे जमनी का भयादोहन ही मानते रहे। दूसरी ओर, जमनी को लगा कि फ्रॉस एव इग्लैड क सयुक्त सुनियोजित षडयत्र के चलते महाशक्ति के रूप मे उसके उद्भव को एक झटका लगा है। अत यह स्पष्ट होने लगता है, कि '1914 इ० के सकट के प्रारम्भिक बादल व पूर्व छाया थी, अगादीर की घटना।'[40]

जिस प्रकार मोरक्को के दो सकटो मे फ्रॉस और जमनी के हित टकरा रहे थे उसी के समानान्तर (व उसी प्रकार) बाल्कान मे औस्ट्रिया-हगरी तथा रूस के हितो मे भी पारस्परिक टकराव स्पष्ट था। मोरक्को के दोनो सक्ट तो खर टल भी गए कितु, बाल्कान की यह पूर्वी सम-स्या अपने सकटो के साथ, एक बडे मकड-जाल का विस्तार लिए हुइ थी-उसमे पारस्परिक मतभेद तथा वमनस्य का इतना आधिक्य था कि समाधान सम्भव ही नही था! अत , इसके कारण जहॉ दो बाल्कान समस्याओ (प्रथम, 1908 इ० की - जब औस्ट्रिया न बोस्निया हडप लिया था और औस्ट्रो-सबियन शत्रुता सुदृढ हो गइ और दूसरी 1912-13 इ० वाली जब औस्ट्रिया की सबिया-विरोधी नीति के कारण, वैमनस्य और भी बढ गया था-उसने एक जर्मन राजकुमार के अधीन अलबेनिया को स्वायत्त-शासित राज्य मे परिवतित करके सबिया का समुद्री द्वार अवरुद्ध करके उसे युद्ध के लिए विवश कर दिया) ने यूरोप को युद्ध के बिल्कुल समीप लाकर

खडा कर दिया और तीसरे सकट ने तो विश्व-व्यापी वेमनस्य शत्रुता व प्रतिद्वन्दिता को मूत-रूप प्रदान कर दिया। और, यह तीसरा सकट दूसरे सकट के पद्रह माह के अन्दर ही उत्पन्न हो गया जब औस्ट्रिया के सम्राट के भतीजे ड्यूक फ्राँसिस फर्डिनेन्ड की हत्या बोस्निया की राजधानी सारायेवो मे एक छात्र द्वारा कर दी गई।

इस हत्या के प्रतिशोध-स्वरूप औस्ट्रिया की भावी योजना सबिया को समाप्त करने की ही थी और, इसमे उसे जर्मनी का पूर्ण एव अघ-समथन भी प्राप्त था। रूस स्वय एक स्लैव राष्ट्र था, अत उसे एक स्लैव राष्ट्र को पूणत मृतप्राय करने की चाल नही पच सकी। उसने जोर देकर कहा कि, यह प्रश्न ता पूरे यूरोप को प्रभावित करता है क्योकि, बाल्कान से सम्बधित सभी निर्णय यूरोपीय शक्तियो के सम्मेलनो व सभाओ मे हुए थे। किंतु, औस्ट्रिया का यह दृष्टिकोण था कि चूँकि यह मामला उसके एव सबिया के बीच का द्विपक्षीय मामला है अत इसमे समस्त यूरोपीय देशो के सम्मेलन का कोइ औचित्य ही नही ह। रूस ने अतत औस्ट्रिया के विरुद्ध सैन्य तैयारियॉ प्रारम्भ कर दीं ओर रूस की इस कायवाही के चलते, जर्मनी-जो "ट्रिपिल एलायन्स द्वारा औस्ट्रिया से बॅधा हुआ था-को भी मैदान मे उतरना पडा। किंतु, रूस के विरूद्ध जमन युद्ध उद्घोष का अर्थ था फाँस के विरूद्ध भी जर्मनी की युद्ध-घोषणा क्योकि, इधर रूस व फ्रॉस भी मैत्री एव शत्रु से युद्ध मे पारस्परिक सहायता के लिए वचनबद्ध थे।

अब तक के वातावरण मे इग्लैंड पूर्णत पृथक एव तटस्थ रहा था। किंतु, तात्कालिक व द्रुत-गति से विजय एव लाभ प्राप्त करने के लोभ मे जमनी ने बेल्जियम से अपनी सेनाओ के लिए एक माग देने की माँग करी और उसवे इकार करने पर उसके क्षेत्र मे अपनी सेना को प्रविष्ट करके, इग्लैंड को भडका दिया-क्योकि बेल्जियम की तटस्थता का आश्वासन प्रशा (1870 इ० के पूव का जमन-राज्य) सहित सभी यूरोपीय शक्तियो ने दिया था। अत इग्लैंड ने इस समझोते के उल्लघन-कता जमनी के विरूद्ध युद्ध का एलान करना अपनी विवशता ही मानी। साथ ही बेल्जियम के तट पर शत्रु के आधिपत्य स्थापित हो जाने से इग्लैंड की सुरक्षा भी भेदी जा सकती थी, अत इस दृष्टिकोण से भी वह युद्ध का भागीदार हो गया।

जमनी के आकस्मिक आक्रमण से बेल्जियम की सेनाएँ व सीमान्त

फ्रॉसीसी सेनाए पराजित हो गईं। मोन्स से तात्कालीक अपवतन (रीट्रीट अथवा वापसी) से आग्ल तथा फ्राँसीसी सेनाएँ सुरक्षित रह गई। एलाइड सेनाएँ इस प्रकार से वापस पलटी, कि, वे मार्थ के पीछे वदून तथा पेरिस की धुरि पर केंद्रित हो गई। इस बीच एल्सेस-लौरैन पर भी फ्रॉसीसी आक्रमण निष्फल हो चुका था। जमन सेनाएँ अब पेरिस की ओर अग्रसर होने लगीं तथा मान पार कर गई ! किंतु, द्रुत-गति से आगे बढने के कारण, उनकी प्रथम व द्वितीय सेनाओ के मध्य एक रिक्तता उत्पन्न हो गई, जिसका तुरन्त लाभ, फ्राँसीसी जनरल फोच तथा सैन्याभियान - प्रमुख जौफ्रे ने उठा लिया और ब्रिटिश-सेनाओ की मदद से ऐसा प्रभावशाली अक्रमण किया कि, जर्मन सेनाए मान से वापस पलायन के लिए बाध्य हो गइ। और, यही, 'मार्न का युद्ध' इस लडाई का प्रभावकारी मोड प्रमाणित हुआ। इसने जहाँ जमनी की द्रुत-गति से फ्रॉस को करारी मात देने की योजना को निष्फल कर दिया, वहीं इग्लैंड तथा फ्रॉस की सेनाओ को सुनियोजित-सयुक्त आक्रमण करने के लिए पर्याप्त समय प्रदान कर दिया !

आइन (Aisne) नदी के तट पर जर्मनवासी स्थायी से हो गए तथा उन्होने वहाँ से हटाने के समस्त फ्रॉसीसी प्रयास निष्फल कर दिए। पुन दोनो सेनाओ ने एक-दूसरे को परास्त करने के लिए उत्तर दिशा की ओर बढना शुरू किया- किंतु यह भी निष्परिणाम ही रहा। अब स्विट्जरलैण्ड से लेकर 'नौर्थ सी (उत्तरी सागर) तक की सीमा पर इन दोनो शत्रुओ के मध्य प्रसिद्ध ट्रेन्च (खाइ) युद्ध' प्रारम्भ होकर चार लम्बे वर्षो तक चलता रहा। इसी बीच जमनी बेल्जियम को पूर्णत रौंदने तथा एन्टवर्प को विजित करने मे सफल हो गया। किंतु, इग्लैंड एव फ्रॉस की सेनाएँ उनका सफलता-पूर्वक प्रतिरोध करती रहीं।

इस दीघकालीन युद्ध मे 1916 इ० का वष काफी महत्वपूण है क्योकि फरवरी से लेकर दिसम्बर तक फ्रॉस की क्षमता का भरपूर परीक्षण हुआ। वदून की शहादत से, हॉलाकि, फ्रॉस विजयी होकर उभरा किंतु, इसी से वह अत्यधिक क्षीण हो गया था। युद्ध के लम्बे खिचने के कारण व सफलतापूवक प्रतिरोध करने की क्षमता के कारण, फ्राँसीसी मनोबल शनै शनै बढने लगा और बढता ही रहा ![41] हॉलाकि आठ मील के इस क्षेत्र मे जमनी की चौदह सौ (1400) तोपे-जिनमे आधी भारी एव भीषण-प्रभाव वाली हौवित्जर थीं - कहर बरपा रही थी फिर भी, इस क्षेत्र मे जो फ्राँसीसी सुरक्षात्मक दुर्गो की उपस्थिति थी- उसके कारण भी फ्रॉसीसी सुरक्षा सुदृढ थी और युद्ध के दौरान फ्रॉसीसी तोप-

विभाग ने जो तकनीक व शैली विकसित कर ली थी वह भी अद्‌भुत् तथा मारक-क्षमता पूर्ण थी अत फ्रॉस ज्यादा अच्छे ढग से युद्ध सचालन कर, जर्मनी से दो-दो हाथ कर सका।

इस प्रकार उत्तर मे, नवीन ब्रिटिश सेनाओ के आगमन से इग्लैंड व फ्रॉस की सयुक्त सेनाओ मे नए जोश का सचार हुआ जिसकी अभिव्यक्ति 'सोम्म के युद्ध मे हुइ। कितु, जितना भयकर यह युद्ध एव जितनी भीषण इसकी विभीषिका थी उतनी ही फ्रॉसीसी सेनाओ की थकावट थी-युद्धो की अविरलता तथा भीषणता के अनुपात मे उस सेना का चुक जाना भी स्वाभाविक व अपरिहाय था। और, इसके परिणामस्वरूप 1917 इ० की जोफ्रे की आक्रमण की योजना निष्फल हो गइ। वस्तुत अपनी हिडेनबग रेखा की ओर पलटना ही जर्मनी-सेनाओ की सफलता का कारण था।[42] और इसी ने 'एलाइड सेनाओ के आक्रमण को निष्प्रभावी कर दिया और इसी के परिणामस्वरूप फ्राँसीसी सेनाओ की निराशा घनी हो गइ। तथा 1917 इ० की ग्रीष्म भर, वे मात्र अपनी खदको की ही रक्षा मे लगे रहे-आक्रमणो का साहस नहीं बटोर सके।

और ऐसी प्रतिकूल परिस्थितियो मे पेटेन ने फ्रॉसीसी लोगो की प्रशसा प्राप्त करने मे सफलता प्राप्त कर ली। उसने फ्राँसीसी सेनाओ को पुनर्जीवित करन का चमत्कार कर दिखाया और सोने मे सुहागा वाली परिस्थिति तब बन ग" जब 1917 इ० मे क्लेमेन्क्यू फ्राँस का प्रधान-मत्री बन गया अपितु 1917 इ० के अन्त मे। उसके आग्मन के साथ ही नागरिको मे एक अभूतपूव विश्वास एव जोश प्रवाहित होने लगा। विश्वासघातियो की गिरफ्तारी बडे पैमाने पर शुरू कर दी गइ जमन - समथको को बदीगृह पहुँचाया गया तथा पराजयवादिया की सवत्र निन्दा की जाने लगी। अगले वष के सपूण भाग तक जब तक विजयश्री अजित न हो गइ क्लेमेन्क्यू ने एक प्रजातात्रिक अधिकनायकवाद के आधार पर शासन किया। उसके व्यक्तिगत चर्मोत्कष की तुलना ब्रिटेन के प्रधानमत्री लौयड् जाज के चढते राजनीतिक प्रभाव से की जा सकती है। क्लेमन्क्यू की दृष्टि जमन-पराजय पर केद्रित थी अत उसकी दृष्टि अन्तत फोच् जैसे सेनानायक पर केद्रित हानी स्वाभाविक थी -वही एक मात्र ऐसा सेनानायक था जिसकी आक्रामकता कदापि प्रभावित नही हुइ थी तथा जिसकी मान्यता थी, कि विजय सम्भव है। क्लेमेन्क्यू ने ब्रिटिश सेनाओ को भी उसके नेतृत्व मे सयुक्त रूप से युद्ध करने के लिए तयार कर लिया। यह सही समय पर लिया गया एक

फ्रॉसीसी सेनाए पराजित हो गई। मोन्स से तात्कालीक अपवतन (रीट्रीट अथवा वापसी) से आग्ल तथा फ्राँसीसी सेनाएँ सुरक्षित रह गई। एलाइड सेनाएँ इस प्रकार से वापस पलटी कि वे मार्थ के पीछे वर्दून तथा पेरिस की धुरि पर केंद्रित हो गइ। इस बीच एल्सेस-लौरेन पर भी फ्राँसीसी आक्रमण निष्फल हो चुका था। जमन सेनाएँ अब पेरिस की ओर अग्रसर होने लगीं तथा मान पार कर गई ! किंतु, द्रुत-गति से आगे बढने के कारण, उनकी प्रथम व द्वितीय सेनाओ के मध्य एक रिक्तता उत्पन्न हो गई जिसका तुरन्त लाभ, फ्रॉसीसी जनरल फोच तथा सैन्याभियान - प्रमुख जौफ्रे ने उठा लिया और ब्रिटिश-सेनाओ की मदद से ऐसा प्रभावशाली अक्रमण किया कि, जर्मन सेनाए मान से वापस पलायन के लिए बाध्य हो गई। और, यही, 'मार्न का युद्ध' इस लडाई का प्रभावकारी मोड प्रमाणित हुआ। इसने जहॉ जर्मनी की द्रुत-गति से फ्रॉस को करारी मात देने की योजना को निष्फल कर दिया, वहीं इग्लैंड तथा फ्रॉस की सेनाओ को सुनियोजित-सयुक्त आक्रमण करने के लिए पर्याप्त समय प्रदान कर दिया !

आइन (Aisne) नदी के तट पर जर्मनवासी स्थायी से हो गए तथा उन्होने वहॉ से हटाने के समस्त फ्राँसीसी प्रयास निष्फल कर दिए। पुन दोनो सेनाओ ने एक-दूसरे को परास्त करने के लिए उत्तर दिशा की ओर बढना शुरू किया- किंतु यह भी निष्परिणाम ही रहा। अब स्विट्ज़रलैण्ड से लेकर नौर्थ सी (उत्तरी सागर) तक की सीमा पर इन दोनो शत्रुओ के मध्य प्रसिद्ध ट्रेन्च (खाइ) युद्ध' प्रारम्भ होकर चार लम्बे वर्षो तक चलता रहा। इसी बीच जमनी, बेल्जियम को पूर्णत रौंदने तथा एन्टवप को विजित करने मे सफल हो गया। किंतु, इग्लैंड एव फ्रॉस की सेनाएँ उनका सफलता-पूर्वक प्रतिरोध करती रहीं।

इस दीघकालीन युद्ध मे 1916 इ० का वष काफी महत्वपूण है क्याकि फरवरी से लेकर दिसम्बर तक फ्रॉस की क्षमता का भरपूर परीक्षण हुआ। वदून की शहादत से हॉलाकि, फ्रॉस विजयी होकर उभरा किंतु, इसी से वह अत्यधिक क्षीण हो गया था। युद्ध के लम्बे खिचने के कारण व सफलतापूवक प्रतिरोध करने की क्षमता के कारण, फ्रॉसीसी मनोबल शनै शनै बढने लगा और बढता ही रहा ![41] हॉलाकि आठ मील के इस क्षेत्र मे जमनी की चौदह सौ (1400) तोपे-जिनमे आधी भारी एव भीषण-प्रभाव वाली हौवित्जर थीं - कहर बरपा रही थी, फिर भी, इस क्षेत्र मे जो फ्राँसीसी सुरक्षात्मक दुर्गो की उपस्थिति थी- उसके कारण भी फ्राँसीसी सुरक्षा सुदृढ थी और युद्ध के दौरान, फ्रॉसीसी तोप-

विभाग ने जो तकनीक व शैली विकसित कर ली थी वह भी अद्‌भुत् तथा मारक-क्षमता पूर्ण थी अत फ्रॉस ज्यादा अच्छे ढग से युद्ध सचालन कर, जर्मनी स दो-दो हाथ कर सका।

इस प्रकार उत्तर मे, नवीन ब्रिटिश सेनाओ के आगमन से इग्लैंड व फ्रॉस की सयुक्त सेनाओ मे नए जोश का सचार हुआ जिसकी अभिव्यक्ति सोम्म के युद्ध मे हुइ। किंतु, जितना भयकर यह युद्ध एव जितनी भीषण इसकी विभीषिका थी उतनी ही फ्रॉसीसी सेनाओ की थकावट थी-युद्धो की अविरलता तथा भीषणता के अनुपात मे उस सेना का चुक जाना भी स्वाभाविक व अपरिहाय था। और, इसके परिणामस्वरूप 1917 ई० की जोफ्रे की आक्रमण की योजना निष्फल हो गइ। वस्तुत अपनी हिडेनबग रेखा की ओर पलटना ही जमनी-सेनाओ की सफलता का कारण था।[42] और इसी ने 'एलाइड' सेनाओ के आक्रमण को निष्प्रभावी कर दिया और इसी के परिणामस्वरूप फ्रॉसीसी सेनाओ की निराशा घनी हो गइ। तथा 1917 इ० की ग्रीष्म भर वे मात्र अपनी खदको की ही रक्षा मे लगे रहे-आक्रमणो का साहस नहीं बटोर सके।

और एसी प्रतिकूल परिस्थितियो मे पेटेन ने फ्रॉसीसी लोगो का प्रशसा प्राप्त करने मे सफलता प्राप्त कर ली। उसने फ्राँसीसी सनाओ को पुनर्जीवित करन का चमत्कार कर दिखाया और सोने मे सुहागा वाली परिस्थिति तब बन ग" जब 1917 इ० मे क्लेमेन्क्यू फ्राँस का प्रधान-मत्री बन गया अपितु 917 ३० के अन्त मे। उसके आगमन के साथ ही, नागरिको मे एक अभूतपूव विश्वास एव जोश प्रवाहित होने लगा। विश्वासघातियो की गिरफ्तारी बड पैमाने पर शुरू कर दी गइ जमन - समथको को बदीगृह पहुँचाया गया तथा पराजयवादिया की सवत्र निन्दा की जाने लगी. अगले वष के सपूण भाग तक जब तक विजयश्री अजित न हो गइ क्लेमेन्क्यू ने एक प्रजातात्रिक अधिक्नायकवाद के आधार पर शासन किया। उसके व्यक्तिगत चर्मोत्कष का तुलना ब्रिटेन के प्रधानमत्रा लोयड् जाज के चढते राजनीतिक प्रभाव से की जा सकती है। क्लेमन्क्यू का दृष्टि जमन-पराजय पर केद्रित थी अत उसकी दृष्टि अन्तत फोच् जैसे सेनानायक पर केंद्रित होनी स्वाभाविक थी -वही एक मात्र ऐसा सेनानायक था जिसकी आक्रामकता कदापि प्रभावित नही हुइ थी तथा जिसकी मान्यता थी कि विजय सम्भव हे। क्लेमेन्क्यू ने ब्रिटिश सेनाओ को भी उसके नेतृत्व मे सयुक्त रूप से युद्ध करने के लिए तयार कर लिया। यह सही समय पर लिया गया एक

उचित निणय था। 1918 इ० के बसत मे ल्यूडेनडौर्फ के सेनापतित्व मे जमनी के अन्तिम एव सर्वशक्तिशाली आक्रमण की शुरूआत हुई – इसकी दिशा मुख्यत ब्रिटेन-विरोधी थी। इस आक्रमण की भीषणता का आभास इसी तथ्य से हो जाता है, कि, जर्मन सेनाओ ने पछत्तर लाख युद्ध-बदी बना लिए थे वे मान तक पहुँच कर, पेरिस को भयभीत कर चुके थे। स्थिति भयावह थी और क्लेमेन्क्यू की उपस्थिति के वास्तविक अर्थ का आभास हमे इसी से होता है 'उसका अतृप्त साहस इन्ही प्रतिकूल परिस्थितियो मे दीप्तमान हो रहा था।[43] उसने प्रतिनिधि सभा-के सदन मे उद्‌घोषित किया, 'मै पेरिस के पूव भी युद्ध करूँगा, पेरिस मे भी युद्ध करूँगा तथा पेरिस के पश्चात् भी युद्ध करूँगा (I will fight before Paris I will fight in Paris I will fight behind Paris)[44]

उसकी धारणा थी, कि, यदि नागरिक-अधिकारी व प्रशासन भी अपने दायित्वो का निष्ठापूण निवहन करे तो फ्राँस युद्ध मे पराजित नही हो सकता। उसके नेतृत्व मे सावजनिक-प्रशासन ने नइ उचाइयो को स्पश किया। अत 1918 इ० मे जब जमन – सेनाए पेरिस की ओर अग्रसर हो रही थी तब फोच् सुनियोजित प्रति-आक्रमण की तैयारी मे व्यस्त था। उसे ब्रिटिश सेनाओ के प्रतिरोध पर अदम्य विश्वास था - वह उनकी सहायतार्थ न तो गया और न ही सेनाएँ भेजीं- वह अपना एक-एक सैनिक उस अतिम निर्णायक क्षण के लिए रोके हुए था जब जर्मन-सेनाएँ अपनी आक्रामक गति के अन्तिम सीमा पर होगीं। इसी बीच अमरीकी सैनिको का भी सहायतार्थ – आग्मन प्रारम्भ हो गया था। अन्तत मध्य-जुलाई 1918 ई० को वह निर्णायक क्षण व अवसर आ ही गया फोच् ने सोइसन्स एव चैत्यू-थ्येरी के मध्य आक्रमण किया और यही अन्त का श्रीगणेश साबित हुआ। अगस्त 8, 1018 ई० को 'हिन्डेनबर्ग रेखा अथवा पक्ति टूट गइ और तब से निरन्तर युद्धो मे फँसाकर फोच् ने शत्रु को कोइ आराम व क्षणिक विश्राम भी लेने नहीं दिया। फ्राँसीसी सेना ऐसे लड रही थी जैसे वह किसी परा-शक्ति से परिचालित हो। सितम्बर आते-आते तो फ्लैंडर्स मे ब्रिटिश सेनाओ व म्यूस मे फ्राँसीसी सेनाओ ने आक्रमण कर, जर्मन सेनाओ की हिन्डेनबर्ग रेखा के मध्य (कद्र)की ओर अग्रसर होना प्रारम्भ कर दिया था। जर्मन-सेनाएँ अपनी सीमाओ की ओर लौटने के लिए बाध्य हो गईं। नवम्बर 9, 1918 ई० को केसर का साम्राज्य विलुप्त हुआ-उसने पद त्याग दिया तथा जर्मनी मे नवीन गणराज्य की स्थापना हुई और इसी से शाँति-वार्ता प्रारम्भ हुई। नवम्बर 11, को फोच् ने उन्हे युद्ध-विराम का आश्वासन प्रदान किया।

हॉलाकि प्रथम विश्व-युद्ध मे फ्राँस अन्तत विजयी होकर निक्ला फिर भी वह काफी थक व क्षीण हो चुका था। वह न केवल सैन्य रूप से दुबल हो गया था बल्कि कूटनीतिक दृष्टिकोण से भी यूरोप मे उसकी तुलनात्मक शक्ति व स्थिति का ह्रास ही हुआ था। अत इस प्रकार, विजय की हुकार मे फ्रॉस की वास्तविक स्थिति छिपक्र रह गइ थी। बावजूद दिखावट के फ्रॉस की मानसिकता पराजित राष्ट्र की सी हो गइ थी, उसे जन धन व साधन की इतनी हानि झेलनी पडी थी, कि वह दोबारा उठने व लडने लायक नहीं रह गया था। अत अब वह अपनी सुरक्षा के प्रति अत्यधिक चितित रहने लगा था। हॉलाकि, यह स्वाभाविक एव ताकिक भी था परन्तु इग्लैंड कभी भी फ्रॉस की मानसिकता को समझ ही न सका और अमरीका को तो इसका आभास भी नही हुआ किंतु, फ्रॉस द्वितीय विश्व-युद्ध तक अपनी सुरक्षा के ही उधेड-बुन मे फॅसा रहा और यह मानसिक उलझन कितनी वास्तविक थी-यह तो द्वितीय विश्व-युद्ध ने सुस्पष्ट ही कर दिया।

फोच् तथा क्लेमेन्क्यू के विरूद्ध पाइन्केयर जर्मनी की पराजय पूणरूपेण चाहता था तथा वह यह भी चाहता था कि, यह जमन पराजय सवविदित भी हो जाए ! कम से कम, इससे नात्सी उदय के काल्पनिक कारण का तो भण्डाफोड हो ही जाता। जनवरी 1919 की शाँति वार्ता मे भी पोइन्केयर ने राह्इन के पश्चिमी तट को जमनी से असम्बद्ध करके फ्राँस की सुरक्षा के आश्वासन की माँग करी, किंतु, क्लेमेन्क्यू ने इसे सहर्ष त्याग कर के उसके स्थान पर सयुक्त राज्य अमरीका एव ग्रेट ब्रिटेन के साथ सैन्य-समझौतो को वरीयता प्रदान करी। पोइन्केयर पेशे से वकील होने के कारण, इस बात से अवगत था, कि, यह समझौता बहुत उपादेय साबित नहीं हो सकता है। फोच् के भी विचारानुसार, अमरीका और फ्राँस तब तक पराजित व अधिकृत हो जाएगा। वस्तुत यही सत्य भी प्रमाणित हुआ जब 1940 ई० मे फ्राँस पर द्वितीय विश्व-युद्ध के दौरान आक्रमण आसन्न हुआ ! और जो चेतावनी पोइन्केयर ने दी थी वह भी सत्य प्रमाणित हुइ - 1936 ई० मे हिटलर ने यूरोपीय समझौते का उल्लघन करते हुए, राह्इनलैंड का सैन्यीकरण पुन कर दिया और ब्रिटेन द्वारा किसी भी प्रकार के विरोध अथवा प्रतिरोध ने जर्मनी का आक्रामक मार्ग सुगम कर दिया !

सयुक्त राज्य सभा या लीग ऑफ् नेशन्स के सविधान की आलोचना पोइन्केयर ने तभी कर दी थी कि, चूँकि, इसके पास कोई क्रियान्वयन विधि नहीं है अत चाहकर भी यह सस्था समुचित व्यवस्था नहीं बना पाएगी और

वही हुआ भी। शॉति समझौते के पाच माह बाद ही अमरीका व ब्रिटेन ने सामाआ (जिसमे फ्राँस की सीमाएँ भी सम्मिलित थी) की सुरक्षा की गारन्टी लेने अथवा ठोस आश्वासन देने से इन्कार कर दिया ! फॉस विवश होकर अपनी सामाआ की सुरक्षा के लिए आत्म-निभर होने के उपाय सोचने लगा ताकि उसकी सीमाएँ सुरक्षित रह सके ! बस ब्रिटेन से थोडी बहुत आशा थी-वह भी फ्रॉस का पश्चिमा सीमा पर और केन्स मे सन् 1922 इ० मे ब्रिटिश प्रधानमत्री लोयड जौज ने वस्तुत पश्चिमी सीमाओ की सुरक्षा का पूर्ण आश्वासन दे दिया क्ति, पूर्वी सीमाओ की सुरक्षा के सम्बध मे वह भी मौन ही रहा ! दुभाग्य से 1918 इ० के महायुद्ध की समाप्ति पर यूरोपीय राजनीतिक समीकरण कुछ सामा तक इतना प्रभावित था कि पराजय के बावजूद भी यह जमनी को सशक्त कर गया था।

राजनीतिक दृष्टि से वसाय की सधि यूरोप को ध्वस्त करने वाली शक्ति के प्रति बहुत उदार साबित हुइ। अत वे दोबारा इससे भी अधिक अव्यवस्था फैलाने के विषय मे सोच सके ! आथिक क्षेत्र मे, विशेष रूप से जमना से हजाने की वसूली की विधि के प्रश्न पर ब्रिटेन व फ्राँस मे स्पष्ट मतभेद थे और शनै शनै पुन शक्तिशाली होते जमनी ने कम से कम अदायगी की चाल शुरू कर दी ओर अमरीका का पैसा जो युद्ध से क्षत-विक्षत जमनी के पुनवास पर खर्च होना था- वह भी जमनी के आयुध भण्डारन मे ही अधिक काम आया ओर इसी से द्वितीय विश्व-युद्ध सम्भव भी हो सका!

दूसरी तरफ जहाँ तक फ्रॉस की अपनी समुत्थान की समस्या थी - उसने थोडे से समय-थोडी बहुत सहायता से अभूतपूर्व उपलब्धि अजित कर ली। 1921-1924 इ० के मध्य उसकी आथिक व्यवस्था सुदृढ होने लगी तथा व्यापार-सतुलन भी उसके अनुकूल हो गया। 1925 ई० तक फ्रॉस की आन्तरिक अर्थ-व्यवस्था पूणत पुन पटरी पर आ चुकी थी और फ्राँस की यह समुत्थान प्रक्रिया उसके अपने प्रयासो से ही सम्भव हो सकी थी ! किन्तु, जब जमनी से हजाना - वसूली के प्रश्न पर ब्रिटेन व फ्राँस का मतभेद हुआ ही था तब तक एक अन्य समस्या ने इनके मध्य दूरी को और अधिक बढाने मे सक्रिय योगदान दिया। यह समस्या निकट-पूर्व की थी जहाँ मिस्त्र व तुर्की के मध्य युद्ध प्रारम्भ हो गया था। इस युद्ध मे ब्रिटेन मिस्त्र का एव फ्रॉस तुर्की का पक्षधर बना। और जर्मनी ने भी इस दौर मे पुन अपनी-अपनी ढपली अपना-अपना राग कर रहे यूरोप को पूर्व एव पश्चिमी के खेमो मे विभक्त करने मे सफलता

अजित की - उसने रूस के साथ सधि कर ली जिसका उल्लघन उसने जनवूझकर किया व द्वितीय महायुद्ध का श्रीगणेश किया। फिर भी वह अपने गतव्य म सफ्ल रहा। रूस को पाश्चात्य पर तनिक भी विश्वास न था और विचारधारा के आधार पर तो वह पाश्चात्य को स्वय पसद नहीं करता था और न ही वह स्वय पाश्चात्य को फूटी आँख सुहाता था अत विचारधारात्मक युद्ध-दा महायुद्धो के मध्य-काल मे ही प्रारम्भ हो गया था। अत नात्सीवाद व साम्यवाद के मध्य घृणापूण बेर के बावजूद भी इन दो शक्तियो के मध्य एक कृत्रिम समझोता - कुछ समय के लिए ही सही हो गया और पाश्चात्य विश्व - विशेषत फ्रॉस अवाक् रह गया और रूस पर दोषारोपण करने लगा। जमनी यही चाहता था - यूरोप को पूव व पाश्चात्य के वैमनस्यपूण खेमो मे विभक्त करके वह अपनी समुत्थान की प्रक्रिया को सुचारू रूप से सक्रिय रखन मे सफल हो गया एव शीघ्र ही अपने आप को सैन्य-शक्ति के रूप मे पुन परिवतित कर सका।

ब्रिटेन से सहायता न प्राप्त होने की स्थिति मे पोइन्केयर अपने को पूण निराशा से न रोक सका और अन्तत बल-प्रयोग के विकल्प के विषय म सोचने को बाध्य हो गया। 1923 ई० मे उसने रूह्र पर फ्रॉंसीसी आधिपत्य करवा दिया-उन्हे जमनी सरकार द्वारा समर्थित निष्क्रिय प्रतिरोध का सामना करना पडा। फ्रॉसासा गणतत्र के नए राष्ट्रपति मिलेराँ ने अब जमनी से प्रत्यक्ष वार्ता पर बल दिया। राह्इन क्षेत्र मे फ्राँस अपनी सुरक्षा अब स्थापित करवा सकता था कितु, जैसा कि पोइन्केयर ने स्वय स्वीकार किया है, कि, 'फ्रास पूर्णत चुक गया था अत मेरा अनुगमन करने मे असमर्थ रहा।[45] अत उसकी दृढता की नीति को फ्राँस मे ही समर्थक न मिले। सब शाँति के पक्षधर हो गए और युद्ध तथा युद्धपरक परिस्थितियो के विरूद्ध हो गए थे। अत अब एक ही विकल्प शेष रह गया था और वह था शाँति-वार्ताओ का विकल्प।

इसी समय सयोगवश फ्राँस मे वामपथी एव समाजवादियो को राजनीतिक विजयश्री भी प्राप्त हो गई थी और उनका पहला कृत्य था मिलेराँ को राष्ट्रपति पद से हटाकर महत्वहीन दोमर्ग्य (Doumergu) को उनके स्थान पर नया राष्ट्रपति बनाना। वामपथियो की विदेश नीति अधिक सफल प्रमाणित हुई - क्योकि ब्रिटेन मे भी पहली बार श्रमिक अथवा लेबर राजनीतिक-दल की सरकार गठित हो गई थी अत फ्राँस तथा ब्रिटेन ने पारस्परिक मतभेदो को भुलाकर, जेनेवा प्रोटोकौल पर हस्ताक्षर कर दिए, जिसमें सयुक्त सुरक्षा एव नियत्रित निशस्त्रीकरण के प्रावधान भी सम्मिलित थे। कितु, दुर्भाग्यवश, ब्रिटेन मे लेबर सरकार शीघ्र

वही हुआ भी। शाँति समझौते के पाच माह बाद ही अमरीका व ब्रिटेन ने सामाआ (जिसमे फ्राँस की सीमाएँ भी सम्मिलित थी) की सुरक्षा की गारन्टी लेने अथवा ठोस आश्वासन देने से इन्कार कर दिया ! फ्रॉस विवश होकर, अपनी सीमाओ की सुरक्षा के लिए आत्म-निभर होने के उपाय सोचने लगा, ताकि, उसकी सामाएँ सुरक्षित रह सके ! बस ब्रिटेन से थोडी बहुत आशा थी-वह भी फ्रॉस की पश्चिमी सीमा पर और केन्स मे सन् 1922 इ० मे ब्रिटिश प्रधानमत्री लोयड जौज ने वस्तुत पश्चिमी सीमाओ की सुरक्षा का पूर्ण आश्वासन दे दिया क्तिु, पूर्वी सीमाओ की सुरक्षा के सम्बध मे वह भी मौन ही रहा ! दुभाग्य से 1918 इ० के महायुद्ध की समाप्ति पर यूरोपीय राजनीतिक समीकरण कुछ सीमा तक इतना प्रभावित था कि पराजय के बावजूद भी, यह जमनी को सशक्त कर गया था।

राजनीतिक दृष्टि से, वसाय की सधि यूरोप को ध्वस्त करने वाली शक्ति के प्रति बहुत उदार साबित हुइ। अत वे दोबारा इससे भी अधिक अव्यवस्था फैलाने के विषय मे सोच सके ! आथिक क्षेत्र मे, विशेष रूप से जमनी से हजाने की वसूली की विधि के प्रश्न पर ब्रिटेन व फ्राँस मे स्पष्ट मतभेद थे और शनै शनै पुन शक्तिशाली होते जमनी ने, कम से कम अदायगी की चाल शुरू कर दी और अमरीका का पैसा, जो युद्ध से क्षत-विक्षत जमनी के पुनवास पर खर्च होना था- वह भी जमनी के आयुध भण्डारन मे ही अधिक काम आया ओर इसी स द्वितीय विश्व-युद्ध सम्भव भी हो सका!

दूसरी तरफ जहॉ तक फ्रॉस की अपनी समुत्थान की समस्या थी - उसने थोडे से समय-थोडी बहुत सहायता से अभूतपूव उपलब्धि अजित कर ली। 1921-1924 इ० के मध्य उसकी आथिक व्यवस्था सुदृढ होने लगी तथा व्यापार-सतुलन भी उसके अनुकूल हो गया। 1925 ई० तक फ्रॉस की आन्तरिक अथ-व्यवस्था पूणत पुन पटरी पर आ चुकी थी और फ्राँस की यह समुत्थान प्रक्रिया उसके अपने प्रयासो से ही सम्भव हो सकी थी ! किन्तु, जब जमनी से हजाना - वसूली के प्रश्न पर ब्रिटेन व फ्राँस का मतभेद हुआ ही था तब तक एक अन्य समस्या ने इनके मध्य दूरी को और अधिक बढाने मे सक्रिय योगदान दिया। यह समस्या निकट-पूर्व की थी जहाँ मिस्र व तुर्की के मध्य युद्ध प्रारम्भ हो गया था। इस युद्ध मे ब्रिटेन मिस्र का एव फ्रॉस तुर्की का पक्षधर बना। और जर्मनी ने भी इस दौर मे पुन अपनी-अपनी ढपली अपना-अपना राग कर रहे यूरोप को पूर्व एव पश्चिमी के खेमो मे विभक्त करने मे सफलता

अनित का - उसने रूस के साथ सधि कर ली जिसका उल्लघन उसने जनबूझकर किया व द्वितीय महायुद्ध का श्रीगणेश किया। फिर भी वह अपने गतव्य म सफल रहा। रूस को पाश्चात्य पर तनिक भी विश्वास न था और विचारधारा के आधार पर तो वह पाश्चात्य को स्वय पसद नही करता था और न ही वह स्वय पाश्चात्य को फूटी ऑख सुहाता था अत विचारधारात्मक युद्ध-दो महायुद्धो के मध्य-काल मे ही प्रारम्भ हो गया था। अत नात्सीवाद व माम्यवाद क मध्य घृणापूण बर के बावजूद भी इन दो शक्तियो के मध्य एक कृत्रिम समझौता - कुछ समय के लिए ही सही हो गया और पाश्चात्य विश्व - विशेषत फ्रॉस अवाक् रह गया और रूस पर दोषारोपण करने लगा। जमनी यही चाहता था - यूरोप को पूव व पाश्चात्य के वैमनस्यपूण खेमो मे विभक्त करके वह अपनी समुत्थान की प्रक्रिया को सुचारू रूप से सक्रिय रखन मे सफल हो गया एव शीघ्र ही अपने आप को सैन्य-शक्ति के रूप मे पुन परिवतित कर सका ।

ब्रिटेन से सहायता न प्राप्त होने की स्थिति मे पोइन्केयर अपने को पूण निराशा से न रोक सका और अन्तत बल-प्रयोग के विकल्प के विषय मे सोचन को बाध्य हो गया। 1923 इ० मे उसने रूह्र पर फ्राँसीसी आधिपत्य करवा दिया-उन्हे जमनी सरकार द्वारा समर्थित निष्क्रिय प्रतिरोध का सामना करना पडा। फ्रॉसीसा गणतत्र के नए राष्ट्रपति मिलेराँ ने अब जमनी से प्रत्यक्ष वार्ता पर बल दिया। राह्इन क्षेत्र मे फ्राँस अपनी सुरक्षा अब स्थापित करवा सकता था कितु, जैसा कि पोइन्केयर ने स्वय स्वीकार किया है कि, 'फ्रास पूर्णत चुक गया था अत मेरा अनुगमन करने मे असमर्थ रहा।[45] अत उसकी दृढता की नीति को फ्रॉस मे ही समर्थक न मिले। सब शाँति के पक्षधर हो गए और युद्ध तथा युद्धपरक परिस्थितियो के विरूद्ध हो गए थे। अत अब एक ही विकल्प शेष रह गया था और वह था शाँति-वार्ताओ का विकल्प।

इसी समय सयोगवश फ्राँस मे वामपथी एव समाजवादियो को राजनीतिक विजयश्री भी प्राप्त हो गई थी और उनका पहला कृत्य था मिलेराँ को राष्ट्रपति पद से हटाकर महत्वहीन दोमर्ग्य (Doumergu) को उनके स्थान पर नया राष्ट्रपति बनाना। वामपथियो की विदेश नीति अधिक सफल प्रमाणित हुई - क्योकि ब्रिटेन मे भी पहली बार श्रमिक अथवा लेबर राजनीतिक-दल की सरकार गठित हो गई थी अत फ्राँस तथा ब्रिटेन ने पारस्परिक मतभेदो को भुलाकर, जेनेवा प्रोटोकौल पर हस्ताक्षर कर दिए, जिसमें सयुक्त सुरक्षा एव नियत्रित निशस्त्रीकरण के प्रावधान भी सम्मिलित थे। कितु, दुर्भाग्यवश, ब्रिटेन मे लेबर सरकार शीघ्र

ही गिर गई एव कजर्वेटिव दल की सरकार ने इस सधि की पुष्टि करने से भी इकार कर दिया और, इस प्रकार, यह सयुक्त प्रयास धराशायी हो गया और, फ्राँस पुन प्रत्यक्ष रूप से जर्मनी से, वार्ता करने को विवश हो गया।

फ्राँस और जर्मनी के मध्य प्रत्यक्ष वार्ता के प्रयासो के परिणामस्वरूप ही लोकार्नो सधियाँ 1925 ई० मे सम्भव हो सकीं थीं। इस समझौते की नीति का स्थापत्यकार, ब्रियान् था, जो 1925 ई० से 1932 ई० तक फ्रॉस का विदेश-मत्री रहा। लोकार्नो मे, जर्मनी ने फ्राँस की पूर्वी सीमाओ की सुरक्षा का आश्वासन दे दिया , इसके बदले मे, जर्मनी सयुक्त राज्य सभा की सदस्यता ग्रहण कर सकता था , एव, कोलोन के सैन्य-आधिपत्य को समाप्त करना भी स्वीकृत कर लिया गया। कितु, दूसरी ओर, जर्मनी और रूस के मध्य 'रैपैलो सधि' का नवीनीकरण हो गया, जिससे ये दोनो देश एक-दूसरे के और नजदीक आ गए और अत्यधिक चालाकी से स्ट्रेस्मैन ने 'ऐलसेस-लौरेन' के स्पष्ट परित्याग के मुद्दे को टालने मे सफलता प्राप्त कर ली-यह फ्राँस के हितो के प्रतिकूल था। ब्रियान् सयुक्त राज्य सभा के अधार पर, एक सयुक्त यूरोपीय व्यवस्था की परिकल्पना एव उसके कार्यान्यवन का प्रयास करता रहा। हाँलाकि, उसके विदेश - मत्रित्व के सपूण काल में, फ्राँस के ऊपर, आक्रामकता का आरोप लगता रहा कितु उसे सदन मे निरन्तर बहुमत का समथन मिलता रहा एव फ्राँस मे अनिवाय सैन्य-सेवा की अवधि तीन वर्षो से घटाकर मात्र एक वर्ष कर दी गई थी ।



[13]

द्वितीय विश्व-युद्ध का काल

फ्राँस इग्लैंड एव सयुक्त राज्य अमरीका सभी ने न केवल एक-स्वर से जर्मनी को द्वितीय विश्व-युद्ध के लिए उत्तरादायी तथा दोषी माना, अपितु, उसे अपराधी का सा स्तर भी प्रदान कर के, वैसा ही व्यवहार भी किया। किंतु, क्या वे अपने उत्तरादायित्व से भी बच सकते हैं-उन्होने नात्सी प्रचार-प्रसार को जानते-समझते हुए भी उसके विरूद्ध कोई सयुक्त प्रतिरोध अथवा विरोध का प्रयास कभी कयो नहीं किया ? इतिहासकार ए जे पी टेलर ने बहुत ठीक ही लिखा है कि अधिकाशत द्वितीय विश्व-युद्ध प्रथम की ही पुनरावृत्ति थी।[46] जिस प्रकार से यूरोपीय महाशक्तियाँ जर्मनी के विरूद्ध पेश आईं थीं -उसका प्रतिशोध अपरिहाय था और जैसे ही इन शक्तियो ने जर्मनी को पुनस्थापना का अवसर ही नहीं इस दिशा मे अग्रसर होने के लिए, उसको सहायता भी प्रदान करी, वैसे ही जमनी ने अपने-आप को सशक्त करना प्रारम्भ कर दिया आर, फिर अवसर का लाभ उठाते हुए, इग्लैंड की तटस्थता एव सयुक्त राज्य अमरीका की उदासीनता के चलते, बहुत द्रुत गति से अपना सैन्यीकरण कर लिया। आगे चलकर यही आधार बना नात्सी प्रचार-प्रसार का-और बिना नात्सीवाद के आक्रामक राष्ट्रवाद राष्ट्रीय शर्म एव उसके प्रतिशोध की सम्भावनाएँ नगण्य थीं और इन सबके लिए, अन्तत उत्तरदायी जमनी के अतिरिक्त, शेष शक्तिया नहीं थीं क्या? क्या वे इस अपराध बोध को छुपाने के लिए जर्मनी पर अधिक जोर-शोर से आरोप व दण्ड नहीं लगा रहे थे ?

वस्तुत , ब्रिटेन और सयुक्त राज्य अमरीका का उत्तरदायित्व स्वाभाविक रूप से अधिक था क्योकि कम से कम फ्राँस ने तो 1920 के दशक मे ही जमनी की नियत व वास्तविक चरित्र को भली-भाँति समझ लिया था। सयुक्त राज्य अमरीका और ब्रिटेन की तुलना मे ब्रिटेन का उत्तरदायित्व इस दृष्टिकोण से अधिक हो जाता हे कि अमरीका यूरोप से बहुत दूर स्थित था अत सम्भवत सही आकलन न कर सका हो किन्तु, ब्रिटेन तो पास होने के बावजूद भी अनेक भ्रमो मे पडा रहा। जबकि, 1930 के पूर्ण दशक मे फ्राँस की विदेश नीति विशेष रूप से जमन के प्रति जो नीति थी-उसमे एक स्पष्ट स्थिरता एव

अविरलता दिखाई देती है। पाश्चात्य देशो की पूरी स्थिति इस लिए और भयावह एव असुरक्षित हो गई थी, क्योकि, सयुक्त राज्य अमरीका ने अपने-आपको इस पूरे परिदृश्य से पूर्णत असम्बद्ध कर लिया था। फिर भी, फ्रॉस एव ब्रिटेन की सयुक्त नीति नात्सी आक्रामक प्रसारवाद का प्रतिरोध करने मे सफल हो गई होती और परिस्थिति भी असामान्य एव अनियत्रित न हो पाती, किंतु, ब्रिटेन की नीति दिशाहीन थी और समय-समय पर विवेक से परे कुछ निर्णय कीमती साबित हो गए। 1930 के दशक के प्रथम भाग मे तो हम ब्रिटेन को दो विकल्पो व विचारो के मध्य अस्थिर पाते हैं और, दूसरे भाग मे, ब्रिटेन ने तुष्टीकरण की घातक नीति अपना ली, जिसके परिणामस्वरूप सुरक्षित व सुदृढ फ्राँसीसी विदेश नीति निरर्थक तथा दिग्भ्रमित प्रतीत होने लगी। चेम्बरलेन के अधीन ब्रिटिश नीति पूर्णत जर्मनी के तुष्टीकरण की नीति हो गई। अब फ्राँस के लिए एक स्वतत्र मार्ग की सम्भावना समाप्त हो गई।

ब्रिटेन और फ्राँस दोनो ही देश मूलत प्रजातात्रिक देश थे। वे रूस जैसे साम्यवादी देश अथवा जर्मनी जैसे नात्सी देश की भाँति एकरूप नहीं हो सकते थे। सार्वजनिक दबाव व जनमत के कारण वे ऐच्छिक नीति का नियोजन एव कायान्वयन नहीं कर पाते थे। जनमत अधिकाशत मतभेदो को उभार देता था और यह मतभेद उस महायुद्ध को निमत्रण दे बैठा-जिसके चलते अन्तत एकीकृत राष्ट्र उभर सके-सकट की घडी मे तो पारस्परिक मतभेद भुलाकर, शत्रु के सम्मुख एकीकृत राष्ट्र खडे हो गए, किंतु, राष्ट्रीय हित मे पारस्परिक मतभेदो को भुला दिया होता तो सम्भवत विश्व को तीन दशको मे ही दूसरे महायुद्ध की विभीषिका न झेलनी पडती !

वस्तुत , इस पूरे दौर मे, फ्राँस की आन्तरिक राजनीति मे जो कुछ घटा वह प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से, अन्तर्राष्ट्रीय सम्बधो से प्रभावित था। जमन खतरे के विरूद्ध एक सुरक्षात्मक सयुक्त मोर्चे के गठन का अन्तिम फ्रॉसीसी प्रयास उस समय निष्फल हो गया, जब मार्स्यील्स (Marseilles) मे 1934 ई० में, फ्राँसीसी विदेश मत्री व पोइन्केयर के पुराने मित्र बार्थो एव यूगोस्लाविया के शासक अलेक्जैंडर की हत्या कर दी गई। इस हत्या-काण्ड ने फ्राँस की आतरिक सुरक्षा, उसकी पुलिस व्यवस्था, उसकी सेनाओ एव कार्यकारी (प्रशासन) की कलई खोल दी। इन सभी शाखाओ मे असतोष इस सीमा तक व्याप्त था, कि, असतुष्ट तत्व शत्रु की प्रशसा, आत्म-हन्ता के भाव से करते थे। वे उद्घोष करते थे,

कि इस शासन से तो अच्छी स्थिति जर्मन - आधिपत्य मे होगी - स्थिति इतनी बिगडी तो न रहेगी। और इसी पराजय-भाव ने फ्राँस को युद्ध प्रारम्भ होने से पूर्व ही 1940 ई० मे ही पराजित कर दिया। प्रचलित चुनाव-प्रणाली के अन्तर्गत होने वाले चुनावो ने इस काल मे निरन्तर वामपन्थियो को बहुमत प्रदान किया अत दक्षिण-पथी शक्तियाँ फासीवादी सगठनो का उपयोग अपनी स्वार्थ - सिद्धी के लिए करने को तत्पर हो गई-यह जानते हुए भी, कि, इनमे से कुछ विदेशी (शत्रु - अर्थात्, जर्मनी एव इटली) समर्थित व सहायता प्राप्त या सयुक्त सगठन थे।

इन तमाम शक्तियो ने एकीकृत प्रयास द्वारा तत्कालीन फ्राँसीसी सरकार को अधिक ही डरा-धमका दिया था, कितु, यह एक अपरिपक्व प्रयास था - फरवरी 6,1934 ई० को उन्होने सरकार को तो अपदस्थ करने मे सफलता प्राप्त कर ली थी, किन्तु, वे ससदीय सस्थाओ को विनष्ट व समाप्त करने मे सफल न हो सके अर्थात् प्रजातात्रिक भावना उसी प्रकार सक्रिय रही। अन्तत इन दो विरोधी आन्तरिक शक्तियो के मध्य एक समझौता हुआ जिसके केद्र-बिदु मे एक भूतपूर्व समाजवादी लैवेल था। लैवेल का द्वैववृत्तिपूर्ण व्यक्तित्व एव राजनीति वास्तव, मे इस तृतीय फ्राँसीसी गणतत्र के अन्तिम वर्षों का प्रतीक थी। कितु इसके बावजूद, उसके जीवन-काल मे एक सामजस्य था। वह अत्यन्त महत्वाकाक्षी होते हुए भी शाँतिवादी एव पराजय-भाव से ओत-प्रोत व्यक्ति था। 1917 इ० मे जब प्रथम विश्व-युद्ध का सबसे निर्णायक क्षण था तब भी पराजयवाद का प्रचार कर रहा था, तत्पश्चात् उसने वर्साय की सधि का भी विरोध किया था। 1920 इ० मे उसने वामपथ का दामन त्याग दिया और पद प्राप्त कर लिया। फिर भी, वह दोनो पक्षो को साधने वाला एक सफल कूटनीतिज्ञ व वार्ताकार प्रमाणित हुआ। वह भी इटली के अधिनायक फासीवादी मुसेलिनी की भाँति प्रसिद्ध दार्शनिक सोरेल का अनुयायी था। इसीलिए लैवेल एव मुसोलिनी दोनो एक-दूसरे को खूब समझते थे।

अन्तर्राष्ट्रीय सम्बधो अथवा विश्व के मामलो मे सिद्धान्तो के अभाव के कारण उत्पन्न खतरा इग्लिश चैनेल के दोनो तरफ अथात्, फ्राँस व इग्लैंड मे 1935 ई० में सुस्पष्ट होने लगा था। इटली प्रथम विश्व-युद्ध मे विजित देशो के साथ होने के बावजूद अपनी आशाओ की पूर्ति न हो पाने के कारण निराश व पराजय-भाव से ग्रस्त थी। अत अबीसिनिया (अथवा इथ्योपिया) पर अपने

अविरलता दिखाई देती है। पाश्चात्य देशो की पूरी स्थिति इस लिए और भयावह एव असुरक्षित हो गई थी, क्योकि, सयुक्त राज्य अमरीका ने अपने-आपको इस पूरे परिदृश्य से पूर्णत असम्बद्ध कर लिया था। फिर भी, फ्रॉस एव ब्रिटेन की सयुक्त नीति नात्सी आक्रामक प्रसारवाद का प्रतिरोध करने मे सफल हो गई होती और परिस्थिति भी असामान्य एव अनियत्रित न हो पाती, कितु, ब्रिटेन की नीति दिशाहीन थी और समय-समय पर विवेक से परे कुछ निर्णय कीमती साबित हो गए। 1930 के दशक के प्रथम भाग मे तो हम ब्रिटेन को दो विकल्पो व विचारो के मध्य अस्थिर पाते हैं और, दूसरे भाग मे, ब्रिटेन ने तुष्टीकरण की घातक नीति अपना ली, जिसके परिणामस्वरूप सुरक्षित व सुदृढ फ्रॉसीसी विदेश नीति निरर्थक तथा दिग्भ्रमित प्रतीत होने लगी। चेम्बरलेन के अधीन ब्रिटिश नीति पूर्णत जर्मनी के तुष्टीकरण की नीति हो गई। अब फ्रॉंस के लिए एक स्वतत्र मार्ग की सम्भावना समाप्त हो गई।

ब्रिटेन और फ्रॉस दोनो ही देश मूलत प्रजातात्रिक देश थे। वे रूस जेसे साम्यवादी देश अथवा जर्मनी जैसे नात्सी देश की भॉंति एकरूप नहीं हो सकते थे। सार्वजनिक दबाव व जनमत के कारण वे ऐच्छिक नीति का नियोजन एव कायान्वयन नहीं कर पाते थे। जनमत अधिकाशत मतभेदो को उभार देता था और यह मतभेद उस महायुद्ध को निमत्रण दे बैठा-जिसके चलते अन्तत एकीकृत राष्ट्र उभर सके-सकट की घडी मे तो पारस्परिक मतभेद भुलाकर, शत्रु के सम्मुख एकीकृत राष्ट्र खडे हो गए, कितु, राष्ट्रीय हित मे पारस्परिक मतभेदो को भुला दिया होता तो सम्भवत विश्व को तीन दशको मे ही दूसरे महायुद्ध की विभीषिका न झेलनी पडती !

वस्तुत , इस पूरे दौर में, फ्रॉंस की ऱ्यान्तरिक राजनीति मे जो कुछ घटा वह प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से, अन्तर्राष्ट्रीय सम्बधो से प्रभावित था। जमन खतरे के विरूद्ध एक सुरक्षात्मक सयुक्त मोर्चे के गठन का अन्तिम फ्रॉंसीसी प्रयास उस समय निष्फल हो गया, जब मार्स्यील्स (Marseilles) मे 1934 ई० में फ्रॉंसीसी विदेश मत्री व पोइन्केयर के पुराने मित्र बार्थो एव यूगोस्लाविया के शासक अलक्जैंडर की हत्या कर दी गई। इस हत्या-काण्ड ने फ्रॉंस की आतरिक सुरक्षा, उसकी पुलिस व्यवस्था, उसकी सेनाओ एव कायकारी (प्रशासन) की कलई खोल दी। इन सभी शाखाओ मे असतोष इस सीमा तक व्याप्त था, कि, असतुष्ट तत्व शत्रु की प्रशसा, आत्म-हन्ता के भाव से करते थे। वे उद्घोष करते थे,

कि इस शासन से तो अच्छी स्थिति जर्मन - आधिपत्य मे होगी - स्थिति इतनी बिगडी तो न रहेगी। और इसी पराजय-भाव ने फ्राँस को युद्ध प्रारम्भ होने से पूर्व ही 1940 ई० मे ही पराजित कर दिया। प्रचलित चुनाव-प्रणाली के अन्तर्गत होने वाले चुनावो ने इस काल मे निरन्तर वामपन्थियो को बहुमत प्रदान किया अत दक्षिण-पथी शक्तियाँ फासीवादी सगठनो का उपयोग अपनी स्वाथ - सिद्धी के लिए करने को तत्पर हो गई-यह जानते हुए भी, कि इनमे से कुछ विदेशी (शत्रु - अर्थात्, जर्मनी एव इटली) समर्थित व सहायता प्राप्त या सयुक्त सगठन थे।

इन तमाम शक्तियो ने एकीकृत प्रयास द्वारा तत्कालीन फ्राँसीसी सरकार को अधिक ही डरा-धमका दिया था, किंतु, यह एक अपरिपक्व प्रयास था - फरवरी 6,1934 ई० को उन्होने सरकार को तो अपदस्थ करने मे सफलता प्राप्त कर ली थी, किन्तु, वे ससदीय सस्थाओ को विनष्ट व समाप्त करने मे सफल न हो सके अर्थात् , प्रजातात्रिक भावना उसी प्रकार सक्रिय रही। अन्तत इन दो विरोधी आन्तरिक शक्तियो के मध्य एक समझौता हुआ जिसके केद्र-बिदु मे एक भूतपूर्व समाजवादी लैवेल था। लैवेल का द्वैववृत्तिपूर्ण व्यक्तित्व एव राजनीति, वास्तव, मे इस तृतीय फ्राँसीसी गणतत्र के अन्तिम वर्षों का प्रतीक थी। किंतु इसके बावजूद, उसके जीवन-काल मे एक सामजस्य था। वह अत्यन्त महत्वाकाक्षी होते हुए भी शाँतिवादी एव पराजय-भाव से ओत-प्रोत व्यक्ति था। 1917 इ० मे जब प्रथम विश्व-युद्ध का सबसे निर्णायक क्षण था तब भी पराजयवाद का प्रचार कर रहा था, तत्पश्चात् उसने वर्साय की सधि का भी विरोध किया था। 1920 ई० मे उसने वामपथ का दामन त्याग दिया और पद प्राप्त कर लिया। फिर भी, वह दोनो पक्षो को साधने वाला एक सफल कूटनीतिज्ञ व वार्ताकार प्रमाणित हुआ। वह भी इटली के अधिनायक फासीवादी मुसेलिनी की भाँति प्रसिद्ध दार्शनिक सोरेल का अनुयायी था। इसीलिए लैवेल एव मुसोलिनी दोनो एक-दूसरे को खूब समझते थे।

अन्तर्राष्ट्रीय सम्बधो अथवा विश्व के मामलो मे सिद्धान्तो के अभाव के कारण उत्पन्न खतरा इग्लिश चैनेल के दोनो तरफ अर्थात्, फ्रॉस व इग्लैंड मे 1935 ई० में सुस्पष्ट होने लगा था। इटली प्रथम विश्व-युद्ध मे विजित देशो के साथ होने के बावजूद अपनी आशाओ की पूति न हो पाने के कारण निराश व पराजय-भाव से ग्रस्त थी। अत अबीसिनिया (अथवा इथ्योपिया) पर अपने

आधिपत्य व प्रसार को तर्क-सगत एव न्यायिक माना और उसपर औपनिवेशिक अधिकार की योजना बना डाली। इटली ने यह मान रखा था कि, जर्मनी के विरूद्ध सतुलन के लिए वह इग्लैंड तथा फ्रॉंस के लिए अपरिहार्य था, अत वे उसके प्रसार का विरोध तथा प्रतिरोध नहीं करेगे। किंतु, इटली के इस नग्न आक्रामकता की निंदा लगभग पूर्ण प्रजातात्रिक विश्व में प्रारम्भ हो गई तथा सयुक्त राज्य सभा अथवा 'लीग ऑफ् नेशन्स' मे ब्रिटेन ने विरोध का मुखर नेतृत्व भी किया। वस्तुत यह लीग ऑफ् नेशन्स के अस्तित्व के लिए परीक्षण प्रकरण हो गया था। इसके द्वारा यूरोप की सयुक्त सुरक्षा की उपादेयता प्रमाणित होनी थी तथा तीव्र गति से विभाजित हो रहे विश्व की एकमात्र आशा की किरण यही थी। किंतु, इटली के विरूद्ध कोई ठोस निषेधात्मक कार्यवाही न हो सकी – हाँलाकि, बाद मे, युद्ध के अन्तर्गत इटली के पराक्रम-अभाव व सैन्य-शिथिलता से यही प्रमाणित होता है, कि हल्के से प्रतिरोध अथवा अनुशास्ति में भी इटली ने प्रसारवादी औपनिवेशिक नीति का परित्याग कर दिया होता। सम्भवत मुसोलिनी को लैवेल द्वारा पूर्ण सूचना मिल जाने के कारण भी, यह आक्रामकता सम्भव हो सकी हो। लैवेल फ्राँस के दक्षिणपथियो को खुश करने के लिए शायद ऐसा करने पर विवश था। इसी बीच, ब्रिटेन मे बैल्डविन सरकार को इस आधार पर बहुमत प्राप्त हो गया, कि वह सयुक्त राज्य सभा की सयुक्त सुरक्षा नीति के प्रावधानो के कायान्वयन को सम्भव बना देगा। किंतु, इटली द्वारा अबीसीनिया पर आधिपत्य को स्वीकारते हुए दोनो देशों के मध्य एक समझौता हो गया- जो ब्रिटिश आधिकारिक नीति के प्रतिकूल था, अत ब्रिटेन मे जनमत इसके विरूद्ध हो गया। किसी प्रकार विदेश मत्री, जिसने लैवेल के समझाने पर हस्ताक्षर कि‍ थे-उसी की बलि चढाकर, बाल्डविन सरकर अपनी जान बचा पाई। ब्रिटेन वें समस्त वामपथी तत्व इस ब्रिटिश सरकार के सक्रिय विरोधी हो गए तथा फ्रॉस व ब्रिटेन के मध्य भी अविश्वास पनपने लगा। और, मुसोलिनी द्वारा किए गए औपनिवेशिक प्रसार ने सयुक्त राज्य की सुरक्षा-व्यवस्था को धता बताकर हिटलर का मार्ग प्रशस्त कर दिया-जो अब बिना अनुशास्ति (sanctions) के भय के, अपने प्रसार के नग्न नृत्य का श्रीगणेश कर सकता था।

अत मार्च 1936 ई० में उसने वर्साय की सधि और उसके जमानतदारों अथवा सरक्षकों (ब्रिटेन एव फ्राँस) को धता बताते हुए, राह्इनलैंड का सैन्यीकरण पुन कर डाला। यह एक निर्णायक मोड व क्षण था। फ्राँस सरकार हस्तक्षेप

भी करना चाहती थी। कितु, ब्रिटेन जो मुसोलिनी से अधिक सशकित था- उसने फ्रॉस को हतोत्साहित कर दिया। और, एक बार जब राइनलैण्ड के सैन्यीकरण की प्रक्रिया पूण हो गई तब बिना पूर्ण-स्तरीय युद्ध के हस्तक्षेप सम्भव ही नहीं था। हिटलर की जर्मनी अब यूरोप पर अपना प्रभुत्व स्थापित करने की योजना को क्रियान्वित करने की स्वतत्रता प्राप्त कर चुकी थी। अत , शनै शनै , यह अभियान आगे बढा। 1938 ई० के प्रारम्भ मे, औस्ट्रिया पर आक्रमण शरद ऋतु मे म्यूनिक पर आक्रमण, तथा, चेकोस्लोवाकिया का विखण्डन मार्च 1939 ई० मे प्राहा (Prague) पर अक्रमण तथा चेकोस्लोवाकिया की स्वत्रता का अन्त तथा सितम्बर 1939 ई० मे पोलैण्ड पर आक्रमण तथा महायुद्ध का श्रीगणेश!

इसी बीच फ्रॉस मे भी लैवल, दक्षिणपथियो एव फासीवादी शक्तियो के विरूद्ध एक जबरदस्त प्रतिक्रिया हुइ तथा, वामपथियो-समाजवादियो को 1936 इ० के चुनावो मे बहुमत प्राप्त हो गया और, लियोन् ब्लम ने पहली बार सत्ता सम्भाली ! बौद्धिक क्षमताओ से परिपूर्ण यह समाजवादी, आदशवादी, इमानदार देश-प्रेमी ब्लम एक शाँतिप्रिय व्यक्ति था जो निशस्त्रीकरण पर अत्यधिक जोर देता था। उसे जर्मनी के सामाजिक-प्रजातात्रिक (सोशल डेमोक्रेटिक) दल पर भी विश्वास था। वह कहता था, कि, फासीवादियो से कोई वास्तविक भय नहीं हो सकता है और यही उसके मूल्याकन की सबसे बडी व भयकर भूल साबित हुई। जो फ्राँसीसी सुरक्षा का अपरिहार्य कदम होना चाहिए उनसे उसमे भी चूक हो गई। ब्लम व समाजवादियो ने अनिवार्य सैन्य-सेवा की अवधि को एक वर्ष से बढाकर दो वर्षीय करने से इकार कर दिया। अत 1940 ई० मे आवश्यकता पडने पर फ्रासीसी सुरक्षा व्यवस्था मे जो रिक्तता रह गई थी, उसके लिए उन्हे जबरदस्त अपराध-बोध हआ।

समाजवादियो के सत्तासीन होने के कारण, एक निर्णायक मोड पर प्रतिकूल निर्णय व परिवर्तनो ने फ्रासीसी अर्थ-तत्र समाज और अन्तत राजनीति पर कुप्रभाव छोडा और उसकी शक्ति क्षीण कर दी ! श्रमिक वर्ग की अनुशासनहीनता ने अपना रग दिखाना शुरू कर दिया और उनकी पुरानी मागो की सरकारी पूर्ति ने उसके स्वर को और भी मुखर कर दिया। शस्त्र उद्योग का राष्ट्रीयकरण भी कर दिया गया। बैंक ऑफ् फ्राँस के नियत्रण को प्रजातात्रिक कर दिया गया। इसके फलस्वरूप, अब जहाँ वित्तीय सकट फ्राँस को दबोचने लगा, वहीं स्पेनी गृह-युद्ध ने विदेशी मामलों में भी फ्राँस को असफल पाया ! अन्तत राष्ट्रपति

ब्लम को त्याग-पत्र देना ही पडा ! अत 1938 इ० को जब हिटलर ने औस्टिया पर आक्रमण किया तथा उसको अधिग्रहीत कर लिया, तब फ्रॉस एक सरकार विहीन राष्ट्र था ! क्लेमेन्क्यू व पोइन्केयर के काल के उपरान्त फ्रॉस की केसी अवनति हुइ थी ![47] और, जैसे-जैसे सकट की घडी आती गई-फ्रॉस स्तब्ध रह गया और प्रथम विश्व-युद्ध मे अद्‌भुत शौय का प्रदशन कर चुके फ्रॉस ने तो हथियार ही डाल दिया। ऐसी विषम परिस्थितियो मे कोई सकारात्मक माग शेष भी न था। राजनीति एव प्रशासन के उच्च शिखर पर एक शून्य-सा उत्पन्न हो गया था क्योकि, प्रत्येक राजनीतिक दल मे पारस्परिक मतभेदो के चलते अत्यधिक आन्तरिक विभाजन था। अत राजनीतिक नेतृत्व की सम्भावनाएँ ही समास हो गई थी। इस राजनीतिक नेतृत्व के अभाव मे, फ्रॉस के पास मात्र एक ही विकल्प था, कि, वह ब्रिटिश नीति व समर्थन पर आधारित व आश्रित हो जाए। और ब्रिटिश राजनीति अल्पज्ञानी एव वृद्ध नेता द्वारा निर्देशित होने के कारण सिफ सकट व विनाश की ओर ही ले जा सकती थी।[48] अत इसी कारण म्यूनिख की आक्रामक नीति के विरूद्ध इन दोनो राष्ट्रो मे एक अनिणयपूण उहापोह का वातावरण बन गया था। और इसी कारणवश, जब फ्रॉस के समर्थक व मित्र देश चेकोस्लोवाकिया पर जर्मनी का आधिपत्य हो गया तब फ्राँस को यह भली-भॉति समझ मे आ गया था कि, यह भी शाँति स्थापित न कर सकेगा, अपितु, इसके विपरीत, जमनी की भूँख व निभय रूप से प्रसार कार्य मे सलग्न रहना और भी बढ जाएगा। किंतु, जैसे-जैसे युद्ध सन्निकट हुआ-जहाँ, एक ओर फ्राँस मे फैली निराशा मे अभूतपूर्व रूप से वृद्धि हुई, वहीं, दूसरी ओर, इग्लैंड मे लोग राष्ट्र-प्रेम से ओत-प्रोत होकर, युद्ध के लिए तत्पर होने लगे। वे इस निष्कष पर पहुँच चुके थे, कि, जर्मनी से युद्ध अपरिहार्य हो गया है।

हिटलर ने अतत इग्लैंड व फ्राँस को दिए आश्वासन के विरूद्ध ~ब मार्च 1939 ई० मे प्राहा (Prague) पर आधिपत्य स्थापित कर लिया तब ब्रिटन की चैम्बरलेन सरकार ने अपनी नीति को पलटने हेतु अपने-आप को विवश पाया-ब्रिटिश जनता ने खतरे के चिह स्पष्टत देख लिए थे ! सोवियत सघ से समझौता करके, हिटलर का मार्ग, पोलैण्ड आक्रमण के लिए अब सुलभ हो गया था। इन परिस्थितियो ने जहाँ द्वितीय विश्व-युद्ध का श्रीगणेश किया वहीं, दूसरी ओर, इसने फ्राँसीसी जनता के मनोबल पर अत्यधिक प्रतिकूल प्रभाव डाला। दक्षिणपथी तो पराजय-भाव से पीडित थे ही फासीवादी सहानुभूति

सघ पर आक्रमण (जून 1941 इ०) से पूव इस युद्ध को जमनी के विरूद्ध साम्राज्यवादी युद्ध तक घाषित कर रखा था। कितु, इस सोवियत सघ पर आक्रमण के कारण ता यह युद्ध उनके दृष्टिकोण से 'प्रजातत्र के विरूद्ध हो गया था। वस्तुत, वाम व दक्षिण-दोनो ही पथी अपने वैचारिक स्तर पर अथवा विचारधारात्मक दृष्टिकोण से ज्तिन भी इमानदार माने जाएँ, कितु, जहॉ तक फ्रॉस के राष्ट्रीय हितो का प्रश्न है वे इसके आधार पर खरे नही उतरे। राष्ट्रीय हितो का परित्याग करने वाले यदि राष्ट्र-प्रेमी व राष्ट्रवादी नहीं होते तो वे राष्ट्र-प्रेमी एव राष्ट्रवादी कदापि नहा थे। तथा फ्रॉसीसी परम्पराओ के प्रतिकूल काय कर रहे थे।

किन्तु, फिर भी आवश्यकता पडने पर ब्रिटेन के साथ अपने गठबधन के प्रति फ्रॉस निष्ठावान बना रहा तथा 1939 इ० के सितम्बर माह मे युद्ध घाषित हो जाने के बाद पचास लाख लोगो का सेना मे भर्ती हो जाना एक महत्वपूर्ण साहसी व राष्ट्र-प्रेम पूर्ण कदम था। यही नहा ना सेना भी अपनी पूर्ण क्षमतानुसार तैयार हो गइ। क्तिु दो कमियॉ जो फ्रॉसीसी पराजय के लिए उत्तरदायी थीं- वे था बख्तरबद टैंको का अभाव तथा वायुनामेना की अयाग्यता। जमनी ने इन्हीं विशष विधाओ अथवा सेना के अगो म क्रान्तिकारी परिवतन करके ावा दोनो के सपृक्त सुनियोजित आक्रमण-तकनीक से युद्ध जीतने की कला का विकास कर लिया था। कितु, इन सबसे अधिक घातक थी निष्क्रियता की यह भावना, जिसके चलते गैम्लिन के सैन्य-नेतृत्व मे फ्राँसीसी सेनाएँ, जमनी की आक्रमणकारी सेनाओ की प्रतीक्षा कर रहीं थीं।

एक अकेला व्यक्ति जो निरन्तर सेना के यत्रीकरण पर बल दे रहा था और जिससे रूढिवादी सैन्य-नेतृत्व असहमत था-वह दि गौल था। उसने अपने युद्ध कौशल सैन्य-प्रशिक्षण व सामरिक समझ का प्रदर्शन एकोले दि ग्यूरे मे कर दिखाया था तथा प्रमाणित किया कि सुरक्षात्मक युद्ध सदैव लाभप्रद नहीं होता। उसक्री सलाह के अनुसार यदि फ्राँसीसी सेना का यत्रीकरण व तकनीकी विकास होता, तो सम्भवत, 1940 ई० मे हिटलर की सेनाओ का फ्राँस के रक्षा-कवच मे प्रवेश इतना सुलभ न होता। दि गौल की तो यह दृढ मान्यता थी, कि निष्क्रियता एव सुरक्षात्मकता का अर्थ होता है पराजय एव हताशा ! अत सितम्बर 3 1939 इ० से लेकर मई 1940 ई० तक फ्राँस व ब्रिटेन, हिटलर की शुरूआत की प्रतीक्षा करते रहे-जब वे बेल्जियम व हौलैण्ड की घेराबदी करके रौटरडैम विनष्ट करते हुए, फ्राँस मे उतर पडे। मई-जून 1940 ई० के कुछ सप्ताहो मे ही यह आक्रमणकारी जर्मन सेना, फ्राँसीसी सेनाओ को पराजित

करती हुई फ्राँस मे प्रविष्ट होने मे सफल हो गई। जून 14, 1940 ई० मे तो पेरिस भी विजित हो गया ! सरकार व प्रशासन तक पराजय, हताशा एव उलझन ग्रस्त हो, मात्र टू 'वस से बार्दो स्थानातरित हो गई। एकमात्र गौल ने ही प्रदर्शित एव प्रमाणित किया, कि, इन प्रतिकूल परिस्थितियो मे भी आक्रामकता ही सही तकनीक है। ब्रिटेन के प्रधानमत्री विन्सट्न चर्चिल ने फ्रॉस के उत्साह-वर्धन हेतु टू 'वर्स की विमान-यात्रा की एव युद्ध मे सलग्न रहने व ब्रिटेन के साथ सहयोग से युद्ध करने का आहवान किया। विदा होने से पूर्व चर्चिल ने दि गौल को 'फ्रॉस का भविष्य' सम्बोधित कर उसके प्रति सम्मान भी प्रकट किया

इन परिस्थितियो मे तृतीय गणतत्र की अतिम सरकार ढह गइ। रेनौं ने त्याग-पत्र सौपकर, ाष्ट्रपति लेब्रुन को सलाह दी कि वे पेटेन से विमर्श कर ले। पेटेन एव वेगैन्ड ने तुरन्त हिटलर के साथ युद्ध-विराम कर लिया (जून 16 1940 इ०)। इसी के दो दिन पश्चात्, दि गौल को विमान द्वारा बौर्द्यू से ब्रिटेन पहुचाया गया। वहाँ से उसका सदेश अपने देशवासियो के प्रति प्रसारित हुआ कि जो भी फ्रासीसी युद्ध मे सलग्न रहने का इच्छुक है-उन्हे वह सदैव नेतृत्व व सहायता प्रदान करता रहेगा। जून 21, 1940 इ० को फ्राँस के साथ युद्ध-विराम सधि पर उसी स्थल पर हस्ताक्षर हुआ, जहॉ जर्मनी को अपमानित सधि पर 1918 इ० मे हस्ताक्षर करवाए गए थे-सभी राष्ट्र-प्रेमी फ्रॉसीसी कराह उठे ! उधर, जब हिटलर ने ब्रिटेन को भी युद्ध-विराम का प्रस्ताव प्रेषित किया तो उसके प्रत्युत्तर मे, ब्रिटेन ने दि गौल को स्वतत्र फ्रॉस के सपूर्ण भाग व फ्रॉसीसियो के नेता के रूप मे मान्यता प्रदान कर दी ! कितु, दूसरी ओर फ्राँस की ससद ने हिटलर के साथ युद्ध-विराम की सधि की पुष्टि कर दी एव 569 सदस्यो ने तो अपने मत द्वारा पेटेन को समस्त अधिकार सौंप दिए ! इस प्रकार से विचि शासन को वैधानिव अधिकार प्राप्त हो गया। इस काल की एकमात्र विशेषता थी उसकी सुस्पष्ट नीति कितु, यह नीति अपनी स्पष्टता विस्तृत होते ही युद्ध के वातावरण मे खो बैठी ! फिर भी जब जर्मनी से युद्ध की विभीषिका ब्रिटेन, रूस एव सयुक्त राज्य अमरीका ने झेली, विचि शासन ने कम से कम, फ्रॉस को सरक्षित तो रखा ही भले ही, जर्मनी के साथ शमनाक एव अपमानजनक युद्ध-विराम के ही द्वारा। अत उनकी नीति आत्म-सम्मान की न सही कितु, आत्म-सरक्षण की तो थी ही।

आत्म-सम्मान की नीति का अनुसरण करने वाले दि गौल के अनुयायी थे जिनका आधार अब ब्रिटेन मे था , वे सीमान्त ग्राम्यवासी जो एलाइड सैनिको

को सुरक्षा प्रदान कर रहे थे अपने जीवन का मोह त्याग किए हुए थे, वे फ्राँसीसी लोग जो बावजूद जर्मनी के उत्पीडन के, अपना प्रतिरोध बनाए रखने मे सफल रहे , और वे फ्राँसीसी राष्ट्रवादी भी जो चैनल पार कर के, ब्रिटेन जैसे अन्तिम यूरोपीय दुर्ग मे सुरक्षा प्राप्त कर रहे थे। और ये सभी तत्व उस स्वतत्रता के दिवस का आधार तैयार कर रहे थे। जून 6,1944 ई० को जर्मनी की पराजय हुई तथा अगस्त 23 1944 ई० को एलाइज की सेनाएँ पेरिस मे प्रविष्ट हो गइ थीं एव फ्राँस शीघ्र ही स्वतत्र भी हो गया !



[14]

द्वितीय विश्व-युद्धोत्तर काल-
चतुर्थ फ्रॉसीसी गणतत्र की स्थापना व अन्त

1940 ई० मे नात्सियो की सशास्त्र टुकडियो के समक्ष परेशान तृतीय फ्रॉसीसी गणतत्र दम तोड चुका था। द्वितीय विश्व-युद्ध के दौरान फ्रॉस नात्सी-समथक व नात्सी-विरोधी खेमो मे विभक्त रहा। प्रथम की सरकार फ्रॉस मे कायम थी तो दूसरे की ग्रेट ब्रिटेन मे ! जो फ्राँसीसी सरकार का समर्थन कर रहे थे, वे निराशावादी तथा पलायनवादी माने जाते थे तथा, जो विद्रोह एव तोड-फोड की गतिविधियो मे सलग्न थे, वे क्रॉतिकारी व राष्ट्रवादी माने जाते थे। अत फ्रॉसीसी समाज मे विभाजन स्पष्ट था। जब फ्रॉस नात्सियो से मुक्त हो गया तब फ्रॉसीसी दि गौल जैसे चुम्बकीय व्यक्तित्व के इर्द-गिर्द एकत्रित होने लगे जिसका नाम ही एक स्वतत्र व सुदृढ सरकार की स्थापना का पयाय हो गया था। नात्सियो के पलायन के बाद उनके समर्थको को दण्डित ओर अपमानित किया गया और यह प्रतिशोध स्वाभाविक भी था। फ्राँस के कुछ क्षेत्रो मे, स्थानीय प्रतिरोधी गुटो ने जर्मन पलायन के बाद-अपना वर्चस्व स्थापित कर लिया। इन गुटो मे साम्यवादी प्रमुख रूप से उपस्थित थे कितु, शीघ्र ही गौल समर्थको का प्रभुत्व स्थापित व मान्य हो गया।

एल्जियर्स मे दि गौल द्वारा स्थापित निवासित सरकार 1944 इ० मे वापस पेरिस आ गई। और यह अगले चौदह माह तक सत्ता मे रही। इसी सरकार ने अक्टूबर 1945 ई० मे एक जनमत कराया, जिसमे पहली बार महिलाओ को भी मताधिकार प्राप्त हुआ था और छियान्बे प्रतिशत (96%) मतदाताओ ने एक नवीन सविधान सभा की माँग करते हुए, तृतीय फ्राँसीसी गणतत्र को अस्वीकार कर दिया। इस सविधान सभा मे साम्यवादियो का बहुमत हो गया था। साम्यवादियो को पच्चीस प्रतिशत (25%) तथा समाजवादियो को तेइस प्रतिशत (23%) सीटे प्राप्त हुईं। एक नए राजनीतिक दल एम आर पी- मूवमेट रिपब्लिक पोप्यूल्येर' जो, दि गौल के दृष्टिकोण के सवाधिक निकट थी-को चौबीस प्रतिशत (24%)

ात प्राप्त हुए।

जब सविधान सभा की बैठक हुई, दि गौल अन्तरिम सरकार के राष्ट्रपति ान गए। किंतु, वे अपने अनुभव, स्वभाव व राजनीतिक दृष्टिकोण के चलते स भूमिका के लिए तैयार नहीं थे। सभा मे सबसे बडे दल होने के बावजूद ी, दि गौल ने उन्हे सरकार मे सम्मिलित नहीं किया अत साम्यवादी-समाजवादी ाठबधन से सरकार का निरन्तर टकराव होता रहा। स्थिति को और विस्फोटक ाना दिया, स्वय दि गौल व उनके अपने विदेश मत्री जौर्ज्स बिदौल्त के मध्य ंह विबाद और मतभेद ने । दि गौल एक सशक्त कायकारिणी वाली सरकार ं इच्छुक थे किंतु, साम्यवादी व समाजवादी गठबधन ससद के प्रभुत्व को थापित करने के इच्छुक व पक्षधर थे। तथा उनके विचारानुसार, राष्ट्रीय नीति वभिन्न राजनीतिक दलो के मतभेदो के समझौतों व मतैक्यो के रूप मे-ससद े उभर कर आए व निर्धारित हो । जनवरी 1946 इ० मे जब दि गौल का ापनी दाल गलती नजर नहीं आइ तो उसने त्याग-पत्र देना ही श्रयस्कर समझा ौर इसके कुछ माह पश्चात् मताधिकारियो ने एक वामपथी सविधान भी अस्वीकार ार दिया, जिसने राष्ट्रपति को ससद की मात्र एक कठपुतली के रूप मे परिवतित ारने का प्रावधान कर दिया था । अत जून 1946 इ० मे एक नई सविधान-ाभा निर्वाचित हुइ। और इस बार साम्यवादी एव समाजवादी पराजित हुए तथा ाम आर पी सबसे बडे राजनीतिक दल कें रूप मे उभरा । किंतु, जो सविधान ाक्टूबर 1946 ई० को पारित हुआ उसमे राष्ट्रपति तुलनात्मक रूप से क्षीण ा ससद शक्तिशाली निधारित हुई।

अत दिसम्बर 1946 ई० म चतुर्थ गणतत्र औपचारिक रूप से निमित ुआ तथा जनवरी 1947 इ० मे राष्ट्रपति के रूप में, समाजवादी विन्सेन्ट औरि ओल को चुना गया। उसने अपने राजनीतिक अनुभव व प्रशिक्षण के आधार ार, प्रनयक्ष एव परोक्ष रूप से अपने समस्त काल में (1947 स 1954 ई० ाक) एक अत्यधिक महत्वपूण भूमिका अदा करी, किंतु फिर भी, वह स्थायित्व ादान नहीं कर सका। उसका उत्तराधिकारी रेने् कौटी तो और अप्रभावी साबित ुआ। तथा फ्राँसीसी आदतानुसार, राजनीतिक आस्थिरता भी बनी रही। दिसम्बर 1946 ई० से जून 1951 ई० के मध्य आठ मत्रालयो ने बारी-बारी से दायित्व पम्भाला था और प्रत्येक की अवधि औसतन सात माह थी। किंतु, सौभाग्यवश, वेदेश मत्रालय दो एम आर. पी मत्रियो-जौर्ज्स बिदौल्त व रौबर्ट स्कूमान् के अधीन रहा।[9]

1947 ई० मे चतुथ गणतत्र के प्रारम्भिक दिनो मे एम आर पी समाजवादियो एव साम्यवादियो ने सत्ता मे भगीदारी करी। कितु, मुद्रास्फीति के कारण हुइ राष्ट्र-व्यापी हडतालो का वैचारिक समर्थन साम्यवादियो ने किया। समाजवादी प्रधानमत्री पौल रैमेदियर ने एक अजीबो-गरीब सा कदम उठाया। स्वय त्याग-पत्र न सौपकर उसने साम्यवादी मत्रियो को पदच्युत कर दिया। अत अब एम आर पी व समाजवादी एक ओर तथा साम्यवादी दूसरी ओर हो गए। और यह विवाद मारशैल प्लान जारी होने के समय 1947 इ० के लगभग अन्त मे अपने निणायक दौर मे पहुँचा क्योकि फ्रॉसीसी साम्यवादियो ने सयुक्त राज्य अमेरिका के स्थान पर सोवियत सघ से सहायता मॉगे जाने पर जोर दिया। कितु, आम नागरिक भी इस समय यह समझ रहा था कि आर्थिक सहायता आवश्यक ही नही अपरिहार्य हे और इस प्रकार की सहायता मात्र अमरीका से हा पूण हो सक्ती है। अत वामपथियो के प्रचार व हडतालो के बावजूद भी मतदाता का रूख दक्षिणपथी हो गया ओर एम आर पी एव उत्क्ट् समाजवादियो के ही प्रधानमत्री इन पदो पर आसीन हो सके।

जैसे-जैसे समय बीतता गया फ्रॉस के तीनो प्रमुख राजनीतिक दलो के पारस्परिक मतभेद कटु होते चले गए और आथिक अस्थिरता ने राजनीति को और अधिक अस्थिर कर दिया। जैस ही 1951 इ० के मध्य में नवीन चुनावो का समय निकट आ रहा था मध्यम-मार्गी राजनीतिक दल एक ही निर्णय पर पहुँच रहे थे कि जहाँ एक ओर, वामपथियो को सत्ता के बाहर रखने का प्रयास करना होगा वहीं दूसरी ओर, धुर-दक्षिण-पथी गौलवादियो को भी सत्ता मे नहीं आने देना है, अत एक तृतीय शक्ति के रूप मे, एम आर. पी समाजवादियो एव उत्कट वादियो का सयुक्त गठबधन बासठ दशमलव पॉंच प्रतिशत (62 5%) सीटें प्राप्तकर के, सत्ता मे आ गया। जहाँ गौल-समथक्नो को 19 6% सीटे प्राप्त हुई, वहीं साम्यवादियो को 17 8% सीटे प्राप्त हुई।

1952 ई० के पश्चात् भी दक्षिणपथ की ओर मतदाताओ का झुकाव जारी रहा तथा अनेक नए प्रधानमत्रियो को सामने आने का अवसर प्राप्त हुआ। कितु, 1954 इ० तक इस अस्थिरता के बावजूद भी विदेश मत्रालय मे स्थायित्व पूर्व-वर्णित मत्रियो के कारण बना रहा। साथ ही, जीन मोनेट के अनुभवी हाथो में आने के कारण, 1952 से 1954 ई० तक आर्थिक मत्रालय अत अर्थ-तत्र मे भी स्थायित्व दृष्टिगोचर होने लगा।

नवम्बर 1955 ई० मे अल्जीरिया के औपनिवेशिक युद्ध के प्रश्न पर

चतुथ गणतत्र टूट के कगार पर पहुँच गया। सरकार के विरूद्ध अविश्वास प्रस्ताव पारित हो गया एव राष्ट्रीय-सभा विघटित कर दी गयी। उसके पश्चात् हुए चुनावो ने भा न तो समकालीन राजनीति को स्थिरता और न ही गरिमा प्रदान की। हॉ, कुछ उपलब्धियो तो हुई - दिसम्बर 1956 ई० मे जमनी को सार-क्षेत्र वापस सौंपकर उसके साथ सीमा-विवाद का सफलापूवक अन्त किया। तथा जनवरी 1957 इ० मे चतुथ गणतत्र ने यूरोप साझाा बाजार मे सम्मिलित होने की कार्यवाही का श्रीगणेश किया। फ्रॉस मे आथिक व सामाजिक सुधारो का सिलसिला भी इसी काल मे प्रारम्भ हुआ था।

हॉलाकि फ्रॉस ने मार्च 1956 इ० मे उत्तरी अफ्रीका के अपने प्रभुत्व-वाले कुछ क्षेत्रो - जैसे मोरक्को एव ट्यूनेसिया को स्वतत्र कर दिया था, वैसे ही जून माह मे अपने अन्य अफ्रीकी उपनिवेशो की भावी स्वतत्रता को ध्यान मे रखते हुए, एक सीमा तक स्वायस्त-शासी बना दिया था, किन्तु, फिर भी, एल्जीरिया के विवाद का हल नहीं हो पाया और वहॉ फ्रॉस विरोधी आतकवाद ने घर बना लिया जिसकी गूँज फ्राँस तक सुनाई देने लगी। जैसे-जैसे आतकवाद का प्रसार हुआ वैसे-वैसे फ्राँस द्वारा उसे नियत्रित करने के लिए और अधिक सेनाएँ भेजी गईं और फ्रॉसीसी सैनिको की हत्याओ एव युद्धो-सघर्षो मे मृत्यु ने गृह-ससद मे तूफान को जम दे दिया और सरकार की अलोकप्रियता एव निन्दा बढती ही गई। 1957 ई० की शीत-ऋतु मे तो एक अवसर ऐसा भी आया कि, पर्याप्त समर्थन के अभाव मे, कोई राजनीतिक दल सरकार नहीं बना सका और पाँच सप्ताहो तक फ्राँस बिना मत्रीमडलीय सरकार के रहा। इसी प्रकार, अप्रैल 1958 ई० मे भी अपदस्थ सरकार के स्थान पर दूसरी सरकार के गठन मे पूरा एक माह लग गया था।

कोई भी प्रधानमत्री इस औपनिवेशिक युद्ध के चलते, अपनी लोकप्रियता नहीं बना सकता था। कितु, दूसरी ओर, यदि फ्राँस अल्जीरिया पर अपना प्रभुत्व समाप्त कर देता, तो वहॉ के विदेशी (फ्राँसीसी व यूरोपिय) 'कोलोन् एव सेना व सैन्य-नेतृत्त्व स्पष्टत नाराज व असन्तुष्ट हो जाते कितु, सयोगवश, ऐसा एक व्यक्ति फ्रॉस का तत्कालीन प्रधानमत्री पियरे् पिफ्लिमलिन था, जो अल्जीरिया से फ्रॉसीसी सेनाओ की वापसी का पक्षधर था। अत उसके सत्ता मे आते ही, गृह-युद्ध के बादल फ्राँसीसी आकाश पर मँडराने लगे। उसे मई 13, 1958 ई० को अपना मत्रीमडल सभा के समक्ष प्रस्तुत करना था। दि गौल ने फ्राँस को इस दुष्चक्र से बचाने की धोषणा की एव राष्ट्रपति रेने कोटी ने पिफ्लिमलिन

1947 ई० मे, चतुथ गणतत्र के प्रारम्भिक दिनो मे एम आर पी समाजवादियो एव साम्यवादियो ने सत्ता मे भगीदारी करी। कितु, मुद्रास्फीति के कारण हुइ राष्ट्र-व्यापी हडतालो का वैचारिक समर्थन साम्यवादियो ने किया। समाजवादी प्रधानमत्री पौल रैमेदियर ने एक अजीबो-गरीब सा कदम उठाया। स्वय त्याग-पत्र न सौपकर उसने साम्यवादी मत्रियो को पदच्युत कर दिया। अत अब एम आर पी व समाजवादी एक ओर तथा साम्यवादी दूसरी ओर हो गए। और यह विवाद मारशैल प्लान जारी होने के समय 1947 इ० के लगभग अन्त मे अपने निणायक दौर मे पहुँचा क्योकि फ्रॉसीसी साम्यवादियो ने सयुक्त राज्य अमेरिका के स्थान पर सोवियत सघ से सहायता मॉगे जाने पर जोर दिया। क्नितु, आम नागरिक भी इस समय यह समझ रहा था कि आर्थिक सहायता आवश्यक ही नही अपरिहाय हे और इस प्रकार की सहायता मात्र अमरीका से हा पूण हो सक्ती है। अत वामपथियो के प्रचार व हडतालो के बावजृद भी, मतदाता का रूख दक्षिणपथी हो गया और एम आर पी एव उत्क्ट् समाजवादियो के ही प्रधानमत्री इन पदो पर आसान हो सके।

जैसे-जैसे समय बीतता गया फ्राँस के तीनो प्रमुख राजनीतिक दलो के पारस्परिक मतभेद कटु होते चले गए और आथिक अस्थिरता ने राजनीति को और अधिक अस्थिर कर दिया। जैसे ही 1951 इ० के मध्य में नवीन चुनावो का समय निकट आ रहा था मध्यम-मार्गी राजनीतिक दल एक ही निर्णय पर पहुँच रहे थे, कि जहाँ एक ओर, वामपथियो को सत्ता के बाहर रखने का प्रयास करना होगा, वहीं दूसरी ओर, धुर-दक्षिण-पथी गौलवादियो को भी सत्ता मे नहीं आने देना है अत एक तृतीय शक्ति के रूप मे एम आर. पी समाजवादियो एव उत्कट वादियो का सयुक्त गठबधन बासठ दशमलव पाँच प्रतिशत (62 5%) सीटें प्रासकर के, सत्ता मे आ गया ! जहाँ गौल-समथक्नो को 19 6% सीटे प्रास हुइ, वहीं साम्यवादियो को 17 8% सीटे प्रास हुई।

1952 इ० के पश्चात् भी दक्षिणपथ की ओर मतदाताओ का झुकाव जारी रहा तथा अनेक नए प्रधानमत्रियो को सामने आने का अवसर प्रास हुआ। कितु, 1954 इ० तक इस अस्थिरता के बावजूद भी विदेश मत्रालय मे स्थायित्व पूर्व-वर्णित मत्रियो के कारण बना रहा। साथ ही, जीन मोनेट के अनुभवी हाथो मे आने के कारण, 1952 से 1954 इ० तक आर्थिक मत्रालय अत अर्थ-तत्र मे भी स्थायित्व दृष्टिगोचर होने लगा !

नवम्बर 1955 ई० मे अल्जीरिया के औपनिवेशिक युद्ध के प्रश्न पर

चतुथ गणतत्र टूट के कगार पर पहुँच गया। सरकार के विरूद्ध अविश्वास प्रस्ताव पारित हो गया एव राष्ट्रीय-सभा विघटित कर दी गयी। उसके पश्चात् हुए चुनावो ने भी न तो समकालीन राजनीति को स्थिरता और न ही गरिमा प्रदान की। हॉ कुछ उपलब्धियो तो हुईं - दिसम्बर 1956 ई० मे जमनी को सार-क्षेत्र वापस सौंपकर उसके साथ सीमा-विवाद का सफलापूर्वक अन्त किया। तथा जनवरी 1957 इ० मे चतुथ गणतत्र ने यूरोप साझाा बाजार मे सम्मिलित होने की कार्यवाही का श्रीगणेश किया। फ्रॉस मे आथिक व सामाजिक सुधारो का सिलसिला भी इसी काल मे प्रारम्भ हुआ था।

हॉलाकि फ्रॉस ने मार्च 1956 इ० मे उत्तरी अफ्रीका के अपने प्रभुत्व-वाले कुछ क्षेत्रो - जैसे मोरक्को एव ट्यूनेसिया को स्वतत्र कर दिया था वैसे ही जून माह मे अपने अन्य अफ्रीकी उपनिवेशो की भावी स्वतत्रता को ध्यान मे रखते हुए, एक सीमा तक स्वायस्त-शासी बना दिया था, किन्तु, फिर भी, एल्जीरिया के विवाद का हल नहीं हो पाया और वहॉ फ्रॉस विरोधी आतकवाद ने घर बना लिया जिसकी गूँज फ्राँस तक सुनाई देने लगी। जैसे-जैसे आतकवाद का प्रसार हुआ वैसे-वैसे फ्राँस द्वारा उसे नियत्रित करने के लिए और अधिक सेनाएँ भेजी गईं और फ्रॉसीसी सैनिको की हत्याओ एव युद्धो-सघर्षो मे मृत्यु ने गृह-ससद मे तूफान को जम दे दिया और सरकार की अलोकप्रियता एव निन्दा बढती ही गई। 1957 ई० की शीत-ऋतु मे तो एक अवसर ऐसा भी आया कि पर्याप्त समर्थन के अभाव मे, कोई राजनीतिक दल सरकार नहीं बना सका और पाँच सप्ताहो तक फ्राँस बिना मत्रीमडलीय सरकार के रहा। इसी प्रकार, अप्रैल 1958 ई० मे भी अपदस्थ सरकार के स्थान पर दूसरी सरकार के गठन मे पूरा एक माह लग गया था।

कोई भी प्रधानमत्री इस औपनिवेशिक युद्ध के चलते, अपनी लोकप्रियता नहीं बना सकता था। किंतु, दूसरी ओर, यदि फ्राँस अल्जीरिया पर अपना प्रभुत्व समाप्त कर देता, तो वहाँ के विदेशी (फ्राँसीसी व यूरोपिय) 'कोलोन् एव सेना व सैन्य-नेतृत्व स्पष्टत नाराज व असन्तुष्ट हो जाते किंतु, सयोगवश, ऐसा एक व्यक्ति फ्रॉस का तत्कालीन प्रधानमत्री पियरे् पिफ्लिमलिन था, जो अल्जीरिया से फ्राँसीसी सेनाओ की वापसी का पक्षधर था। अत उसके सत्ता मे आते ही, गृह-युद्ध के बादल फ्राँसीसी आकाश पर मँडराने लगे। उसे मई 13, 1958 इ० को अपना मत्रीमडल सभा के समक्ष प्रस्तुत करना था। दि गौल ने फ्राँस को इस दुष्चक्र से बचाने की धोषणा की एव राष्ट्रपति रेने कोटी ने पिफ्लिमलिन

का त्याग-पत्र स्वीकार कर लिया और दि गौल को निमत्रित किया। दि गौल ने छह माह तक आज्ञप्ति का अधिकार माँगने के साथ, यह शर्त रखी कि इस छह माह की अवधि के पश्चात् एक नवीन सविधान निर्मित करके राष्ट्र के सम्मुख जनमत-सग्रह के लिए प्रस्तुत किया जाए।

दि गौल ने अपने प्रधानमत्रित्व के छह माह के काल मे राष्ट्र मे पूरी तरह से आवश्यक सुधार पारित किए व समकालीन अवश्यकताओ के अनुरूप एक सविधान का भी प्ररूप तैयार किया, जो सितम्बर 1958 इ० को जनमत हेतु प्रस्तुत किया गया एव जिसे अस्सी प्रतिशत (80%) मतदाताओ के बहुमत ने स्वीकार भी कर लिया। इस नवीन सविधान के अनुसार ससदीय शक्ति प्रधानमत्री के हाथो मे स्थानातरित कर दी गई तथा प्रधान-मत्री नियुक्त करने का अधिकार राष्ट्रपति को प्रदान किया गया। राष्ट्रपति के निर्वाचन की विधि के रूप मे स्थानीय निकायो द्वारा निर्वाचन का प्रावधान था। इन सुधारो का अभिप्राय ससद की तुलना मे, राष्ट्रपति को अधिक अधिकार प्रदान करना का। इस सविधान के जनमत द्वारा स्वीकार किए जाने के बाद दि गौल था निर्वाचन नए राष्ट्रपति के रूप मे हो गया-और उसने जनवरी 8, 1959 ई० मे सत्ता ग्रहण करी। इस प्रकार चतुथ गणतत्र का अन्त एव पचम गणतत्र का श्रीगणेश हुआ ।



[15]

पंचम गणतंत्र के आधीन फ्रॉस

वस्तुत चतुथ गणतत्र मे ऐसे व्यक्तित्वो का बाहुल्य रहा था जिनका राजनीतिक चरित्र तृतीय गणतत्र के दौरान निमित हुआ था। कितु, पचम गणतत्र के सरकार मे ऐसे व्यक्ति एव व्यक्तित्व सम्मिलित थे जिनके प्रशासनिक दृष्टिकोण पूववर्ती प्रशासको से पूणत भिन्न थे। अत पचम गणतत्र को स्थापित करन वाली गौलवादी विजय ने फ्राँस मे मूलभूत परिवतनो की प्रक्रिया को जम दिया। और सबसे बडा परिवतन तो था राष्ट्रीपति एव ससदीय सदस्यो के मध्य विवादा का अन्त।[50] राष्ट्रीय विश्वास की इसी प्रकार 1961 इ० मे पुन अभिव्यक्ति हुइ जब गौल समथको को पचहत्तर प्रतिशत मत प्राप्त हुए। उनके विरोध मे चावीस प्रतिशत मत साम्यवाद के समर्थको के थे।

पचम गणतत्र के नवीन सवैधानिक नियमो के फलस्वरूप पश्चिमी व भूमध्यवर्ती अफ्रीका के पद्रह राज्यो को स्वायत्त-शासित क्षेत्रो मे परिवतित कर दिया गया। मैडागास्कर को भी स्वायत्त-शासन प्रदान किया गया। दि गौल तो इन्हे स्वतत्रता प्रदान करने को तत्पर था, जिसके लिए तब मात्र गुइन्यि (Guinea) ही तैयार हुआ। इसी प्रकार, उसने अल्जीरिया मे हो रही आक्रामकता को समाप्त करने के भी अनेक प्रयास किए। इसीके अन्तर्गत सितम्बर 1959 ई० मे फ्राँसीसी गष्ट्रपति ने उन्हे आत्म - निर्धारण का अधिकार प्रदान कर दिया। कोलोन्स जो कि दि गौल को अपना पक्षधर मान रहे थे, निराशा मे उसके विरोधी हो गए। जनवरी 1961 ई० मे हुए जनमत-सग्रह मे दि गौल को फ्राँसीसियो व अल्जीरियाइ दोनो का समथन इस नीति-विशेष के लिए प्राप्त हो गया। इसी बीच अप्रैल 21 1961 इ० को अल्जीरिया मे सैनिक विद्रोह ने सत्ता पलट दी। अतत एवियान मे मार्च 18 1962 इ० मे युद्ध विराम द्वारा आठ - वर्षीय औपनिवेशिक युद्ध का अन्त हुआ और इस युद्ध-विराम का नब्बे प्रतिशत फ्राँसीसियो ने अप्रैल 8 1992 इ० के जनमत - सग्रह में समर्थन किया। तथा जुलाई 5, 1962 ई० को अल्जीरिया स्वतत्र हुआ व वहाँ से लगभग नौ लाख यूरोपीय मूल के निवासी 1962 व 1963 ई० के मध्य, फ्राँस आकर बस गए। तथा, इस प्रकार, युद्धोत्तर काल की सवाधिक महत्वपूर्ण समस्या का अन्त हुआ।

का त्याग-पत्र स्वीकार कर लिया और दि गौल को निमत्रित किया। दि गौल ने छह माह तक आज्ञप्ति का अधिकार माँगने के साथ यह शर्त रखी, कि, इस छह माह की अवधि के पश्चात् एक नवीन सविधान निर्मित करके राष्ट्र के सम्मुख जनमत-सग्रह के लिए प्रस्तुत किया जाए।

दि गौल ने अपने प्रधानमत्रित्व के छह माह के काल मे राष्ट्र मे पूरी तरह से आवश्यक सुधार पारित किए व समकालीन अवश्यकताओ के अनुरूप एक सविधान का भी प्ररूप तैयार किया, जो सितम्बर 1958 इ० को जनमत हेतु प्रस्तुत किया गया एव जिसे अस्सी प्रतिशत (80%) मतदाताओ के बहुमत ने स्वीकार भी कर लिया। इस नवीन सविधान के अनुसार ससदीय शक्ति प्रधानमत्री के हाथो मे स्थानातरित कर दी गई तथा प्रधान-मत्री नियुक्त करने का अधिकार राष्ट्रपति को प्रदान किया गया। राष्ट्रपति के निर्वाचन की विधि के रूप मे स्थानीय निकायो द्वारा निर्वाचन का प्रावधान था। इन सुधारो का अभिप्राय ससद की तुलना मे, राष्ट्रपति को अधिक अधिकार प्रदान करना का। इस सविधान के जनमत द्वारा स्वीकार किए जाने के बाद दि गौल था निर्वाचन नए राष्ट्रपति के रूप मे हो गया-और उसने जनवरी 8, 1959 ई० मे सत्ता ग्रहण करी। इस प्रकार चतुर्थ गणतत्र का अन्त एव पचम गणतत्र का श्रीगणेश हुआ।



[15]

पंचम गणतंत्र के आधीन फ्रॉस

वस्तुत चतुथ गणतत्र मे ऐसे व्यक्तित्वो का बाहुल्य रहा था जिनका राजनीतिक चरित्र तृतीय गणतत्र के दौरान निमित हुआ था। किंतु, पचम गणतत्र के सरकार मे ऐसे व्यक्ति एव व्यक्तित्व सम्मिलित थे जिनके प्रशासनिक दृष्टिकोण पूववर्ती प्रशासको से पूणत भिन्न थे। अत पचम गणतत्र को स्थापित करने वाली गौलवादी विजय ने फ्रॉस मे मूलभूत परिवतनो की प्रक्रिया को जम दिया। और सबसे बडा परिवतन तो था राष्ट्रीपति एव ससदीय सदस्यो के मध्य विवादो का अन्त।[50] राष्ट्रीय विश्वास की इसी प्रकार 1961 इ० मे पुन अभिव्यक्ति हुइ जब गौल समथको को पचहत्तर प्रतिशत मत प्राप्त हुए। उनके विरोध मे चाबीस प्रतिशत मत साम्यवाद के समथको के थे।

पचम गणतत्र के नवीन सवैधानिक नियमो के फलस्वरूप पश्चिमी व भूमध्यवर्ती अफ्रीका के पद्रह राज्यो को स्वायत्त-शासित क्षेत्रो मे परिवतित कर दिया गया। मैडागास्कर को भी स्वायत्त-शासन प्रदान किया गया। दि गौल तो इन्हे स्वतत्रता प्रदान करने को तत्पर था, जिसके लिए तब मात्र गुइन्या (Guinea) ही तैयार हुआ। इसी प्रकार उसने अल्जीरिया मे हो रही आक्रामकता को समाप्त करने के भी अनेक प्रयास किए। इसीके अन्तर्गत सितम्बर 1959 ई० मे, फ्राँसीसी राष्ट्रपति ने उन्हे आत्म - निर्धारण का अधिकार प्रदान कर दिया। कोलोन्स, जो कि दि गौल को अपना पक्षधर मान रहे थे, निराशा मे उसके विरोधी हो गए। जनवरी 1961 इ० मे हुए जनमत-सग्रह मे दि गौल को फ्राँसीसियो व अल्जीरियाइ दोनो का समथन इस नीति-विशेष के लिए प्राप्त हो गया। इसी बीच अप्रैल 21, 1961 इ० को अल्जीरिया मे सैनिक विद्रोह ने सत्ता पलट दी। अतत एवियान मे मार्च 18, 1962 इ० मे युद्ध विराम द्वारा आठ - वर्षीय औपनिवेशिक युद्ध का अन्त हुआ और इस युद्ध-विराम का नब्बे प्रतिशत फ्राँसीसियो ने अप्रैल 8 1992 इ० के जनमत - सग्रह मे समर्थन किया। तथा जुलाई 5 1962 ई० को अल्जीरिया स्वतत्र हुआ व वहाँ से लगभग नौ लाख यूरोपीय मूल के निवासी 1962 व 1963 ई० के मध्य, फ्राँस आकर बस गए। तथा, इस प्रकार, युद्धोत्तर काल की सवाधिक महत्वपूर्ण समस्या का अन्त हुआ।

अक्टूबर 1962 इ० मे, दि गौल ने एक सवैधानिक सशोधन प्रस्तुत किया जिसके प्रावधान के अनुसार राष्ट्रपति का निर्वाचन भी प्रत्यक्ष रूप से मतदाताओ द्वारा किया जाए। यह प्रस्ताव भी पारित हो गया। अत 1960 के दशक में हम पाते हैं कि जनमत के समथन वाले राष्ट्रपति को एक आज्ञाकारी मत्रिमडल सहायको के दल के रूप मे प्राप्त हो गया, जिसका नेतृत्व प्रधामत्री मिचेल देब्रे कर रहे थे। अत आन्तरिक व बाह्य सभी नीतियॉ, स्वय दि गौल द्वारा निधारित थीं। 1962 के बसत मे उसका स्थान जौर्ज्स पौम्पिद्‌यू ने ले लिया, जो प्रधानमत्री जैसे महत्वपूण दायित्व के लिए पूणत अनुभवहीन था। फ्राँस के अनेक सासदो समाचारपत्रो व पत्रिकाओ ने इसे, दि गौल के अधिनायकवाद के रूप मे देखा व उसकी भत्सना की कितु, जैसा कि ऊपर स्पष्ट हो चुका है, जनमत-सग्रह मे दि गौल विजयी रहे। यही नहीं नई ससद के गठन हेतु आयोजित चुनावो मे भी, बावजूद जबर्दस्त विरोध के, दि गौल के दल को ससद की 482 मे से 267 सीटे प्राप्त हो गई। साठ के दशक के मध्य मे दि गौल का सबसे बडा शत्रु था समाजवादी दल का सासद एव मार्सील का सुधारवादी नगर-प्रमुख गेस्टन डेफ्रें, जो नाटो गुट का समर्थक भी था। उसके नेतृत्व मे समाजवादियो ने गौल के विरूद्ध नाटो को नष्ट करने, तथा, निर्वाचित गणतत्र को 'निर्वाचित राजतत्र' मे परिवतित करने के आरोप लगाए। इन्हीं सबके परिणामस्वरूप 1965 ई0 के राष्टपति चुनावो मे समाजवादी फ्रैंकोइस मित्राँ के विरूद्ध वह अति बारीक बहुमत से विजयी हो सका - उसे मात्र पचपन प्रतिशत मत प्राप्त हो सके थे। इसी प्रकार, 1967 ई० के आम-चुनावो मे भी उसके समर्थको व अनुयायियो को ससद मे क्षीण बहुमत ही प्राप्त हो सका।

कितु, फ्राँसीसी समाज के अनेक क्षेत्रो मे असतोष मे निरन्तर वृद्धि होती रही। मई 1968 ई० मे तो अनेक फैक्ट्रियो पर श्रमिको का एव निश्वविद्यालयो पर छात्रो का अधिकार हो गया। विश्वविद्यालयो में क्रान्तिकारी समितियो का गठन करके सपूर्ण फ्राँसीसी समाज को मूलत एव पूणत परिवर्तित कर देने की माँग उठ रही थी। और, जहाँ तक, औद्योगिक श्रमिक वर्ग का प्रश्न था, वे अधिक वेतन, कम घटे का कार्य, तथा अपने निर्णयो मे श्रमिक-भागीदारी की माँग कर रहे थे जबकि, फ्राँस की नौकरशाही उनकी वैधानिक माँगो का पूर्णत अनदेखा करता रही। दि गौल ने अपनी चिर-परिचित शैली में उत्तर देते हुए एक जनमत-सग्रह की घोषणा कर दी, ताकि उसके मौलिक सुधारों को कार्यान्वित करने के लिए और अधिक शक्ति प्राप्त हो सके तथा, ऐसा न होने

पर पद-त्यागने की चेतावनी भी दे दी !

इधर हडताले तथा हडतालियो एव गौल-समथको सरकारी कमचारियो के मध्य सडक मुठभेडें आम बात हो गईं। अन्तत परेशान दि गौल ने ससद भग करके चुनावो की घोषणा करना ही श्रेयस्कर समझा। किंतु, इस अशाँति ने गौल-समथको की ही सहायता की। क्योकि, असुरक्षा व सम्पत्ति के भय से लोग साम्यवादी-विरोधी व गौल के पक्षधर होने लगे ! अत जून 1968 के चुनावो मे, जहाँ दि गौल की यू डी आर पार्टी को 294 सीटो के साथ पूर्ण बहुमत प्राप्त हो सका वहीं उसके सहयोगी दलों को कुल मिलाकर 487 मे से 357 सीटो पर अधिकार प्राप्त हुआ, साम्यवादियो की सीटे 73 से घटकर 34 तथा, मित्राँ के वामपथी गठबधन की सख्या 118 से घटकर 57 रह गइ थी। किंतु, इस बहुमत से आशिक रूप से सतुष्ट हुए, दि गौल ने पाँचवे जनमत-सग्रह की घोषणा अप्रैल 1969 ई० मे कर दी जिसमे अपने लिए अधिक अधिकारो के साथ ससद के उच्च सदन की शक्ति क्षीण करने का प्रावधान भी सम्मिलित था। किंतु, अपने स्वभाव के अनुसार बहुमत प्राप्त न करने पर त्याग-पत्र देने की धमकी पुन थी। किंतु जनमत मे त्रेपन प्रतिशत (53%) मतदाताओं ने उसे अस्वीकार कर दिया। अत अपने वचन के प्रति निष्ठा-व्यक्त करते हुए, दि गौल ने राष्ट्रपति का पद भी त्याग दिया ! अत इस प्रकार, एक अनावश्यक से शक्ति-परीक्षण मे उसने राजनीतिक आत्म-हत्या कर डाली ! जून 1969 ई० के राष्ट्रपति चुनाव मे पूर्व प्रधानमत्री जौर्ज्स पौम्पीद्‌यू पचम गणतत्र के द्वितीय राष्ट्रपति निर्वाचित हो गए !



सदर्भ व पाद टिप्पणी

(References and Foot notes)

1 Marie Madeleine Martin The Making of France, Eng tr by Barbara & Robert North Eyre & Spottiswoode London 1951 p 17

(The original book "**Histoire de l'unite Francaise,** ' was published in 1948 in Paris)

2 Georges Poisson **Les Aryens,** Paris 1934

3 Marie M Martin Op Cit p 17

4 Camille Julian **Histoire de la Gaule,** t I & II Paris 1908 Cited in Marie-Martin pp 18-19

5 Lucien Romier **A History of France** (Translated & Completed by A L Rowse) Macmillan 1953 p 21 (The book as published in France under the title **L' Ancienne France des Origines a la Revolution)**

6 Ibid p 22

7 Ibid p 23

8 Camille Julian, Op Cit

9 Marie M Martin Op Cit , p 24

10 Ibid p 28

11 Lucien Romier Op Cit pp 47-49

2 Ibid p 50

13 Ibid pp 56-57

14 Marie M Martin, Op Cit p 77

15 Ibid p 80

16 Ibid p 82

17 Ibid pp 83 85

18 Ibid p 89

19 Lucien Romier (Eng Tr by A L Rowse) Op Cit p 168

20 Marie Madeleine Martin The Making of France, (Eng Tr by Barbara & Robert North) Eyre & Spottis woode London 1951 p 133

21 Lucien Romier Op Cit p 218

22 Ibid p 243

23 Ibid p 254

24 Ibid p 271

25 Ibid p 301

26 James Edgar Swaine **A History of World Civilization,** McGraw Hill New York & London 1947 p 471

27 Denis Richards **An Illustrated History of Modern Europe,** Longman 1977 p 16

28 David Thomson **Europe Since Napoleon,** Penguin Books 1975 (Edn) pp 24-27

29 Scbevill **History of Europe, From the Reformation to the Present Day,** Bell (Year Etc not given) p 371 372

30 Lucien Romier Op Cit p 331

31 H A L Fisher **Napoleon,** OUP Delhi 1979 p 69

32 Ibid

33 Ibid p 80

34 College Level World History Part 2 (Western Civilization) prepared by the Social Science Editorial Staff Monarch Press Inc New York 1963 p 28

35 Ibid p 28

36 David Thomson Op Cit pp 62-63 H A L Fisher Op Cit pp 128-140

37 David Thomson Op Cit pp 62-63 H A L Fisher Op Cit pp 159-182

38 David Thomson Op Cit p 62

40 Denis Richards Op Cit p 53 David Thomson Op Cit pp 73 75 Scbevill Op Cit pp 418-419

40 Prof L Mukerjee Notes on Modern Europe and the World

pp 274-276

41 Lucıen Romıeı Op Cıt p 450

42 Ibıd p 451

43 Ibıd p 452

44 Ibıd

45 Ibıd p 458

46 A J P Taylor **Orıgıns of the Second World War,** Penguın

47 Lucıen Romıer Op Cıt p 471

48 Ibıd

49 Walter C Langsam & Otıs C Mıtchell **The World Sınce 1919,** Surjeet Publıcatıons 1971 p 568

50 Ibıd p 574

सदर्भ पुस्तक सूची (Bibliography)

1 A Cobban A History of Modern France, London 1962
2 A Cobban Aspects of the French Revolution, New York 1970
3 A Cobban The Nation-State and National Self Determination, Collins 1969
4 A J Grant A History of Europe, 3 Parts Longman 1930
5 A J P Taylor Struggle for Mastery in Europe, 1848-1918, New York, 1954
6 A J P Taylor The Origins of the Second World War, Penguin, 1961
7 A J P Taylor Europe Grandeur And Decline, Penguin 1967
8 A L Gerard Napoleon III, New York 1958
9 Andre Fontaine History of the Cold War, New York, 1970 71 2 Vols
10 A Siegfired France, A Study in Nationality, New Haven 1930
11 The Cambridge Modern History, 14 Volumes
12 Camille Julian Histoire de la Gaul, I & II Paris 1908
13 C G Starr, A History of the Ancient World, New York, 1964
14 Charles H Haskins The Normans in European History Boston 1915
15 C J H Hayes Modern Europe, 2 Volumes Delhi 1977
16 College Level World History Pts I & II Prepared by The Social Science Editorial Staff New York 1963
17 C V Wedgewood Richelieu and the French Monarchy, New York 1950
18 C W Hollister Medieval Europe A Short History, New York 1964
19 David Ogg Europe of the Ancien Regime, Fontana 1965
20 David Thomson Europe Since Napoleon, Penguin 1975
21 Denis Richards An Illustrated History of Modern Europe Longman 1977
22 D W Brogan The Development of Modern France, 1870-

1939, Harrish Hamilton 1940

23 **Economic History of Europe**, ed Carlo M Cipolla Fontana Six Volumes

24 E H Carr, **International Relations Between Two World Wars**, 1947

25 E Lipson **Europe in the Nineteenth and Twentieth Centuries**, E L B S 1960

26 E M Burns & P L Ralph **World Civilizations**, 2 Vols New York, 1974

27 F A Ogg & W R Sharp **Economic Development of Modern Europe**, New York 1929

28 F A Simpson **The Rise of Louis Napoleon**, New York 1925

29 F B Artz **The Enlightenment in France**, Ohio 1968

30 F M Robertson ed **Origins of the Second World War**, New York 1970

31 Funck-Brentano **Les Origines, or The Eariest Times**, Eng Translation by E F Buckley London 1927

32 Funck Brentano **The Old Regime in France**, Eng Translation by Herbert Wilson London

33 Francois Louis G **Frankish Institutions Under Charlemagne**, Providence 1968

34 G B Adams **Growth of the French Nation**, 1896

35 G M Wrong **The Rise and Fall of New France**, 2 Volumes New York 1928

36 G P Gooch **History of Modern Europe**, 1878 1919 London 1939

37 George Lefebvre **The Coming of the French Revolution**, Princeton 1947

38 George Lichtheim **Imperialism**, Pelican 1971

39 George Poisson **Les Aryens**, Paris 1934

40 George Rude **Revolutionary Europe**, Fontana 1964

41 G R Elton **Reformation Europe**, Fontana 1963

42 H A L Fisher **History of Europe**

43 H A L Fisher **Napoleon**, OUP 1979

44 H A L Fisher **Bonapartism**

45 Herbert Heaton **Economic History of Europe**, New York

1936
46 H S Lucas **The Renaissance and the Reformation**, New York, 1930
47 J A Hobson **Imperialism A Study**, Allen & Unwin 1948 (revised edition)
48 J A O Larsen **Representative Government in Greek and Roman History**
49 J B Bury **The Invasion of Europe by the Barbarians**, London 1928
50 Jacques Bainville **History of France**, 1926
51 James E Swaine **A History of World Civilization**, London 1947
52 J Lough **An Introduction To Eighteenth Century France**, London 1960
53 J M Thompson **Louis Napoleon and the Second Empire**, Oxford 1954
54 J M Thompson **Robespierre and the French Revolution**, New York 1962
55 J P Plamenatz **The Revolutionary Movement in France, 1815-1871**, London 1952
56 J P T Bury **France, 1814 1940**, London 1959
57 L B Packard **The Commercial Revolution**, New York 1927
58 L C B Seaman **From Vienna to Versailles**, Metheun & Co Ltd
59 Leo Gershoy **The French Revolution**, New York 1932
60 Livius (Titus) **The History of Rome**, 2 Vols Oxford 1844
61 L R Gottschalk **The Era of French Revolution**, Princeton 1947
62 Lucien Romier **A History of France**, Translated by A L Rowse MacMillan 1953
63 Margaret Deanesley **A History of Early Medieval Europe**, New York 1960
64 Marie Madeleine Martin **The Making of France**, Eng Translation by Barbara and Roberth North London 1951
65 Mary A Hollings **Europe in Renaissance and Reformation 1453-1660**, Pelican

1939, Harrish Hamilton 1940
23 **Economic History of Europe,** ed Carlo M Cipolla Fontana Six Volumes
24 E H Carr, **International Relations Between Two World Wars,** 1947
25 E Lipson **Europe in the Nineteenth and Twentieth Centuries,** E L B S 1960
26 E M Burns & P L Ralph **World Civilizations,** 2 Vols New York 1974
27 F A Ogg & W R Sharp **Economic Development of Modern Europe,** New York 1929
28 F A Simpson **The Rise of Louis Napoleon,** New York 1925
29 F B Artz **The Enlightenment in France,** Ohio 1968
30 F M Robertson ed **Origins of the Second World War,** New York 1970
31 Funck Brentano **Les Origines, or The Eariest Times,** Eng Translation by E F Buckley London 1927
32 Funck-Brentano **The Old Regime in France,** Eng Translation by Herbert Wilson London
33 Francois Louis G **Frankish Institutions Under Charlemagne,** Providence 1968
34 G B Adams **Growth of the French Nation,** 1896
35 G M Wrong **The Rise and Fall of New France,** 2 Volumes New York 1928
36 G P Gooch **History of Modern Europe,** 1878 1919 London 1939
37 George Lefebvre **The Coming of the French Revolution,** Princeton 1947
38 George Lichtheim **Imperialism,** Pelican 1971
39 George Poisson **Les Aryens,** Paris 1934
40 George Rude **Revolutionary Europe,** Fontana 1964
41 G R Elton **Reformation Europe,** Fontana 1963
42 H A L Fisher **History of Europe**
43 H A L Fisher **Napoleon,** OUP 1979
44 H A L Fisher **Bonapartism**
45 Herbert Heaton **Economic History of Europe,** New York

1936

46 H S Lucas **The Renaissance and the Reformation,** New York, 1930

47 J A Hobson **Imperialism A Study, Allen & Unwin 1948** (revised edition)

48 J A O Larsen **Representative Government in Greek and Roman History**

49 J B Bury **The Invasion of Europe by the Barbarians,** London 1928

50 Jacques Bainville **History of France,** 1926

51 James E Swaine **A History of World Civilization,** London 1947

52 J Lough **An Introduction To Eighteenth Century France,** London 1960

53 J M Thompson **Louis Napoleon and the Second Empire,** Oxford 1954

54 J M Thompson **Robespierre and the French Revolution,** New Yoik 1962

55 J P Plamenatz **The Revolutionary Movement in France, 1815-1871,** London 1952

56 J P T Bury **France, 1814-1940,** London 1959

57 L B Packard **The Commercial Revolution,** New York 1927

58 L C B Seaman **From Vienna to Versailles,** Metheun & Co Ltd

59 Leo Gershoy **The French Revolution,** New York, 1932

60 Livius (Titus) **The History of Rome,** 2 Vols Oxford 1844

61 L R Gottschalk **The Era of French Revolution,** Pnnceton 1947

62 Lucien Romier **A History of France,** Translated by A L Rowse MacMillan 1953

63 Margaret Deanesley, **A History of Early Medieval Europe,** New York 1960

64 Mane Madeleine Martin **The Making of France,** Eng Translation by Barbara and Roberth North London 1951

65 Mary A Hollings **Europe in Renaissance and Reformation 1453 1660,** Pelican

66 R B Mowat **A History of European Diplomacy, 1914 1925,** Calcutta 1961
67 Richard Koebner, **Empire,** Cambridge University Press 1966
68 Robert Fawtier **The Capetian Kings of France,** New York, 1960
69 Robert Heilbroner **The Future As History,** New York 1959
70 Ronald Syme **The Roman Revolution,** OUP 1939
71 R R Palmer **The World of the French Revolution,** 1970
72 S B Fay **The Origins of the World War,** New York
73 Scbevill **History of Europe from the Reformation to the Present Day,** Bell
74 Walter C Langsam & Otis C Mitchell **The World Since 1919,** Delhi 1971
75 Walter E Kaegi **Byzantium and the Decline of Rome,** Princeton 1968
76 W C Bank **Origins of the Medieval World,** Stanford 1958
77 W F Church **The Influence of the Enlightenment on the French Revolution,** New York 1964

फ्राँस के शासकों / शासनो की सूची

List of Rulers/Governments of France

The Early Kings

Pepin Mayor of the Palace 714 A D
Charles Martel Mayor of the Palace 715 A D -741 A D
Pepin I Mayor of the Palace 741 A D
Pepin I King 751 A D 768 A D
Charlemagne King 768 A D -814 A D
Charlemagne Emperor 800 A D 814 A D
Louis the Pious Emperor 814 A D 840 A D

West Francia

Charles the Bold King 840 A D 877 A D
Charles the Bold Emperor 875 A D 877 A D
Louis II King 877 A D -879 A D
Louis III King 879 A D 882 A D

Carloman King 882 A D - 884 A D

Middle Kingdoms

Lothair Emperor 840 A D - 855 A D
Louis (Italy) Emperor 855 A D -875 A D
Charles (Provence) King 855 A D 863 A D
Lothair II (Lorraine) King 855 A D 869 A D

East Francia

Ludwig King 840 A D 876 A D
Carloman King 876 A D 880 A D
Ludwig King 876 A D 882 A D
Charles the Fat Emperor 876 A D 887 A D

Capetian Kings

1 Hugh Capet 987 A D 996 A D
2 Robert II 996 A D 1031 A D
3 Henry I 1031 A D 1060 A D
4 Philip I 1060 A D 1108 A D
5 Louis VI 1108 A D 1137 A D
6 Louis VII 1137 A D-1180 A D
7 Philip II (Augustus) 1180 A D 1223 A D
8 Louis VIII 1223 A D 1226 A D
9 Louis IX 1226 A D 1270 A D
10 Philip III 1270 A D 1285 A D
11 Philip IV 1285 A D-1314 A D
12 Louis X 1314 A D 1316 A D
13 Philip V, 1316 A D 1322 A D
14 Charles IV 1322 A D-1328 A D

House of Valois

1 Philip VI 1328 A D 1350 A D
2 John 1350 A D 1364 A D
3 Charles V 1364 A D-1380 A D
4 Charles VI 1380 A D 1422 A D
5 Charles VII 1422 A D 1461 A D
6 Louis XI 1461 A D 1483 A D
7 Charles VIII 1483 A D-1498 A D
8 Louis XII 1498 A D-1515 A D
9 Francis I 1515 A D 1547 A D

10 Henry II 1547 A D -1559 A D
11 Francis II 1559 A D 1560 A D
12 Charles IX 1560 A D 1574 A D
13 Henry III 1574 A D -1589 A D

Bourbon Dynasty

1 Henry IV 1589 A D 1610 A D
2 Louis XIII 1610 A D 1643 A D
3 Louis XIV, 1643 A D -1715 A D
4 Louis XV 1715 A D -1774 A D
5 Louis XVI 1774 A D -1792 A D

Post-Revolution (-1789) France

Its Rulers/Governments

1 First Republic, 1792 A D -1799 A D
2 Napoleon Bonaparte, I Consul, 1799 A D 1804 A D
Napoleon I Emperor 1804 A D 1814 A D
3 Louis XVIII (Bourbon Dynasty) 1814 A D 1824 A D
4 Charles X (Bourbon Dynasty) 1824 A D 1830 A D
5 Louis Philippe, 1830 A D -1848 A D
6 Second Republic 1848 A D 1852 A D
7 Napoleon III Emperor 1852 A D -1870 A D
8 Third Republic 1870 A D -1940 A D
9 Petain Regimne 1940 A D -1944 A D
10 Provisional Government 1944 A D -1946 A D
11 Fourth Republic 1946 A D -1958 A D
12 Fifth Republic 1958 A D